



ॐ नमः शिवाय

ॐ नमः शिवाय

ॐ
 नमो भगवते
 वासुदेवाय
 नमो

श्री
 ॐ
 नमो

माइका बाल्लारी
 लक्ष्मण वसुधेय

श्रीगुरुगुरु

मैं, गिन्यूटे, सैन्गट और उसकी स्त्री बीषा का पुत्र, इस पुस्तक को अपनी इच्छा से लिखता हूँ। मैं इसे कैम-देश के देवताओं की स्तुति में नहीं लिखता क्योंकि मैं देवताओं से ऊब चुका हूँ। और न मैं इसे क़राओं की स्तुति में लिखता हूँ क्योंकि मैं उनके कार्यों से परेशान हो गया हूँ। न मुझे भविष्य की कोई आशा रह गई है क्योंकि अपने जीवन-काल में मैंने इतना सब पाकर खो दिया है कि अब और पाने का प्रश्न ही नहीं उठता। भविष्य भी मेरे लिए उतनी ही ऊबने वाली बात लगती है जितने कि देवता और राजा लोग समझे हैं। मैं यह पुस्तक केवल अपने सतोष के हेतु ही लिखता हूँ, केवल अपने लिए...

पूर्वी समुद्र के तीर पर, इस निर्वासित काल के तीसरे वर्ष मैंने यह पुस्तक आरम्भ की है। यही से जहाज़ पुनः देश को जाते हैं जो मरुभूमि के पास है और जहाँ के पहाड़ों के पत्थरों से ही सप्ताहों की मूर्तियाँ गढ़ी गई हैं। अब मेरी जिह्वा को नदिरा की ऊष्मा स्पर्श कर तथा प्रिय नहीं लगती, मुझे स्त्रियों का संग नहीं आता, उद्यानों की सैर, मछलियों भरे कुंड, यह सब भी मेरे हृदय में सतोष पैदा नहीं करते और इसीलिए मैं यह पुस्तक लिखता हूँ। मैंने अपने साथी गायकों को भगा दिया है क्योंकि संगीत भी अब मेरे कानों को नहीं आता। पर मेरे पास अब भी अपार धन है, परन्तु वह सब मेरे लिए व्यर्थ है क्योंकि मैं उसका उपयोग नहीं कर सकता। मेरे सोने के प्याले, मेरे हाथीदाँत, मेरे जावनूस और मेरे दण...आह! यह सभी मेरे लिए व्यर्थ हो गए हैं। सभी कुछ मेरे पास है। दास अब भी मेरे दण से भयभीत रहते हैं। सैनिक अब भी मेरे सामने सिर झुकाकर घुटनों की सीध में हाथ फैला देते हैं—परन्तु मेरे चारों ओर रेखा खिंची हुई है जिसे

मैं पार नहीं कर सकता...कोई भी जहाज मेरे इस तीर पर नहीं रुक सकता। अब मैं जीवन में कभी उस काली भूमि की सुगंधित राख के सुहावने अवसान में नहीं मूँघ सकूँगा।

किसी समय फराओ की स्वर्ण-धुस्तक में मेरा नाम भी लिखा रहता था...मैं फराओं का दायाँ हाथ माना जाता था और बड़े-बड़े सामन्त मेरी नेवा में उपहार भेजते थे, कैंस के देश में मेरे बोल बहुत महँगे होते और मेरी घीवा में सुवर्ण के हार पड़े रहते। मेरे पास मनुष्य की तमाम इच्छित वस्तुएँ मौजूद थी परन्तु फिर भी मनुष्य होने के नाने मैंने और की चाहना की और नतीजे में मैं ऐसा हो गया जैसा कि मैं अब हूँ। फराओ हीरेमहेब के राज्यकाल के छठवें वर्ष में मैं धीवीज से यहाँ भगा दिया गया कि यदि मैं लौटकर वहाँ जाऊँ तो बुत्ते की भाँति पीट-पीटकर मार डाला जाऊँ, कि यदि मैं इस परिधि के बाहर पैर रखने का साहम करूँ जो मेरे लिए निर्धारित कर दी गई है तो दो पत्थरों के बीच मेडक की भाँति कुचल दिया जाऊँ। यह फराओ की आज्ञा है—सम्राट की आज्ञा है यह जो कभी मेरा मित्र था।

नील नदी का जल जिसने एक बार भी पीया है, वह जीवन-भर कहीं और अपनी प्यास नहीं बुझा पाना। कैंस देश की धूलि में कोई मुझे फिर से चल मिन दे तो मैं अपना मोने का प्याला उसके मिट्टी के पात्र से बदल लूँ—अपने सुन्दर मूनी वस्त्र एक दाम की चमड़े की पोशाक से बदल लूँ। यदि एक ही बार फिर मुझे नील के प्रवाह का कम्कल नाद सुनाई दे सके।

मेरे जीवन का जल चिपना पवित्र था और मेरी मूर्खता कितनी सुन्दर थी! धातु की मदिरा कितनी बहवी है, और उत्तम में उत्तम शहद भी मेरी उम दरिद्रता की कूखी रोटी की बराबरी नहीं कर सकता।

आह! जीवन एक बार फिर घनटा खा जायें! अम्मन! स्वर्ग में होकर पश्चिम से पूर्व की ओर चले! और मेरा वह जीवन—वह निश्चल जीवन—वह दरिद्रता का गुल मुझे फिर एक बार दे दे! आह मेरी कटोर सेवनी! ओ मेरे नम्र ताकपन मुझे मेरे वह भोले नाममज दिन फिर एक दे दे!

और हम धुस्तक को लिखने के पहले मैं, मिग्यूरे एक बार जी भरकर

रो लूँ, क्योंकि निर्बलित व्यक्ति ऐसे ही रोना है जब उसका हृदय दुःख में भारी हो जाना है !

सेन्ट जेम्स मैं अपना पिता कहता था, पीबीज में गरीबों का बैग था और बीपा उसकी स्त्री थी । जब मैं उन्हें मिला तब वह बूढ़ हो चुके थे । उनका अपना कोई बच्चा नहीं था अतएव मुझे उन्होंने अपना पिता और अपने भोलेपन में मुझे देवनाओं की कृपा से मिला हुआ माना । बीपा ने मेरा नाम गिन्गूहे रखा क्योंकि वह कहानियों की बड़ी शीकीन थी और किसी कहानी में उसे गिन्गूहे नाम पाद रह गया था । बीपा को मेरा आना गेमा लगा जैसे मैं आपत्तियों में बचकर उसके पास पहुँचा था ठीक उसी प्रकार जैसे किसी कहानी में कोई गिन्गूहे कराओं के यहाँ किसी भयानक राज्य को अचानक भुन लेने के बाद अपना जीवन तेवर दूर-दूर, बहुत-से देशों को, भाग गया था । वह समझती थी कि मैं भी जीवन-भर आपत्तियों में बचकर ही रहूँगा और कभी अपने पास 'दुर्भाग्य' नाम की कोई बन्तु नहीं रहने देगा ।

परन्तु मेरे नाम से यदि मेरे जीवन का सम्बन्ध नहीं था तो अपने नाम से बाढ़ के पुत्र हैब का तो निश्चिन्त रूप से था ही क्योंकि वह उत्तर और दक्षिण के सागरों का सागर बन गया और मात और मर्कट बहुत धारण करके हीरेमहेब बन गया । और मैं ?

महान् सागर एमन होटैप तुनीय के राज्यपाल से मेरा जन्म हुआ, उन्नी बने जिस बने वह पैदा हुआ जिसका नाम अभिगण है, अतएव मैं उसे नहीं दोहराता । और जब वह पैदा हुआ तो महान् मे आनन्द का शीत दण्ड हाथीनि बाईन कभी तब साधारणी 'माया' के कोई पुत्र नहीं हुआ था । और तब बड़ी शिवाका नाम अभिगण है दुबराज घोषित कर दिया गया । मही-लक मनाया गया, और पुर्धारियों ने उसका मनना कर दिया । वह बीज बोने के समय पैदा हुआ था और मेरी जन्मतिथि मुझे सामुझ नहीं है क्योंकि मैं तो बीन की टोबरी में बीजद के बीच मीन में रहता हूँ बीपा को तब दिया था, जब मैं उसके घर के सामने ही बिनारे में आ गया था ।

वही उस टोकरी को देखाभी की देन समझकर उठा भाई थी। मेरी प्यासी माँ भी बह बीगा। उस समय बिटियाएँ आने बाँगवाँ को मोट चुर्बा थी और मैं इतना निश्चेष्ट रहा था कि बह मझी, मैं मर चुका था। वह मुझे अपने घर में भाई थी और मुझे बोलने की भाग में समझा था और मेरे भूँट में उसने इतनी गींग जूँबी थी कि मैं रो उठा था। !

जब मैंमट घर आया तो मेरा रोना सुनकर घर मझाने दृष्ट कि बीपा में कोई बिम्बी का बच्चा पाल लिया था, वह उसे डाँटने ही बाला था कि वह बोली, "वह बिम्बी नहीं मेरा मदरा है।" मैंमट, मेरे पति। आनन्द मनाओ कि हमारे पुत्र उन्मत्त हुआ है।"

मेरा पिता सुनकर बोला, "तुम मूर्ख हो," और उसने नागुश भी हुआ, परन्तु जब उगने मुझे सावर उगे दिगाया, तो मेरी वह अगत्या-बन्धा देनकर उगे दया भा गई और तब उसने भी मुझे अपना पुत्र मान लिया। फिर तो उसने पशोगियों से भी कहा कि मैं बीपा का ही पुत्र था और अपना सबसे अच्छा लाभपात्र मेजर वह मंदिर में जाकर वहाँ भी मेरा नाम लिखा आया। और मेरी माता बीपा ने वह बाल की टोकरी मेरे पालने के ऊपर ही टाँग दी जो बालानर में धुआँ सम-लगकर बाली हो गई। परन्तु एक काम मेरे पिता ने स्वयं किया और वह यह कि मेरा मतना उसने स्वयं किया। उसे भय था कि मन्दिर के पुजारियों के गन्दे चाकू से मेरा घाव सह जायेगा। वह स्वयं वैद्य था अतएव उसने ऐसा करना खुद ही ठीक समझा। इसके अतिरिक्त घरीबों का वैद्य, मन्दिर के पुजारियों को, इस कार्य के हेतु गहरी रकम देने के लिए वहाँ से लाता।

यह सब बातें मेरे माता-पिता ने मुझे इतनी बार बतलाई थी कि वह सब मुझे याद हो गई है। यह है निश्चय सत्य, क्योंकि भला वह मुझसे क्यों झूठ बोलने...? वह जो जीवन-भर इतने सीधे-भाधे रहे। परन्तु यह कि मैं मैंमट का पुत्र नहीं था, मुझे उन्होंने तब तक नहीं बताया, जब तक कि मैं जवान नहीं हो गया।

लेकिन मैं था कौन? किसीने मुझे नहीं बतलाया पर मैंने वास्तविकता जान ली। कैसे? यह मैं बतलाऊँगा। मेरा विचार है कि मैं इस रहस्य को जान गया हूँ।

एक बाल लो कम ले कम मध्य है ही, और वह यह कि बांग की टोचनी में बहा दिया गया जिम्मे अनेना में ही नहीं था। बीबीज रिममे अगलिन रिमान महान नवा मंदिर थे, एक बटून बहा नगर था और वहाँ उन महलों के बाहर बचनी झोपड़ियों की भी बची नहीं थी। महान महलों में राखवान में राख पर राख बीने गए और उम बीने के साथ ही राख मिश्र में स्थान-स्थान की राखवाह आने लगी और वहाँ के व्यापारीगण भी आने लगे। मन्दिरों और महलों का बीमब रिमना महान् था उनकी ही निगीह वह अमर्य झोपड़ियाँ थी। बटून-ले गरीब आई आने बच्यों का लापन-लापन करने में अमर्य होकर उन्हें छोड़ देते थे, बीने ही बटून-ले, एनिबी की रिचियाँ, रिमके पनि लम्बी दायाओं पर गए होने, आने दाव के पत्तों को छिपाने के लिए नदी में टोचनियाँ बहावा करनी थी। जयद में भी किसी मसूद-बापी की स्त्री और भीरिया के किसी व्यापारी का पुत्र था और बचोंकि मेरा लगना नहीं हुआ था, अनएव यह लो निमिचन था ही कि मैं किसी परदेसी की मालाम था।

बीपा में जब मेरे गुरुपन के बेस और छोटे मुने मुझे लकड़ी के महुक को लीकर रिमान् और मुझे उस पुर के बापी हुई टोचनी का फंद बनाया, उसी समय मेरे बाप-हृदय पर पटना आया हुआ था- हमना मुझे याद है, बचोकि जब मेरी बसे भीग चुकी थी।

बीपा हुआ बाल रिमना मुसद लकड़ा है और बिदेवर दीवन के आगलन के उन रिमों की याद हृदय में बचोड बीदा बन देती है। मेरा रिम मेमद मंदिर के बचोटे के बाहर नदी के उमर को और उन स्थान पर पटना था आई बचनी बीपाहम पटना था। बचि आने बने लकड़ी में अहाड बांड आने और लादान उपाया आना। आगलन मन्दिरों के महुक और लकड़ी-दीव की दुबाने थी आई बचनी-बचनी एनी एनीक की अनी बुगियों पर बीरब (बापी द्वारा दाने उतार कर) आने थे। हृदय परदेसी कर बटून करके बाने, लवा आगलों के बरद बनन का-लोके दूरे के लोग के लवा बहा पुष लकड़ी बचो के दुमारी की रहा बाने थे। एक

वातावरण में मेरे पिता के समान वह लोग भी सम्मानित व्यक्ति माने जाते थे, जिस प्रकार जल में खड़ी दीवार जल से ऊँची मानी जाती है।

हमारा घर भी बीरो के मुकाबले में बड़ा था। सामने एक छोटा-सा बगीचा हमारे यहाँ था, जहाँ मेरे पिता ने एक 'साईकोमोर' का पौधा लगाया था। सड़क की तरफ हमारे बगीचे में 'एकेशिया' की झाड़ियाँ लगी हुई थी और तालाब के स्थान पर हमारे पास एक पत्थर का हीज था जो बाढ़ के समय भर जाता था।

हमारे घर में चार कमरे थे, जिनमें से एक में, मेरी माता कीपा खाना पनाया करती थी, जिसे हम पिता के दवाखाने के सामने के तिवारे में बैठकर खाया करते थे। मेरी माता सफाई बहुत पसन्द करती थी—हफ्ते में दो दिन एक स्त्री आकर घर की सफाई कराती और हफ्ते में एक दिन एक घोबिन आकर हमारे कपड़े से जाती, जिन्हें वह सामने ही नदी में धोया करती थी।

इस कोलाहल में पूर्ण बस्ती में मेरा पिता और हमारे पड़ोसी प्राचीन रिवाजों को बनाए रखने में गर्व का अनुभव करते क्योंकि जो बहुत-से परदेसी हमारे यहाँ आते उनके बीच अपनी सम्पत्ता का इस प्रकार प्रदर्शन ही उन्हें अपना अस्मिरत्व देता था। जबकि सम्पूर्ण मिस्र में रईसों के यहाँ भी पुराने रिवाजों को छोड़ दिया गया था, वहाँ हमारे यहाँ प्राचीन रीतियों और देवताओं के प्रति श्रद्धा पहले की ही भाँति रखी जाती थी। ऐसा लगता था जैसे वे लोग अन्य लोगों के साथ रहकर भी उनसे भिन्न बन-कर रहना चाहते थे।

परन्तु इन बातों को धला मैं तब समझ ही कैसे सकता था? उन दिनों तो तेज धूप में बचने के लिए कभी मैं उस साईकोमोर की छाया में बैठा रहता तो कभी अपने सक्की के मगर के साथ मूँह में रखी बाँधे परकी मटक पर उभे खड़ा करता था। मेरे पड़ोसियों के बच्चे जितनी उत्सुकता से मुझे तब देखा करते थे! मुझे वे लोग कितनी ही बार शहद की मिटराएँ, बाँध की गोमियाँ, तब के तार इत्यादि देने कि मैं उन्हें वह मगर मटक पर खींचने के लिए दे दूँ। बाल्य में वह रईस लोगों के बच्चों का निजीता था, परन्तु मेरे पास वह इस कारण आया था कि उसे महल के

एक चटई ने मेरे पिता को उपहारस्वरूप दिया था, क्योंकि उसने कभी उसका इलाज किया था ।

नित्य प्रातःकाल मुझे मेरी माता जब सन्धी खरीदने जाती, साथ ले जाती । वह कभी अधिक वस्तुएँ नहीं खरीदती थी परन्तु प्याड़ों का एक गुच्छा मोल लेने में ही वह काफी समय लगा देती थी । यदि कभी कोई नया जूता मोल लेना होता तो कीपा कम से कम एक सप्ताह तक छान-बीन करने के बाद ही उसे खरीदती थी । वह अपने मन को तथा मूँझ को समझाया करती कि "सोना-चाँदी रखने वाला व्यक्ति वास्तव में रईस नहीं होना, बल्कि रईस वह होता है जो थोड़े में ही सतोष कर लेता है ।" परन्तु उसकी आँखें कितनी ललचाई दृष्टि से सिद्धान और बिबलीस से आये हुए रंग-बिरंगे ऊनी वस्त्रों पर टिकी रहती, कितनी उत्कठा से वह नुतुर्मुर्ग के परो पर तथा चिकने हाथीदाँत के बने खिलौनों पर हाथ फेरती, यह मैं उस समय देखकर भी नहीं पहचान पाता था । परन्तु मेरा बाल-मस्तिष्क उस समय उस जातिपाठ से बिड़ोह कर उठता और मैं उन सुन्दर गिल्लीनों और उन सुन्दर पक्षी वाली चिट्टियों को, जो खीरिया के ब मित्र के गीत गाती, पाने के लिए हठ करने लगता था । मुझे यह क्या मानूम था कि कीपा स्वयं उन सबको पाने तथा धनी बनने को कितनी सालाबित थी ।

परन्तु वह एक गरीब वैद्य की स्त्री थी और वह अपनी इच्छाओं को केवल कहानियाँ कह-सुनकर ही ज्ञात कर लेती थी । हर रात वह मुझे धीरे-धीरे कहानियाँ सुनाया करती । उसने मुझे सिम्पूहे की तथा उस जहाजी की कथा सुनाई थी जिसका जहाज डूब गया था और जो सपों के राजा से मिलकर असह्य धनराजि लेकर मौटा था । उसने मुझे जादू की, कुराऊन सोंगा की, भूतों की अनेकानेक कथाएँ सुनाई थी । मेरा पिता अक्सर वह-बडाया करता कि वह मेरा दिमाग खराब करती थी, परन्तु जब नाम को ही वह खुरटि लेने लगता तो निश्चिन्त होकर वह मुझे तथा अपने-आपको कहानियों से बहलाया करती थी । बाह ! उन दिनों उन कहानियों को सुनकर मैं कितना बेमुष हो जाता था !

मैं अपनी उस गरीब बस्ती की उस सुगन्ध को बना कैसे भूल सकता

हैं—वह जिसे फिर से पाने के लिए मैं अपना सर्वस्व भी निछावर करने को तैयार हूँ। उन दिनों जब अम्भन की मोने की नाव नदी की छानी पर शाम के वक्त डोलती तो हमारी उम बस्ती में से मछलियाँ झूलने में उठी मुगन्ध ताजा सिकी हुई रोटियों की गंध से मिलकर, एक विचित्र वातावरण पैदा कर देती थी। बन्दरगाह से मुगन्धित तैलों की तथा दूधों की महक उड़ती और जब कोई धनिव स्त्री अपनी मुखण्डविन कुर्मी पर बँटी उधर से निकल जाती तो उसके शरीर से उठी हुई मुगन्ध युवकों के हृदयों में हूक-मी पैदा कर देती थी।

उस तिवारे में ही, मेरी सबसे पहली मिठा भोजन करने समय हुई थी। जब मेरा पिता थका-माँदा अपने दवाखाने से भोजन करने के लिए घर आता तो उसके वस्त्रों पर तब भी सरहम इत्यादि औषधियों के दाग लगे रहते और एक विचित्र प्रकार की तीब्र गंध उनमें से निकलती रहती थी। मेरी माता उठकर तब उसके हाथ धुलवाती और फिर हम तीनों चौकियों पर बैठकर भोजन किया करते थे। कभी-कभी सड़क पर मल्लाह गाली-गलौज करते हुए मराब के नसे में निकलते और हमारी एकेशिया की झाड़ियों के बाहर पेशाब करने रुक जाते। मेरा पिता उनसे कुछ नहीं कहता, परन्तु उनके जाने के बाद वह मुझसे कहता : “सड़क पर इस तरह पेशाब केवल हम्मी या गन्दा सीरियन ही कर सकता है, मिस्त्री नहीं करता, वह तो दो दीवारों के बीच करता है।” या फिर कभी-कभी वह कहता : “उचित मात्रा में मदिरा एक ईश्वरीय देन है जिससे हृदय पुनर्जित हो उठता है, एक गिलास से मनुष्य आनन्द अनुभव करता है, परन्तु उसके दो गिलास मनुष्य की जिह्वा को बेकाबू बना देने है। और जो व्यक्ति इसे पात्र भरकर पीता है वह जब होश में आता है तो अपने-आपको नाती में पड़ा हुआ पाता है—लुटा हुआ, पिटा हुआ।” और इसी प्रकार मेरा पिता मुझे उपदेश दिया करता था। और जब कभी कोई सुन्दर युवती अपने शीने वस्त्रों में से अपना शरीर दिखाती हुई, गालों और होठों को रंगे तीखे कटाक्ष करती हुई सड़क से निकलती और मैं उसकी ओर अपसक देखता रह जाता तो मेरा पिता मुझसे गम्भीर स्वर में बहने लगता, “उस सुन्दरी स्त्री से बचने रहो, जो तुम्हें सुन्दर, कहकर फँसाना चाहे। क्योंकि

उमरा हृदय एक जाल के समान होता है, जिसमें जोले-भांले लोग फँसकर तड़पा कर रहे हैं। उसका मरीर आम की तरह जला करता है।" और ऐसे उपदेशों में मेरे हृदय में मदिरा और सुंदरी स्त्री के प्रति भय रहने लगा हो तो क्या आश्चर्य था ? और बाद में वही दोनों चीजें मेरे जीवन में मुझे सबसे अधिक मगने लगी, बदायित् इमलिए कि छुटपन में वह मेरे लिए अज्ञान थीं।

मुझे छुटपन में ही मेरे पिता ने अपने दवाखाने में ले जाकर अपनी लगाव दराइयाँ नया पीरने-काढ़ने के अस्त्र दिवाए थे। जब वह अपने रोगियों की देखभाल तो मुझे उसके कमल में पानी का पात्र लेकर तैयार करा रहता पढ़ता तथा उसकी आवश्यकतानुसार उसे मदिरा, औषधि, मारूम या पट्टी उठाकर देनी होती थी। जब वह चाकू लेकर किसीका फोटा या घाब काटता तो मेरे लिए वह दृश्य रोमांचकारी न होना क्योंकि उन्हें देखने का मो मैं जैसे आदी हो गया था। परन्तु जब मैं उसका वर्णन अपने मापियों में करता तो जैसे वह मेरे सामने भय और आदर में झुक जाते थे। मेरा पिता अपने हर रोगी की गम्भीरतापूर्वक जाँच करता और था मो यह कहकर कि "तुम्हारा रोग अच्छा हो जाएगा," उन्हें दवा देता था फिर ताइपन पर 'जीवनगृह' लिखकर उन्हें देता कि वहाँ जाकर वा अपना टपान बरानें। जब ऐसा कोई रोगी उस ताइपन को लेकर मद्रि चला जाता तो वह मिर हिनाकर दीर्घ निश्वास छोड़ता और कह उठता "देखाए।"

परन्तु उसके पास सदा ही निर्धन रोगी नहीं आते थे। कभी-कभी आमदाम की रगझागाओं में से लोग वहाँ आते जो एक-दूसरे में लड़ने-चावस हो आते या कभी नीरिया के अहाड़ों के मालिक भी आते जिनका तो कोई फोटा होना या दाँत में दर्द होना। उनके बस्त्र उताप नहीं हुए थे बने होते थे। एक बार एक छनी मसाले वाले की स्त्री आई। वह आने वाले क हाथों में बहुतसारे नगी में जैसे आसूषण रहने हुए थी और बराहने हुए उसने अपने रोग को देर तक मेरे पिता से कहा-या : मैं अपने वह उबाहपान दोषों के समय जिनका आचरण हुआ था। पर जब मेरे पिता ने सब कुछ सुनकर ताइपन पर लिखना आरंभ किया

न जाने क्यों मुझे दुःख हुआ था और मेरे मुँह से चुपचाप 'बेचारी' शब्द निकल गया था। वह धबका गई और उसने मेरे पिता की ओर देखा। उसने एक पल पर पुराने अक्षरों में कुछ लिखा। फिर तैल और मदिरा को मिलाकर हिलाया और उस मूँचे पत्ते पर उसको डाल दिया। जब स्याही को मदिरा ने मिटा दिया तब उसने उस घोल को एक मिट्टी के पात्र में एकत्रित करके रोटिणी को दे दिया और कहा, "जब कभी सिर अथवा पेट में पीड़ा उठे तो इसमें से थोड़ा-थोड़ा करके पी लेना," स्त्री जब चली गई तो मैंने अपने पिता की ओर देखा, जो परेशान-सा दिखाई देता था। वह एक-आध बार ग्रासकर बोला, "कई रोग उस स्याही से ही दूर हो जाते हैं, त्रिगमे शक्तिशाली मंत्र लिखे जाते हैं।" इसमें आगे वह स्पष्ट कुछ भी नहीं बोला। मैंने सुना कि वह बड़बड़ाया था और उसने स्वतः कहा था, "कम से कम इसमें उगे हानि तो कुछ भी नहीं होगी।"

जब मैं मान बर्ष का हुआ तो मुझे लड़कों के पहनने का कटिबस्त्र मिल गया और तब मेरी माता मुझे लेकर मन्दिर में बलि देने गई। उन दिनों सम्पूर्ण मिय देश में धीबीज के अम्बन का मन्दिर सबसे बड़ा माना जाता था। नगर के मध्य में होना हुआ एक चौड़ा मार्ग जगन्मा की देवी के मन्दिर तथा कुच्छ में चक्कर मट्टी आना था, त्रिगके दोनों ओर परपर से लुटे हुए अग्नित मैदानों के गिर बाने मिट्ट खने हुए थे। मन्दिर का प्राकार विज्ञान था जो पक्की ईंटों का बना हुआ था। उसके अन्दर की गगनचुम्बी अट्टानिवाहू नगर के अन्दर बने हुए नगर का घास देनी थी, उनही ऊँची छतारियों पर रग-बिरने लगे कहराने रहने और दीर्घ ताम्र मिट्टी द्वारों के दोनों ओर मझाटों की विज्ञान प्रतिमाएँ लड़ी देवता का पहरा दिया बगनी थी।

जब हम मुख्य द्वार में होकर अन्दर चले तो 'भरे हुए थोथों' की विज्ञानों के देखने वाले ने सीपा के कपड़ों का पकड़कर सीपा और उसे वह विज्ञानों देखनी चाही। वह मुझे मन्दिर के अड़ई की दुःखान पर ले गई जहाँ पक्की के बड़े दान तथा अनुषर रखे हुए थे। त्रिगें अपने प्रिय की विज्ञान होनी तथा आ दुनगी बुनिया म दाम-दामियों में सेवित रहना चाहत वह उन मिलीनों को लगेदकर पुत्रारियों द्वारा उन्हें अभिमर्षित करा

वे देवता घर गये

लेने थे।

मेरी माता ने दर्शकों का शुल्क भर दिया और तब मैंने खेत, वन, घासी और कठोर हाथों वाले उन पुजारियों को देखा, जो एक ही हाथी बैल का सिर काट डालने थे। बैल के सींगों के बीच एक ताकतवान् बंधा हुआ होता जिसपर मुहर लगी हुई होती, जो इस बान का प्रतीक होता था। बैल हर प्रकार से बलि देने योग्य था तथा उसके जरीर में एक भी कण बाल नहीं था। पुजारी लोग मोटे और पवित्र होते थे और उनके घुटे हुए मिर तैल से चमका करने थे। उस उत्सव को देखने के लिए लगभग १० व्यक्ति एकत्रित हुए थे परन्तु पुजारियों ने उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया था। आपस में वह एक-दूसरे से पूरे समय तक अपने ही विषय पर बातें करते रहे थे। मैं दीवारों पर बनी युद्ध-सम्बन्धी तस्वीरों की तरफ रखा था और उन विभाजित स्तम्भों को देखकर आश्चर्य कर रहा था, जब तब मुझे तनिक भी ज्ञात नहीं था कि मेरी माता यह सब देखकर कितना भावुक हो उठी थी। परन्तु जब आँखों में आँसू भरे हुए मेरा हाथ पकड़े मुझे घर वापस ले गयी, तो मेरा मन ख़ाब हो गया था। घर आने के बाद उन्होंने मेरे बचपन के झूठे उतारकर मुझे नए झूठे पहनाए। यह मेरे मे लगने थे और इनमें मेरे छाले पड़ गए, परन्तु समय ने उन्हें पुराने और मेरा पैर तब जूनीका बाँधी हो गया।

भोजन के उपरान्त मेरे पिता ने सम्भोदना मुझ से मेरे सिर पर रखकर प्यार से पूछा था, “अब तू मिन्यूटे, तुम सात वर्ष के हो गए अब वनताओ तुम जीवन में क्या बनना चाहते हो?”

“एक सैनिक!” मैंने एकदम उत्तर दिया, पर जब मैंने उसके मुख पर मुनकर निराशा देखी तो मैं परेशान हो गया। उन दिनों जो भी सड़क पर सड़कों द्वारा खेले जाने यह सब सैनिकों के ही होते थे और अनिश्चित मैंने सैनिकों को कृष्ण लकड़ी और शिरश्चातों में पर लगाकर भी निकलते देखा था, जिनके पहिये जब राजपथ पर चलते तो ब की भाँति शबनम करते थे। यह सब मुझे अत्यन्त प्रभावित किए हुए थे इसी कारण मैंने भी सैनिक बनने की इच्छा प्रगट की थी। सबसे बड़ा यह था कि सैनिक को पढ़ने-लिखने की आवश्यकता नहीं थी और सि

पढ़ाई में मैं उतनी ही अरुचि रखता था जितना उस समय मेरी उम्र का कोई भी लड़का रखता था। मैंने सुना था कि अध्यापक लोग बड़ी बेदर्दी से छात्रों को मारते थे; खासकर जब उनके हाथों से कोई मिट्टी की तख्ती या वास की कलम टूट जाती थी। मैंने सुना था कि वे लोग लड़कों के सिर के बालों को पकड़कर खूब झोटा देते थे जिससे आँखों में से पानी बहने लग जाता था। मन्दिर के पुजारी तो जिसमें बहुत ही कठोर होने थे।

मेरे पिता ने मेरा उत्तर सुनकर थोड़ी देर बैठकर कुछ सोचा फिर मेरी माता से एक पात्र माँगा और उसमें सस्ती शराब भरकर वह मुझसे बोला, “सिन्धूहे पलो।” और मैं उसके साथ हो लिया।

नदी किनारे हम लोग जा रहे थे। एक स्थान पर जहाज से माल उतारा जा रहा था। बड़े-बड़े बक्सों और गाँठों को मजदूर अपनी सारी शक्ति लगाकर लुढ़का रहे थे। उनके शरीरों पर पसीना बह रहा था जो उनके मँल से मिलकर बहुत ही घृणित लग रहा था। आकाश में सूर्य डूब रहा था जिसके धूमिल प्रकाश में वह दृश्य बहुत ही बुरा लग रहा था। दूर पहाड़ों के पीछे ‘मृतको का नगर’ था जिसके पीछे सूर्य धीरे-धीरे उतर रहा था। मजदूर हाँफ रहे थे और उनमें से जब थककर कोई साँस लेने को तनिक ठहरता तो कामदार का तम्बा कोड़ा उसकी नग्न पीठ पर बेदर्दी से आ पड़ता और काम फिर चालू हो जाता था।

मेरे पिता ने हठात् उनकी ओर इशारा करते हुए मुझसे पूछा, “ऐसा बनना चाहोगे सिन्धूहे?”

मुझे उसका प्रश्न ही बेधा लगा क्योंकि भला वैसा मजदूर कौन बनना चाहता था? मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

मैग्मट फिर बहने लगा, “यह लोग भीर से रात तक कठोर परिश्रम करते हैं, इनकी खाल भगर की खाल जैसी कड़ी पड़ गई है और इनके पजे और पैर जैसे भगर के ही पजे हैं। जब अँधेरा फैल जाता है तभी इन्हें अपनी बच्ची और बदबूदार झोपड़ियों में जाने की आज्ञा मिल पाती है, जहाँ यह सूखी रोटी, प्याज और बेहद कड़वी मदिरा पीते हैं। मजदूरों, किसानों और हाथ से परिश्रम करने वालों का यही जीवन है, क्या इन्हें

देकर भी कोई रूपांतर कर सकता है ?”

मैंने सिर हिलाकर मना किया। परन्तु मैं अब भी आश्चर्य तो उभरे दे रहा था। मैंने कहा, “पिता ! मैंने तो मैनिश बनना चाहा था कि मर-दूर या विमान या वाणी भरने वाला। मैनिश तो पक्की इमारतों में रहता है और अच्छा खाता खाता है। माघवास के समय वह अच्छी मसिदा पीता सिचों के साथ रसमालाओं में हँसता-बोलता है। उनके मरदाने गले में सोने की जड़ीयें पहनने हैं हालाँकि वह चिमना-पड़ना नहीं जानते। पुनः से लौटकर वह इनका मुँह का सामान और इनके हाथ माथ लाने हैं। मेरा जीवन वह टाट से रहने है। दास उनके लिए भक्षण करने हैं और उनके व्यापार में उन्हें सहायता देने हैं। यदि मैंने ऐसी मूल में मैनिश बनना चाहा है तो बोन-मा कुछ काम कर दिया ?”

मेरे पिता ने कोई उत्तर नहीं दिया और तब वह मीघनापूर्वक पा ही बने हुए एक मिट्टी के ढेर पर चढ़ गया जहाँ कुछ-बराबर इनाम मिला पड़ा था कि वहाँ मस्जिदों के बहुत बिनबिना रहीं थी और बंदू आर भी। उसपर चढ़कर उमने झुककर पीछे बनी हुई एक बरखी ओपनी तरफ देखकर आवाज लगाई :

“इतब, मेरे मित्र ! क्या तुम घर में हो ?”

उस दउवे में से एक मुँह रेंगकर बाहर निकला। उसके हाथ में लकड़ी थी। उसका दाहिना हाथ कंधे के नीचे से बटा हुआ था। उसका कटिबन्ध मैंने में बड़ा हो गया था। उसके मुँह पर आँखों की छाया थी और मुँह में एक भी दाँत नहीं था।

“यह... यह इतब है ?” मैंने आश्चर्य से मुँह खोल दिया। और मुँह की ओर मय से देखने लगा। इतब तो वह प्रसिद्ध सेनानी था फ़राऊनों में सर्वश्रेष्ठ और महान् माने जाने वाले टोथेमिस तृतीय के रक्तकाल में हुए सीरिया के युद्ध में अद्भुत वीरता के साथ लड़ा था। शौर्य और शक्ति की क्यारें अब भी लोगों में प्रचलित थी। फ़राऊन अपने हाथ से उसे पालिओपक दिए थे।

मुँह ने सैनिक तरीके से हाथ उठाकर अभिवादन किया और पिता ने यह मसिदा का पात्र उसे दे दिया। फिर हम सब वहीं रुक

बैठ गए क्योंकि वहाँ एक पत्थर की चौकी भी नहीं थी। इन्व ने मदिरा का पात्र उठाकर मुँह से सगा लिया। वह उसकी एक बूंद भी नहीं फैलाना चाहता था। मतर्बता में उसके बूढ़ हाथ बाँप रहे थे।

“इनब, मेरे मित्र !” मेरे पिता ने मृस्कराकर कहना शुरू किया, “मेरा पुत्र सैनिक बनना चाहना है, और क्योंकि युद्धों के बीच तुम प्रचंड बीरता में सटे हो और सैनिक जीवन में पूर्णरूप में अवगमन हो अतएव, इसे मैं तुम्हारे पास लाया हूँ कि सैनिकों की टाटदार दिनचर्या और उनके रोष-दोष का तुम पूर्ण विवरण इसे सुनाओ।”

बूढ़ हँसा फिर लाँसकर उसने मेरी ओर घूरकर देखा, फिर बोला, “सेट, बाल और तमाम जैतानों की-कसम ! क्या यह लड़का पागल है ?”

मैं डर गया और अपने पिता के पीछे हो गया और मैंने उसकी बाँह पकड़ ली। इतब बोला :

“लड़के, लड़के मुन ! सैनिक बनने के दुर्भाग्य को जितनी बार मैंने कोसा है, जितनी बार उसके लिए मैंने अफसोस की साँसें ली हैं यदि उतनी ही बार मुझे मदिरा की एक-एक घूंट मिल जाती तो—तो निश्चय जान कि क़राऊन ने जो सील अपनी बुढ़िया के नाम पर बनाई है उसे मैं उस मदिरा से भर देता। इतनी अफसोस की साँसें ली हैं मैंने !”

वह फिर पीने लगा। मुझमें साहस का स्फुरण हुआ और मैंने काँपती आवाज़ में कहा, “परन्तु सैनिक का जीवन तो बहुत सम्मानित माना जाता है।”

“सम्मान ! क्याति ! यह सब मक्खियों की भिनभिनाहट है। क्याति के लिए कौन झूठ नहीं बोलता। और फिर मदिरा का प्याला पाने के लिए न जाने मैंने कितने झूठ बोले हैं। परन्तु तुम्हारा पिता सौधा-सादा आदमी है और इसे मैं धोखा नहीं देता। अतएव मेरे बेटे ! मैं तुमसे यह कहता हूँ कि सब धंधों में सैनिक का धंधा सबसे नीचा है—यह बहुत ही घटिया और गिरा हुआ है।”

मदिरा में आँखें चमकने लग गई थी। उसने अपनी गर्दन पर हाथ रखकर फिर कहा, “इस चीवा को देखो ! इसमें किसी समय क़राऊन ने अपने हाथों में पँचलड़ी सोने की खंजीर सटवाई थी। उसके शिविर के

सामने शत्रुओं के हाथ काट-काटकर जो डेर में लगाया था वही कौन भगा सकता है ? कौन था वह पहला व्यक्ति जिसने कादेश की ऊँची दीवार लौंघी थी और कौन था वह खीर जो बिघाड़ते हुए हाथी के समान शत्रु की सेना में घुस गया था ? वह मैं—मैं इतब था—जो युद्ध में प्रचंड वीर माना जाता था । परन्तु अब मुझे कौन इन सब बातों के लिए धन्यवाद देने आता है ? मेरा मोना जैसे आधा था जैसे ही चला गया और क्षम या तो मर गए या भाग गए । मेरा दायाँ हाथ मितलनी के देश में रह गया और अब यदि मेरे पड़ोसी उदारतत्पूर्वक खाने को मुर्गी मछलियाँ और पीने को मदिरा न देने तो निश्चय ही मैं भूखो मर जाता । मेरा जीवन, मेरी शक्ति, सब रंगिस्तान में समाप्त हो गई और मैं आपत्तियों को सहन करने-करने ऐसा टूट गया । और मैं फिर भी ई इतब—युद्ध का विजेता इनब, जो पड़ोसियों की हत्या का पात्र बना हुआ हूँ । जब मेरा हाथ काटा गया था तो मुझे चिलनी पीडा हुई थी, यह मैं उन्हें कौन-से शब्दों में बजाऊँ... मैंभट, तुम सबमुख बितने अश्वे आदमी हो, परन्तु मदिरा तो समाप्त हो गई...” और वह लामोस हो गया । उसकी साँस चलने लगी । उसने बह मिट्टी का पात्र दो-बार बार उपटा-नीचा किया और फिर उसे रख दिया । उसकी आँखें आग के गोमो की तरह सात हो उठी थी और मैंने देखा कि वह एक बार फिर बहो दुःखी बुझा गया था ।

“परन्तु मीनिक के लिए निखना-पड़ना तो आवश्यक नहीं है ।” मैंने पुनःपुनः कहते-कहते कहा ।

“हूँ ।” यह सुनकर वह बीना और उसने मेरे गिरा की ओर देखा जिनमें बन्दी में एक लड़की की खूबी अपनी बांह में उतारकर उसे दे दी । इनब ने ओर में आवाज मगाई और एक बड़ा बाला लड़का भागकर सामने आ गया । इनब से उस बूढ़ी को तथा उस मिट्टी के पात्र को लेकर वह लम्बूगाने में मदिरा खाने चला गया । इनब पीछे में बिम्बाया, “सच्ची माला जो बायीं भाए... बीमनी न माना ।” फिर मेरी ओर देखकर बोला, “यह माल है कि मीनिक बाहे तो न पड़े और बेचन मरे । परन्तु यदि वह बिर-पड़ सकता है तो पदाधिकारी बन जाता है और तब उसके बीच कई चीर काय करते हैं, उसकी आका का पालन करने हैं । उन्हें बहो दुःख में

अपनी आज्ञा से भेजता है। जो लिख-पढ़ नहीं सकता वह आज्ञा दे नहीं सकता, कभी नहीं। गले में सोने की जड़ीरें पहनने में भी क्या मजा है, जबकि दूसरा व्यक्ति हाथ में लाल कलम लेकर आज्ञा प्रदान किया करता है ? अतएव लड़के ! पढ़ो, बिना पढ़े सेना में भी सम्मान प्राप्त नहीं होता। यदि पढ़ गए तो सेना में भी दास तुम्हें कुर्सी पर बिठाकर युद्धभूमि में आज्ञा प्रदान करने ले जाएँगे अन्यथा तुम्हें कोई कही नहीं पूछेगा।”

इंतब की मदिरा आ गई थी। जय में अपने पिता के साथ सीटा, मेरी सैनिक बनने की इच्छा गायब हो चुकी थी।

मेरा पिता मुझे मंदिर की महंगी पाठशाला में भेजते में असमर्थ था जहाँ रईसों के, सामन्तों के तथा पुजारियों के लड़के, और कभी-कभी लड़कियाँ भी पढ़ने जाया करती थीं। मैं 'ओनेह' के पास पढ़ने जाने लगा, जिसका घर हमारे घर के पास ही था। वह अपने दूटे हुए तिबारे में हमें, कईयों को बिठाकर पढ़ाया करता था। इस पाठशाला में कारीगरों, सौदागरों, जहाजी मल्लाहों और नीचे पदाधिकारियों के बच्चे ही पढ़ते थे, शिनका सबसे बड़ा उद्देश्य अपने पुत्रों को सेना बनाने का होता। उसका खर्चा भी बहुत कम था। विद्यार्थियों को ही उसका पूरा खर्च चसाना पड़ता था। अनाज वाले का पुत्र उसके लिए आटा ला देता, तो कोयले वाले का पुत्र कोयला ला देता। इसी प्रकार हर एक कुछ न कुछ उसे देता और वह हमें पढ़ाता। इस प्रकार की सैकड़ों पाठशालाएँ उन दिनों धीवीज में चलती थी। हमारा गुरु ओनेह पहले मन्दिर में भौकर था और प्रारंभिक शिक्षा देने के लिए पूर्ण योग्य था। सभी की भाँति मेरा पिता उसका मुफ्त इलाज करता और उसे अच्छी और पौष्टिक औषधियाँ दिया करता था।

हमारा यह गुरु हमें गसतियों पर कभी न मारता। यदि कोई शराब वाले का लड़का किसी दिन अपनी पट्टी पर सोता रह जाता तो उसे दूसरी सुबह ओनेह के लिए एक पात्र मदिरा सानी होती। इसी प्रकार हर कोई उसे कुछ न कुछ देकर खुश रखता था। और मदिरा पीकर जब वह पढ़

हमें समार की और सृष्टि की विचित्र कथाएँ सुनाने लगता तो हम सभी अपने अरविन्दर पाठ की भूलकर एकाग्रचित्त में उसकी बातें सुनने लगते। वह हमें समार की गतिविधि बताना, 'प्राह' तथा उसके माथी देवताओं का वर्णन करता और बताता कि किस प्रकार सभी लोगों को आगिर में ओगिरिस के ऊँचे सिंहासन के सम्मुख न्याय के हेतु जाना पड़ता है। जो व्यक्ति गीदह्मुसी देवता के न्याय में दोषी ठहरता था वह 'साने बाने देवता' के सामने पेंक दिया जाता था। यह देवता जो एक ही साथ मगर और समुद्री घोड़े जैसे रूप का होता था, उसे ला जाया था। और जब मनुष्य मृत्यु के उपरान्त उन देवी क्षेत्रों में जाने लगता तो बीच में उसे एक नदी मिलती जिसका जल बाला होता था। उसमें केवल एक ही नाव होनी थी जिसका मल्लाह उन्टी छारा देखकर नाव लेता। नील में जिस प्रकार नाविक मीछ देखकर नाव चलाता है वह उस प्रकार नहीं लेता। और सबसे बड़ी बात तो यह कि वह छोटी से छोटी दस्तगी भी पकड़ लेता है। उसमें बचकर कोई नहीं निभम सकता। और गसती पकड़ जाने पर वह बुरी मौत मार देता है। उन दिनों हम समझते थे कि वह मदिरा के नशे में बहककर ऐसी बातें किया करता था, परन्तु बाद में पता चला कि वह किन्ना जतुर अध्यापक था जिसने उस छुटपन में ही हमें देग की तमाम सृष्टि से, यों कहानियाँ सुनाकर ही, अवगत कर दिया। मैंने कुछ वर्षों तक उस पाठशाला में विद्याभ्यस्य किया। वहाँ मेरा सबसे गहरा दोस्त 'टीपिमीड' था, जो मुझसे एक-आध साल बड़ा था, परन्तु छुटपन से ही उसने घोड़े की सवारी सीख रखी थी। उसका पिता रघुसने के एक रिस्ते में तबि के तारो से मड़ी हुई चाबुक धारण करने वाला हाकिम था और वह चाहता था कि उसका पुत्र ऊँचा पदाधिकारी बने। इसीलिए उसने उसे पढ़ने बिठाया था। परन्तु उसके 'नाम' से उसका भविष्य भिन्न था। जब उसे अक्षर ज्ञान हो गया तो भाला पेंकना, घुड़सवारी करना तथा रघ दौड़ाना—इन सब बातों में उसकी रुचि बिल्कुल नहीं रही। वह अपनी मिट्टी की लकड़ी पर चित्र बनाने लगा। बड़ी आसानी से वह रघ, घोड़े, लहने हुए सैनिकों के दृश्य बना लेता था। वह पाठशाला में अपने साथ मिट्टी सानकर लाता और जबकि 'ओनेह' नशे में चूर होकर कहानियाँ

अपनी आज्ञा से भेजता है। जो लिख-पढ़ नहीं सकता वह आज्ञा दे नहीं सकता, कभी नहीं। गले में सोने की जंजीर पहनने में भी क्या मजा है, जबकि दूसरा व्यक्ति हाथ में ताल कलम लेकर आज्ञा प्रदान किया करता है? अतएव लड़के। पढ़ो, बिना पढ़े सेना में भी सम्मान प्राप्त नहीं होता। यदि पढ़ गए तो सेना में भी दास तुम्हें कुर्मी पर बिठाकर युद्धभूमि में आज्ञा प्रदान करने लें जाएँगे अन्यथा तुम्हें कोई बही नहीं पूछेगा।”

इसकी मदिरा आ गई थी। जब मैं अपने पिता के साथ लौटा, मेरी नैनिक बनने की इच्छा गायब हो चुकी थी।

मेरा पिता मुझे मंदिर की महंगी पाठशाला में भेजने में असमर्थ था जहाँ रईसों के, सामन्तों के तथा पुजारियों के लड़के, और कभी-कभी लड़कियाँ भी पढ़ने जाया करती थी। मैं 'ओनेह' के पास पढ़ने जाने लगा, जिसका घर हमारे घर के पास ही था। वह अपने दूटे हुए तिवारे में हमें, कईयों को बिठाकर पढ़ाया करता था। इस पाठशाला में कारीगरों, सौदागरों, जहाजी मल्लाहों और नीचे पदाधिकारियों के बच्चे ही पढ़ते थे, जिनका सबसे बड़ा उद्देश्य अपने पुत्रों को लेखक बनाने का होता। उसका खर्चा भी बहुत कम था। विद्यार्थियों को ही उसका पूरा खर्च चलाना पड़ता था। अनाज वाले का पुत्र उसके लिए आटा ला देता, तो कौमल वाले का पुत्र बीमला ला देता। इसी प्रकार हर एक कुछ न कुछ उसे देता और वह हमें पढ़ाता। इस प्रकार की सैकड़ों पाठशालाएँ उन दिनों भीबीज में धनती थी। हमारा गुरु ओनेह पहले मन्दिर में नौकर था और प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिए पूर्ण योग्य था। सभीकी भाँति मेरा पिता उसका मुफ्त इलाज करता और उसे अच्छी और पौष्टिक औषधि भी दिया करता था।

हमारा यह गुरु हमें गलतियों पर कभी न धरता। यदि कोई शराब वाले का लड़का किसी दिन अपनी पट्टी पर सोता रह जाता तो उसे दूसरी सुबह ओनेह के लिए एक पात्र मदिरा लानी होती। इसी प्रकार हर कोई उसे कुछ न कुछ देकर सुश्रुत रहता था। और मदिरा पीकर जब वह बूढ़

हमें मसार की ओर मृष्टि की विचित्र कथाएँ सुनाने लगता तो हम सभी अपने अद्विकार पाठ को भूलकर एकाग्र चित्त से उसकी बातें सुनने लगते। वह हमें संसार की गतिविधि बताता, 'प्ताह' तथा उसके साथी देवताओं का वर्णन करता और बताता कि किस प्रकार सभी लोगों को आखिर में ओमिरिस के ऊँचे सिंहासन के सम्मुख न्याय के हेतु जाना पड़ता है। जो ध्वजिन गौददमुखी देवता के न्याय में बोधी टहरता था वह 'जाने वाले देवता' के सामने फँक दिया जाता था। वह देवता जो एक ही साथ मगर और समुद्री घोड़े जैसे रूप का होता था, उसे खा जाता था। और जब मनुष्य मृत्यु के उपरान्त उन देवी क्षेत्रों में जाने लगता तो बीच में उसे एक नदी मिलती जिसका जल कासा होता था। उसमें केवल एक ही नाव होती थी जिसका मस्ताह उल्टी धारा देखकर नाव सेता। नील में जिस प्रकार नाविक सीध देखकर नाव चलाता है वह उस प्रकार नहीं सेता। और सबसे बड़ी बात तो यह कि वह छोटी से छोटी गलती भी पकड़ लेता है। उसमें बचकर कोई नहीं निकल सकता। और गलती पकड़ जाने पर वह बुरी मौत मार देता है। उन दिनों हम समझते थे कि वह मदिरा के नशे में बहककर ऐसी बातें किया करता था, परन्तु बाद में पता चला कि वह जितना चतुर अध्यापक था जिसने उस छुटपन में ही हमें देश की तमाम संहति से, यों कहानियाँ सुनाकर ही, अवगत कर दिया। मैंने कुछ बपों तक उस पाठशाला में विद्याध्ययन किया। वहाँ मेरा सबसे गहुरा दोस्त 'टोधिमीर' था, जो मुझमें एक-आध माल बड़ा था, परन्तु छुटपन से ही उसने घोड़े की सवारी सीख रखी थी। उसका पिता रघुवानि के एक रिजालि में तबि के सारों से मड़ी हुई धातुक धारण करने वाला हाकिम था और वह चाहता था कि उसका पुत्र ऊँचा पदाधिकारी बने। इसीलिए उसने उसे पढ़ने बिठाया था। परन्तु उसने 'नाम' से उसका भविष्य भिन्न था। जब उसे अक्षर ज्ञान हो गया तो जाला फेंकना, धुइसवारी करना तथा रथ दौड़ाना—इन सब बातों में उसकी रचि बिल्कुल नहीं रही। वह अपनी मिट्टी की लछी पर चित्र बनाने लगा। बड़ी आसानों में वह रथ, घोड़े, सड़ने हुए सैनिकों के दृश्य बना लेता था। वह पाठशाला में अपने साथ मिट्टी मानकर लाता और जबकि 'बोनेह' नशे में चूर होकर कहानियाँ

मुनाना तो वह उस मिट्टी में उसका रूप गढ़ना। एक बार उसने उसे ऐसा बनाया कि उसे 'साने वाला देवता' निगल रहा था। परन्तु हमारे गुरु ने उसे देखकर भी उसपर क्रोध नहीं किया। 'टोपिमिज' में वास्तव में कोई भी गुस्सा नहीं हो सकता था। उसके हँसमुख चेहरे की देखकर सभी प्रसन्न हो उठते थे।

तीन साल के अन्दर मैं पुस्तकें पढ़ने लायक हो गया और हिज्जे भी ठीक कर लेता था। और तब मैंने अनुभव किया कि मैं और लड़कों में शरीर में कितना भिन्न था। मेरे हाथ-पाँव पतले और मुडौल मर्म थे और मेरा चेहरा भी मुना हुआ था। मेरा रंग गोरा था और मैं रईमों के लड़कों में केवल वस्त्र देखकर ही अलग पहचाना जा सकता था। एक अनाज बेचने वाले के लड़के ने मेरे गले में एक दिन हाथ डालकर कहा था कि मैं लड़की जैसा लगता था और तब मुझे उसे अपनी लकड़ी से मारना पड़ा था। उसके शरीर की बदबू भी मुझे पसन्द नहीं थी। परन्तु टोपिमिज मुझे बहुत अच्छा लगता जो मुझे कभी न छूता। उसने एक दिन शमनि हुए मुझमें कहा, "अगर तুম बैठकर मुझे मूर्ति बनाने दो तो मैं तुम्हारी मूर्ति बना दूँगा।"

मैं उसे अपने घर लिववा ले गया और साईकोमोर के पेड़ के नीचे बैठकर मैंने उसे मूर्ति बनाने दी। जब वह मूर्ति बना चुका तो उसने मूर्तिके नीचे मेरा नाम भी गोद दिया। मेरी माता हमारे लिए रोटियाँ तैककर जब बाहर आई तो उसने उसे देखकर भयभीत स्वर में कहा : "यह जादूगरी है!" परन्तु पिता ने आकर उसकी तारीफ की और कहा : "अगर यह मन्दिर की पाठशाला में पढ़ जाय तो निश्चय ही राजघराने में कत्ताकार नियुक्त हो जाय," और तब मैंने उपहास में अपने घुटनों की सीध में हाथ फेलाकर उसका अभिवादन किया था जैसे मैं किसी बहुत ही बड़े आदमी का अभिवादन कर रहा था। एक बार उसके नेत्रों में चमक आ गई, पर फिर वह निराश होकर बोला : "ऐसा शायद कभी नहीं हो सकेगा। मेरे पिता मुझे रथवानों की विद्या सीखने सेना में भेजना चाहते हैं।" पिता के चले जाने के बाद मेरी माता बड़बड़ाती हुई रसोईपर में चली गई और तब हम उन चिकनी और अच्छी स्वादिष्ट रोटियों को खाने लगे।

बे देवता मर गये

मैं तब भी बिना मुसीबत

6989

और एक दिन मेरा पिता अपनी मर्ने जल्दी घोषणा करने पर
मर गया। मैंने वह मन्दिर और पुजारियों के प्रति खड़ा रहने वाले
मनुष्यों में नहीं था; परन्तु उन दिनों सम्पूर्ण विश्व में मन्दिर के पुजारियों
के बिना कुछ हो ही नहीं सकता था। सारी नौकरियों, सारी सम्प-
त्ति वही में चलती थी। ऐसा अधिकार था उनका कि यदि कोई
साहसी व्यक्ति, जिसके विरुद्ध स्वयं पराक्रम के दरबार में कोई पैमाना दिया
गया हो, उनमें मिलकर, या उनके यहाँ पुनः न्याय माँगकर, छुट सकता
था। पुजारी लोग नदी की बाढ़ के बारे में अधिकारवादी किया करने, और
उसीके अनुसार आने वाली फसल पर लगान बाँध दिया जाता था। मेरा
पिता मेरी उन्नति के लिए ही वहाँ मुझे लेकर गया था। वह और निर्धन
व्यक्तियों की भाँति राज्य विधान-बदा के बाहर प्रतीक्षा में खड़ा था। वहाँ
दूर-दूर से लोग अपनी रोटियाँ साथ बाँध कर लाये थे और उन मोटे और
मैल में चिकने पुजारियों में एक क्षण मिलने के लिए बाहर पड़े थे। वह
करवानों, भुक्तियों इत्यादि को रिश्वतें देते कि वह उन्हें किसी भी भाँति उन
पवित्र पुजारियों के समक्ष जाने का अवसर प्रदान कर दें। और जब वह
पुजारी के सामने खड़े होकर निवेदन करते तो वह उनके शरीर की गंध में
नाक सिकोड़ता और उन्हें फटकार लगाता। अम्बन की मरने दिनोंदिन
बढ़ती जाती थी और साथ ही साथ वहाँ नौकरों की अधिक से अधिक
आवश्यकता होती। मेरा पिता मेरे लिए उस तमाम अवमान को पीकर
प्रतीक्षा में खड़ा था। परन्तु वह था मामूली नौकरों की प्रतीक्षा
करने के उपरान्त उसे उसका पुराना सहपाठी 'फर्नहैं' वहाँ मिल गया, जो
पराक्रम के राजपराने में 'मिराजोर्न' वाला जर्जर बन गया था।
उसके वहाँ बड़े ठाढ़ थे। मेरे पिता ने साहस करके उसका ध्यान अपनी
ओर आकर्षित किया। वह उसे देखकर खुश हुआ और उसने मेरे घर
आकर हमें सम्मानित करने का वचन दिया।

निश्चिन्त दिन मेरा पिता एक बहिया बनाया लाया और उसने उस दिन

उत्तम मदिरा भी खरीदी । मेरी माता ने वह बनस अत्यन्त सावधानी से मकान में भूनकर, बनाई और वह रोटियाँ सेकने लगी । सब बनस खर्ची की गुग्गुलु सड़क पर फैली तो भित्तारी हमारे द्वार पर एकत्रि होकर गाना गाने लगे और दावत में मे अपना हिस्सा मागने लगे । तब मैं माता झुट्ट हो उठी और उसने रोटी में वह खर्ची लगाकर एक-एक टुकड़ा उन सबको देकर उन्हें भगाया । टोपिमीड और मैंने घर में बाहर ता मद्रक भी भाड़ू में गाफ कर दी थी । मेरे पिता ने टोपिमीड से कहा था कि वह भी हमारे बहरी हो दूँ जाये, क्योंकि जो सम्मानित व्यक्ति आने वाल था, मायद वह 'उमपर भी मेहरबान हो उठे और उसका भविष्य उज्ज्वल बना दे । उस समय बैसे तो हम सबके ही थे, पर कमरे में पिता द्वारा जलाई हुए गन्धाधार में उड़ते हुए धुएँ की देनकर हमारे हृदयों में एक प्रकार का भय समा गया था जैसे हम किसी मन्दिर में लड़े थे । मुकामिल तब भी उस शुभ बाहर पर मैं हम मस्तिष्कों उठा रहे थे, जिन्हे बास्मन में मेरे माता ने अपनी मृगु के उपराज आने बज्जल के लिए रण छोड़ा था, इस समय वह लाहौर के तीर्थस्थ के काम के लिए रखा गया था ।

हमें बहुत देर प्रतीक्षा करनी पड़ी । गुरत छिन गया और हवा गर्म हो गई । द्वार पर मैं अगस्त्यम सब उठ गया और बगल टण्डी हो गई । मुझे भूख लगने लगी और बीटा का मूत्र सम्बा हो गया । पिता बिना बोले हुए प्रन्धवार में ही बीटा रहा । हम सब एक-दूसरे की दृष्टि बचाए चुपचाप बैठे रहे और तब मुझे अनुभव हुआ कि धनवान और शक्तिशाली लोग अपनी सम्पत्तियों में निधनों के लिए बिनती निराशा और निराशा दुःख प्रकट कर लवने हैं ।

प्रतिनकार मद्रक पर दूर घणाय खनकी और उनके प्रकाश में हमने देखा कि कोई कुर्मी पर बीटा का रण था । पिता मद्रक पर मोईरा में गया । और बग में खनकी हुई लवही लाकर उसने दोनों दीप खनारे । मैं कल्पे हने से डर का पाव उठाया और टोपिमीड में गहना खान छोड़ा ।

'खनकी' दिवसुम मारे तरुके में जाता । उनकी कुर्मी को दो हफ्ते तक उठाकर रण और उनके आने-आने एक मोटा धारनी सम्पत्त मेहर जाता था जो खदिरा के नडे में खूब था । वह वह गाद-दी-गाद था

रह चुसीं ने उतरा तो उसने खुशी से चिल्लाकर मेरे पिता से प्रेम का दर्शन किया। मेरे पिता ने घुटनों की सीध में हाथ फैलाकर और गिर जाकर उसका अभिवादन किया। प्लाहौर ने उसके कंधों पर हाथ रख दिये कि वह शिष्टाचार को मित्र के घर में व्यर्थ समझना था। उसने बैसे ही मेरे पिता के कंधों पर हाथ रखे हुए उस भगालजी के एक लान मारी और समने बोला, "बस, उस साईकोमोर के नीचे सो जा।" हस्त्रियो ने आज्ञा की त्नीक्षा न करते हुए ही कुसीं को एकेग्रियर के पास पटक दिया और वह भूमि पर बैठ गए। जब वह अन्दर आया तो मैंने उसके हाथ धुलवाये और कर उनके कहने पर उन्हें पोंछ भी दिया। मुझे देखकर उसने कहा, "कितना सुन्दर लड़का है।" जब कमरे के अन्दर पीछदार कुसीं पर, जिसे धना ने एक परबूनिये से उधार ले लिया था, वह टिक गया। उसने चारों ओर देखकर कहा, "माया से मेरा कण्ठ सूख गया है, कृपया मुझे कुछ पीने दो..." इनने मे ही मेरे पिता ने एकदम उठकर खुशी-खुशी मदिरा का पात्र उठाया गिलास उसके सामने रख दिये। फिर बड़े अदब के साथ उसका गेपास भर दिया। उसने वह मदिरा घटिया जानकर पहले सगर्जित होकर थोड़ी-सी चखी फिर जब उसे अच्छा पाया तो वह निश्चिन्त होकर पीने लगा।

वह छोटे कद का सुबला-यतला सिर मुड़ा हुआ आदमी था। जिसका त्रिकला हुआ पेट और घेंसा हुआ सीना उसके महीन वस्त्रों में से बेझील होकर चमक रहा था। उसके गले में जो जडाऊ पट्टा था वह भी और वस्त्रों की भाँति अब सिकुड़ गया था। उसके शरीर से स्वेद, मदिरा और तैल की गंध आ रही थी।

कीपा ने उसके सामने छोटी-छोटी रोटियाँ, और तैल में तली हुई मछलियाँ, फल और भुनी हुई वह वस्तु रख दी। उसने बहुत ही दिनभरा भाव से उन्हें खाया। गोकि ऐसा साफ लग रहा था कि वह खाना खाकर ही थापा था क्योंकि उसने अधिक कुछ नहीं खाया। परन्तु उसने एक-एक पीय की तारीफ की और कीपा उस प्रशंसा को सुनकर बहुत खुश हुई। उसके कहने पर उन हज्जी दासों के लिए मैं मदिरा और मांस लेकर बाहर गया परन्तु उन्होंने उसका उत्तर गालियों से देकर चिल्लाकर कहा

उत्तम मदिरा भी खरीदी । मेरी -
 मकलन में भूनकर, बनाई औः
 चर्वी की सुगन्ध सड़क पर फैल
 होकर गाना गाने लगे और दाद
 माता क्रुद्ध हो उठी और उसने
 उन सबको देकर उन्हें भगाय
 सड़क भी झाड़ू से साफ कर
 वह भी हमारे वहाँ ही रुक :
 था, शायद वह उसपर भी :
 बना दे । उस समय वैसे तो :
 हुए गन्धाधार से उड़ते हुए
 भय समा गया था जैसे हम
 उस शुभ्र चादर पर से हम :
 माना ने अपनी मृत्यु के द
 समय वह प्लाहीर

हमें बहुत दे
 गई । द्वार पर
 भूख लगने
 अन्धकार
 बैठे रहे

एक रोगी टीक भी कर दिया," हैमकर प्लाहीर ने बावब जोड़ा, "तो सोंग मेरी तारीफ करने लगने है। वह यह भूल जाने है कि मेरे हाथों उनकी मृत्यु निश्चिन होनी है—कोई एक फराउन भी मेरे द्वारा मिर मोलने के बाद मोन दिन नहीं जिया। मेरे हाथ मनुष्य की पीडा का अन्त कर देने है क्योंकि तब मनुष्य बाकी हो नहीं रहना—वह मर जाता है। सोंग समझने है मैं बडा जानी, और मुझमे मय खाने है, मेरे बिछड़ बोलने का साहम नहीं करने, परन्तु मैं जानता है कि इस दुखोसले के पीछे कितना दुःख है, कितनी असह्य पीडा है।" और प्लाहीर भावुकता में रोने लगा। उसने देर तक रोने के उपरान्त कीपा के कपन के लिए रगे गए उस कपडे से नाक साफ कर दी। फिर वह बोला

"सैम्यट, मेरे मित्र ! तुम सच्चे आदमी हो, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, और मैं...मैं सडा हुआ हूँ...युगिन व्यक्ति...दीस का गोबर ! और कुछ नहीं।"

और फिर वह सोंग गाना गाने लगे। प्लाहीर ने मस्ती में झूमकर मदिग अपने ऊपर उठेल सी। कीपा रसोईघर में खोर से रोने लगी और उसने रात अपने मिर पर डाल सी। हम दोनों ने तब उन दोनों को उठाकर पर्वग पर डाल दिया जहाँ वह एक-दूसरे में लिपटकर अमन्त बाल तक मैत्री की शपथ लेने हुए सो गए।

जब टोधिमीय और मैं सोये तो वह, क्योंकि थोड़ी मदिरा पी गया था, पुबलियों की बात करने लगा। परन्तु क्योंकि मैं उससे छोटा था और समझना भी नहीं था, उस विषय में कुछ आनन्द न ले सका। हल्की गान्नी-गान्नी करके कुर्मी उठाकर भाग गए थे। मंगालची नीचे खुरटि भर रहा था।

भोर में सयल के कमरे में जब सटपट झुंझ हुई तो मैंने जाकर देखा। प्लाहीर भूमि पर मिर पकड़े बैठा था। शायद रात वह पर्वग से नीचे गिर गया था और वही सो गया था। मेरा पिता अब भी सो रहा था। प्लाहीर ने कराहकर पूछा - "मैं वहाँ हूँ?" मैंने मुस्कराकर अदब के साथ कहा, "थीमान् आप सैम्यट बैठ के घर पर है।" सुनकर जैसे उसे इतमीनान हो गया। उसने थोड़ी मदिरा माँधी और तब मैंने उससे कहा कि सम्पूर्ण पात्र

ही गान उमने ऊपर उठेन निजा था — वह उठा और उमने मुझसे पानी मांगा । मैंने उसके हाथ, उमरा मिर तथा गर्दन, चेहरा सब धुलवाए और फिर उसे कुछ गट्टा दूध और नमक लगी मछली दी, जिन्हें खाकर वह भगने को वह स्वस्थ अनुभव करने लगा । हड़ान् उमरी दृष्टि साईकोमोर के नीचे गोंते हुए भगने अनुत्तर पर गडी और वह डंडा लेकर उग पर लपका और लगा उसे मारने । वह हड़कड़ाकर उठ बैठा । पर प्लाहौर उसे मारता ही रहा । वह बोला "बघीने मूअर ! क्या इसी भाँति तू भगने स्वामी की चिन्ता करता है ? कहीं है मेरे लिए मूअर वस्त्र और कहीं है मेरी कुर्मी और कहीं है मेरी ओषधियों की टोंकरी ? बरमान और ! क्या हट मेरी बर्तनों के सामने में !

और लड़े हाकर निराल भाव से बोला मैं मूअर हूँ, मैं भोर हूँ, पर अब धीमान् आता है कि मूअर करना क्या होगा । प्लाहौर ने तब उसे कुर्मी गान की आज्ञा दी । तब वह चला गया नावत साईकोमोर की छाया में बैठकर बर्तिया गुनगुनाने लगा ।

अन्तर कमरे में बीपा की जोर डार की बाजी सुनाई दी । वह गायक बिना को बटवार गीत दी आ अब भी वहाँ सा रहा था । तब बिना बाहर निजला ता वह मूअर वस्त्र धारण किए हुए था और अत्यन्त गम्भीर था ।

प्लाहौर हमें बर्तिया मुना-मुनाकर उसकी व्याख्या कर रहा था । बिपद था कि बिम उबार एक सुन्दरी गनी ने भार के समय कमल के कानों में धरे हुए लताकर से स्नान किया । हम वह सब बाने जैसे कि प्राय सबको को उस आनु में अच्छी लगती है, बहुत आई ।

तब बिना सामने आता ना अपनी गल की बरत दूर बना का दिगान के दिग, क्योंकि इसका ना उस आनु में मैं भी लगता लगा था, वह हमने कहा "सुन्दरी कुछ सुन्दर है । क्या यह दुल्हा ही सुंदमान भी है, मैं समझ में कैसे ? क्या इसकी आँखों की आँखें भी इससे लाल की आँखों से हैं ?

और हम बरतों के दिगों की बर्तियाँ लेकर बैठ गए, प्लाहौर ने सब एक बर्तियाँ बरतों का हृदय बर्तियाँ कर दिगों, मुना, वह बर्तियाँ बरतों से दूर है

‘हे युवक ! यौवन में मौज उड़ा
 क्योंकि बुढ़ापे में तो गला राख से भर जाता है
 जो शरीर मसाले लगाकर कब्र में रखा रहता है
 वह उस अन्धकार में नहीं मुस्कराता !’

मैंने उस कविता को हर तरह के नये और पुराने बख़रों में निखा और
 फिर बिचकारी करके उस कविता के माज को दर्शाया। जब मैंने अपनी
 सखी प्लाहौर को दिखाई तो उसमें वह एक भी गलती नहीं निकाल
 सका। मैंने देखा मेरा पिता गर्व में फूला नहीं समा रहा था।

“और दूसरा सड़का ?” प्लाहौर बोला, पर टोथिमोज ने अपनी
 पट्टी दिखाने में आनाकानी की। परन्तु दो-एक बार कहने पर उसे दिखाना
 पड़ा। उसमें एक तरफ प्लाहौर को अपने गले का पट्टा मेरे पिता के गले
 में बाँधता हुआ दिखाया गया था, बीच में प्लाहौर अपने ऊपर मदिरा
 उँडेल रहा था और तीसरी सखीर में प्लाहौर और सैन्मट गले में हाथ
 डाले गाना गा रहे थे। देखकर मुझे जोर की हँसी छूटी, परन्तु भय में मैंने
 उसे रोक लिया।

प्लाहौर उन चित्रों को देर तक देखता रहा। फिर उसने ध्यानपूर्वक
 मेरे मित्र को देखा। टोथिमोज धक्का गया था और अपनी धक्काहट को
 पओ के बल लड़े होकर छिपाने की कोशिश कर रहा था। अन्त में प्लाहौर
 ने पूछा :

“इन चित्रों का क्या मूल्य लोने ?”

टोथिमोज का मुख ताल हो उठा और उसने उत्तर दिया, “यह
 बिकाऊ नहीं है, परन्तु इन्हे मैं बीसे ही अपने मित्र को दे सकता हूँ।” मृत-
 कर प्लाहौर हँसा और बोला : “अच्छा तो हम-तुम मित्र हैं और अब यह
 चित्र मेरे हो गए।” और उसने उन्हें एक बार फिर और से देखने के बाद
 भूमि पर दे मारा और उस मिट्टी की तछी को चूर-चूर कर दिया। हम
 सब चौक उठे और टोथिमोज ने कहा : “ओमान् यदि आप इसमें बुरा
 मान गए हो तो क्षमा करें।”

हँसकर प्लाहौर ने उत्तर दिया : “पानी में अपनी परछाईं देखकर मैं
 पानी पर तो क्रुद्ध नहीं होता, और यह मैं जानता हूँ कि बलाकार के हाथ

इन सम्बन्ध में पानी से भी तेज होते हैं। अब मुझे यह तो पता चल गया है कि वन में कैसा लग रहा था...परन्तु मैं यह नहीं चाहता कि लोग मेरा यह रूप देखें, इसीलिए इसे मैंने तोड़ दिया है निश्चय ही तुम अच्छे कलाकार हो।”

टोचिमोड़ गुनकर खुशी से उछल पड़ा।

प्लाहीर ने हँसकर मेरी ओर इशारा करके कहा, “मैं इसका इलाज करूँगा।”

और फिर टोचिमोड़ की ओर इशारा करके कहा “इसके लिए मैं जो कुछ कर सकता हूँ, करूँगा।” और फिर वह अपने पेजे की भाँति करने लगे और देर तक हँसते रहे। फिर मेरे पिता ने मुझसे मेरे सिर पर हाथ रखकर पूछा - “मिन्यूहे, मेरे बेटे ! क्या तुम मेरी तरह बीछ बनना चाहोगे ?”

मेरी आँखों में आँसू भर आये, मेरा गला भर आया यहाँ तक कि मुझसे बोला भी नहीं गया। लेकिन उसने अपना सिर हिला दिया। मैंने आँखें किराकर माईकोमोर का पेड़, पथर का हौज और अपना बाग देखा और मुझे वह उस समय किन्ने आधव प्रिय लगे।

मेरा पिता कहना गया : “मिन्यूहे, मेरे पुत्र ! क्या तुम मुझसे भी बड़ा बीछ बनना चाहोगे— जो मृत्युञ्जय बन मरे, जो अमीर और गराबों का भेद न करने हुए, केवल गंगी की परिचर्या कर मरे।”

“न मेरा जैमा और न मैमेट जैमा।” प्लाहीर बोल उठा “बल्कि बाम्बुविक बीछ जो मदम मजान् हांता है। क्योंकि उनके मधुमय कराऊन भी नगा गड़ा रहता है, उनकी दृष्टि में अमीर और भिखारी सब एक होते हैं।”

मैंने श्मनि हुए उत्तर दिया “मैं बाम्बुविक बनना चाहता हूँ।” उस समय जीवन की निराशा और विम्वेदागियों को ज्ञानों में क्या समाता था !

टोचिमोड़ की प्लाहीर ने अपनी अंगूठी दिखाकर कहा : “देने पाँ।”

उसने पिता था, “अग व्याप्ता हृदय में उज्जान भर देना है” टोचिमोड़ उसे पकड़ हँस पड़ा।

“इससे हँसने की बीन-बी बान है अदमास ?” प्लाहीर सम्भीरना से

दोला : “इससे और मदिरा से कोई सम्बन्ध नहीं है—इसका तो अर्थ यह है कि अपनी इच्छा के प्याले की कभी खाली न रहने दो और जो कुछ और तुममें कहे उसे सुनकर चुप रह जाओ। अपनी साफ आँखों से देखकर विश्वास करना सीखो। वही हृदय का उत्साह है।”

फिर प्लाहौर ने सैन्मट से कहा : “सौघ ही तुम्हारा पुत्र मन्दिर के ‘जीवन-गृह’ में भर्ती कर लिया जायेगा और रहा यह दूसरा, मैं इसे प्लाह के कला-मन्दिर में भर्ती कराने का प्रयत्न करूँगा।”

थोड़ी देर चुप रहने के उपरान्त वह हम दोनों से कहने लगा

“परन्तु वही जाने से पहले एक बात ध्यान से सुन लो, और कुछ नहीं तो इसी लिहाज से कि कराऊन के घराने का सिर झोलने वाला बैद्य उनसे कुछ कह गया था : ‘मिन्गूहे’। तुम अब पुजारियों के हाथ में पड़ जाओगे और बाद में तो खैर तुम स्वयं ही पुजारी बन जाओगे। परन्तु जब तक तुम उनके नीचे रहो, जब तक तुम्हारा काम पूरा नहीं हो तब तक मियार और सर्प की भाँति घालाबी में रहना, परन्तु प्रत्यक्ष में कपोल की भाँति भोले बने रहना खबरदार ! क्योंकि मन्दिर बड़ी सावधानी का स्थान है।”

जब प्लाहौर का अनुचर दूसरी कुर्सी लेकर सौटा तो वह उसमें बैठकर घना गया। जाते-जाते उसने सैन्मट से मैत्री हुमेना कायम रखने का वचन दिया।

परन्तु दूसरे दिन प्लाहौर ने कीपा के लिए एक कीमती पत्थर में खुदा हुआ एक पवित्र मंत्र भेजा कि वह उसे मरने समय अपनी बग्न में रखे। उसे पाकर कीपा प्रसन्न हो गई और उसने उसे क्षमा कर दिया।

धीरे-धीरे मन्दिर का उच्चारण प्राप्त करने का एक मात्र स्थान अम्मत का मन्दिर था। जब तक वेही-के-अनुद नहीं मिल जाता, किसी भी उच्च विद्या का ज्ञान असम्भव था। शाश्वत काम से, जैसा किसीको भी विदित

मुझे अद्भुत सातवना देने हुए समझाया कि यदि मेरी नींव पक्की होगी तो आगे चलकर मुझे विद्याध्ययन में सहाय भी करना ही समेगा । वास्तव में हुआ भी ऐसा, क्योंकि मेरे आचरणों और मेरी कुशलता से प्रसन्न होकर ही मेरे गुरुओं ने धर्म की परीक्षा लेनी चाही थी ।

आखिरकार यह दिन भी आ गया जब मुझे मन्दिर में घुमने की आज्ञा प्रदान कर दी गई । आत्मा की झुट्टि के हेतु मुझे उपवास करना पड़ा और फिर एक सप्ताह तक मन्दिर के अन्दर ही रहना पड़ा जहाँ से बाहर आना मेरे लिए वर्जित था । मेरे पिता ने मेरे सिर के बाल गुमी-खुमी काट डाले और मेरे पौवन में पदार्पण करने की खुशी में पड़ोसियों को बुलाकर दावत दी ।

और उसी रात बीषा ने और मैमेट ने मुझे यह बनलाया कि मैं उनका भगनी पुत्र नहीं था—

दूगरी मुख में बीषा के हाथों में बनी पोशाक पहनकर मन्दिर गया तो मेरा हृदय दुःख में परिपूर्ण था ।

वहाँ हम पक्षीमं थे । जब हमने मन्दिर के कुंड में स्नान कर लिया तो हमारे गिरो पर उम्हरा फेंक दिया गया और हमें छोटे बगैरे पहनादे गए । रीति के अनुसार तो हमें बहून-नी उपहारान्तर निधि में होकर निवसना था, परन्तु हमारे ऊपर निवृत्त पुजारी को हमने विशेष रक्ष नहीं थी । और फिर हममें से कई धनिकों के पुत्र थे और कई पूरे आदमी थे जो स्वाय की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर अम्जन की सेवा में हमलिए आये थे कि उनका भविष्य और अधिक उत्थान बन सके । वे सब पुराणियों के लिए मुखर्ष और मंदिरा पर्याप्त भाषा में लाकर देने थे और हमलिए उनपर विशेष प्रियवन्ध नहीं था । मंदिरा का मेवम तो वे वहाँ करने ही थे, परन्तु उनमें से कई तो रमणभाषों में भी हो आते थे । उनपर जैसे कोई प्रियवन्ध ही नहीं था । मैं गूरी रोटी और सब चीजें अपने दिन निवसण रहा था, क्योंकि मैं बरीब था और फिर मैं मानूँ कि मेरे उन बाल-हृदय में उन समय अम्जन के प्रति अपनी थपड़ा दी कि मैं समझता था कि एक

“मिन्गूहे !” उसने दोहराया । “तब तो यदि कोई रहस्य तुम्हें बताया जाये तो मुम करकर अवश्य माय जाने होंगे ।”

मिन्गूहे की कहानी में मिन्गूहे की यह आदत मुझे अब तक कई बार सुननी पड़ी थी और मैं उससे ऊब गया था । पाठशाला में इस तरह की बिदा-ट बहून काफी हो चुकी थी । मैंने सीधे होकर उसकी आँखों को देखा, पर अभी मुझे अतुल्य हुआ कि उसकी आँखें इतनी साफ और सुभाषनी तथा विचित्र थी कि मैं उनमें लो गया और मेरे मारे शरीर में मिहरन-सी दौड़ गई और मुझ आरक्त हो उठा । परन्तु फिर भी मैंने कहा .

“मैं क्या क्यों करने लगा ? एक मिथा पाने जाने बैठ को रहस्यों से क्या लग सकता है ?”

“ओह !” बड़ी अदा के साथ यह बहुर बह मुस्कराई फिर बोली “अरे तो बाहर निकलने के पहले ही मुर्गी का बच्चा बोलने लगा । ... हाँ यह तो बताओ कि क्या तुम्हारे साथ मित्रुकर नामक कोई युवक पढ़ता है ? वह फराऊन के गर्वार्थ मिस्त्री का बेटा है ।”

मैं उसे जानता था क्योंकि यह बड़ी युवक था जिसने बुझागी की गुबर्न का वस्त्र दिया था तथा उसे भर-भरकर मदिरा पिलाया करता था । मेरे हृदय में एक टीस-जी खजने लगी जब मैंने उससे कहा कि मैं उसे बुला लाऊँगा । फिर मुझे हटाना हुआ कि हो सकता है यह उसकी बहिन या अन्य कोई सम्बन्धिनी स्त्री हो । और तब मैं उसकी ओर देगजर माहिलगुरुवर्ग मुस्करा दिया । मैंने उसके सुन्दरमुख पर आँखें मड़ा कर कहा “परन्तु जब तक मैं तुम्हारे बारे में कुछ न जान लूँगा, तो उससे क्या कहा ? कि बोन उसे बुला रही है ?”

“बह जानता है,” स्त्री ने उत्तर दिया । वह उपावलेपन में अपने उपा-महर्षि सुन्दर धूमि-रहित वेश को, जिसकी उदमियों से सहावर लगा हुआ था, उस पक्की धूमि पर बार-बार पटक रही थी, फिर वह बोली “बह जानता है कि बोन उसे बुला रही है । जानद वह मुझे कुछ देता ... मेरा जिन ओ पाचा पर बाहर गया है... और मैं मित्रुकर की प्रशिक्षा कर रही हूँ कि वह मेरे दुःख में मुझे लायना दे ।”

बह विचारिता है सुनकर एक बार फिर मेरा दिल बैठने लगा,

परन्तु मैंने शीघ्र उत्तर दिया था : "बहुत अच्छा अज्ञात सुन्दरी ! मैं उसे बुलाकर ले आऊंगा । मैं उससे जाकर कहूँगा कि उसे चन्द्रमा की देवी के भी सुन्दर और जबान, कोई स्त्री बुला रही है । और तब वह समझ जायेगा । क्योंकि जिस किसीने तुम्हें एक बार देखा होगा वह निश्चय ही तुम्हें कर्म न भूल सकेगा !"

अपने विचारों में अपने-आप डरते हुए मैं मुड़कर चलने को हुआ लेकिन उसने मुझे पकड़कर रोक लिया, फिर बोली .

"क्यों, इतनी जल्दी क्या है ? आपको न अभी... शायद हमें एक-दूसरे से और कुछ कहना हो ।"

उसने मुझे ध्यान में ऊपर से नीचे तक एक बार फिर देखा और मुझे ऐसा लगने लगा कि मेरा सीना पिघल गया था और मेरा पेट मेरे घुटनों के नीचे उतर गया था । उसने अपना मुखर्ण बलपित कोमल गोरा हाथ धकाकर अँगूठियाँ से लदी हुई उँगलियाँ मेरे घुटे हुए सिर पर रखते हुए नम्रता से कहा :

"इस सुन्दर घुटे हुए सिर में ठह नहीं सगनी ?" फिर फुसफुसाकर कहा "क्या तुम सब कह रहे थे ? मैं क्या सबकुछ ही सुन्दरी हूँ ? मुझे और पाम में देखो न ।"

वह मेरे और पाम निमक आई । और तब उसके मादक सौंदर्य और लज्ज जीवन में मैं मदहोश हो गया और मैंने देखा कि वह सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी थी—ऐसी जैसी मैंने तब तक कोई नहीं देखी थी । उसे देखकर उम क्षण मैं अपने हृदय की पीड़ा को, अम्भन को और उस जीवन-गृह—मक्को भूल गया । उसके शरीर की निवटता से ही मेरा शरीर तपने लग गया ।

"तुम तो बोलने ही मही हो," उसने मान करने हुए कहा । फिर वह मधुर बरस बरनी हुई बोली : "तुम्हारी इन सुन्दर आँखों में मैं बुझिया दिनाई दे रही हूँ... अब तुम जाओ और मित्रों को बुला लाओ और मुझे छोड़ो..."

अब मेरी वह दशा थी कि मैं बोल पाता था न जा ही सकता था । हालाँकि मैं समझ रहा था कि वह केवल बिड़हा रही थी । मन्दिर के दीर्घ के बीच उम प्राकार में अँदोल था । वही दूर से हल्का प्रकाश

आकर उसके मुँह पर दोनों में एक निश्चय समझ भर रहा था, हम दोनों के अनिश्चितता नहीं बोझ नहीं था।

"अब तुम उसे मन बुराओ," वह मुँह पर जोड़ती बोलती-
"तुम स्वयं मुझे आनन्द देकर मुझे आनन्द प्राप्त कर सकते हो। तुम्हारे अनिश्चितता में निश्चय नहीं आती... "

और जब मुझे भीषा के बीच एकदम घाट आ गये। उसने कहा था कि "मुँह पर जोड़ती जोड़ती आनन्द में पेशा निश्चय करनी है।" और मैं बसकर एक घर पीछे हट गया।

"क्या मैं चाहूँ ही नहीं कहती थी कि निश्चय कर आयेगा ?" वह-
जब वह मेरे पास आ गई, घर में ही हाथ उठाकर उसे रोके हुए उसी समय कहा "मैं समझ गया हूँ कि तुम नहीं रही हो। तुम्हारा पति बाहर गया है और तुम्हारा हृदय आनन्द की भाँति है। तुम्हारा जीवन आनन्द में अधिक बढ़ता है।"

लेकिन उसका कहना भी मैं उसने कुछ नहीं हट गया। मुँह पर वह बोला बोली परन्तु फिर मेरे पास आ गई।

"कदा मुँह पर पेशा निश्चय है ?" वह बहुत स्वयं में मुँह में गयी "कालु यह सच नहीं है। मैं नहीं कर सकी थी भाँति नहीं समझा... मैंने वह बात नहीं कहने हैं कि मैंने जाने की इच्छा देने के बादो मैं प्रसन्न हो उठती हूँ... आओ तुम देख लो।"

और उसने मेरा हाथ हाथ उठाकर अपने पैर पर लगा दिया। उसने लीने बांधो में हाँकर मैंने उसका जीवन मेरे हाथ में आने लगा हो और मैं निश्चय उठा और मेरा मुँह आनन्द हो उठा।

"तुम्हें अब भी निश्चय नहीं होगा ?" वह बहुत बसकर ही निश्चय निश्चय है, बोली, "मेरे हाथ कीच में आ गये हैं... अन्त में हाँकर हाँकर निश्चय है" और जब उसने अपने हाथ को हाँकर मेरा हाथ आनन्द लीने और एकदम बसकर पर एक दिशा में वह बसकर निश्चय मुँह पर भी निश्चय था।

फिर वह मुँह पर बसकर बोली, "आओ निश्चय ?" बोले। एक एक, आनन्द के बसकर निश्चय निश्चय और फिर निश्चय बोले।

“मैं मन्दिर की भीमा मे बाहर नहीं जा सकता।” मैंने कहा। उस समय अपनी कायरता पर मैं स्वयं सन्निभ था। उसे मैं जितना अधिष्ठान चाह रहा था, उतना ही उसने भयभीत भी हो उठा था; इतना भयभीत जैसे मृत्यु में हो गया होऊँ। फिर हिचककर मैंने कहा : “जब तक मैं अपनी विला पूर्ण रूप से प्राप्त न कर लूँ, जब तक मैं बलवन्ति नहीं हो सकूँ, अन्यथा मुझे मारकर यहाँ इस जीवनमूह से निकाल दिया जाएगा...और फिर मैं यहाँ कभी नहीं आ सकूँगा...मेरे ऊपर दया करो।”

मैंने यह बात बड़ी अवश्य थी, परन्तु यह मैं जानता था कि यदि इसने मुझे एक बार और धुलाया तो मुझे उसके साथ जाना पड़ेगा...तब मैं मरना नहीं कर सकूँगा। परन्तु वह दुनियादारी जानने वाली स्त्री थी और मेरी परेशानी जानती थी। उसने एक बार अपने चारों ओर देखा। हम अकेले थे, परन्तु दूर लोग खनने-फिरने दिखाई दे रहे थे। वह बोली :

“सिन्धूहे ! तुम बहुत ही शर्मिल युवक हो।” वह हाथ बढ़ाकर कहने लगी, “धनी और महान् व्यक्ति जब मेरे पास आने हैं तो उन्हें सुवर्ण भेंट करना होता है...परन्तु तुम अकलवन्ति ही रहोगे।”

“तो मैं मित्रों को धुला साऊँ ?” मैंने हताश होकर पूछा। मैं जानता था कि रात होने पर मित्रों से मन्दिर से भागकर इसके पास पहुँचने में कभी न चूकेगा। वह कराऊन के सर्वश्रेष्ठ कारीगर का पुत्र था...वह ऐसा कर सकता था...परन्तु मैं उसे उसके बदले में मार डालना चाहता था।

“अब मैं मित्रों से मिलना नहीं चाहती,” वह सिर हिलाकर बोली, “सिन्धूहे ! अब तो हम ही दोनों मित्र बन जाएँ। अतएव मैं तुम्हें अपना नाम बनवा दूँगी। मेरा नाम ‘नेफर नेफर नेफर’ है। धैसे मेरा असली नाम नेफर है परन्तु क्योंकि मैं सुन्दरी कही जाती हूँ और जो कोई मेरा नाम एक बार कहता है वह कम से कम दो-तीन बार उसे कहने से नहीं रुकता। अतएव अब मेरा नाम नेफरनेफर नेफर हो गया है। रिवाज यह है कि विछुड़ते हुए मित्र एक-दूसरे को कुछ उपहार दें, मुझे तुम कोई चीज भेंट दो।”

एक बार फिर मैं आकाश से भूमि पर आ गिरा। मुझे मेरी दरिद्रता उस समय कितनी अव्यरी ! उसे देने के लिए मेरे पास उस समय कुछ भी

तो नहीं था। गर्म से मेरा सिर झुक गया।

वह समझ गई और फिर बोली, "तो मेरे हृदय की इच्छा तो पूरी कर दो।" और उसने अपनी जंगली से मेरी छोड़ी ऊंची कर दी। मैं उसका आशय समझ गया। उसने हल्की उसास मरी और हम दोनों आतिगन-बढ़ हो गए और होठ से होठ मिल गए।

गोदी देर बाद जब हम असम हुए तो वह बोली, "चन्पदाद सिन्पूहे ! तुम्हारा उपहार वास्तव में अत्यन्त सुन्दर था... मैं इसे कभी न भूलूंगी... परन्तु निश्चय ही तुम किसी दूर देश के रहने वाले हो, जो बुम्बन सेना भी नहीं जानते। अन्यथा पीवीड की युवतिर्वा यदि तुम यही के होने तो तुम्हारे जीवन की देखकर कभी की तुम्हे इस कार्य में दक्ष बना देती।"

उसने अपने हाथ के अँगूठे मे से एक अँगूठी निकाली जो सोने और चाँदी की बनी हुई थी और जिसमें बिना खुदा हुआ एक बड़ा-सा पत्थर जड़ा हुआ था। उसे मेरे हाथ में रखकर वह कहने लगी, "सिन्पूहे ! मैं भी तुम्हें एक भेंट देती हूँ जिससे तुम मुझे न भूलो। और इसलिए भी कि इसमें जड़ा हुआ पत्थर हरा है... और मेरी आँखें भी पीप्य ऋतु में नील के जल की भाँति हरी चमका करती हैं।"

"नहीं, नहीं नेफर...नेफर...नेफर मैं यह भना किस प्रकार ले सकता हूँ...पर वैसे मैं तुम्हें भूल कभी नहीं सकूँगा।"

"पागल लडके ! अँगूठी को अपने पास रखो। यही मेरी इच्छा है... कुछ नहीं तो मेरी सनक की ही खातिर इसे रख लो...शायद इससे किसी दिन मुझे भूद भी मिल सके !" फिर मुझ- "ने हुए बोली, "और हाँ, आभेन से भी तेज दहकने मरीरो वाली... "ने रहता।" और मेरे मुँह के सामने उँगली उठाकर मिलने मुझे आने के लिए मना कर ।

1
+

... "पर बैठकर वह चली
... मानें साफ बर दिया
... रहे थे। लीप-बाप धमक-
... जो मे उने देव रहे थे।
... एकाकीपन ने धेर लिया...

ऐसा लगने लगा जैसे मैं सिर के बल किसी गहन सागर में गिर पड़ा था।

बहुत दिनों बाद एक दिन मितूकर ने उस अँगूठी को देखकर चौंकर पूछा, "ओसिरिस के चात्तीसों बदरों की कसम ! नेफरनेफरनेफर... है न ?" और उसने मेरी ओर आदरसूचक भाव से देखा हालाँकि पुजारियों को भेंट न दे सवने के कारण उससमय मैं भूमि को पानी से रगड़-रगड़कर धो रहा था। मुझसे अकसर ऐसे ही नीच काम कराए जाने थे।

मितूकर के प्रति मेरे हृदय में घृणा भर गई, इतनी, जिसका वर्णन नहीं हो सकता। कई बार उममें नेफर नेफर नेफर के बारे में पूछने की मेरी सालसा हुई परन्तु मैंने उसके सामने झुकना स्वीकार नहीं किया। मैंने अपना भेद अपने हृदय में ही छिपा लिया। क्योंकि झूठ अक्सर सच से अच्छा लगता है, और स्वप्न वास्तविकता से बही अधिक मुसकर होता है। मुझे उमकी वह हरी गहरी आँखें, उसकी सुन्दर उँगलियाँ, उसके पीन उन्नत स्तन, उसका सुखद मामल स्पर्श हमेशा याद आता रहा। अम्मन के ऊपर मैं तब मेरा विश्वास उठ चुका था।

उसकी याद जब मुझे हो आती तो मेरे पाप पाप हो उठते और मेरे होठों से पुमपुमाहट निकल आती, "मेरी बहन !" इससे मेरे हृदय को सान्त्वना मिलती क्योंकि शाश्वत काल में इसका अर्थ 'मेरी प्यारी' होता आया था और शायद हमेशा रहेगा भी।

चौथी रात को अम्मन की शानि की देखरेख का दृष्टिमा मेरे ऊपर आया। हम गान गडके थे—माटा, मांड, बेक, गिम्पूकर, मेथक अह्मोड और मैं। इनमें मैं मांड और बेक जीवनमूह के थे, उन्हें मैं जानता था, बाकी मेरे लिए नये थे।

उपवास और उनीक्षा के कारण मैं दुर्बल हो रहा था। हम लोग गिना हमें, पवित्र भावनार्थ लिये पुजारी के—उमका नाम हमेशा-हमेशा के लिए मां आण्ट—पीछे-पीछे मंदिर के भीतरी हिस्से में जा रहे थे। अम्मन का जहाज पवित्र की पट्टाईयों के पीछे चला गया था और चौबी-दार ने चाँदी की तुन्ही खूब दी थी। मंदिर के दीपें हाथ बन्द कर दिने

गाए थे। जो पुजारी हमारे आगे-आगे चल रहा था उसने उस दिन अधिक मात्रा में मांस और मदिरा का सेवन किया था और उसके सिर और मुँह पर तेल चिपचिपा रहा था। उसने हँसते हुए पर्दा उठाया और हमें 'पवित्रों में भी सबसे पवित्र' के सामने पहुँचा दिया। अपने घेरे में, जो एक बड़े पत्थर में से छाँटा गया था, अम्मन खड़ा था। पवित्र दीपो के प्रकाश में उसके मुकुट और कठहार में ताल, नीले, हरे परमर सचमुच की झँझो की भाँति चमकमा रहे थे। प्रत्येक दिन भोर में उसे नये वस्त्र पहनाये जाते थे। जैसे जैसे उसे पतझड़ के दिनों में होने वाले उत्सव में भी देखा था जब वह अपनी सोने की पालकी में बाहरी प्रांगण में जाता था और सभी सभी भोग उसके सामने पृथ्वी पर अँधे सेटकर उसे प्रणाम करते थे और तब भी देखा था जब बाढ़ में, नदी के पवित्र जल पर, वह सिंघार की लकड़ी के धने अपने जहाज में बैठकर बाहर निकलता था, परन्तु तब वह मेरे लिए दूर के भागसे होते थे। अब जो इतने पास से उसके लाल वस्त्र देखे तो मेरे ऊपर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा—क्योंकि लाल वस्त्र अति पवित्र माना जाता था जिसे केवल अम्मन अथवा फराऊन ही पहन सकते थे। उस समय मुझे ऐसा लगा जैसे वहाँ का प्रत्येक पत्थर मेरे मीने पर ही रखा था।

"दुष्ट के सम्मुख प्रार्थना करो" नये में खूर पुजारी बोला, "नायब वह तुम्हें बुलावे। यह इसकी रीति है कि वह नये विद्याधियों के नाम लेकर कभी-कभी पुकारता है और उनसे बोलता है—पर तभी, जब वह उन्हें उस योग्य समझता है।" और उसने जल्दी से पर्दा खींच दिया। फिर वह मंदिर के भीतरी प्रांगण की ओर चला गया।

उसके जाते ही मोठ एक दीप उठा लाया और ओहमोज ने अम्मन के सामने से 'पवित्र अग्नि' लाकर उसे जला दिया। वह बोले: "कोन अन्धकार में बैठे? हम कोई मूर्ख हैं? फिर उन्होंने अपने वस्त्रों में से रोटी, मांस इत्यादि निकाले। मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि हम सभी को उपवास रखने को कहा गया था। ला-भीकर वह सोय चौपड़ खेलने लगे और फिर एक-दूसरेसे लिपटकर सो गए। माटा, सिनूकर, नेकर सब सो गए।

मैं गबने छोटा था, और रातभर जागता हुआ उन अद्भुत देवी मूर्ति की प्रतीक्षा करना रहा।

यंगे मुझे पुजारी के सौटकर अचानक हमारी गतिविधि की जाँच करने का तनिक भी धोखा नहीं था क्योंकि यह मैं ही क्या सभी जानने के कि वह मित्रूकर की दो हुई मदिरा पीकर आगम से मो रहा होगा। सारी रात मैं अम्मन की अद्भुत सीमा देमने के लिए जागता बैठा रहा और मेरे साथी सोते रहे। अम्मन चुपचाप गड़ा रहा। कुछ नहीं हुआ। भोर में उसके पदों तक हिले। मैंने चौककर देखा, परन्तु वह केवल प्रातःकाल की हवा थी।

बाहर जब भीमियों ने चाँदी के मड़े सींग चूँके तो मैं समझ गया भोर हो गई थी और अब पहरा बदला जा रहा था। मैंने भारी हृदय लिये हुए दीप बुझा दिये। दूर से आदमियों की चुहल और गुनगुनाहट सुनाई देने लगी थी।

जब पुजारी मित्रूकर के साथ लौटा तो दोनों के शरीरों, मुँहों और वस्त्रों से मदिरा की तीव्र गंध आ रही थी। उसने जाने ही अम्मन के पवित्र मंत्र जल्दी-जल्दी बोले फिर पूछा :

“नवीन विद्याधियो ! माटा, मोड, बेक, सिन्धूकर, नेकर, सहमोड और सिन्धूहे ! क्या तुमने आज्ञा के अनुसार सारी रात जागकर प्रार्थना की है कि तुम्हें वह सर्वश्रेष्ठ अपना सके ?”

“हमने आज्ञा का पालन किया है,” सभी ने एक स्वर से उत्तर दिया।

पुजारी ने आँखें मिचकाकर होंठ बिचकाये और फिर सिर हिलाया... फिर पूछा : “वह दिखाई दिया ?”

“हाँ दिया... मुझे दिखाई दिया।” माटा बोला।

“अवश्य” अहमोड ने और भी निर्भीक होकर पुजारी की आँखों में आँखें डालकर कहा।

‘अवश्य’, ‘अवश्य’ सभी ने स्वीकृति दे दी। केवल मैं रह गया। अपने साथियों का इतना बड़ा झूठ सुनकर मैं हैरान रह गया। मेरा कंठ अवदड था—ऐसा लगता था जैसे किसी ने उसे भीतर ही भीतर दबा रखा हो।

फिर मितूफर ने कहा : “सारी रात मैं भी अम्मन की प्रार्थना करता रहा...और फिर वह आया... और उसने मुझे दर्शन ही नहीं दिये, बल्कि सारी रात वह मेरे साथ रहा...वह सर्वशक्तिमान है। हर रूप में दिखाई देता है। मुझे वह एक बहुत बड़े मदिरापात्र के रूप में दिखाई दिया और उसने मुझसे बहुत-सी बातें की, जो बहुत ही पवित्र थीं...उन्हे मैं यहाँ सबके बीच कैसे कह सकता हूँ...परन्तु वह थी ऐसी बातें कि जवान आदमी उन्हे अधिक से अधिक सुनना चाहेगा।”

और फिर तो सभी ने अपने-अपने अनुभव बतलाये, भोज को वह ‘होर्स’ के रूप में दिखाई दिया तो किसी को बाज के रूप में, इत्यादि। पुजारी सिर हिलाता जाता था और हँसता जाता था।

अब बस मैं रह गया। पुजारी ने अपनी मौढ़ें मिलाकर मुझसे कड़े स्वर में पूछा : “और तुम सिन्धूहे ! क्या तुम इस योग्य नहीं निकले कि वह तुम्हे दिखाई देता ? अम्मन ने तुम्हारे ऊपर क्या चूहे के रूप में प्रगट होकर भी कृपा नहीं की ? क्योंकि वह तो हर रूप में प्रगट हुआ करता है !”

जीवनगृह में मेरे प्रवेश का प्रश्न दौब पर रखा था, वह बात मेरे मस्तिष्क में बिद्युत् की भाँति कौंध गई और मैंने साहस करके उत्तर दिया : “भोर में मैंने पवित्र पर्दे को थोड़ा हिलने देखा था। इसके अतिरिक्त मुझे कुछ भी नहीं दिखा, और अम्मन ने मुझसे बातचीत नहीं की।

सभी सुनकर हँस पड़े। मितूफर ने हँसकर अपने घुटने हथेलियों से बजाये और फिर उसने पुजारी से कहा : “यह सीधा-सादा है।” फिर मेरी तरफ दृष्टि गड़ाये हुए उसने उसके कान में कुछ कहा।

पुजारी ने मेरी ओर कठोर दृष्टि से देखकर कहा : “अगर तुमने अम्मन की बोली नहीं सुनी, तो तुमको दीक्षा नहीं दी जा सकती। परन्तु फिर भी उपाय किया जा सकता है क्योंकि मैं देखना हूँ कि तुम सीधे-सादे युवक हो और तुम्हारे कर्तव्यों में सच्चाई है।” और पुजारी मंदिर के अंदर लौ गया। मितूफर मेरे पास आया और मेरे उदास चेहरे को देखकर बोला : “धवराओ नहीं सिन्धूहे !”

और सभी हम सब चौक उठे। उस घेअरे अंतराल में एक विपिच जनु

के रेंकने की बड़े जोर की आवाज आने लगी। ऐसा लगा कि वह आवाज हर स्थान से निकल रही थी, छतों, दीवारों और नलों सभी में से निकल रही थी। गम्भीर गंजन हो रहा था कि हमने मुना वह आवाज कहने लगी :

“सिन्धूहे ! सिन्धूहे ! ओ आत्मजी तू कहां है ? जल्दी से आकर मेरे सामने झुक जा क्योंकि तेरी प्रतीक्षा में मैं सारा दिन व्यर्थ नहीं गंवा सकता।”

मिलूकर ने जल्दी से उस पवित्रों में भी पवित्र के सामने का पर्दा हटा दिया और मेरी गर्दन पकड़कर मुझे अम्मन के सम्मुख झुका दिया। और मैंने साफ सुना कि पुजारी अम्मन के अन्दर घुसकर आवाज बिगाड़कर कह रहा था : “सिन्धूहे ! सिन्धूहे ! तू पुरा सूअर है ! जब मैं आया था, तब तू क्या रहा था मूर्ख ? तेरा बड़ तो यह है कि तुझे गन्धे होठ में डाल दिया जाये, जहाँ कि रात और दिन कीचड़ साया करे। परन्तु तेरी जबानी देखकर मुझे तुझ पर दया आती है और इसलिए कि तू मेरा भक्त है, तेरा विश्वास तुझे बचा रहा है। जो उसे नहीं रखने वह मृत्यु के साम्राज्य के अँधेरे गह्वों में सदा के लिए डाल दिये जाने हैं।”

जब पुजारी ने मेरे बगल में खड़े होकर मेरे सान दी तब मुझे ध्यान हुआ। मैं उठ खड़ा हुआ और तब मेरे साथी अम्मन को नहलाने, गंध जलाने और वस्त्रादिक पहनाने में जल्दी से लग गए, और मैं बाहर के प्रांगण से ‘पवित्र’ जल लाने उदास मन बना गया। जब मैं लौटा तो मैंने देखा कि पुजारी अम्मन के मूँह पर झुककर उसे अपने सैली बाँह से रगड़ रहा था और मिलूकर हँसते हुए उस पवित्र तैल को, जो उसका था, अपने व पुजारी के सिरों पर डालकर रगड़ रहा था।

जब मूर्ति नहलाकर सजा दी गई तो पुजारी ने उसके उतरे हुए वस्त्र और स्नान किया हुआ जल लेकर भीधता से बाहरी प्रांगण की ओर प्रस्थान किया जहाँ धनी व्यक्ति ऊँचे दामो में उन्हें नित्य सरीद लेने थे। उस जल से स्वचा की तमाम बीमारियाँ दूर हो जाती थीं।

और मेरे लिए अब जीवनमृह का प्रवेश-द्वार खुल गया था क्योंकि अम्मन ने मुझसे बातचीत कर ली थी।

जीवनगृह में, जो कि अम्मन के मन्दिर का एक भाग था, पहाई की देतरेस का भार, अपने-अपने विभाग में, राज्य-वैद्यों का था; परन्तु वह केवल मामलात्र को ही वहाँ जाने थे। उनकी अपनी निकित्ता का ध्याहार बहुत फैला हुआ था, वह लोग छानियों द्वारा बहुमुख्य उपहार और सुवर्ण पाते थे और मगर के बाहर विज्ञात भवनो में रहने थे। परन्तु यदि जीवन-गृह में कोई विचित्र और जटिल रोगी आ जाता और वहाँ के मामूली वैद्य उनका इलाज न कर सकने या उनकी परिचर्या करने से पचरा जाते तो राजवैद्य अपना बीघाल दिखाने वहाँ जाते। और इस तरह अम्मन के साम्राज्य में लरीकोंको भी कभी-कभी राजवैद्यों का उपचार मिल जाता था।

औषधियाँ बनाने की विद्या सीखने में वहाँ बहुत समय लगता। जब और किस मौक़म में बीज-बी बड़ी-बूटी मिलनी है, उसे किस प्रकार परचिन करके मुछाना चाहिए, फिर कूट-बीसबर छानना चाहिए, नाना प्रकार की बीज-बीजली दवाइयाँ सही मात्राओं में मिलाकर तैयार करनी चाहिए, दवाइयों में हमे काफी समय लगता था। हम अक्सर बड़बड़ाया करते थे कि जब औषधियाँ बनी-बनाई जीवनगृह में मिल जाती थी और केवल एक नुस्खा लिखने से ही प्राप्त हो जाती थी तो फिर उन्हें अपने हाथ से बनाने की सुविधा क्या वही सुलझी जाये, परन्तु वहाँ का मिड्रांत यही था कि हर बीज को स्वयं पूर्ण होना चाहिए। मुझे बार में पता चला कि यह एक बीज के लिए किताब लिखा था। मुझे जीवन में जब इसका अनुभव हुआ तभी मैं वहाँ की इस रीति को सचमुच ही बहुत अच्छा समझा।

छरीर के भी हम जंग का काम तथा उनके काम हम बार करने पड़ते थे। चाकू हाथ में लेकर बिमटी में छरीर के भाग चुरेना, सड़े हुए हिस्से बाट डालना तथा रोग को देखकर जीव लपका की जाँच करके पहचानना दवाइयों हमें सिखाया गया। हमें अच्छाचाने की तमाम विधियाँ, रबी के सर्वांगिन का ज्ञान, बर्षों के जंग के बार रबी की सुधूरा की मात्रादस्ता यह सब जानना पड़ती था। रोदी के झुंड में जंग को जलन बरके उनकी जाँच करना भी हमारा ही काम था।

इसी कबजे मुझे काफी समय लग गया। कई वर्षों के उपरांत यह

समय भी आ गया जब मन्दिर की पवित्र गीतियों के अनुसार मुझे उपवास इत्यादिक करके स्वेन बन्ध धारण किगूँ हुए जीवनगृह के स्वागत-वक्ष में रोगियों के दौलत उन्हाड़ने पड़े, उनके फोड़ों को काटना तथा उनमें घीरा लगाना पड़ा और टूटी हुई हड्डियों को जोड़कर उनपर बाम लगाकर पट्टी बांधनी पड़ी। मेरी गतिविधि कार्य में इनकी अच्छी थी कि गीघ्र ही मुझे अपने माधियों का शिक्षक नियुक्त कर दिया गया। और तब मुझे भी कभी-कभी रोगियों से तथा उनके सम्बन्धियों ने उपहार प्राप्त होने लगे। मैंने अपनी अँगूठी के हरे पत्थर पर जो मुझे नेकर नेकर नेकर ने दी थी, अपना नाम खुदवा लिया कि मैं उसे मुहर की जगह काम में ला सकूँ।

इससे भी अधिक जिम्मेदारी के कार्य मुझे करने पड़े। मुझे उन बच्चों में भेजा गया जहाँ लाइलाज रोगी रहे जाते थे। जहाँ दस्त में से नौ का मरना अवश्यभावी था। यहाँ मैंने मृत्यु देखी और धीरे-धीरे यह भी सीखा कि बच्चों को उससे नहीं डरना चाहिए। साथ ही यह भी कि वह असाध्य रोगी को दयालु मित्र की भाँति समेटकर ले जाती है।

परन्तु फिर भी मैं अन्धा ही था; क्योंकि मेरे ज्ञान के चक्षु अभी तक बन्द थे। और हठात् एक दिन मैं सोच में पड़ गया और मेरे नेत्र खुल गए और मेरे मन में प्रश्न उठा, “क्यों?” और इस “क्यों?” को मैंने अपने अध्यापकों से पूछा तो सबने धीरी और आश्चर्य से देखा जैसे वह चौंक उठे हों। परन्तु यह ‘क्यों’ का प्रश्न मेरे मन में इनकी गहराई से उतर गया जैसे उसे पत्थर की भाँति किसी ने काटकर अन्दर घुसा दिया हो।

उसका वृत्तांत मैं अब लिख रहा हूँ।

ऐसा हुआ कि एक दिन मेरे पास एक स्त्री आई जिसके कोई बच्चा नहीं हुआ था और वह अपने-आपको वंश समझने लगी थी; क्योंकि वह चार्लिस साल की हो चुकी थी। परन्तु उसका मासिक धर्म रुक गया था, जिससे उसे पीडा होती थी। वह जीवनगृह में इसलिए आई थी कि उसको ऐसा विश्वास बैठ गया था कि किसी भूत या प्रेत ने उसके शरीर में घुसकर उसमें बिप फैला दिया था। ऐसे मामलों में, जैसाकि पुस्तकों में लिखा हुआ था, मैंने कुछ अनाज के दाने एक पात्र में मिट्टी भर कर उसमें बो दिए और उसमें से बाघे को नील के जल से और बाकी बाघे को उस स्त्री

भूत से सीचा। फिर उस पात्र को घूब में रख दिया। और उस स्त्री दो दिन बाद आने को कह दिया। जब वह समय पर आई तो मैंने देखा नील के जल से सिंचित दाने हलके उगे थे और उसके भूत से सिंचित ने बड़े और मड़बूती के साथ उग आए थे। जो कुछ लिखा था वह सत्य ना जाना था और मैंने उस चर्चित स्त्री से कहा, “सुधियाँ मनाओ क्यों-अम्मन ने तुम्हारे गर्भाशय पर कृपा की है। अन्य स्त्रियों की भांति तुम गर्भ धारण करोगी।”

वह परीय यह सुनकर खुशी से रोने लग गई। उसने मुझे अपने हाथ उतारकर एक चाँदी की चूड़ी दी जो तौल में दो ‘दबन’ थी। अब उसकी मुरता बढ़ी क्योंकि वह तो एक अर्से से आशा छोड़ बैठी थी। उसने ग, “लहका होगा?” वह मुझे सर्वशक्तिमान समझने लगी थी। मैंने हम बंदोरकर सीने उनके नेत्रों में देखा और स्थिरता में कहा, “लहका।” मैंने सुनकर खुशी से विह्वल हो उठी और उसने मुझे अपने दूसरे हाथ से ताककर एक और बड़ी ही चाँदी की चूड़ी दे दी।

परन्तु जब वह चली गई तो मैंने अपने-आपसे पूछा कि भला अनाज दानों में दग स्त्री के गर्भाशय का क्या सम्बन्ध हो सकता था? और मैं दग ‘क्यों’ का उत्तर न पा सका तो मैंने अपने गुह से पूछा। उसने मेरी र देवा जैसे मैं पागल था और केवल इतना कहा, “ऐसा ही लिखा है।” नु यह तो कोई उत्तर नहीं था।

फिर मैंने माहम बंदोरा और एक दिन यही बात जज्बाखाने के राज्य-दिलस से पूछी। उसने कहा, “अम्मन सभी देवताओं में धेरु है। तिमय में बीज आने ही कह उसे देन भेता है। यदि वह वहाँ उगे बड़ने है तो उमी स्त्री के जल से सिंचित अनाज को क्यों नहीं बड़ने? यह तो स्पष्ट है कि वही सब कुछ करने वाला है।” उसने भी मुझे ही देवा जैसे मैं पागल था। परन्तु यह भी कोई उत्तर नहीं था।

और सब मैंने देवा कि जीवन-मृह के बीच केवल इतना ही जानने से गना पुस्तकों में लिखा हुआ था। उससे आगे जानने का वहाँ प्रश्न ही उठता था। जहाँ चाहें हवा बार बार चीर-फाड़ करे, चाहे सैकड़ों बार भी का शरीर शीतल कर ही दे पर वह इतना ही करेगा जितना पुस्तकों में

लिखा है। वस ! रोगी अच्छा हो जाए तो अम्मन की कृपा और यदि मर जाए तो अम्मन का कोप ! ऐसा ही होता आया है और ऐसा ही होगा। दुबैल रोगी को, कच्छा कलेजा, जो मन्दिर में बलि पशुओं के शरीरों में से बटकर महेगा बेचा जाता था, गुणकारी बताया जाता था, परन्तु 'क्यों' का प्रश्न वहाँ भी नहीं उठ सकता था क्योंकि वह आज तक किसी ने सोचा ही नहीं था।

मैंने सीधे जान लिया कि बहुत-से प्रश्न करना ठीक नहीं था। मैंने अपना स्वेत वस्त्र और अपनी कमाई हुई चार दबन की चाँदी की छुड़ियाँ सौभाभीं और जीवनगृह से बाहर आ गया। अब मैं पूर्ण वैद्य हो चुका था।

जब मैं मन्दिर के परबोटे से बाहर निकला तो मैंने देखा कि धीबीड, जो मैंने कुछ वर्षों पहले छोड़ा था अब वैसा नहीं रह गया था। इन दिनों मैं कभी बाहर नहीं निकला था। मैंने वाले राजगव पर होकर जब मैं आया तो मुझे वह अन्तर दिखाई दिया। लोगों की पोसाकें इतनी भड़कीली और महेगी हो गई थी कि उनके सिरों के कपड़ों और गरारों को देतकर कोई पुरुष और स्त्री में भेद नहीं बनला सकता था। मन्दिर की कुतानों और रगशाखाओं में से सीरिया का लीखा सगीन मुनाई देना और सीरिया के लोग और मामदार हूणी लोग अब बेगड़क मिश्रियों में बड़ा भिडाकर चलते थे। मिश्र की सगति और भक्ति अपार थी। सैबहों सालों से कभी कोई शत्रु वहाँ के नगरों में नहीं घुसे थे और ऐसे-ऐसे लोग वहाँ मौजूद थे जो प्रौढ़ पत्तों थे और युद्ध के बारे में गर्वणा अनभिज्ञ थे। परन्तु न जाने क्यों फिर भी लोग मनोवपुक्त दिखाई नहीं देने थे। ऐसा लगता था, जैसे वह किसी भावी भाषति की समावना में विचित्र हो, और उनकी आँखें अत्यन्त अचल रहती थीं।

एक पट्टे-पट्टर मैंने देखा कि मेरा पिता सैग्यट बूढ़ हो गया था और कमर में झुक गया था। वह अब पढ़ नहीं सकता था, मेरी माता बीता भी कुतानों से झुक गई थी और अब सिवाय अपनी कूँ के और कोई बात ही नहीं करती थी। मेरे पिता ने अपनी अल्प वयस में 'मूनचों के मरार में' की

जि नदी के पवित्रती किनारे पर था, एक बड़ा अम्यन के पुजारियों को भीमन देवर नहीं ली थी। मैंने वह देखी भी थी। वह एक सुन्दर ईंटों की बनी हुई बड़ थी जिग पर प्रवर्तित चन्द्र और चित्र सुंदे हुए थे।

माता ने मुझे गाना लिखाया और पिता ने मेरी पढ़ाई के बारे में पूछा। हमने अपने अपने काम जान करने को और कुछ नहीं था। मुझे वह अपना घर, वह सुन्दर और बड़ी के लोग सब सब-सब से लग रहे थे। मेरा मन उदाग हो गया और सब मुझे 'प्लाह' के मंदिर में टोपिमीड की माद हो आई। वह जो मेरा परम मित्र था। और माता-पिता से यह बहुत-तर कि मुझे जीवन मृदु में मीटना था, मैं दिन छिपने-पिछने 'प्लाह' के मंदिर में पहुँच गया। वहाँ पहुँचे पर मुझे मानस हुआ कि टोपिमीड तो जाने बब बा वहाँ से बाहर निजाल दिया गया था। वहाँ के बिद्यापियों ने उनका नाम लेकर घुना से बूझ दिया, बदोकि नामने उनका अध्यापक बीटा था। परन्तु जब वह चला गया तो उन्होंने मुझे बताया कि वह 'मिथिल-बाब' नामक तदूर-पर में मिलेगा।

जब मैं उनका स्थान पर पहुँचा और वहाँ की ओर अभीरों के मुहम्मों के बीच गया था तो मैंने देखा कि वहाँ द्वार पर ही, अन्दर बिजने बानी मंदिर की प्रस्ता बने-बने अक्षरों में लिखी है— कि वह मंदिर अम्यन के बानों में बने अक्षरों में बनी थी इत्यादि, अन्दर पुष्पी पर ईंट-ईंट-बनाकर उदाग मन ॥ बिच बना रहे थे।

“पुष्पाओं के बागों की कल्प” मिल्हूदे।” कोई चिन्ताया और मैंने जो बुराव देना ला नामने टोपिमीड लहा था। उसके बागों का बरन मदा था और उसके बीच नाम हो रहे थे। उसके बागों पर एक बड़ा-सा गुम्बद उठाग आया था। वह कुछ बुझा और आद-आल प्रवीन होया था। उसके दल के दोहों और केलाग लिख दई थी पर उसके उन बेगों में बने प्यार, लाली और बदन की जो बज को लुका लेनी थी। वह मुझे आ दिया और उदाग लाल के नाम में लु लहा। मुझे बहुत मनोर हुआ खोर्दे-खोर्दे मुझे बहुत हुआ कि एक अब भी बीते ही बिच में। मैंने कहा, “दया मन उदाग है। मैं मुझे लु लहा था कि एक दोनो एक नाम बदने-आवरो मंदिर में लु लहे... वह कि बाई की कैरे 'बने' के उदाग का उदाग नहीं देना।

टोपिमोज ने अपने यस्त्र झाड़कर दिखाया कि उसके पास कुछ भी नहीं था। मैंने फिर कहा, “मेरे पास धार दबन चांदी है” फिर उसने मेरे घुटे सिर की ओर उँगली उठाई, जो यह बता रहा था कि मैं प्रथम श्रेणी का पुजारी था... परन्तु मैंने व्यथित होकर उत्तर दिया, “मैं वैद्य हूँ, पुजारी नहीं... चलो।”

जब हम मदिरा की दुकान में आकर बैठे तो एक दाम ने हमारे हाथ धुलाये और स्वयं मालिक ने रंगीन गिलासों में हमें मदिरा लाकर दी। एक और दास धुने हुए कमल के बीज खाने के लिए हमारे सामने रख गया। टोपिमोज ने एक बूंद उठाकर पृथ्वी पर डाली और कहा, “उस देवी कुम्हार के नाम पर! कला-मंदिर और उसके अध्यापकों को महामारी ले जाये।” और वह गिन-गिनकर उनके नाम लेकर उन्हें शाप देने लगा।

मैंने भी अपना गिलास उठाया और भूमि पर एक बूंद मदिरा डालकर कहा, “अम्मन के नाम पर! उसकी नाव अनन्त काल तक चूती रहे पुजारियों के पेट फट जायें और जीवनगृह के अनभिज्ञ और मूर्ख अध्यापकों को सड़-सड़कर मरना पड़े।” परन्तु मैंने यह सब धीरे से कहा और बहकर चारों ओर मुड़कर देखा कि कोई सुन तो नहीं रहा था।

“ढरो मत” टोपिमोज बोला, “इस तदूरखाने में अम्मनो की इतनी पिटाई की गई है कि यहाँ छिपक्य आने का उनका अब साहस नहीं होना...” फिर कुछ रुककर कहा, “यदि अमीरों के यत्नों के लिए पित्र दानों की दुकान मुझे नहीं मूझती तो निश्चय ही भूखों मर जाता।”

उसने मुझे लिपटी हुई तस्वीरें दिखाई जिन्हें देखकर मुझे हैसी आ गई एक किले के द्वार पर एक बहुत बड़ी भयभीत बिल्ली खड़ी उसकी रक्षा कर रही थी और सामने अगणित चूहे मिलकर उसे डरा रहे थे। एक वृक्ष की ऊपरी टहनी पर एक दरियाई घोड़ा बैठा माना या रहा था और एक क्यूतर घड़ी कठिनार्थ के साथ सीढ़ी लगाकर पेड़ पर चढ़ने का उपक्रम कर रहा था। उसने कागज और खोलकर दिखाया। अगले चित्र में एक छोटा-सा पुजारी एक बड़े से फराऊन को रस्सी पर चलाकर ले जा रहा था जैसे कि वह कोई वनिपशु हो। एक चित्र में एक छोटा-सा फराऊन अम्मन की एक दीर्घ प्रतिमा के सामने झुका सड़ा था। मैंने आश्चर्य से टोपिमोज की

और देना तो उमने गजीरतापूर्वक कहा : “मुझे देना ? यह सब अनहोनी बातें हैं और इसीलिए समझदार लोग इन्हें देखकर खुश होते हैं और जब तक यह इन्हें देखकर खुश होते रहेगे, मेरी रोटी मुझे मिलनी रहेगी जब तक कि किसी दिन पुजारी लोग मुझे बाजार में मूंगदरो में पिटवा-पिटवाकर न मरवा डालेंगे...ऐसा यही हो चुका है।”

“नियो मित्र !” मैंने उसका ध्यान बँटाया फिर थोड़ी देर बाद मैंने पूछा, “क्यों का प्रश्न उठाना क्या गलत है ?” मेरा मन अब भी उदास था।

“निश्चय ही गलत है,” वह बोला. “क्योंकि हमने पूछने वाले का बीम के देश में बही ठिकाना नहीं है, जब कुछ बीम ही होता चाहिए जैसे होता आया है।...” वह चुप हो गया। गहरी उदासी छाई रही। हम मदिरा पीने रहे। फिर हटानू वह बोला, “जब बला-मन्दिर में छैनी-हथोड़ी पकड़ना सीलने के बाद मेरी इच्छा हुई कि मैं परस्पर पर अपना हृदय अर्पित करूँ तो वही नियम के अनुसार मुझमें कहा गया कि औरों को सामान्य मिट्टी दो।...नियम जो ऐसा ही था यत्ना वह बीसे सोहा का यत्ना था ? तब किसी के रूप पहले से ही निर्धारित है...तब हुआ आदमी जिस मुझ में बनाया जाएगा...बैठे हुए की मुझ क्या होगी, पोदा अपना पैर बीसे उठाएगा। बीम बीसे बैठेगा...यह सब पहले से ही निश्चित है। जो इसे नहीं मानेगा उसे मन्दिर से बाहर मारकर निजाल दिया जाएगा और हथोड़ी-छैनी पर उनका कोई अधिकार नहीं रहे जाएगा।...ओ मित्र !” वह सात सीक्कर बोला, “मैंने भी ‘क्यों’ बहुत बार की थी...और मेरे माथे पर मुम्माद बन गए !” उसने अपना मुम्माद छुवर बनाया।

मेरा हृदय भागो विपन्न गया जैसे जोरा फूट गया हो...उमका मनुष्य मरबाद यह निश्चय हो।...मन हल्का हो गया। और जब हम मदिरा में आनन्द लेने लगे।

“मित्र ! हम विभिन्न परिवर्तन काल में पैदा हुए हैं। सब चीजें बदल रही हैं, दुनिया बदल रही है। रीति-रिवाज, भोजन, बोली सब बदल रही है—लोग अब देवताओं को नहीं मानते, अब वह केवल भय के कारण उन्हें मानते हैं। साबद हम दुनिया का अन्त देखने के लिए ही पैदा हुए हैं;

क्योंकि यह दुनिया बहुत ही पुरानी हो गई है। पिरामिड बने हुए बारह सौ साल बीत चुके हैं ! ओफ ! जब मैं यह सोच लेता हूँ तो बच्चों की भाँति हथेली में मुँह छिपाकर रोने की इच्छा प्रबल हो उठती है," परंतु वह रोया नहीं।

टोबिमीज के कहने से जब हम वहाँ से उठे तो रगमालाओं की ओर चले। अग्निकार फैल चुका था। परन्तु सीबीज प्रकाश से चमक रहा था। चारों ओर अग्न्य मशालें जल रही थी, भीड़ से उठा हुआ हुआ शोर आकाश तक फैल रहा था। दासों के बादशम धनिकों की कुतियाँ उठाए यहाँ-वहाँ भागे जा रहे थे। रगमालाओं में से समीत-महरियाँ निकलकर मनुष्यों के उस प्रवाह पर मानो मोहिनी फैला रही थी।

मैं आज तक कभी रगमालाओं में नहीं गया था। 'बिस्ती और अंगूर' नामक वेद्यागृह में हम गए, जहाँ कई युवतियाँ मुन्हरे दीपों को जलाये बैठी थीं। जब हम नर्म गद्दों पर बैठ गए तो युवतियाँ हमारे सामने आ गईं। उन्होंने मुझमें मदिरा पीने को माँगी, क्योंकि उन्होंने कहा कि उनके कंठ चटक रहे थे। फिर दो नयी युवतियाँ ने हमारे सम्मुख नृत्य किया। उनके हाव-भाव और अगवानन इत्यादि सबकुछ ही अद्भुत और कठिन थे। मैंने बीच होने के नाते पहुँचे भी कई बार नम्र स्त्रियाँ देख ली थी, परन्तु ऐसा हाव-भाव, स्तनों और जपाओं का झिझका और पीन निगमों का मटकाना कभी नहीं देखा था। मुझे वह सब बहुत अच्छा लगा। परन्तु मगीन मुन-कर मैं फिर उदास हो उठा, एक सुन्दरी युवती ने आकर मेरा हाथ पकड़ लिया और अपनी कमल मेंरी जगम में टबाने लगी और मुझमें कहा कि मेरी नेत्र सुन्दर और सुझिमानों जैसे लगने लगे। मैंने उसके नेत्रों में शीतल देखा... वह प्रोम अन्तु में नील के जल की भाँति हरे नहीं थे, मैंने उनके नम्र स्तन देखे पर उन पर राजसी झीने वस्त्र नहीं थे। मेरा मन उछाट हो गया और मैंने फिर उसकी ओर नहीं देखा। न उसमें 'मेरी वस्तु' कहने की ही मेरी इच्छा हुई। फिर मुझे अपनी याद है कि एक भीमकाय हस्ती मुझे सात देकर वहाँ से निदान रहा था, मैं सीढ़ियों में नीचे गए गया था। मेरा मुँहा हुआ निरदुःख रहा था। टोबिमीज अपने कविष्ट कथों का महाराज देकर मुझे नील के झिलारे में गया जहाँ मैंने जो आकर पानी

पिया और तिर छोड़ा, पैर धोये और हाथ धोये, मुझे बीपा के बोल याद आ रहे थे। उगने कहा था, "भाती में बड़ा रहता है---घाम में एक ताँबे का टुकड़ा भी नहीं रहता।"

घोर में जब मैं जीवनगृह गया तो मैंने जीघ्र ही घंटे बपड़े उतारकर गुध्र भेत करन पहने और नूँयो-बहरी के लिए बने हुए निचिस्तागृह में बाध करने बला गया। मेरे सिर पर गुम्मद उछल रहे थे, आँखें मूनी लाल हो रही थी; मार्ग में मुझे प्रधान बीघ मिला। देखने ही बोया।

"तुम्हारा क्या होगा यदि रात्रि के समय तुम प्यानी का हिताव न करने हुए पीने चले जाओगे? तुम्हारा क्या होगा यदि तुम अपना धन नर्तकियों के यहाँ मष्ट करोगे और नते में खुर होकर मदिरा के पात्रो को तोड़ोगे और भले नागरिकों को मयभीत करोगे? तुम्हारा क्या होगा यदि तुम रक्तपात करोगे और बीबीदार से भागोगे?" यह तादना के बही मष्ट थे जो ऐसे समय उच्चारण करने के लिए पुस्तक में लिखे थे और जिन्हें मैं जानना था—जो मुझे याद थे। परन्तु कह चुकने के बाद वह मुस्कराया और मुझे अपने कमरे में लेजाकर उसने पेट साफ करने के लिए औषधि दी। मैंने अनुभव किया कि जीवनगृह में मदिरा और रोगनाभार् भी मान्य थी यदि कोई 'कधी' के ज्ञान को न उठाए।

और बीबीड का बुलार भुम पर भी बढ़ बैठा। रातें दिन से अच्छी लगनी और मसामो का प्रबाध गुरु से अच्छा लगना। रोगियों की कराँठ से तीरिया का संगीत मधुरतर मगता। और पुराने बंधों की मोला-बाँधी से पुषतियों की भुमगृमाहट अच्छी लगनी। परन्तु जब तक जीवन-गृह में बाध करना होगा, अपने परीतकों को खुश करना और अपना हाथ माध रखना। इन सब बातों के बारे में मुझे पूछने वाला कोई पैदा भी नहीं हुआ था। परन्तु फिर भी अभी मैं किसी स्त्री के गपध में नहीं आया था, हाथीवि अब मैं जान गया था कि उनके शरीर अग्नि से तेज नहीं जलन थे।

उन दिनों बीबीड में बहरी अच्छाई चंसी हुई थी बसोबि कराऊन

जब मैंने पहले रोगी का सिर उस्तरे से सावधानी से मूढ़ दिया और उसे साफ कर दिया तो पवित्र अग्नि में पवित्र किए हुए औजारों को लेकर प्लाहौर उनके पास आया और उसने उस सिर पर एक विशेष मुन्न करने का मरहम लगाया फिर चाकू से उसकी शोपड़ी में एक छेद किया और अगलों की हड्डियों को दबाया । रक्त बुरी तरह बहने लगा पर उसने कोई चिन्ता नहीं की । फिर एक गोल नली को ठोककर उसने एक छेद बनाया और तब रोगी कराहने लगा । प्लाहौर तब बोला :

“इस रोगी के सिर में मैं कोई विशेषता नहीं देखता,” और उसने वही गोल हड्डी वहाँ फिर से बँटाकर उसका सिर भी दिया । पर इतने में वह आरमी मर गया ।

“मेरे हाथ कुछ बाँपने से मालूम होते हैं,” प्लाहौर बोला । फिर मुबक दिशाबियों की ओर देखकर उसने कहा, “मुझे यदि बोरी मदिरा मिल जाए तो ठीक रहेगा ।”

देसने वालों में जीवन-गृह के अग्न्याश्रय वण तथा नवे दिशाधी भी थे, उन्होंने भी उस मदिरा लाकर पिता दी ।

दूसरा रोगी एक अल्पिष्ठ हम्मी था जो हीलहील में भी बहुत बड़ा था । प्लाहौर उसे देखकर बोला, “इसे कई आरमी दिनकर इनकी ओर से बाँध दो कि इसका सिर कोई दानव भी नहीं हिला सके ।” जीवन-गृह में एक रक्त रोकने वाला मनुष्य भी अकसर रहा करता था । उसमें कुछ बैड़ी शक्ति होती थी कि उसके सामने रहने में रक्त रुक जाता था । उस विशेष गुण का कारण वह स्वयं भी नहीं जानता था फिर भी वह उस गुण से रोगियों के लिए बहुत काम का होता । जब प्लाहौर ने उस हम्मी के सिर में छेद किया तो जो रक्त के पम्पारे छूटे उन्हें शास मरहम लगाकर रोका गया । जो तब भी न रुका । उसे उस रक्त रोकने वाले में आकर केवल अपनी उपस्थिति से ही रोक दिया ।

तीसरा ही हम्मी के सिर पर में ह्देली के अरावर की एक ह्देली निजाम दी गई । अदर रक्त जमा हुआ मिला और गुरु ह्देली का दुबड़ा भेजे की मचेंदी में देठा होकर जंगा हुआ मिला । अग्नय नाबधानी में प्लाहौर ने वह रक्त पीया और उस ह्देली के दुबई को पीच लिया । मारे

सुवर्ण-गृह के परकोटे के बाहर लोगों की भीड़ जमा थी । लोग उन स्थानों और नदी-किनारों में भी टटकारसमा गए थे, जहाँ उनको जाने या खड़े रहने की आज्ञा नहीं थी । जल में भी भीड़ नावों पर खड़ी थी, धनी लोग अपनी काठ की नौकाओं में, तो निर्धन बीस के बबरो पर । जब उन्होंने हमें देखा तो सनसनी दौड़ गई कि राजबैद्य—सिर खोलने वाला—आ रहा था । तब लोगो ने दुःख में अपने हाथ ऊपर उठाये और फिर जब हम आगे बढ़े तो पीछे से रोने-बीखने की आवाजें आने लगी । सभी जानते थे कि सिर खुलने के बाद कोई क़राऊन तीन दिन से अधिक नहीं जीवित रहता था ।

‘कमल द्वार’ से हम अन्दर से जाये गए । दरबारी लोग हमारे सामने घुटनों की सौंध में हाथ फैलाकर झुक गए क्योंकि हम मृत्यु को अपने साथ लाए थे । क़राऊन के अपने बैठ से कुछ बातचीत करने के बाद प्लाहोरे ने आकाश की ओर हाथ उठाया और फिर दीवारों को पवित्र अग्नि में गुड़ करने लगा । फिर कई अद्भुत रूप से सजे हुए बड़े-बड़े कमरों में होकर हम क़राऊन के शयनकक्ष की ओर चले ।

महान् क़राऊन एक सुन्दरी गिलाफ़ के नीचे एक विशाल पर्लंग पर पड़ा था । पर्लंग के पावों की जगह सुवर्ण के सिंह बने हुए थे । उसका मुँह हुआ शरीर मग्न था—उस पर राजसी चिह्न उस समय एक भी नहीं था । वह बेहोश था और उसका मुँहसे सें पीड़ित सिर एक ओर मुड़का हुआ था । वह दक-दककर गहरे श्वास ले रहा था और उसके मुँह के कोरों में पूरक वह रहा था । उसकी उम्र छमन की दयनीय अवस्था को देखकर उसे जीवन-गृह में उसी अवस्था में पड़े हुए किसी सामान्य रोगी से भिन्न भन्ना कौन कह सकता था ? परन्तु दीवारों पर उसे तयड़े घोड़ों के रूप की मँभा-मने हुए वह सिंहों का शिखार खेमने हुए दिखाया गया था । घोड़ों के निरों पर बहुमूल्य पर लगे हुए थे और उसकी बलिष्ठ भुजाओं में घनुष पूरा निधा हुआ था । सिंह उसके परमों पर उसके तीरों में छिदे पड़े थे ।

हम दोनों ने उसके सामने बैठकर उसका अभिवादन किया । सभी

जानने थे कि प्लाहौर की चिकित्सा उसके लिए व्यर्थ थी, परन्तु सनातन में यही रीति चली आई थी कि यदि प्राकृतिक रूप से मृत्यु नहीं आती थी तो सिर खोलकर उसका आवाहन किया जाता था। मैंने बस्न में से बाकू, चिमटी, नवी इत्यादि निकालकर एक बार फिर उन्हें अग्नि में झुड़ दिया। राजवंश ने मरने हुए मन्नाट् का सिर उस्तरे से पहने ही साफ कर दिया था। प्लाहौर ने रक्त रोकने वाले को आज्ञा दी कि वह पर्षेण पर आकर बैठ जाए और पुनराज्ञ के सिर को अपने हाथों में ले लें।

खून बहेगा इत्यादि, फिर भी वह न मानी और वह जैया के किनारे बैठ गई और उसने अपने मरते हुए पति के सिर को धीरे से उठाकर अपनी गोदी में रख लिया और इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं की कि उसके मुँह से थूक उसकी गोद में गिरने लगा था ।

“यह मेरा है, उसने कहा “और इसे कोई नहीं छूएगा, यह मेरे ही हाथों में से होकर मृत्यु के साम्राज्य में जायेगा ।

“यह अपने पिता सूर्य के अहास में चढ़कर जायेंगे ” प्लाहीर ने जोड़ा और चाकू से सिर में छेद दिया और कहता गया, “सूर्य ने ही इन्हें उत्पन्न किया था और सूर्य में ही यह लौट आएँगे और सब लोग मानवत काल तक उसका नाम याद करने वापस हो लेंगे—सैंट आदि समाज शैतानों के नाम पर यह रक्त बन्द करने वाला बहो बला गया ?” वह कुशल वैद्य की भाँति काम भी करता जाता था और सातवना के तथा प्रशास के मन्द भी करता जाता था । जब मिर में छेद कर लिया गया और रक्त बुरी तरह बहने लगा तो उसने रक्त बन्द करने वाले की याद की ।

अब तक साम्राज्ञी तामा की गोद रक्त से लाल हो चुकी थी । अन्दर से जमा हुआ खून निबलकर गिर गया था । मुनने ही वह व्यक्ति आगे बढ़ा और उसने कराऊन के मुँह को देखकर हाथ आगे कर दिये, खून एकदम से बन्द हो गया । मैंने आश्चर्य से उस सिर को साफ कर दिया ।

“क्षमा करें देवि !” प्लाहीर कहता गया और उसने नली मेरे हाथ से ले ली । “बहु सीधे...हाँ सीधे सूर्य के मूर्धनमय अहास में...हाँ...जहाज में जायेंगे...अम्मन की कृपा इनके साथ हो,” और उसने मिर में हड़दी के बीच बहु नली उगार दी, वह विधुत्-शक्ति मेदज्ञहस्तों से काम कर रहा था । मुखराज ने तडा से जागकर आगे बढ़म रगा और वह बोला, “उन्हें अम्मन मही बतिका ‘रा-हैराबटे’ एटीन के रूप में आशीर्वाद दे देगा...उनकी मग्न वामना करेगा ।” उसका मुँह बोलने समय बंद रहा था ।

“ओह ! हाँ, एटीन ! ...प्लाहीर ने सट जान बदलकर कहा, “हाँ, एटीन...जरा मुँह से शलनी से निबल गया ।” ओह ! उसने आबनुम की मूँठ वाले हथौड़े से टैनी मिर में हड़के-हड़के हाथों में छोपी, फिर कहा, “मुझे याद है अपने देवी ज्ञान से इन्होंने एटीन का एक मन्दिर भी बनवाया

था। वह निश्चय ही तब बना था "जब युवराज पैदा हो गए थे... टीक है टीक है... है न देवि ताया ? ...अभी..." और उसने स्पर्शकर युवराज की भी ओर देखकर कहा, "मंदिरा की एक घूंट मेरे हाथों में स्थिरता उत्पन्न कर देगी और इससे युवराज का बिगड़ेगा भी नहीं..."

मैंने उसे पीमटी दे दी और उसने भेजे में से एक हड्डी का टुकड़ा खरं-खरं खाँचते हुए निवास दिया। फिर वह उस तीव्र प्रकाश में, जो वहाँ मशालों से हो रहा था; कराऊन के घूरे-नीले भेजे को ध्यान से देखने लगा जो हिल रहा था। प्लाहौर बोला, "अब जो हो गया सो हो गया। अब उसका एटीन उसको शक्ति प्रदान करेगा क्योंकि यह तो मामला ही देवताओं का है, इसमें हम मानव भला करें भी तो क्या?"

फिर उसने हल्के हाथ से, अत्यन्त सावधानी से ऊपर की हड्डी वहीं बैठा दी और घाव के किनारों को दबाकर ऊपरसे पट्टी बाँध दी। साम्राज्ञी ने उसका सिर एक अमूल्य लकड़ी के बने हुए त्रिविंश के सहारे रख दिया और प्लाहौर की ओर देखा। उसके ऊपर रक्त सूख गया था पर जैसे उसे उसकी परवाह नहीं थी। प्लाहौर ने उसकी आँखों में बिना डरे, बिना झुके देखा, और धीमे से कहा, "इनके देवता चाहेंगे तो यह भोर तक जीवित रहेगे।" और उसने हमदर्दी में हाथ ऊपर उठा दिये।

"तुम्हें बहुत इनाम मिलेगा," साम्राज्ञी ने कहा और फिर जाने को कह दिया।

एक और कक्ष में हमारे लिए भोजन तैयार किया गया था, जहाँ नाना प्रकार के मांस रखे थे और अनेक प्रकार की मंदिरा बड़े-बड़े पात्रों में रखी थी, जिन्हें देखते ही प्लाहौर की बाँछें खिल उठी। वह उनमें से छांटने लगा। एक दास ने हमारे हाथों पर पानी डाला।

जब हम अकेले रह गए और प्लाहौर ने मंदिरा के गिलास पर गिलास पी लिये तो कहने लगा :

"कहने है कि सिंहासन का अधिकारी एटीन का दैवी पुत्र है। स्वप्न में साम्राज्ञी ने 'रा-हैरावटे' के मंदिर को देखा था और उसके बाद ही उसके गर्भ में यह पुत्र आया था। वहाँ से उसने एक उच्चाभिलाषी पुजारी, जिसका नाम 'आई' था साथ ले लिया था। आई की स्त्री अपने ही स्तनों

ये देवता मर गये

से इस पुत्र और अपनी पुत्री नेफरतीती को दूध पिलाती थी। नेफरतीती और राजकुमार हिल-मिल गए और आई-बहन की भाँति महल में खेलते रहे। अब तुम्हीं सोचो इसका क्या नतीजा होने-वाला है ?" और वह देर तक पीता रहा और बकता रहा। मैंने कहा :

"लाहौर ! जब भीबीज का प्रकाश रात्रि में आकाश की ओर उठता है तो मेरे हृदय में प्यार की हक-सी उठने लगती है।"

सुनकर वह तनिक हँसा, फिर बोला : "प्यार-व्यार कुछ नहीं होता। आदमी बिना औरत के उदास रहता है। और औरत एक बार मिल गई तो उसे और पाने के लिए और ज्यादा उदास रहता है। ऐसा ही होता आया है, ऐसा ही होगा... प्यार की बातें मुझसे स्पर्श मत करो करना वही मुझे तुम्हारा सिर न खोलना पड़ जाये। हाँ.. हाँ तुम्हारा सिर मैं बिना कुछ लिये ही खोल दूँगा।"

—जब वह बहुत बहकने लगा तो मैंने उसे शीया पर सुला दिया। भीबीज में रातें डंकी होती है। मैंने उसे नर्म आलें ओढ़ा दीं।

मैं सुती छत पर निमग्नकर बाहर उद्यान में फूलों के बीच निचल गया। नीचे नील बह रही थी। मुझे प्रीप्प जलु में नील के जल की भाँति बोहरी जलें बाद हो आई और मैं बिह्वल हो उठा।

तभी मेरे पास कोई आया। उसने अधिकार के स्वर में पूछा : 'क्या वह एकाकी है ?' मैंने पहचाना। वह सिंहासन का अधिकारी, होनेवाला क्रराक्रम था। मैं उसके सामने बैठ गया और बोलने का मेरा साहस नहीं हुआ।

"गड़ा हो झूठे !" वह बोला : "यहाँ हमें देखने वाला कोई नहीं है फिर स्पर्श क्यों झूठता है ? यह सब मेरे पिता एटोन के लिए सुरक्षित रख, क्योंकि अक्षयी देवता वही है, और मैं उसका पुत्र हूँ। वाणी सब झूठे है... सम्मन भी झूठा देवता है !"

मैंने विरोध करने की सी मुद्रा बनाई और कहा, "ओह !" जैसे मैं सम्मन के विरुद्ध वही रागदो से भयभीत हो गया था।

"लाहौर तो मुद्रा बदर है... यदि तुम्हें महल से बाहर जाने से पहले करना ही होगा तो तुम्हारा भी नया नाम रखा जाएगा... एकाकी... !

प्लाहीर ने कहा था कि यदि फराऊन मर गया तो हम तीनों—वह, मैं और उस रक्त रोकने वाले को मरना होगा। अब यह भी कह रहा था। मेरे रोम-रोम भय से खड़े हो गए। उफ! मैं मरना नहीं चाहता था। क्यों लाया प्लाहीर—वह बुद्धि बंदर—मुझे अपने साथ!

सुवराज हाँफ रहा था, वह कहने लगा। “बेचनी...हाँ बेचनी बनी रहेगी...मुझे कहीं दूसरी जगह जाना होगा—मेरा देवता प्रत्यक्ष आ रहा है...मेरे साथ रहो एकाकी। देखो वह मेरे शरीर को दबा रहा है—मेरी जिज्ञा कौसी भिन्न गई है...”

मैं भय से काँप रहा था। मैंने उसे बेहोशी में बोलते हुए समझा, परंतु वह हुक्म देता हुआ बोला “बनो!” और मैं उसके पीछे हो लिया। वह उद्यान से निवृत्तकर फराऊन की भील के पास पहुँच गया। दीवारों के बाहर हमदर्दों की आँहें गुनाई पड़ रही थी। मुझे बहुत भय लगा। प्लाहीर ने कहा था कि जब तक मघाट न मर जाये हमें महल से बाहर न जाना था, परन्तु सुवराज की आज्ञा का उत्पन्न भला मैं कैसे कर सकता था?

नदी किनारे पहुँचकर उसने वहाँ बँधी एक नौका खोज ली। अब हम उसे खेने हुए आगे बढ़ने लगे। किमी ने हमें नहीं टोका। रात निम्नग थी। दूर धीवीड़ का जाल प्रकाश जमझमा रहा था। दूसरी पार जाकर वह माथ से नीचे बूढ़ पड़ा। वहाँ और भी बहुत से माँथ थे क्योंकि धीवीड़ में यह जाल मभी जानने थे कि उस रात मघाट मरने वाला था। परन्तु किसी ने हमें नहीं टोका।

आकाश में तारे जल रहे थे। रात गहरी और सवे थी। वह तेज़ी से चला आ रहा था। उसके पीछे मैं भाग रहा था और स्वेद मेरी पीठ पर बह रहा था। वह पहाड़ियों की घाटियों में चला आ रहा था। धीवीड़ पीछे रह गया। पूर्व की तीनों पहाड़ियाँ ओजमन के प्रदृश्यों की जगह मानी जानी थी अब हमारे सामने आकाश की कृष्णभूमि में काली दीर्घाकाप बनकर खड़ी थी।

सुवराज ने मेरे चलने-खलने हटने मन कहा और फिर गिर गया। वह धीमे शब्दों में बोला: “मिम्यूट्रे! मेरे हाथों को बांध लो, क्योंकि यह बँधने है...मेरा हृदय मेरी कल्पितियों में टकरा रहा है...दुनिया बीगल हो

गई है...हम दोनों अकेले हैं, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम मेरे साथ चल नहीं सकते—और मैं अकेला रहना नहीं चाहता !”

मैंने उसकी कलाईयाँ पकड़ ली। वह स्वेद से भीग गया था। ससार वास्तव में बीरान बन रहा था। दूर गीदड़ चिल्ला रहे थे, मानो मृत्यु का संदेश ला रहे हों। और धीरे-धीरे तारों की चमक मद्धिम होती गई। और वह उठकर मेरे हाथ झटककर खड़ा हो गया। मेघ फटने लगे थे और लगाई फैलकर अलौकिक सौंदर्य बिखेरने लगी थी। वह पूर्व की ओर, पर्वत की ओर, मुख करके खड़ा हो गया और उसने धीरे से कहा :

“वह देखो, देवता आ रहा है...देवता आ रहा है !” उसका मुख भय और चिंता से पीला पड़ रहा था।

पवन उन्मुक्त होकर बहने लगा, सामने की पहाड़ियाँ सुवर्णमय हो गईं और उनके पीछे से सूर्य आकाश में बढ़ आया। मुवराज ने और भी धीरे फुसफुसाया, “देवता आ रहा है...” और बहुधृष्वी पर गिरकर भूछिन्न हो गया। परन्तु अब मैं नहीं डरा। जीवन-मृत्यु में अनेकों बार मैंने ऐसे मरीज देखे थे। उसके दाँतों के बीच बने के लिए तकड़ी के अभाव में मैंने अपना उत्तरीय फाड़कर उसकी गोथी बनाई और वह उसके मुँह में दाँतों के बीच दे दी और तब उसके हाथ-पैर मतलने लगा। मैंने मुड़कर देखा कि वहाँ से मरद मिल सके पर बीबीब तो वहाँ से बहुत दूर था। पास में गरीब से गरीब आदमी की भी कुटिया नहीं थी।

और सभी हमारे ऊपर से एक बाज भीखता हुआ उड़ा। वह जैसे सूर्य की किरणों में से उत्पन्न हो गया था। उसने एक गोला चक्कर लगाया फिर वह नीचे आया जैसे मुवराज के सिर पर बैठ जाना चाहता हो और फिर ऊपर उड़ गया। फिर जब वह चक्कर देकर नीचे आने लगा तो मैंने भय से आँखें भीचकर अम्भन को याद किया और उसके पवित्र इशारे हाथ से किये। शायद मुवराज ने भूछिन्न होने से पहले सूर्यपुत्र होरस को ही याद किया था। जब मैंने आँखें खोली तो सामने एक आदमी खड़ा था। शायद वह बाज ही अब आदमी के रूप में बदल गया था। वह देवता की भाँति हूँट-मुँट और जवान था, सूर्य की किरणों की भाँति सुन्दर था। वह गरीब की भाँति एक मोटा कपड़ा ओढ़े हुए था और उसके हाथ में एक

भाला था। हालाँकि मैं देवताओं में विश्वास नहीं करता था फिर भी समय देखकर सुरक्षा के विचार से मैंने उसको दबवत कर दी।

“यह क्या है?” उसने उत्तरी साम्राज्य की भाषा में पूछा : “क्या यह लड़का बीमार है?”

अपनी हरकत पर सजाते हुए और अपने-आपको अत्यन्त भूलें समझते हुए मैं उठ खड़ा हुआ। और फिर मैंने साधारणतया उसका अभिवादन करते हुए कहा : “यदि तुम डाकू हो तो हमारे पास से तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा। यहाँ एक घुबक बीमार है और यदि तुम सहायता करोगे तो देवता तुम्हारा भला करेंगे।”

वह बाज की भाँति सीधी आवाज में चिल्लाया और आकाश से वह पक्षी उतरकर उसके कंधे पर आ बैठा। वह गर्व से बोला :

“मैं बाज का बेटा हौरेमहैव हूँ” रुककर गंभीर स्वर से वह फिर कहने लगा : “मेरे माता-पिता साधारण मिठाई बनाने वाले हैं परन्तु मेरे जन्म पर ज्योतिषियों ने कहा था कि मैं बहुतों पर हुकूमत करूँगा। बाज मेरे आगे-आगे उड़ा और मैंने उसका अनुसरण किया। रात्रि में मुझे नगर में कोई स्थान रुकने को नहीं मिला क्योंकि धीवीज अधकार होने पर भालों से डरता है। परन्तु मैं कराऊन के यहाँ सैनिक बनना चाहता हूँ। लोग कहते हैं कि वह बीमार है। अतएव उसे निश्चय ही अपना साम्राज्य कायम रखने के लिए बलिष्ठ मुजाओ की आवश्यकता पड़ेगी।”

मैंने युवराज के मुँह से वह वचन निकाल दिया और मैं चाहता था कि यदि जल मिला जाता तो मैं उसे होश में ला सकूँ, कि उसने कराहा।

“क्या यह मर रहा है?” हौरेमहैव ने पूछा।

“नहीं, इसपर पवित्र रोग चढ़ गया है...देवी शक्ति का प्रकोप है।”

हौरेमहैव ने अपना भाला मजबूती से पकड़कर मुझसे कहा :

“मुझसे घृणा करने की आवश्यकता नहीं है, केवल इसलिए कि मैं नगे पैर हूँ और गरीब हूँ। मैं वैसे कामचलाऊ तौर पर लिख-पढ़ भी सक्ता हूँ। मैं कद्यों पर हुकूमत करने के योग्य हूँ।...किस देवता का असर है इस पर?”

लोग समझते थे कि देवता मनुष्य के शरीर में बैठकर बोलते थे।

मैंने कहा : “इसका अपना अलग देवता है...मेरा विचार है कि इसके दिशा से कुछ विचित्रता है।”

“यह ठंडा पड़ रहा है,” कहते हुए उसने अपना उत्तरीय उतारकर युवराज को उड़ा दिया। फिर बोला : “वीवीज की धोर ठंडी होती है...और फिर यह तो मोरा है...अवश्य ही किसी धनी का पुत्र है। यह मायूक है। मैं तो होरस का पुत्र हूँ। मेरा रक्त गर्म है। मैं तो कठिनाई और ठंड सब भेस सबता हूँ।...और तुम कौन हो ?”

“द्वेष पीवीज मे अम्मन के मंदिर का प्रथम खेमी का पुजारी।” मैंने कहा। तभी युवराज उठ बैठा। धबकाकर उसने धारी और देखा फिर कराहकर सोलने लगा। उसके दाँत बज रहे थे : “मैंने उसे देख लिया। वह अपने सहस्रो हाथों से मेरी रक्षा करने लगा था...क्या भ्रम भी मैं उस पर अविश्वास कहूँ ?” फिर होरेमहैव को देखकर उसकी भुल सुन्दर और उहीष्ट हो उठा। उसने पूछा : “क्या तुम्हीं को एटीन ने भेजा है ?”

“बाद उड़ा और मैंने उसका पीछा किया और मैं यहाँ आ गया। इससे अधिक और मैं कुछ भी नहीं जानता।”

युवराज ने उसके भासे को देखकर भी भिकोड़कर झट्टे हुए कहा : “तुम भाला लेकर चसते हो ?”

होरेमहैव ने उसे आगे कर दिया और उत्तर दिया :

“बेहतरिन लकड़ी का इसका डंडा है...इसका लाभफल फ़राऊन राज़ी के रक्त का व्यासा है। वह व्यासा है और इसका नाम ‘विदीर्षक’ है।”

“नहीं-नहीं” युवराज ने जोर देकर कहा : “एटीन के साम्राज्य मे यहाँना सबसे बड़ा अपराध है...रक्तपात धुषित कार्य है !”

“रक्त मनुष्यों को मुद्र करता है और उन्हें शक्ति प्रदान करता है। इससे देवता भोटे होते हैं। जब तक मुद्र होने रहेंगे तब तक यह होगा।

“मुद्र अब कभी न होंगे।” युवराज ने आज्ञा दी और होरेमहैव सिर झुका कर हँसा।

बोला ‘सड़का पागल है। मुद्र सदा से होने आये हैं और सदा रहेंगे; क्योंकि यदि साम्राज्यों को जीवित रहना है तो शक्ति की परख क

होगी ही।”

“सब नये उमी की सन्तान हैं—काले-गोरे सब—समाम भापाएँ, बानी भूमि और ताल भूमि सब उसी की हैं” सुवराज सीधा सूर्य की ओर देख रहा था। मैं हर देश में उसके सम्मान में उसका एक मंदिर बनवाऊँगा और वहाँ के शासकों के पास नये जीवन का एक चिह्न भेजूँगा।... क्योंकि मैंने उसे देखा लिया है... उसी में मैं मैं पैदा हुआ हूँ और उमी के पास मैं लौट जाऊँगा।”

“यह पापम लगता है,” हीरेमदेव ने मुझमें कहा “इसे बीच की भाव-प्रवणता है।”

देर तक सुवराज सूर्य की देखना रहा। आखिरकार हम उसे नगर की ओर लाने लगे। घेउं के आगे हमने देखा कि एक मोटा-साठा गुम्बर मुग बाला और बूटे मिर बाला पुबारी मैजिस्ट्री और दामों सहित वहाँ प्रतीक्षा कर रहा था। वह आइएँ वा। जब उसने घुटनों के सामने हाथ फैलाकर सुवराज का अभिवादन किया तो बाल साफ हो गई कि एमेलहोटन तुनीप मर चुका था और वह नये फराउन का अभिवादन कर रहा था। शीघ्र ही नये फराउन की शूद्ध किया गया और उसके अग में मुगप्रिन्स सँभ बना गया फिर राजगी महीन बग्न पहनाये गए और मिर पर राजमुकुट रण दिया गया। नये फराउन का राजगी कुर्मी पर बिनाये अगनिन दाग उठाने सुवर्ण-गुह की ओर चल दिये।

राजमन्त्र में लाहीर आग्न नेत्रों में बिड़बिड़ा होकर मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे लगने लगे वह बग्न गया। “तुम फराउन की मृत्यु के समय न जान वहाँ जाने गए थे और दूसरे में भी उसकी मृत्यु के पास नहीं गए क्या। फराउन की मृत्यु बिड़बिड़ा था अग मेहर उसकी माँ में मे दिखाने और मीठी सूर्य की ओर उड़कर उसमें मर गई।”

मैं न उसे मारी जाने जानाई। अतः वह आग्नदेवद्विज होकर बना
“अन्तर रक्षा करें ! लक्ष्मी मरने फराउन बग्न है !”

और वह मरिचक दोरे लक्ष्मी ।

थोड़ी देर बाद हमें सैनिक एक घेरे में ले गए जहाँ हमें मरना था। राजमुहर रखने वाले उच्चाधिकारी ने चर्म-पत्र खोलकर राजाशाहाहीर को दिखाई जिसे देखकर वह मुस्करा दिया। मैं त्रय-मिश्रित आश्चर्य में डूबा हुआ था।

“सबसे पहले खून रोकने वाले को जाने दो !” शाहीर ने कहा।

व्यक्ति ने सङ्घ उठाया, हवा में घुमाया और घुटनों के बल बैठे हुए उस व्यक्ति की गर्दन तक सङ्घ को लाकर रोक दिया। बहुत ही हल्का स्पर्श हुआ। वह व्यक्ति लुढ़ककर गिर गया। दूसरी वाली मेरी थी। शाहीर ने लड़े ही लड़े मरना स्वीकार कर लिया। और हम विधि और नियमों के अनुसार मर गए थे। फिर हमें नये नाम मिल गए। अब हम अपने पुराने नाम नाम में नहीं ला सकते थे। हमें भारी सोंने की अँगूठियों पर अपने नये नाम खुदे मिले। शाहीर की अँगूठी में खुदा था “वह जो बंदर जैसा है” मेरी में लिखा था “वह जो एकाकी है।” हमें सुवर्ण तोलकर इनाम में दिया गया और नये राजसी वस्त्र पहनाये गए। मैंने अपने जीवन में पहली बार कलफ किये हुए राजसी वस्त्र पहने थे जिनमें गले के चारों ओर के पट्टे में चाँदी मड़ी थी और जिसमें मूल्यवान् पर्यवर जड़े हुए थे। जब सौकरी ने उस रक्त रोकने वाले को उठाया तो देखा कि वह मुरा हो गया था। शायद धक्काकर ही वह मर गया था।

दरबार में अब मेरा नाम “सिन्धूदे जो एकाकी है” हो गया था।

जब मैं उन वस्त्रों की और धातुपुष्पों को पहनकर जीवन-गृह गया तो मेरे अध्यापकों ने झुककर मेरा अभिवादन किया। फिर भी मैं छात्र ही माना गया और कुराऊन की मृत्यु का पूरा विवरण मुझे ही लिखना पड़ा, जिसके अन्त में उसके प्राणों को मैंने शाहीर के बड़े अनुमार चिड़िया बनाकर नाक से निकालकर सूर्य की ओर उड़ा दिया था। यह बसात पूरे सत्तर दिनों तक, जब तक कि उसका जरीर ममाले लगाकर अमरता के लिए तैयार किया जाना रहा, प्रवा के बीच पड़कर सुनाया गया और इस पूरे समय बीबीज के बाजार बंद रहे और इस बीच मदिरा

प्राप्त करने तथा वेश्याओं के पास जाने के लिए पिछले द्वार चुपचाप खुले रहते थे।

धीधीड़-ज्वर मुझ पर जोरों से चढ़ा हुआ था। मैं घन और घन प्राप्त करना चाहता था। मैंने उस सोने से एक मकान और एक काना दास खरीदा। मकान नये अच्छे मकानों वाली सड़क पर था और उसे मैंने जितना मुझसे हो सका उतना सजाया। काने दास का नाम कप्ताह था। उसका कहना था कि उसकी कानी आँख मेरी बहुत मदद करेगी। वह लोगों से कहेगा कि पहले वह बिल्कुल अंधा था और कि उसे मैंने इलाज के द्वारा एक आँख दे दी थी। स्वागत-कक्ष की भीतों पर मैंने अपने मित्र टोपमीड से चित्र सँचवाये थे हालाँकि वह प्लाह के मंदिर की किताब में लिखे कलाकारों में से एक नहीं था। एक चित्र में बुद्धिमान इन्डोटप—जो बैलों का देवता था—मुझे सोल दे रहा था। उसका चित्र बड़ा था और मेरा उससे बहुत छोटा जैसा कि उनके विनों चित्रकारी का नियम था। चित्र के नीचे लिखा था :

“तुम्हारे शिष्यों में से सबसे अधिक बुद्धिमान और चतुर सिन्धू है। सैगमट का वेदा, वह जो एकाकी है।”

एक और चित्र में मैं अम्भन के सम्मुख बलि दे रहा था। इसे देखकर मेरे रोगी लोगों का विश्वास मुझमें बढ़ता था। तीसरे चित्र में फ़राऊन महान् स्वर्ग से मुझे बिड़िया बनकर देख रहा था और उसके अनुचर लोग मुझे सुवर्ण तालकर दे रहे थे तथा मुझे राजसी वस्त्रों से सजा रहे थे।

उसी शाम हम दोनों मित्र एक मदिरालय में बैठे मदिरा पीकर आनंद ले रहे थे और नाचती हुई युवतियों के यौवन को देख रहे थे। अभी तक मेरे पास फ़राऊन का दिया हुआ सोना बच रहा था।

राजा की मुहर रखने वाले बूढ़े ने जैसा कहा था ठीक वैसा ही हुआ। जब फ़राऊन का शरीर सम्राटों की घाटी में रख दिया गया और बन्ध के द्वार पर मुहर लगा दी गई तो राजमाता सिद्दामन पर बैठी और उसने अपने हाथों में राजदंड और शस्त्र ले लिया। उसकी टोड़ी पर राज्य की दाड़ी बँधी रहती और कमर में सिंह की दुम बँधी सटका करती थी। युव-राज अभी सिद्दामन पर नहीं बैठा था। उसका कहना था कि उसे अभी

अपने-आपको पवित्र करना था। राजमाता ने सिंहासन पर बैठने के बाद ही बुद्ध राजमुहर रखने वाले को हटा दिया और उसके स्थान पर 'आई' को नियुक्त कर दिया। वह जो साधारण पुजारी था अब सम्पूर्ण कैम के देश में सबसे बड़ा पदाधिकारी बन गया। अम्मन के मंदिर में अमन्तोष की महूर दौड़ गई। अब वह मन्त्रियों की सी उस निरन्तर भनभनाहट से गुँज उठा। और तब राज-मन्त्रियों ने और स्वयं में पुत्रारिषों को अपमकुन दिखाई देने लग गए। कभी नगर के बाहर के साजसों का जल रक्थमय हो जाता तो कभी मर्याद बर्ण होती।

परन्तु सैन्य बलों में कैम के लोग, सीरिया के लोग हम्मी और सररायन लोग लुप्त थे क्योंकि साम्राज्ञी ने उन्हें बहुमूल्य उपहार व इनाम बँटवाए थे। कैम के देश की शक्ति अद्वितीय थी। सीरिया में—मित्री सेना में, वहाँ घाक जमा रखी थी। और बेबीलोन; स्मर्ना, सिडोन और पात्रा के शासक लोगों ने, जो छुटपन में करार के चरणों में मुवर्त-गुह में ही पले थे, मातम मनाया जैसे करार उनका अपना ही पिता था और साम्राज्ञी को उन्होंने पत्र लिखे जिसमें यह ऐलान किया कि वे उसके (रानी के) चरणों की धूमि के बराबर भी नहीं थे।

मितम्मी के शासक ने महारानी से अपनी पुत्री तागू सीरा को बहु-मूल्य रत्नाभूषणों तथा अनेकानेक दासों के साथ नये करार की सेवा में भेंट दिया कि वह उसे विवाह में स्वीकार करे। वह उस समय केवल छ साल की बच्ची थी। सुबराह ने उससे विवाह कर लिया क्योंकि सीरिया और उसकी साम्राज्य के बीच मितम्मी का राज्य एक भोज की मर्ति था वहाँ ॥ होकर कारवान समुद्र तट तक पहुँच जाते थे।

अम्मन की दैवी पुत्री सैलमट के मंदिर में उत्सव बन्द हो गए थे और उसके मंदिर के दीर्घ द्वारों की बुजों पर जल बह गया था।

इन्हीं सब विषयों पर, टोबिमीह और मैं बैठे-बैठे बातें कर रहे थे और परिभाषा करते जाते थे। नित्य और मैं मेरा कामा दास मुझे नामक नदी मछली लाने को देता और विनाश करकर हल्की मंदिर विनाश—द्वि-मुह-हाथ छोकर मैं मछियों की बात कोहता रहा।

बाढ़ का समय था। नदी का जल ऊपर उठकर मन्दिर के प्राकार में जा लगा था। एक दिन हठान् मेरे पाग हौरमहैव आया। वह राजगी महीन वस्त्र पहने था और उसके गले में मोने की जड़ीर सटक रही थी। अब वह फराऊन के यहाँ एक पदाधिकारी हो गया था। उसके हाथ में उसके पद का प्रतीक — एक चाबुक थी। अब वह भाला नहीं रखता था। वह मौर्य में देवतुल्य लग रहा था।

उसने मुझे बताया ही बातों में बतलाया कि वह पदाधिकारी बन जाने पर भी दुःखी था। उसने कहा : “यीवीज में पौरय का कोई मूल्य नहीं है। मेरे साथ के पदाधिकारी केवल दम-दम साल के सड़के हैं। केवल वह उच्च वंश और बड़े सामन्तों के पुत्र हैं। दरबार की स्त्रियाँ अब उन पुरखों को पसन्द करती हैं जो उन्हीं की भाँति कोमल और भीरु होते हैं। वह बाँदी-सोने की छोटी-छोटी-सी सलवारों को सिलौने की भाँति पहनते हैं। सैनिकों में अनुशासन नहीं है। वह मदिरा पीकर राजधराने की दासियों के साथ पड़े रहने हैं। शत्रु के रक्त की प्यास तो जैसे किसी में है ही नहीं। ...सोने की जड़ीरें इनाम में मिलती हैं। क्या भडा है इन्हें पहनने में जब तक यह शत्रु को मारकर न प्राप्त की जायें। साम्राज्यी मुँह पर दाढ़ी बाँधकर राज चलाती हैं। परन्तु भला एक योद्धा किस प्रकार एक स्त्री को अपना नायक मान सकता है...”

वह कहता रहा : “मेरे बाप की राय ! सैनिक तो युद्ध-भूमि में बनता है और कहीं नहीं...मेरे पौरय को देखो। मैं दो जवानों को भीषकर मार सकता हूँ...परन्तु स्त्रियाँ मुझसे दूर रहती हैं। उन्हें बिना छाती पर बालों वाले मुखक पसन्द हैं जो मुँह, होंठ और गाल स्त्रियों की भाँति ही रंगते हैं। ...सिग्यूहे ! तुम एकाकी हो, मैं भी एकाकी ही हूँ। यह मैं जानता हूँ कि मैं शासन करने के लिए पैदा हुआ हूँ और कि दोनों साम्राज्यों को एक दिन मेरी आवश्यकता पड़ेगी, फिर भी मेरी यहाँ रुकने की अथ इच्छा नहीं होती...यीवीज से मुझे घृणा है...यहाँ की मन्त्रियाँ मुझे परेशान करती हैं।”

फिर उसने बहुत धुमा-फिराकर यह बतलाया कि वह सुवर्णमुह में एक स्त्री से प्रेम करने लगा था, परन्तु वह भी कि उसकी ओर कभी देखती

भी न थी।

“कौन है वह ?” मैंने साधारणतया पूछा।

वह धीरे से बोला, “वह एक पवित्र कुमारी है... रासजी वस्त्रों से आच्छादित बहुमूल्य रत्नजडित आभूषणों की पहनने वाली... फराऊन की बहिन बंकेटा मोल।”

मुझे ही मेरे पैरों के नीचे की सरती सरक गई। मुझे हीरेमहेब का सिर उसके घड़ से अलग प्रतीत होने लगा, फिर मैंने कहा, “मित्र हीरेमहेब! धीबीज छोड़ जाओ, तुम्हारे लिए यही भला है। कोई भी मानव उस देवी को छूने का भी साहस नहीं कर सकता। आम्सेनखेतो... उसे भूल जाओ; वह तुम्हारी पकड़ से बहुत आगे है। सावधान! यदि वह कभी बिवाह करेगी भी तो अपने भाई फराऊन से ही करेगी क्योंकि उसके अतिरिक्त उसके योग्य वर और है ही कहाँ ?”

सायंकाल को उसने मुझे रंगशाला चलने को मजबूर किया। कम्पाहू हमारे लिए एक कुर्सी ले आया। बास्त के मन्दिर के पास जब हम उतरकर एक मशालो से जड़ीपत्त, घर में, घुसने लगे, तो कुर्सी वालों ने अधिक किरामा पाने के लिए झगड़ना शुरू किया। परन्तु जब हीरेमहेब ने उन पर चाबुक फटकारा तो सब भाग गए।

जब हम अन्दर घुसे तो जो स्त्री हमारा स्वागत करने को आगे आई, उस पर मेरी निगाहें ठहरी की ठहरी रह गई। वह राजसी स्त्रीने वस्त्र पहने हुई थी, जिनमें से उसकी बाँहें किसी देवी की भुजाओं की भाँति दमक रही थीं। उसके सिर पर नीली कुत्रिम केज-राशि थी और वह बहुत-से मानिक जड़े स्वर्णभूषण पहने हुई थी। उसकी आँखों के नीचे हरा रंग लगा था परन्तु सब हरे रंगों से भी गहरी हरी उसकी आँखें थीं जैसे प्रौढ ऋतु में नील का जल हो जाता है। मेरा हृदय उसी में खो गया क्योंकि वह मेरी वही नेकर नेकर नेकर थी जो मुझे एक बार अम्मन के विशाल मन्दिर के एक प्राकार में मिली थी। उसने मुझे नहीं पहचाना। वह हीरेमहेब को देखकर मुस्कराई, जिसने अपने पद का चाबुक उठाकर उसे उत्तर दिया। वहाँ घोट का कफ़ा भी मिल गया जो दौड़कर हीरेमहेब से लिपट गया और उसने उसे मित्र बहककर सम्बोधित किया।

किसी ने भी मेरी परवाह नहीं की और मैं आराम से अपनी बहन को देखा किया। वह पहले से बड़ी हो गई थी। उसके नेत्रों में वह चमक नहीं थी। नेत्र मानो दोहरे पत्थर के टुकड़े थे, वह हौरमहेब के गले की जंजीर पर टिके हुए थे। उसके होंठ मुस्करा रहे थे।

सौरिया का तेज संगीत जारी था। वाद्य इतनी जोर से बजाये जा रहे थे कि वहाँ संभाषण करना भी कठिन हो रहा था। साथ ही वहाँ हल्ता-गुल्ता, अट्टहास, मदिरा के पात्र उड़ेलना, फूल फेंकना इत्यादि बुरी तरह चल रहा था। यह प्रत्यक्ष था कि वहाँ लोग देर से मदिरा पी रहे थे क्योंकि एक स्त्री ने वहाँ के कर दो थो। दास ने उसे पात्र बहुत देर में दिया था और उसने अपने वस्त्र बिगाड़ लिये थे। लोग हँस रहे थे।

क्रीट के अपना ने मेरा आतिथ्य कर लिया और मेरे मुँह पर अपना रंग लगा दिया और फिर वह मुझे मित्र कहने लगा।

नेकर नेकर नेकर ने मेरी ओर देखकर कहा, "सिन्धूहे! हाँ... मैं किसी समय एक सिन्धूहे को जानती थी... वह भी बीच होने वाला था... उन दिनों पड़ रहा था।"

"मैं वही सिन्धूहे हूँ" मैंने उसकी आँखों में दृष्टि गड़ाकर कांपते हुए कहा।

"नहीं... नहीं, तुम वह सिन्धूहे नहीं हो।" वह सिर हिलाकर बोली, "वह सिन्धूहे तो हिरनी की सी आँखों वाला मक्का था और तुम तो मय्य पुरपों की भाँति ही एक हो। मुम्हारी भीहों के बीच दो सजे बच है—उस सिन्धूहे के समान मुम्हारा मुख स्निग्ध भी नहीं है।"

मैंने अब उसे उसकी ही हुई अंगूठी दिखाकर विस्वागत दिलाने का प्रयत्न किया तो वह फिर हिलाकर तनिक परेशानी की सी मुद्रा बनाती हुई बोली, "तब तो मैं किसी ठाकू का स्वागत कर रही हूँ जिसने मेरे उस प्यारे सिन्धूहे की हत्या करके उसकी अंगूठी और उसका नाम भी चुरा लिया है।" उसने हाथ उठा दिये जेमें वह दुगित हो गई थी। मैंने उसकी अंगूठी उतारकर उसकी ओर बढ़ा दी और बाउर स्वर में कहा, "तो तुम अपनी अंगूठी वापस ले लो... मैं चला जाऊँगा और तुम्हें फिर कभी परेशान नहीं करूँगा।"

परन्तु उसने अपना हाथ मेरी बांह पर हल्के से रखकर कहा, "जाओ मत...जाओ मत !"

और मैं रुक गया। दास मदिरा पिलाने लगे। मुझे उस समय ओ रुचि मदिरा में लगी, कभी न लगी थी।

जो स्त्री कैं से बिगड़ गई थी उसने मदिरा से कुत्सा किया और मदिरा पी, फिर उसने अपने तमाम बिगड़े हुए कपड़े उतार फेंके। अब वह पूर्णतया नग्न हो गई। अपने हाथोंसे उसने स्तनों को बगलों से भीचकर मिला लिया और दासों से कहा कि बीच, उनके बीच में से मदिरा डालें। फिर उसने हर किसी को उस स्तनों के गड्ढे मेंसे मदिरा पीने की छुट्टी दे दी। फिर वह नगी ही उस कक्ष में खोर-खोर से हँसती हुई मुड़कने लगी। मौन, सौन्दर्य और मयहोशी बिखेरती हुई उस स्त्री ने स्तनों के बीच मदिरा भरकर हीरेमहेव के मुँह के पास स्तनों का वह कटोरा सगा दिया। उसने सिर झुकाया और उस मदिरा को पी लिया। फिर उसने जन्मल होकर उस नग्न स्त्री को भुजाओं में लिपटा लिया। सब हँसने लगे और वह स्त्री स्वयं भी हँसने लगी। मीरिया के वाद्य तीखी ध्वनि फैलाते हुए बज रहे थे।

"क्या वह तुम्हारा घर है ?" मैंने अपने पास बैठी हुई नेफर नेफर नेफर ॥ पूछा।

"हाँ...और यह सब मेरे अतिथि हैं। रोड शाम मेरे पास अतिथि आते हैं क्योंकि मैं अकेली रहना पसन्द नहीं करती।"

"और मित्रुकर ?" मैंने पूछा।

उसने जैसे स्मृति को दोहराया फिर बोली, "हाँ...मित्रुकर ! वह तो मर गया.. वह फराऊन का घन चुराकर भागा...इसलिए मारा गया... उसका पिता भी अब राजा का कारीगर नहीं रहा है।"

"तब तो उसे अम्मन ने पूरा दण्ड दिया।" मैंने हँसकर कहा और फिर उसे वह सारी कथा वह सुनाई जब मित्रुकर और उस पुजारी ने अम्मन की प्रतिमा पर वह एक रणड़कर उसका मुगधित पवित्र तैल अपने सिरों पर चेंडेन लिया था। वह मुस्कराई पर उसकी आँखों में एक कठोर और जैसे

बहुत दूर किसी बस्ती को देखने वाली दृष्टि थी। हटाने पर मुझसे मुझसे बोली, "तब जब मैंने तुम्हें बुलाया था तुम क्यों नहीं आगे वे गिनूँगे? अगर तब तुम मुझे बुझने लगे तो अवश्य पागे। तुमने मेरे पास न आकर और मेरी अंगुली परनकर अन्य स्थितियों के पास जाकर अच्छा नहीं किया।"

"तब मैं मरवा ही तो था और तुमने इतना था—परन्तु मेरे स्वप्नों में तुम मेरी बहन थी। नेकर नेकर नेकर, और चाहे तुम मुझसे हूँ तो परन्तु अभी तक मैं किसी स्त्री के गपक में नहीं आया हूँ। मैं तो तुम्हें ही पाने की प्रतीक्षा देना रहा था।"

वह मुनकर मुबहमे। फिर अविश्रान्त से फिर हियाने हुए बोली, "तुम निश्चय ही झूठ बोल रहे हो। तुम्हारी निगाहों में मैं मुट्ठी और मुकप मय रही हूँ तभी मेरा उपाहास कर रहे हो।" उनकी आँखों में अब वही शमक आ गई थी जो पहले उस दिन मन्दिर में थी, और अब वह अपनी आयु से इतनी छोटी लग रही थी कि मेरा हृदय उसे देखकर कून उठा और दर्द करने लगा।

"यह तो सत्य है कि मैंने आज तक किसी स्त्री को नहीं छुआ," मैंने कहा, "और यह झूठ हो सकता है कि मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा की है। मेरे समक्ष हर तरह की अनेकानेक युवतियाँ और तरुणियाँ आई हैं। मैंने उन्हें सम्भावना में भी देखा है परन्तु उन्हें देखकर कभी मेरे मन में हूक नहीं उठी क्योंकि वह रोगिणी होती और मैं नहीं। आज मेरा हृदय अत्यंत प्रसन्न है... मैं कह नहीं कह सकता कि ऐसा क्यों है।"

"सुनकर हँसी आती है।" वह सहज स्वर से बोली फिर मुँह बनाकर बोली, "वह शायद इसलिए कि तुम छुटपन में किसी यात्री से सिर के बल गिर गए होंगे।" और वह हँस दी और उसने मुझे अपनी कोमल उँगलियों से छू दिया। मेरे शरीर में सनसनी दोड़ गई क्योंकि मुझे अभी तक किसी ने इस तरह छुआ ही नहीं था। और फिर उसके बहने पर हम मदिरा पीने लगे। देर तक हम पीने रहे। दासों ने अब नये में खुर उब अतिथियों को उठा-उठाकर उनकी कुर्सियों पर रख दिया जहाँ से कुर्सी वाले दास उन्हें उठाकर ले गए। हीरेमहेब ने उस युवती के गले में हाथ डाल दिए और उसे अपनी सोने की जंजीर पहनानी चाही, तो वह बनावटी क्रोध दिखाकर

बोली, "मैं एक शरीफ औरत हूँ कोई बेइया सोचे ही हूँ ?" और वह उठकर जैसे उसका अपमान हो गया हो, द्वार की ओर चली, बिघर और कक्ष थे । परन्तु द्वार पर पहुँचकर उसने मुड़कर हॉरेमहेब को इशारे से बुलाया और वह उठकर उसके पीछे चला गया ।

दो बाकी के लोग अब भी पी रहे थे, दोनों हाथों से सुवर्ण विसेर रहे थे । वह कभी एक-दूसरे को मित्र कहते तो कभी लड़ते और चिल्लाने लगते थे । नशर मुझपर भी पूरा चढ़ चुका था । मदिरा का कम और नेफर नेफर नेफर की निकटता का अधिक । मैं उसे चिपटा लेना चाहता था । परन्तु उसने कहा, "अभी नहीं, अभी नौकर-चाकर सब देख रहे हैं... मैं अकेली रहती अवश्य हूँ परन्तु घृणा के योग्य नहीं हूँ ।"

वह मुझे अपने उद्यान में ले गई जहाँ कुड में स्वच्छ जल भर था । फूल खिले हुए थे और कमल जल में लहरा रहे थे । दासों ने हमारे हाथ धुलाये और हमारे लिए भुनी हुई बत्तख और सहद में डूबे फल काट कर लाये ।

रात्रि के अवसान में जब मेरी उत्तेजना बहुत बढ़ गई तो उसने अपने सम्पूर्ण वस्त्र उतारकर मुझे अपने पास अपनी आबनूस और हाथीदाँत की बनी शय्या पर घसीट लिया । जब मैं वहाँ से घर लौटा तो मेरे रोम-रोम में नेफर नेफर नेफर समाई हुई थी । उसने मुझसे अपने जीवन का कुछ भी मूल्य नहीं माँगा था ।

दूसरे दिन सुबह ही मैंने कप्ताह से कहा कि वह तमाम मरीचों को भगा दे । नाई बुलाकर मैंने हजामत कराई फिर नहाकर सुगंधित तैलों से मालिश कराई और वस्त्र पहनकर एक कुर्सी में बैठी । कप्ताह चितित होकर मेरी ओर देखने लगा क्योंकि कभी दोपहर पहले और काम छोड़कर मैं घर के बाहर नहीं निकलता था । और मुझे जस्टी पड़ रही थी कि मेरे वस्त्र और पैर धूल में न हो जाएँ और मैं, स्वच्छ, उसी हालत में, नेफर नेफर नेफर के पास पहुँच जाना चाहता था ।

जब मुझे एक दास उस सुंदरी के पास ले गया तो उस समय वह दर्पण

के सम्मुख बैठकर शृंगार कर रही थी। उसने मेरी ओर कड़ी और विमुख दृष्टि से देखकर पूछा !

‘तुम क्या चाहते हो सिन्धूहे ? तुम तो मुझे परेशान करते हो।’

“तुम तो जानती ही हो मैं क्या चाहता हूँ।” मैंने कहा और उसे भुजाओं में लपेट लेना चाहा, परन्तु उसने मुझे रखाई से रोक दिया। वह गम्भीर स्वर से बोली, “यह क्या भ्रष्टता है कि इस समय आये हो ! सिद्धौन से एक व्यापारी आया है। उसके पास एक मणि है जो कभी किसी रानी की थी। माथे पर सटकाने की है वह, और कब मे से निकाली गई है। मैंने हमेशा से चाहा है कि मुझे एक ऐसा रत्न मिले, जैसा किसी और के पास न हो। अतएव मैं शृंगार कर रही हूँ कि मैं अधिक से अधिक सुन्दर लगूँ। और मेरे अनुचर मेरे अंग-अंग में सुगन्धित तैल लगायेंगे।”

उसका आशय था कि मैं चला जाऊँ परन्तु जब मैं नहीं उठा तो उसने बिना किसी हिचकिचाहट या लज्जा के अपने सारे वस्त्र उतार दिये और वह नग्न होकर शय्या पर सीधी सेट गई। एक दासी युवती उसके हाथ-पैरों में तैल लगाने लगी। उसे देखकर मेरा हृदय मेरे कंठ में आ गया और उस नग्न सौन्दर्य को देखकर मेरे हाथ पसीज उठे।

मुझ पर मदहोशी-सी छाने लगी और मैं उस पर सपका पर उसने डाँटकर मुझे ऐसे रोक दिया कि मैं खड़ा का खड़ा रह गया, और मूक लड़ा हुआ आँसू बहाने लगा। मेरी ठूक बढ़ती जा रही थी। अन्त में मैंने कहा : “अगर मैं तुम्हारे लिए वह रत्न खरीद सकता तो अवश्य खरीद देगा... तुम यह बात जानती हो... परन्तु तुम्हारे शरीर को कोई और मेरे रहते नहीं छू सकता... भयभीता मैं मर जाऊँगा।”

“ओह !” वह आँखें नेत्र मूँदे बोली, “तो तुम किसी को मेरा शरीर छूने की आज्ञा नहीं दे सकते ? और अगर आज का दिन मैं तुम्हीं को दे दूँ, अर्थात् तुम्हारे ही माथे खाऊँ-पिऊँ, सेलूँ और आनन्द भोगूँ, क्योंकि वन की भला बौन जाने क्या होगा। तो तुम मुझे क्या दोगे ?”

उसने अपना मण्ड शरीर शय्या पर फैला दिया जिसमें उगले गेट में गड़ड़ा पड़ गया और स्नान उभर उठे। उसके माथे पर शरीर और मिर पर एक भी बाध नहीं था। मैंने अचानक नेत्रों से उसे देखने हुए कहा।

“तुम्हें देने के लिए सचमुच ही मेरे पास कुछ नहीं है,” फिर मैं भूमि की ओर देखने लगा। फर्श घाटीदार सगमरमर का बना हुआ था जिसमें स्थान-स्थान पर रत्न जड़े थे और कई सोने के प्याले इधर-उधर रखे थे। मैंने फिर कहा : “मेरे पास तुम्हें देने के लिए निश्चय ही कुछ नहीं है।” और मैं धूमकर बाहर जाने की मुद्रा परन्तु तभी उसने मुझे रोककर नम्र स्वर में कहा : “सिन्धूहे ! मुझे तुम्हारे लिए दुःख है।” यह कहकर उसने अपना शरीर फिर फैला दिया; फिर कहा : “तुम्हारे पास जो कुछ देने योग्य था वह तुम मुझे पहने ही दे चुके हो... वैसे मेरे विचार से उसका इतना मूल्य नहीं है जितना तुमने उसे समझ रखा हो। लेकिन तुम बिल्कुल ही गरीब तो नहीं हो। तुम्हारे पास मकान है, बपड़े हैं और बैलों के लिए चरनी तमाम आवुष हैं।”

फिर से वर तक काँपकर मैंने उत्तर दिया : “वह सब तुम्हारा है नेकर नेकर नेकर ! यदि तुम चाहो। मकान बैसे कम कीमत का अवश्य ॥ पर जीवन-मृद से निश्चय ही किसी भी बंध के लिए वह सब तरह से पूर्ण है यदि वह उसे तरीक सके तो।”

“अच्छा !” उसने कहा और वह उल्टी हो गई और सर्वज में अपने सौंदर्य को देखाकर अपनी सखी जंगलियों को अपनी ओरों पर फेरने लगी। फिर बोली : “अच्छा तो तुम इस जायदाद को मेरे नाम कर दो। प्रमाण-पत्र किसी लेखक से लिखाकर ले आओ। मैं अकेली रहूँगी अवश्य हूँ परन्तु पृथा की पात्री नहीं हूँ। मुझे भविष्य के उस समय के लिए अभी से प्रबन्ध कर लेना है जब तुम सिन्धूहे मुझे बुढ़िया समझकर दुस्वार दोगे।”

मैंने उसके मन्त्र सौन्दर्य को देखा। मेरे मूँह में मेरी जिह्वा जैसे छोटी हो गई थी और हृदय इतनी ओर से धड़कने लगा कि मैं भीष मुड्कार बाहर बना आया। मैंने एक न्याय के ज्ञान लेखक से जागजान तैयार कराने और उन पर राजसी मुहर मगवाकर जब मैं जायद लेख लेता तो नेकर नेकर नेकर बस्त्रादिक पहनकर तैयार हो गई थी। वह अग पर राजसी शोने बस्त्र पहने थी और गिर पर उसने कुन्हरी लाल वृत्रिम केसर-राग पहनी थी। घोषा, बलाइयाँ, टखने इत्यादि बहुमूल्य रत्नामरणों से भरे थे। ऊपर एक सुन्दर भवजाली बानी कुर्मी जायद उगी थी

प्रतीक्षा में बारी थी।

उगने वह बामन देख कर मीने कहा "जो कुछ मेरा था अब तुम्हारा हो गया है नेत्र नेत्र नेत्र। अब आओ हम आनन्द भोगें शायें-पीयें, खें... क्योंकि बल की विमने बानी है।"

उगने वह बामन गारवाही के साथ लेकर एक आदतन की मंजूषी में डाल दिया और कहा "मुझे नेद है मिन्यूटे पर आर अभी छोटी देर पहले मैं मुझे मानिक धर्म मुक्त हो गया है आण्ड इन समय मैं कुछ नहीं कर सकती। जब मैं मुक्त हो आऊंगी तब समय निश्चित करेंगे... किसी और दिन आना और तब तुम्हारी इच्छा पूरी की जाएगी।"

मीने मृत्यु की विभीषिका मौने में दबाये उसे देगा और खोप न सका। उगने जल्दी में पैर पटकने हुए कहा "अब आओ... मुझे जन्मी है।"

जब मीने उगे छूना चाहा तो वह तिनककर मूँह बिगाड़कर बोली : "मेरे मुँह पर के रंगों को खराब मत करो।"

मैं घर चला आया। आज मैं सब कुछ हार चुका था, फिर भी उन मागिन की ओर लिखा चला जा रहा था। मीने अपने सामानों को ठीक करके रखा कि वह सब नये मातिक के काम आ सकें। मेरा काना दास मूँह बाये यह सब देख रहा था। मीने उससे कहा : "मेरे पीछे-पीछे मत घूमो... अब अपने नये मातिक की सेवा करना क्योंकि यह मकान, यह सामान और तुम्हें मैं किसी को बेच चुका हूँ। और हाँ—उसके यहाँ खोरी मन करना जैसी मेरे यहाँ करने रहे हो क्योंकि शायद उसका डडा मेरे डडे से प्यादा मजबूत हो।"

सुनकर वह पृथ्वी पर औँछा सेट गया और धिचियाकर कहने लगा कि मैं उसे न छोड़ूँ अन्यथा वह मर जायेगा और कि अब तक वह सभी स्थानों पर कहता रहा है कि मैं बहुत ही अच्छा बँच था, इत्यादि।

वह कहने लगा : "आज का दिन खराब है...आह! अब न जाने मुझे क्या मातिक कितने दुख देगा...तुम जैसा उदार स्वामी तो मुझे निश्चय ही नहीं मिल सकेगा। तुम जवान हो फिर भी कमाल के बँच हो।" फिर सोचकर उसने कहा : "क्यों न हम दोनों इस देश से भाग जायें। कीमती सामान मैं सब एकत्रित किये लेता हूँ। हम साल भूमि वाले देश

को भाग चलेंगे जहाँ तुम्हें कोई नहीं जानता या फिर किसी समुद्र के द्वीप में खने चलेंगे जहाँ मदिरा और युवतियों के बीच तुम आनन्द कर सकोगे ...मिननी और बेबीलोन में भी मिस्री बेबीलों की बड़ी पूछ है और वहाँ तुम अत्यन्त धनी बन सकोगे ! अतएव मेरे मालिक ! जल्दी करो जिससे हम भरेरा होने से पहले ही भाग निकलें ।”

“कप्ताह ! कप्ताह ! इस व्यर्थ की बातों से मेरा दिमाग मत छाओ । बीबीज़ मैं कभी न छोड़ सकूँगा...यहाँ तो जैसे मैं लोहे की उज़ीरो से बँधा हुआ हूँ ।” फिर जब उसने बहुत रोने-धोने के बाद पूछा कि क्या मालिक शीन या तो मीने कहा . “वह एक स्त्री है ।”

सुनकर वह सिर धुनने लगा । वह बोला . “तब तो वह कोई अस्थित भूरा स्त्री होगी जो उसने तुम्हारे साथ ऐसा छल किया है,” सारी रात वह बरना रहा और उमकी बहबड़ाहट मेरे लिए सक्रियता की भिनभिनाहट से कोई ज्यादा मुख्य की नहीं लग रही थी ।



भोर में नेकर नेकर नेकर के गहरे गेगा । वह सो रही थी । जब मीने नीकरो को जगाया तो वह गानियाँ देने लगे और उन्होंने मुझ पर बूझा फेंका । अतएव द्वार पर भिस्तारी की भीति बैठे रहने के निवाय मेरे पास और कोई चारा नहीं था । जब घर में बहून-बहून शुरू हुई तो मैं फिर उठा ।

नेकर नेकर नेकर अस्न-व्यस्न लैप्या घर पड़ी थी । उसका मुँह छोटा और सफेद लग रहा था और उमकी हरी खानों में ऐसा लपटा था जैसे उमने गन कापी मदिग दी थी । मुझे देखकर वह उजनाहट के स्वर में बोली :

“तुम मुझे बरेमान करने हो — क्या चाहने हो तुम ?”

“तुम्हारे साथ ना-नीकर बीज करना...जैसा कि तुमने बचन दिया

था।" मैंने भारी स्वर में कहा।

वह गुनगुन मुनमुन कर बोली, "मेजिन वह तो बच की बात थी, आज तो गया दिन है!"

एक राती ने आकर उमड़े बग्न उपाकर उमड़ी देह में तीन मरना शुरू कर दिया। मेजर ने अपने-आपको दर्शक में देगा फिर मेरे ही मेरे उमने मुकाम में मोतियों और माना प्रकार के रत्नों में जड़े एक अमूर्त आभूषण को लटका के नीचे में उठाकर अपने बापें पर मटकाया और कहा:

"है न मुन्दर?...दगर्जी बीमन देने में मैं रात-भर तक उकर गई क्योंकि उमने तो गणमुख ही मुझे जगोह डाला...पर चीज बँने है की मुन्दर।"

"तो तुम बस माम मुझसे झूठ बोली थी कि मुझे भागिक धर्म पापु हो गया था..." मैंने कहा।

"मेरा समाल था कि ऐसा हो गया है क्योंकि समय हो गया था..." और फिर वह साना मारती हुई दुइनापूवक हँसी और बोली: "असल में तुमने गड़बड़ कर दी है मेरे साथ सिन्धूहे! तुम्हारे पाग में मैं डीनी पड़ी थी और तुम थे कि अपना प्रबल पौरव दिला रहे थे...मुझे डर है क्योंकि मैं गर्भवती हो गई हूँ शायद!"

वह मेरा उपहास कर रही थी और अत्यन्त निर्लज्जतापूवक, परन्तु मैं अधा हो रहा था। फिर भी मैंने कहा:

"तुम्हारे रत्न तो किसी वज्र में से आ रहे थे न? यही तो शायद तुमने कल मुझसे कहा था?"

उसने मेरी बात का कोई उत्तर नहीं दिया फिर कहा: "सूअर की तरह मोटा था कमबख्त वह तोरिया का ध्यापारी। उसमें से प्याज की बदबू आ रहा थी...पर इससे तुम परेधान क्यों होने हो!"

और उसने तमाम आभूषण ओढ़नी इत्यादि नीचे सरका दिये। अब वह फिर पूर्णतया नग्न होकर ज़मीन पर पड़ी थी। फिर वह हथेली बांधकर, उसका तकिया लगाकर साँस भरकर मचसती हुई आँस चलाकर कहने लगी: "सिन्धूहे! मैं तो एक गई हूँ और तुम हो कि मुझे पूरे आ रहे

हो और खासकर तब जब मैं तुम्हे रोक नहीं पाऊँगी। तुम तो जानते हो कि मैं अकेली रहती हूँ फिर भी घुषा की पानी तो नहीं हूँ।”

“तुम तो जानती ही हो कि अब तुम्हें देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है” मैंने भारी मन लिये कहा।

उसने अपना सारा शरीर दिखाया और जघाएँ फैलाकर हँसते हुए कहा : “पुरुष कितने छलिया होते हैं। सिन्धूदे तुम भी मुझसे मूठ बोलते हो और मेरा यह हाल है कि तुम्हें जब देखती हूँ दुर्बल हो जाती हूँ।”

मैंने बड़कर उसे आहुओं में समेट लेना चाहा, तो उसने मुझे हटा दिया और कहने लगी : “दुर्बल और अकेली मैं अवश्य हूँ, परन्तु छोखेबाखो से वास्ता नहीं रख सकती। तुमने मुझसे कभी नहीं कहा कि तुम्हारे पिता सैन्यट का गरीबो की बस्ती में एक मकान है। मकान जरूर छोटा है पर जिस भूमि पर वह खड़ा है वह अवश्य कुछ रकम दे सकती है क्योंकि वह नदी तट पर स्थित है। उसे मुझे दे दो, तो मैं तुम्हारे साथ आऊँ...”

“परन्तु मेरे पिता की आज्ञा मेरी तो नहीं है,” मैं बीच ही में बोल उठा।

अपनी हरी आँखें मुझ पर घुमाकर उसने कहा : “क्यों नहीं है ? तुम्हीं ही अपने पिता के न्याययुक्त उत्तराधिकारी हो !”

मैं मुनकर चुप हो गया क्योंकि यह ध्रुव सत्य था। मेरा हृदय आत-विभ हो उठा। भला मैं अपने माता-पिता से छल कैसे कर सकता था ? उफ ! उन्होंने मुझ पर कितना अटूट विश्वास करके मुझे पाला-पोसा, सिखाया-बढ़ाया और अब मुझे हाल ही में अपना उत्तराधिकारी बनाया था ! तभी वह बोली : “मेरे सिर को अपनी हथेलियों के बीच लेकर मेरे स्तनों पर अपने होंठ धरो। तुम्हारे भामने में इतनी कमजोर हो जाती हूँ कि अपना फायदा भी भूल जाती हूँ। यदि तुमने अपने पिता की आज्ञा मेरे नाम कर दी तो...”

मैंने उसका सिर हाथों में ले लिया और उसके स्तनों का चुवन लिया। मुझ पर उसकी वासना बुरी तरह फिर चढ़ गई और मैंने कहा :

“देसा ही हो”

परन्तु जब मैं उसकी ओर बढ़ा तो मुझे रोकते हुए वह बोली : “पुरुष

वचन के बच्चे होते हैं। पहले जायदाद मेरे नाम कर दो।”

और फिर पहले की भांति जब मैं प्रमाणपत्र पर राज्य की मुहर लगवाकर उसके पास पहुँचा तो वह सो रही थी। मुझे सायकाल तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। आगिरकार वह जागी और मुझे देखकर बोली :

“तुम तो सिन्धूदे बड़े ज़िद्दी आदमी हो पर मैं... मैं वचन की पक्की हूँ... आओ।”

और वह सँझा पर सेंट गई और उसने मेरे लिए आनिगन रोप दिया। परन्तु उसने कोई रुचि नहीं ली। उसने अपना सिर बगल की तरफ फेर लिया और दर्शन में मुस देखती रही और हाथ लगाकर जम्हाइयाँ लेती रही। मेरा सारा उत्साह और आनन्द साक बन गया।

जब मैं उठा तो उसने मुझसे कहा : “तुम सचमुच बहुत परेशान करने हो। अब जाओ और फिर कभी आना। अब तो तुम्हारे मन की हो गई न ?”

बड़े के छिपने की तरह अस्तित्वहीन होकर मैं घर लौटा। मैं ज़ी भरकर रोना चाह रहा था कि घर के बराड़े में ही मुझे एक अजनबी बैठा मिला जो सौरिया के लोगों की बहुमनी पोशाक पहने था और बैसा ही बगल गिर पर मोड़े था। उसने मेरी ओर देखकर सर्वसे अभिवादन किया और कहा कि वह मुझसे पैर की मूत्रम का इलाज कराने आया था।

“मैं अब यहाँ इलाज नहीं करता,” मैंने कहा, “क्योंकि यहममान अब मेरा नहीं रहा है।”

पर वह न माना। बोला : “तुम्हारे दाम कप्ताह के कहने में मैं आरा हूँ त्रिमके पैर तुमने टीक कर दिये थे। मेरे पैरों का दर्द मुझसे लगा नहीं जाना... इन्हें तो तुम्हें देखना ही पड़ेगा... कृपया ..” उसकी बोली मित्र-जन जैसी थी।

आगिरकार उसे मुझे देखना ही पड़ा। मैं उसे बगले के अन्दर में गया और मैंने कप्ताह की आवाज दी कि वह गर्म पानी लाकर मेरे हाथ धुवाये। कोई उत्तर नहीं आया। मुझे लब लब अमनियन का पना ही न। अब तक कि मैंने उस व्यक्ति के पैर देखकर उसे नहीं पहचाना बरोंद स्वर बज्जाहू ही था त्रिमने जीवियन का स्नेह बना रखा था। मेरा बड़े

“आज उसरी माझाय्य से जो महान् व्यक्ति मेरे पास आने वाला है उसके पास भी दबन के तीम का एक मुवर्ण का प्यान्ना है। वह बूढ़ है और आज रात उसकी हड्डियाँ, क्योंकि वह बहुत ही दुबला बतलाया जाता है, मेरे शरीर में चुभेंगी अवश्य, पर कल भोर में वह प्यान्ना मेरे घर की सोभा बढ़ायेगा... मैं अकेली अवश्य रहती हूँ पर घृणा के योग्य तो नहीं हूँ !”

जब मैंने उससे कहा, “अब तो मैंने तुम्हें अपने माना-पिता की बर्तों भी दे दी हैं... अब तो आओ !” और उसे आतिथ्य में लेना चाहा तो वह मुझे रोककर बोली, “पहले भदिरा तो पी लो, पीछे तुमने मैं ‘भाई’ बहूँगी। और उसने मुझे प्याले पर प्याले हातकर पिलाये। फिर वह बोली, “अब जाओ... फिर आना।”

“क्यों ?” मैंने विरोध किया।

सुनकर वह हँसी फिर बोली, “मुझे बाहर जाना है और तुम जाकर अपने लिए गहरे से गहरा कुआँ या बिना पैसे का गड्ढा ढूँढ लो... यह तो तुम्हारा ही काम है।”

मैं उसे लिपटाने को जब बढ़ा तो वह बल खाकर मेरी पकड़ से निकल गई और तेज आवाज में हँसकर उसने अपने अनुचरों को बुलाकर कहा, “यह भिखमगा मेरे मकान में कैसे आ गया ? इसे बाहर निकाल दो और फिर कभी अन्दर मेरे पास मत आने दो। अगर यह न माने तो मारो इसे अच्छी तरह।”

और उन अनुचरों ने मुझे ढकों से मार-मारकर बाहर निकाल दिया। जब मैंने गरजकर उनका विरोध किया तो उन्होंने मुझे और मारा... इतना मारा कि मैं मूर्छित होकर धूल में गिर गया। जहाँ लोगों ने मुझ पर पूका और कुत्तों ने मुझ पर पेशाब किया।

सारी रात मैं वही पड़ा रहा क्योंकि अन्धकार में ही पापी चैन पाता है, क्योंकि प्रकाश में वह मुँह दिखाने के योग्य नहीं होता। भोर में उठकर लुटा-पिटा मैं शहर के बाहर बाँस के जंगल में छिप गया जहाँ मैं तीन दिन, तीन रात भूखा-प्यासा पड़ा रहा। शायद मैं चिल्ला उठता—अपनी करनी के भय से ही मर जाता, यदि वहाँ कोई भुजसे मेरा कुशलशेष पूछ बैठता।

मेरे सीने पर पत्थर रखा था फिर भी मेरा दिमाग दुख्ख था। मैंने कप्ताह से कहा, “अपना सब चाँदी और ताँबा मुझे दे दो कप्ताह ! मायब जीवन में कभी न लौटा सकूँ, पर तुम्हें देवता इसमलाईका बहुत बड़ा फल दूँगे...”

और उस पबित्रात्मा ने दास होकर भी जो कुछ उसने पृथ्वी में गाड़ रखा था, पूरा का पूरा दे दिया। देने समय अपने जीवन-भर की वचन के वियोग में उसके नेत्र भर आये, परन्तु उसने मुझे अपना सब कुछ उस समय दे दिया। अतएव वह शाश्वत बाल तब महान् बना रहेगा।

पिता और माता उस घर में घुटकर मेरे पाँय, पक्षीसियों ने मुझे देश-कर घुणा से मुँह फेर लिए। उम्हे एष गधे पर सादकर मैं मृगव-गृह में गया, परन्तु वहाँ उन लोगों ने उन्हें लेने से इकार कर दिया क्योंकि मेरे पास उन्हें देने के लिए पर्याप्त चाँदी नहीं थी। वह मस्ते से सरती विधि से भी उन्हें मस्ताने मगधर अमर बनाने को राजी नहीं हुए। और तब मैंने नाम धोने वालों में दया के लिए भील माँगने हुए कहा, “मैं गीमट का पुत्र मिग्यूहे हूँ और मेरा नाम जीवन-गृह की पुस्तक में लिखा है। मेरे माय के बुरे पौर में इस समय मेरे पास पर्याप्त धन नहीं है, अतएव मैं, आत्मन के नाम पर और समान ब्रह्म देन में माने जाने वाले देवताओं के नाम पर तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरे माता-पिता के शरीरों पर मगाना लगाओ और इसके बदले में मैं तुम्हारी अमर सेवा करूँगा—पूरे उस समय तक जब तक कि इनके शरीर तैयार न हो जाएँ।”

मुनकर उन्होंने गानियाँ दी, मुँह बनाए, मुकर गए, परन्तु जब मैं अड़ा ही रहा तो अन्त में एक बिगड़े बेदरे बाता, जिमका बेदरा बेवक नि रिगन हो गया था, आगे आया और उमने मेरे पिता और माता की टाँडियों में चाँदा पैसाकर उन्ने बहुत बड़े हीन में फेंक दिया। वहाँ ऐसे तीम हीन थे। रोड एष माय होना था और फिर गया मरा जाना था। इस भीति मरीकों की मारों पुरे तीम दिनो तब मयब के गहरे घोर में बड़ी रहनी थी। उनके बिना इसमें अधिक और कुछ भी नहीं दिया जाता था, जो बहुत बान मैं उस समय नहीं जानता था। जब मैं वहाँ में आने लगा तो वही छानि बोला : “यदि बर मुन समय में ही न लौट आऊँ तो यह शंको मारों तुमों के

लिए बाहर फेंक दी जाएंगी।”

ऐसा था वह कठिन समय कि वह गामद समझ रहे थे कि मैं को झूठा था।

अब मैं पिता के उस मकान को सीटा तो मुझे द्वार पर ही एक गरीब प्रधान-लेखक मिला। उसने कहा :

“सैमट जो अच्छा आदमी था—क्या तुम उसीके पुत्र सिन्धूहे हो?”

“मैं ही हूँ” मैंने उत्तर दिया।

तब उसने मुझे एक पत्र दिया, बोला : “इस पर सैमट के हस्ताक्षर नहीं हैं क्योंकि वह अन्धा था और रोने से उसके नेत्र भीग गए थे। उसने मुझसे यह लिखाया था। उसके पास मुझे देने के लिए एक तबिये का टुकड़ा भी नहीं था। परन्तु वह अन्धा आदमी था—मैंने इसलिए इसे उसके कहने से लिख दिया। मैं गणपपूर्वक कहता हूँ कि यह उसीने लिखाया।” मैं धरती पर बैठ गया। वह पढ़ने लगा :

‘मैं सैमट, जिसका नाम जीवन-गृह की पुस्तक में लिखा है, और मेरी स्त्रीबीषा अपने पुत्र सिन्धूहे को, जिसे फराऊन के गृह में एकाकी का नाम मिला था, आशीर्वाद देते हैं, सम्पूर्ण आनन्द हमें तुम्हारे कारण प्राप्त हुए है, जब से तुम हमारे पास आए, हमारे हृदय सुन पाते रहे हैं, देवताओं ने तुम्हें हमारे पास भेजा था और तुम हमारे लिए सदा गौरव का विषय बने रहे रहे हो...जीवन की दिन कठिनाइयों के कारण तुम्हें ऐसा करना पड़ा उनके लिए दुःख न करना। हमारे लिए सब भी न रही तो क्या हुआ? सभी कुछ तो मर चुका है। फिर हमारा अस्तित्व ही क्या है? परन्तु न्याय के अधिकारी जल्दी मर रहे हैं अतएव हमें जीध मरना पड़ रहा है। मैं तुम्हें बुझने गया भी था। तुम्हारी माता बीषा मुझे से नई भी क्योंकि मेरे बेटे! तुम तो जानने हो, मैं अंधा हो गया हूँ। परन्तु तुम नहीं मिने। अबदय ही किसी जरूरी कार्य के हेतु गए होंगे। न्याय के अधिकारियों ने तुम्हारी प्रीक्षा करने का समय नहीं छोड़ा। मृत्यु हमारे लिए सुगम अवसर है जैसे हारे-थके के लिए नींद।...

हम तुम्हें आशीर्वाद देते हैं...जैसे भी हो मुसी रहें। हम तुम्हारे

156 ६ क्योंकि तुमने हमें मृत्यु में मिलने में सहायता दी है और मृत्यु

के पश्चात् पश्चिमी देश की यात्रा से बचा दिया है। जाने वह कितनी कठिन होती !

कैम देश के तमाम देवता तुम्हारी रक्षा करें। तुम्हें कभी दुःख न अनुभव हो। और तुम्हें भी तुम्हारी सन्तान ऐसा ही गुल दे जैसे तुमने हमें दिया है। तुम जब हमें मिले थे तब हम दोनों बूढ़ हो चुके थे। तुम्हारे आगमन से हमारा घर प्रकाश से उद्दीप्त हो उठा था... खुश रहो मेरे बेटे... तुम्हारी माता भी तुम्हें प्यार भेजती है... यही हम दोनों का अंतिम सन्देश है कि हमारी मृत्यु पर दुःख न करना... विश्वास कर लो कि हम बहुत ही आराम से मरे थे।'

पत्र उसने मुझे दिखाया जिस पर छन्दे थे। उसने कहा कि वह कीपा के आंसू थे। मैंने लेखक को अपना उत्सरीय दे दिया। जिसे लेकर वह सैन्मट और कीपा की प्रशंसा करता हुआ चला गया।

मेरे हृदय का पत्थर पिघल गया था और मैं वही पृथ्वी पर सोटकर रोने लगा। आंसू उमड़े चले आते थे। मैं कितना चाह रहा था कि मर जाऊँ और कुत्ते मेरा शरीर नोच-नोचकर खा जाएँ।

फिर जब मैं उठा तो दासों की भाँति केवल कटिवस्त्र पहने मृतक-गृह में तीस दिन तीस रात साश घोने वालों की सेवा करने चल दिया।

बैद्य होने के नाते मैं समझता था कि मृत्यु की विभीषिका से पूर्ण रूप से मैं परिचित था, परन्तु यहाँ आकर पता चला कि मैं अभी धक्का था। और मृत्यु से सर्वथा अनभिज्ञ था। गरीब तो हमें थोड़ी ही दिक्कत देने पर छन्दे भी नमक के घोल में पूरे एक मास पटककर रखना पड़ता था। मुझे शीघ्र इनमें काँटा फँसाना आ गया। घनिकों के शरीरों पर मेहनत अधिक करनी होती और उनको तैल में भिगोकर बड़े पात्रों में सुलाना पड़ता था। सबसे बड़ी लूट अम्मन की होती जो जीवितों से अधिक मृतकों को लूटता। मसाले लगाने की अलग-अलग कीमत होती और वहाँ के लोग भूट बोलते कि रईस मर्दों के शरीरों में उन्होंने सुवासित तैल और इत्र लगाए थे, कीमती मरहम लगाए थे इत्यादि, परन्तु वास्तव में सभी को वही शीतल

का रीस लगाया जाता था। अत्यन्त घनिकों के गरीर सास परकाह से बनाये जाते, बाकी सबके गरीरों में बड़्का रीस भर जाता जो अन्दर ही अन्दर मौस व वर्षा को सोल देता। फिर घन्दर सास लगाकर कपड़े से लपेट दिये जाते। गरीबों के लिए यह भी नहीं किया जाता था। उन्हें तीसवें दिन ममक के चोल से निहाल कर गुसा दिया जाता और उनके सम्बन्धियों को दे दिया जाता था।

मृग-मृह का निरीक्षण अग्नि के पुजारी लोग करते थे। फिर भी लोग धोने वाले बेहद चोरी करते। देवताओं द्वारा दिव्यामित्र तथा बड़े क्षत्रपों ही यही काम करने के लिए भेजे जाते थे। उनकी बड़ सास ममक की बड़ दूर ले चलता देती थी कि बड़ नाम धोने वाले लोग थे। लोग उनसे चुका करते थे। उनकी बेईमानी और छोड़ेबाड़ी की हद नहीं थी। अगर कोई दक्षिणी देस है जहाँ मृगों को पाला जानी होती है, तो निश्चय ही कई घनी मुर्दे आदमों परते होये कि क्या इतना इन देकर भी अपने गरीरों से से इन के अंग गायब हो जाने थे। साथ धोने वाले मृगों के अंग-अंग तक बाहर बाह्यमयों को देच देने थे।

वरन्तु मृग-मृह से सबसे अधिक लुगी तब बसाई जाती थी जब बड़ी चिनी बसाव औरत की साथ पहुँचाई जाती। बाहे बड़ गुन्दी हो और बाहे न हो फिर भी बड़ उनके लिए अपार अन्तःकामिपयबन जाती थी। उसे एवदम हीन से नहीं आता जाता था। बसिक एक रात लू उसे लेकर सोने थे। उसे साथ गुलामे के लिए बड़ आपन से लड़ते और फिर दोतिपाई जानते थे। लारी रात बड़ नाम कईवों के साथ से होकर निशामी जाती। लू लोग इनसे प्रचित माने जाते थे कि नीची से नीची देखा भी उन्हें अपने पास नहीं जाने देती थी; यहाँ तक कि बरन्तु हम्मिय भी इनसे दूर भागती थी, बाहे लू उसे सोना देने को तैयार रहते।

एक बार जब कोई बड़ी काम करने का जाता तो फिर सायर ही बड़ बाहर जाता था क्योंकि फिर बड़ इतना पिपहुआ जाता जाता था कि कोई उसे बिलाने ही तैयार नहीं होता था।

मृक-मृक से ही से उन्हें केवल बाकी करने वाले और चोर ही क्षत्रपता रहा, वरन्तु बाह से पता चला कि इनके दुपर वाले लोग भी थे। हरएक

ने विविध विषयों में दक्षता प्राप्त की थी। जैसे जीवन-मूह में अलग-अलग विषय थे, यहाँ भी सिर, पेट, हृदय, फेफड़े, हाथ-पैर इत्यादि को मसाले लगाकर अलग-अलग विधियों से बनाने के कायदे थे। यही लोग शरीर को अनन्त काल तक रखे रहने योग्य बना देते थे।

एक उनमें प्रौढ़ व्यक्ति था—रैमोज—जिसका काम सबसे कठिन था। वह नाक के रास्ते चिमटियों से सिर में से भेजा बाहर निकालता और फिर सिर में शुद्ध करने वाले तैल भरता। उसने मेरे हाथों की सफाई जो देखी तो दंग रह गया और फिर मुझे वह अपना काम सिखाने लगा। पन्द्रह दिनों के अन्दर ही मैं उसका सहायक बन गया और अब उस मददगार जीवन में भी मुझे जीने का महारा मिल गया। यह बाकी सारे कामों से शुद्ध था और मृतक-मूह में सबसे बड़ा काम माना जाता था। उसका सहायक बनने से अन्य लोगों ने मेरा उपहास करना, मुझको गाली देना, सड़े मांस इत्यादि मुझपर फेंकना बन्द कर दिया। ऐसा था उसका प्रभाव हालाँकि वह कभी जोर से बोलना भी नहीं मुना गया था।

अब मैंने देखा कि यहाँ खोरी करना आवश्यक था कि अमुक शरीर अच्छी तरह से पकाया जा सके तो मैंने भी अच्छे-अच्छे मसाने इत्यादि अपने पिता-माता के लिए खुराने प्रारम्भ कर दिये। क्योंकि जो पाप मैं उनके प्रति उनके जीवन में कर चुका था उसमें तो इन्हीं कम ही समझता था। यदि मृत्यु के बाद भी पश्चिम के देशों में मनुष्य को जाना पड़ना था तो मैं चाहता था कि वह वहाँ पूर्ण अन्न लेकर जाये। मुझे यही मनोरथ था कि मैं किसी भी प्रकार क्यों न सही पर उन्हें अमरता प्राप्त कराने में सफल हो रहा था। मैंने रैमोज की महायत्ना से उन्हें अच्छी से अच्छी तरह मसाने लगाकर मुखाया और उनकी सामें तैयार की। मुझे डग खोरी करने की क्षतिर, कि बढ़िया औषधियाँ, मुशामिन तैय, मरहूम उनके लिए भिज जायें, वहाँ दस दिन और रहना पड़ा।

अब मार्ग तैयार हो गई तो मेरे मामने अन्तिम आर्द्र कि मेरे पास उनके लिए बच नहीं थी...यहाँ तक कि एक लकड़ी का बक्का भी न था। मैंने उन्हें एकमात्र एक बैग की मूर्ती लाज से सम्भर भी दिया।

अब मैं उन्हें लेकर अपना लो मृतक-मूह के लोग मुझे बर्दाश्त देने लगे,

इसलिए नहीं कि वह मुझसे नासुख थे बल्कि इसलिए कि माँजी देना उनकी आदत थी ।

रात के अँधेरे में मैंने एक्-बाँस की नाव चुलाई और उसपर उन शरीरों को लेकर मैं मृतकों के नगर की ओर चल दिया । दिन के उजाले में किसी नाव वाले ने मुझे पार लगाने से इकार कर दिया था ।

मृतकों के नगर में दिन और रात कड़ा पहरा रहता और मुझे एक भी कब्र ऐसी नहीं मिल सकी जिसमें मैं अपने माता-पिता को गाड़कर निश्चिन्त हो जाता, कि जो बँट धनिकों की कब्रों पर चढ़ाई जाती उन्हें वह भी माँग लेने । अतएव मैं उन्हें लेकर उस रात्रि के अवसान में मरुभूमि की ओर बढ़ा । सारी रात मैं चलता रहा और मेरे पैरों के पास साँप—विषधर साँप फुकारते रहे पर मैं रुका नहीं । अन्त में मैं पहाड़ की जड़ में जा पहुँचा । यहाँ केवल शम्फू लोग ही निर्भय होकर जा सकते थे—जो कि मनुष्य मात्र के लिए जाने के लिए बर्जित थी । क्योंकि वहाँ फ़राऊन लोगों की ही केवल अपनी कब्रें थीं ।

गर्म पत्थरों पर बिछलू चल रहे थे और दूर-दूर तक गीदड़ हँक रहे थे । मुझे भय नहीं लगा क्योंकि मेरा हृदय पत्थर का हो चुका था । उस समय यदि मृत्यु साकार बनकर मेरे पास आती तो मैं सहर्ष उससे लिपट जाता । जीवन में मेरे लिए गर्म के अतिरिक्त क्या ही क्या था ? परन्तु तब मुझे मालूम नहीं था कि मृत्यु भी उनके पास नहीं जाती जो उसे बुलाते हैं । साँप मेरे रास्ते से हट गए, विच्छुओं ने मुझे नहीं काटा, रेगिस्तान की गर्मी में मैं नहीं झुलसा । पहरेदारों ने मुझे नहीं देखा, अन्यथा वह मुझे वही भार डालते ।

और मैं चलता चला गया । पहाड़ के पत्थर मेरे पाँवों के नीचे से मुड़कने लगे । मैंने एक स्थान पर नये फ़राऊन की कब्र के पास एक गह्वा छोड़ा और उसमें अपने माता-पिता को गाड़ दिया । शायद अभी अम्मन अपनी नौका में चढ़ाकर पश्चिमी देश को नहीं ले गया था क्योंकि उसकी विगास वस्त्र पर अब भी ताजा साँपघी रखी थी जो शायद वहाँ निरर्थक चढ़ाई

जानी थी। मुझे विश्वास हो गया कि गो उनका नाम पुत्रारियों की मृतकों की सूची में नहीं लिखा था, फिर भी अब उन्हें ओमिरिस की तराजू पर नहीं चढ़ना पड़ेगा और जब कराऊन को अम्मन नाव पर चढ़ाएगा तो वह भी उस पर चढ़कर यात्रा कर मकेंगे और इस बीच कराऊन की भेंटों में मे अपना भाग सेते रहूँगे।

मुझे उस समय चित्तना रातोप हुआ यह मैं कैसे लिलू ! बर खोदने में मुझे एक लाल पत्थर का टुकड़ा मिला। अद्रमा के प्रबाज में मैंने देखा कि वह एक पवित्र पत्थर था जिस पर धार्मिक चिह्न अंकित थे और उनमें गहने रत्नों से नेत्र बने हुए थे। मेरे नेत्रों से आँसू बहने लगे क्योंकि तब मुझे विश्वास हो गया कि मेरे माता-पिता सुप्त हो गए थे। मैंने यही विश्वास कर लिया क्योंकि इसीमें मुझे शान्ति मिली। वैसे मैं जानता था कि वह कराऊन की कब्र में से एक वस्तु थी जो भूल-चूक में इधर-उधर सरककर गिर गई थी और फिर रेत में दब गई थी। मैंने अंतिम बार अपने माता-पिता को सिर झुकाया और प्रार्थना की, “इनके शरीर शाश्वत काल तक बने रहें—और पश्चिमी देश की यात्रा में यह प्रसन्न रहें।” उन्हीं की खातिर मैंने पश्चिमी देश की कल्पना को भी स्वीकार कर लिया। वैसे मुझे अब उस सबमें विश्वास नहीं रहा था।

और मैं नीस के तट पर लीट आया। नीस का जल मैंने जो भरकर पिया और मैं बाँस के घने में छिपकर लेट गया। मेरे हाथ-पैर कई जगह कट गए थे, उनमें से रक्त बह रहा था। रेगिस्तान ने मेरे नेत्र धुँधले कर दिये थे, मेरे शरीर पर छाले पड़ गए थे। मैं झुलस गया था। मुझे पता नहीं मैं कब सो गया।

भोर में वतछें बोलने लगी और मैं जाग उठा। अम्मन आकाश के समुद्र में अपने मुवर्ण के जहाज में तैरकर ऊपर उठ आया था। दूर पीवीन्न नगर की मर्मर मुनाई पड़ रही थी। नदी में नौबाएँ चल रही थी और घाटों पर घोड़ों कापड़ें धो रही थी।

तभी मेरे पास से एक सरसराहट हुई और मैंने तुरन्त जान लिया कि

मैं वहाँ अकेला नहीं था। मैंने मुड़कर जो देखा तो हैरान हो गया क्योंकि जो कुछ दिख रहा था वह मनुष्य-सा नहीं लग रहा था। नाक की जगह उसके एक बड़ा गड़्ढा था और कान कटे थे। उसका सारा शरीर तुरीतरह विकृत हो रहा था। परन्तु उसके हाथ बड़े और शरीर गठित था। उसने मुझे देखकर पूछा :

“तुम्हारे हाथ में क्या है जो तुम इतनी मजबूती से पकड़ रहे हो ?”

मैंने मुट्ठी खोलकर फराऊन का वह अभिमन्त्रित पत्थर दिखा दिया।

“यह मुझे दे दो क्योंकि शायद यह मेरा भाग्य जगा दे—मैं एक गरीब आदमी हूँ।” वह बोला।

“मैं भी तो बेहद गरीब हूँ।” मैंने विरोध किया।

“चाहे मैं कितना ही गरीब क्यों न होऊँ पर तुम्हें इसके बदले में चाँदी का एक सिक्का दूँगा।” और उसने अपनी कमर में से सचमुच ही एक सिक्का निकालकर मेरी ओर बढ़ाया। परन्तु जब मैंने फिर भी उस पत्थर की नहीं दिया तो वह गुस्सा होकर बोला :

“मैं सोते में ही तुम्हें मार डालता तो ठीक रहता।... मुझे क्या मालूम था कि तुम इतने नीच हो।”

“तुमने मुझे मार डाला होता तो अवश्य मैं तुम्हारा आभारी होता क्योंकि जीवन में मेरे लिए अब कोई रत नहीं रहा है। वैसे मैं यह समझ गया हूँ कि तुम पत्थर की खानों से भाले हुए गुलाम हो। तुम्हारे कटे नाक-कान बता रहे हैं कि तुम अपराधी थे।” मैंने बैठे ही बैठे उत्तर दिया। फिर कहा, “अच्छा होगा अगर तुम वहाँ से भाग जाओ, अन्यथा कहीं सैनिकों के हाथ लग गए तो उसटे लटका दिये जाओगे, या फिर पकड़कर वही भेज दिये जाओगे जहाँ से भागकर आये हो।”

सुनकर वह बुरा मानते हुए बोला, “तुम शायद धीवीस के लिए अजनबी हो जो राजाज्ञा से भी अनभिज्ञ हो। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि नये फराऊन की आज्ञानुसार तमाम दास और अपराधी लोग मुक्त कर दिये गए हैं ? अब जो खानों में काम करते हैं वह स्वतन्त्र नागरिक हैं और उन्हें मजदूरी मिलती है ?”

मुझे तब पता चल गया कि गुबराज सिंहासनावृद्ध हो गया था। वह

फिर होगा और कहने लगा :

“अब कई तगड़े-तगड़े अपराधी ठाठ से सड़कों पर घूमने हैं। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं है। मृतकों के नगर में कब्रों में से नित्य मदिरा, सामग्री और धन चुराने हैं और मौज उड़ाने हैं। वह देवताओं की भी परवाह नहीं करने ।...और फ़राऊन का नया देवता भी ख़ुब है जिसने उसे पागल बना दिया है। अब खाने खाती पड़ी रहती हैं क्योंकि अपनी इच्छा से भला कौन वहाँ मरने जाएगा ? मैं अवश्य भोला था और मुझपर अपराध जबरदस्ती लादा गया था परन्तु मेरे साथ न जाने कितने चोर-बदमाश भी छूट गए। हुआ तो यह ठीक नहीं है परन्तु इससे भला मेरा क्या संबंध ? यह तो फ़राऊन का काम है कि रोये क्योंकि जब खाने ठही पड़ी हैं तो उसी का सोना तो कम हो गया है।”

फिर उसने स्नेहवश मेरे हाथ-पैरों में तैल लगाया। न जाने वह कहाँ से तैल ले आया था। मैंने उससे उसकी कथा पूछी तो उसने कहा :

“कभी मेरे पास भी थोड़ी-सी भूमि थी और एक झोंपड़ी थी और मैं स्वतन्त्र नागरिक था। मेरे पड़ोस में अनूकिस नाम का एक धनी-भानी व्यक्ति भी रहता था। उसके पास अगणित भवेली थे; इतने जितने रेगिस्तान में रेत के कण होते हैं; और जब वह रँभाते तो ऐसा लगता कि समुद्र गरज रहा है। फिर भी उसकी निगाहे मेरी भूमि पर लगी रहतीं। हर बार जब बाढ़ उतरती तो वह सीमा का पत्थर सरकवा देता और मेरी थोड़ी-थोड़ी भूमि दवा लेता। मेरी कोई सुनवाई नहीं होती क्योंकि सरकारी लोग उसकी सुनते, मेरी नहीं सुनते थे। वह उन्हें सुन्दर उपहार देता।

फिर भी गुज़र हो ही रही थी परन्तु अन्त में मेरी ही संतान मुझे ले बैठी। मेरे पाँच पुत्र और तीन पुत्रियाँ थी। एक पुत्र को छुटपन में एक सीरियन व्यापारी ने चुरा लिया था। उसका मुझे बड़ा दुःख था। मेरी सब से छोटी लड़की अत्यन्त रूपवती थी और उसपर मुझे बड़ा गर्व था। मुझे क्या मालूम था कि अनूकिस की बुरी निगाहे उसपर पड़ चुकी थी। उसने से ९ दिन उसे माँगा परन्तु मैंने उससे इंकार कर दिया क्योंकि मेरी लड़की थी और वह प्रौढ़त्व को पार कर चुका था। मैं अपनी बेटी को तब भी देना चाहता था जो बृद्धावस्था में मेरी सेवा भी कर

और अपनी पैदावार का पाँचवाँ भाग मन्दिर में चढ़ाया। नील की मुद्रापर असीम कृपा रही और मेरी भूमि में होकर कोई भूखा नहीं गया। न मेरा कोई पड़ोसी भूखा रहा क्योंकि मैंने उनके खेतों में पानी दिया और अकाल में उन्हें अपना धान्य खाने को दिया। बिना माँ-बाप के बच्चों के मैंने आँसू पोछे और बेवाओं के कर्ज माफ़ कर दिए। सम्पूर्ण भूमि पर लोग मेरी इच्छा करते थे और मेरा यश उज्ज्वल था। जिसका बैल बीच फसल मर जाता उसे मैं, अनूकिस, नया बैल देता था। कभी मैंने सीमा के परपर नहीं हटवाए और कभी पड़ोसी के खेतों में जाने हुए पानी को नहीं रोका। मेरे सत्त्वर्गों से प्रसन्न होकर देवता मेरी पश्चिमी देश की यात्रा को सुलभ बनायें यही मेरी प्रार्थना है।”

नकटे ने सब सिर झुकाकर सुना फिर आँसू बहाते हुए वह कहने लगा, “किसी को कभी सत्य का पता ही न चलेगा। जो लिखा है उसे ही भविष्य में लोग पढ़ेंगे और अनूकिस सदा ही अच्छा आदमी कहलाएगा...यह संसार...ओह! यह सब झूठ है!” और उसने अपना सिर पीट लिया। फिर उसने एकदम मदिरा-पात्र का ढाट तोड़ दिया और मुँह लगाकर पीने लगा।

उसी रात जब हम दोनों डटकर मदिरा पी चुके तो हमने मिलकर अनूकिस की कब्र खोली और उसमें से सुवर्ण के प्याले, रत्नादिक जो हमसे चले, उन्हें लेकर हम भाग आये। उसी रात क्रराऊन के सैनिक माबो में बैठकर झुट्ट होकर मृतकों के नगर में आये और उन्होंने कब्रें खूब सूटीं क्योंकि रीति के अनुसार सिंहासनासुद्ध होने पर मये क्रराऊन ने उन्हें इनाम नहीं बाँटे थे।

भार में सीरियन व्यापारीगण पहले से मूट का मास सस्ते मोलों पर खरीदने नदी तट पर खड़े हुए मिले, हमने अपने सामान दो सौ सोने के दबन के बेचे और फिर आधी-आधी रकम बाँट ली।

“इससे अच्छा काम कोई भी नहीं है,” नवटा बोला, “इसमें बोझा नहीं डोना पड़ता, मेहनत नहीं करनी पड़ती।” और फिर वह चला गया।

उस पूरे दिन मृतकों के नगर से मृग बचते हुए और अस्त्र-शस्त्रों की आवाजें सुनाई देती रही। क्रराऊन की नयी सेना मुंदेरो का ध्वंस कर रही

थी। कब्रों के बीच रातों के पहिये गर्जन कर रहे थे। भाते फिक रहे थे। मृत्यु चीख रही थी। सायंकाल में नगर की दीवार से अगणित विद्रोही चलते लटका दिये गए थे। सर्वत्र शान्ति एक बारफिर स्थापित हो गई थी।

नगर में जाकर मैंने कपड़े खरीदे और खाना खाया और मदिरा पी उस रात मैं एक सराय में सोया। दूसरी सुबह जाकर मैं कप्ताह से मिला मुझे मिलकर वह रो पड़ा। बोला, “भैरे स्वामी! तुम लौट आये। मैं तो समझा था कि तुम मर गए थे! क्योंकि जब तुम लौटकर फिर कुछ माँग नहीं आये तो मैंने समझा तुम मर गए होये। मैंने जैसे इस नये मालिक के पास से तुम्हें देने के लिए चाँदी चुरा रखी थी। यह देखो कल ही उसने मुझे मारा है—और इसकी धी, वह बुद्धी मगरनी, वह सड़कर मर जाए—बहती है कि वह मुझे बेच डालेगी। मुझे अब यही बहुत भय लगता है... अब यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ... चलो स्वामी हम दोनों भाग चलें।”

मैंने कुछ हिचकिचाहट दिखाई तो उसने मुझे गलत समझने हुए कहा “मैंने चाँदी चाँदी चुरा रखी है, चिन्ता मत करो। हम यात्रा कर सकेंगे फिर इसके पीठ जाने पर मैं मेहनत करके तुम्हारा पालन करूँगा... सि मुझे यहाँ से ले चलो।”

“मैं तो तुम्हारा ऋण चुकाने आया था कप्ताह!” मैंने कहा और उसके हाथ में उसके दिले धन से कई गुना धन सोने-चाँदी में रख दिया फिर कहा, “तुम चाहो तो मैं तुम्हें भुक्त कर सकता हूँ... मैं तुम्हारे मालिक अभी तुम्हारा मूल्य चुका सकता हूँ।”

“और अगर मैं स्वतन्त्र हो भी गया तो जाऊँगा कहाँ? सारे जीवन मैंने दासत्व बिया है। तुम्हारे बिना मैं अधी बिल्सी की भाँति हो जाऊँगा और फिर मेरे पीछे इतना मोना सुटाना ठीक भी नहीं है—क्योंकि जो वही अतृप्त है उसे धरीदने की क्या आवश्यकता है?” उसने अपनी एक आँख मिचकाई और फिर कहा, “एक बड़ा अहाज स्मर्ता जा रहा है, देवताओं की बलि देकर हम चल पड़े तो क्या अच्छा हो। मुझे खेद है मुझे अम्पन, जिसे मैंने छोड़ दिया है, के अतिरिक्त अभी तक कोई मणि

गाली देवता मिला ही नहीं है जिसपर थड़ा रस सजूं..."

मुझे वह अभिमज्जित पत्थर याद हो आया। वह मैंने कप्ताह को देकर कहा, "यह तो...यह छोटा-सा देवता है, पर है बड़ा प्रभावशाली। इसी की कृपा से मेरा बटुआ आज सोने में भरा है। यह निश्चय ही हमारे लिए भाग्योदय का कारण होगा...अपने-आपको सीरियन की भाँति सजा लो; पर हंसो यदि तुम पकड़े जाओ तो मुझे दोष न देना...मैं तो अब भीबीज में मूँह दिमाने योग्य नहीं रहा हूँ अतएव मेरा तो यहाँ लौटने का प्रयत्न ही नहीं उठता...जल्दी करो।"

"गणप न लो।" वह बोला "क्योंकि बल की कोई नहीं जानता। जिस विमो ने एक बार नील का जल पिया है उगकी प्यास कही नहीं बुग पानी। पुरर का दोष भील में परपर से उत्पन्न हुए कक्कर के समान होता है जो क्षणिक होता है। मनुष्य की याद भी बहने पानी की भाँति होती है...कबन गुजर जाने के बाद घाव भर जाता है...अतएव क्यों व्यर्थ गणप लेो हो!"

और तभी उगकी मातृजिने ने उसे सीली भाषा में पुकारा। मैं सहक के मोड़ पर जाकर लड़ा हो गया। बोरी देर में वह एक इनिया में कुछ लड़के मिक्के उछालता हुआ आया और बोला, "सारे भगवों की माँ ने मुझे बाजार सामान माने भेजा है...क्यों यह मिक्के भी पाया के काम आयेगे...स्मर्ता तो यहाँ में बहुत दूर है!"

मरी लट पर जाकर अब वह लौटा तो बिम्बुल सीरियन बनकर आया। मैंने उसके लिए एक बड़ा मोल में दिया - ऐंसा जैसा कड़े पंगों के लौकर लेकर चलने में।

बड़ाई का कपान सीरियन था और वह जानकर कि मैं बैठ या वह बहुत लुग हुआ और उसने हमसे किराया भी नहीं लिया। कप्ताह ने उसी रात से उस 'पत्थर' पर अपनी थड़ा रसा ली। लव में वह निम्न उन पर बैठ गलता और उसे सटीन कक्ष में लपेटकर रखने लगा।

और बड़ाई का कपान लट बना और शम अल-सुहरर पुरी लभि म्गने हीरे ककने लगे। अठारह दिन बाद हम दोनों भाषाओं के मदम पर जा पहुँचे। और दो दिन बाद हम बहुत से वा कर्त्तव्यता की छोर

दिलाई नहीं देता था।

मार्ग में कप्ताह बीमार पड़ गया। उसने कैं कर दी और उसे एक विचित्र व्याधि में आ घेरा। वह उल्टा पड़ा हुआ कराहा करता। स्वयं मुझे मिचली आने लगी थी। कप्ताह ने भोजन करना छोड़ दिया था। वह समझ बैठा था कि समुद्र के बीच ही मर जायेगा।

और दिन पर दिन निकलते चले गए। बहुत से यात्री कप्ताह की भाँति ही बीमार थे और मैं सभी का इलाज कर रहा था। सभी मृतप्राय पड़े थे परन्तु मरता कोई भी नहीं था। कप्ताह उसी परिवार की पूजा किया करता था।

आखिरकार रम्या दिसाई देने लगा। कप्तान ने देवताओं को यथेष्ट बलि दी। दूसरे दिन जब जहाज हल्के पानी में तैरने लगा तो सभी की जान में जान आ गई। कप्ताह ने सड़े होकर उस परिवार की सौगन्ध लाई कि अब कभी किसी जहाज पर कदम नहीं रखेगा।

सीरिया और उन नगरों की, जहाँ मैं घूमा, भूमि लाल है। वहाँ मित्र से सभी चीजें मित्र है। नील के स्थान पर आकाश से जल बरसता है। घाटियों में आबादी है और हर घाटी में एक शानक है जो मित्र के क्रराऊन को कर भेजता है। यहाँ लोग रग-विरग उत्सव सुने हुए उन्नी कपड़े पहनते हैं क्योंकि यहाँ मित्र से ठंड अधिक पड़ती है। बैसे भी यह लोग अंगों के प्रदर्शन को निरंजना मानते हैं। शौच को अवश्य खुले में जाने है जो मित्र में बुरी बात मानी जाती है। इन लोगों के सिरों पर लम्बे बाल होते हैं और यह किसी लोगों की भाँति सिर नहीं धुँधाने। दाढ़ियाँ भी लम्बी होती हैं और अपने देवताओं के सम्मुख मनुष्यों की बलि देने हैं। हर नगर में भिन्न भिन्न देवता है। यहाँ रहनेवाले किसी जो क्रराऊन को धोर से उच्च पदों पर निदुक्त किये गए हैं और कर इत्यादि बसूल करते हैं, वह सारे मुख रहते

पर भी दुःखी रहते हैं। यह सोग व्यापारियों की कर बचाने की अनेक चालों और झूठों से परेशान रहते हैं।

मैं स्मर्त्ता में दो साल रहा और इस बीच मैंने बेबीलोन की महान लिखना-पढ़ना—दोनों, सीख ली क्योंकि इस भाषा का जानने वाला संसार के सभी लोगों द्वारा समझा जा सकता था—लोग ऐसा कहते बादशाहों के आपस के पत्र कागज की बजाय मिट्टी की तख्तियों पर हुए अक्षरों द्वारा चलते थे। यह नायब इसलिए कि शासक लोग आपस की हुई संधियों को शीघ्र न भूल सकें।

सीरिया में एक और भिन्न बात यह है कि वहाँ वैद्य के यहाँ जा रोगी इलाज नहीं कराने, बल्कि देवताओं की कृपा के भरोसे घर ही रहते हैं कि वही वैद्य आकर उन्हें देखे और उनका इलाज करे। एक यात यह कि वैद्य की भेंट इलाज से पहले ही कर देते हैं। इससे वैद्य बड़ा फायदा होता है, क्योंकि रोगी अच्छा होने पर अक्सर वैद्य को पुरजामा करते हैं।

वैसे मेरा विचार यह था कि हर काम वहाँ मामूली तरीके से चल परन्तु कप्ताह के कुछ और ही विचार थे। उसने मुझसे कहा कि हर सप्ताह घर से बाहर निकलते समय मैं राजसी वस्त्र धारण करूँ और हरबा द्वारा यह कहलाना शुरू कर दिया कि मैं अबदेस्त वैद्य था और कि मैं स्व किसी रोगी को देखने उसके घर जाने का आदी नहीं था। जिस किसी की आवश्यकता हो वह मुझसे मेरे घर आकर मिले और साथ कम से कम एक सुवर्ण का सिक्का लेता आये। मैंने कप्ताह से मना भी किया कि यह काम भूमि का देश नहीं था जहाँ की रीतियाँ यहाँ भी लागू की जा सकें, परन्तु वह तो गर्व की भाँति हठ पकड़ गया था।

उसने मुझे वहाँ के प्रसिद्ध वैद्यों के पास भेजकर कहलाया :

“मैं, सिन्यूहे, मिस्र देश का माना हुआ वैद्य हूँ जिसे फ़राऊन ने ‘एवाकी’ की उपाधि दी है। मैं मुँह को जिन्दा कर देता हूँ और अन्धों को आँखें देता हूँ। मेरे पास एक छोटा-सा, पर अबदेस्त देवता है और उसी ने मुझे यह अद्भुत शक्ति प्रदान की है। हर नगर में रोग भी भिन्न होते हैं अतएव मैं यहाँ नया ज्ञान प्राप्त करने आया हूँ।

“मेरा विचार आप लोगों की आमदनी में घाटा लाने का नहीं है क्योंकि भला आप लोगों के बीच में बोलने वाला मैं होता ही कौन हूँ ? अतएव मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि जिस रोगी पर आपके देवतागण क्रुद्ध हो जाएँ और आप उनका इलाज न कर सकें, उन्हें आप मेरे पास भेज दें। शायद मेरे देवता उस पर कृपा कर सकें। यदि ऐसे रोगी ठीक हो गए तो उससे प्राप्त हुई रकम में से आधा मैं आप लोगों को दे दूँगा और अगर वह ठीक न हुआ तो उसके दिये हुए पूरे धन के साथ मैं उसे आपके पास वापस भेज दूँगा।”

वैद्यों से, जो बाजार तथा अन्य स्थानों में अपने मरीजों को देखने जाने होते, जब मैं यह कहता तो वह अपने लबादे फटकारकर दाढ़ी खोज-लाने हुए कहते :

“तुम खवान तो हो, पर बुद्धिमान मालूम होते हो। सुवर्ण और उप-हारों की बाबत भी तुम ठीक कहते हो क्योंकि हम जानते हैं कि तुम्हें अपने भाकू पर विश्वास है। हम लीम चीरा-काटी नहीं करते। हम तुमसे इस विषय में कम जानते हैं। पर एक बात कहते हैं वह सुनो—तुम कभी जादू-टोना न करने लगना क्योंकि हमारे देश में यह बहुत अधिक प्रचलित है। इसने तुम हमसे नहीं जीत सकोगे।”

और यह सच था कि सड़को पर बहुत से बिना पड़े-सिसे लोग जादू-टोने द्वारा लोगों को सहकाते फिरते थे।

और स्मर्ता में मेरी दुकान चल निकली। मैंने कड़्यों की आँखें ठीक कर दी, और कड़्यों के सिर खोलकर उन्हें स्वस्थ कर दिया। गो बाद में उनमें से कड़्यों की दृष्टि फिर जाती रही और सिर खुले बाद कई लोग मर भी गए फिर भी मेरा उसमें कोई दोष नहीं माना गया क्योंकि अक्सर ऐसा कई दिनों बाद होता।

स्मर्ता के घनी व्यापारीगण यों ही पड़े रहते और ऐश का जीवन व्यतीत करते थे। वह मिसियों से कहीं अधिक मोटे थे और उन्हें हाँफने और बेट की शिकायत रहती थी। उनपर मैंने भाकू आजमाया और उनके शरीरों में से ऐसे रक्त निकलता जैसे मोटे सूअर के शरीर में से निकलता है।

कप्ताह भिखारियों और कहानी कहने वालों को खाना दिया करता और वह दूर-दूर तक मेरा यश गान करते थे।

और मेरे पास काफी सोना इकट्ठा हो गया। मैंने उसमें से काफी धन को वहाँ के व्यापारियों के द्वारा व्यापार में लगा दिया। वहाँ यह प्रथा थी कि जब जहाज सामानों से भरकर दूर देश जाने की होता तो उसमें लोग हिस्से खरीद लेते और सागात लगा देते थे। जहाज सुदूर मिस्र, हूटी इत्यादि स्थानों से जब लौटता तो अटूट धन समेटकर लाता और तब वह सागात के अनुसार बाँट लिया जाता। वहाँ गरीब भी कई मिलकर एक हजारवाँ या पाँच सौवाँ भाग खरीदलेते और यह व्यापार करते थे। कभी-कभी चौगुना, अठगुना धन वापस आ गया तो कभी जहाज लौटकर ही नहीं आता था। परन्तु अधिकतर लाभ ही होता था। धन भी घर नहीं खाना होता था। मिट्टी की तक्षियों पर व्यापारमंडल की मुहर लगा ली जाती कि इतना धन अनुक व्यक्ति का वहाँ जमा है। मैं जब कभी दूसरे नगरों को इलाज करने जाता तो इन्हीं तक्षियों को ले जाता जिन्हें दिखाकर वहाँ भी धन प्राप्त किया जा सकता था। बेबिलोन, सिडोन, इत्यादि सभी जगहों में यही रीति काम में लाई जाती थी। अपने घर सोना रखकर चोर-डाकूओं से घोघ्रा खाने की कोई आवश्यकता नहीं होती थी।

सब ठीक चल रहा था—मैं धनवान बन गया था और कप्ताह मोटा हो गया था। वह सुगन्धित तेल की मालिश करता और बहुमूल्य वस्त्र पहनता था। बदतमीज तो वह बहुत हो गया था और कभी-कभी मनबूर होकर मुझे उसकी टुकाई भी करनी होती थी।

फिर भी मेरा जीवन एकाकी ही बना रहा। मुझे पदिरा में भी आनंद नहीं मिलता था क्योंकि उसे पीने के बाद मैं और अधिक उदास हो उठता था। अतएव मैं अधिक से अधिक अपने काम में लगा रहता और अपना ज्ञान बढ़ाया करता था।

मैंने जब वहाँ के देवताओं की जानकारी हासिल की तो उन्हें मिस्र के देवताओं से भिन्न पाया। इनका सबसे बड़ा देवता 'बाल' था जो मनुष्य-जनि

लेता था। उसके पुजारी हिचड़े बना दिये जाते थे। उसके यहाँ बच्चों की भी बलि दी जाती थी।

व्यापारियों को, जब वह जहाज समुद्र में भेजते तो, बाल की बलि देनी होती थी क्योंकि वह अपने भाल का खेम चाहते थे। अतएव जहाँ भी उन्हें लंगड़ा-लूटा, काना या ऐसा ही सस्ता दास दिखाई देता, वह उसे हाट मोल से भाते और बलि में दे देते थे। इसी भाँति यदि कोई गरीब मछली बुरासा पकड़ा जाता तो उसे बलि दिया जाता। मगर मछल की ओर से भी इसी प्रकार सस्ती बलि दी जाती थी। मोटे-मोटे व्यापारीगण बक्सर छाती बजा-बजाकर हँसा करते कि किस प्रकार चालाकी से वह अपने देवता 'बाल' को घोखा दिया करते थे।

अतएव हाट में, एक भी सस्ता दास दिखाई नहीं पड़ता था। वैसे स्वस्थ सुन्दर दासों की कमी नहीं होती। दासियाँ मनपसन्द मिल जाती थीं क्योंकि जहाज प्रायः हर रोज बाहर से नया माल लाया करते थे। गोरी, लाल, कासी, मोटी, मासल, दुबली हर प्रकार की दासियाँ मिलती थी।

उनकी देवी एस्टाटों की जिसे इतर भी कहा जाता था। निनर्वह की इतर की भाँति इसके भी कई स्तन होते थे और उसे नित्य नये स्त्रीने वस्त्रों और जवाहरातों से सजाया जाता था। वहाँ पुजारिमें होती जो कुमारियाँ कहलाती थी, वो वह वास्तव में ऐसी न होती। उल्टे, दर्शक उनसे सभोग करते थे। यही वहाँ की रीति थी जिसे उनकी देवी चाहती थी। वह स्त्रियाँ सभोग की अद्भुत विधियाँ जानती थी और जितना अधिक आनन्द दर्शक को मिलता उतना ही अधिक सोना-चाँदी, वह मंदिर पर चढ़ाता था।

मैं भी बाल के मन्दिर में गया, परन्तु मनुष्य-बलि के स्थान पर मैंने सोना मँट में चढ़ाया। कभी-कभी मैं एस्टाटों के मंदिर में भी चला जाता था जो सायकाल के समय खुलता था। वहाँ वह स्त्रियाँ नग्न होकर कामोत्तेजक नृत्य करती और उसके पश्चात् भक्तों को आलिंगनों में भरकर अपने-अपने नशा में लेकर चली जाती थी, मैं भी कई बार उन स्त्रियों के साथ रहा परन्तु मुझे उन सबमें कोई आनन्द नहीं आया।

और कप्ताह एक दिन मेरे लिए हाट से एक दासी खरीद लाया क्योंकि मेरा सारा धन उसी के पास रहता और घर का प्रबन्ध सब वही करता

था। वह अपनी पत्नी के अनुसार उसे माया था। उसने उसे महपा-धुना-कर तैल लगाकर स्वच्छ वस्त्र पहनाकर एक राज मेरी दीव्या पर मुझे बैठ दिया।

वह किसी समुद्री टांगू से माई गई थी और मागल, मोगी और मुदर थी। उसके दोन मोनी जैसे मने थे और उसकी आँखें बड़ी और हिरनी की आँखों जैसी बाली और धोपी-भाली थी। कपलाह ने उसके रूप की इसी प्रशंसा की कि उसे प्रमत्त करने के लिए मैंने उसे स्वीकार कर लिया। परन्तु फिर भी न जाने क्यों मैं उसमें 'बहिन' न कह सका।

उस पर दया दिखाकर मैंने मन्त्री की कर्पादि घोड़े ही दिनों में वह बीट हो गई और मुझे निश्चय नये वस्त्रों और जवाहरानों, आभूषणों इत्यादि के लिए तय करने लग गई। सबसे बुरी बात तो यह थी कि उसे मेरी चाह हमेशा मानी जाती। मैं दूर-दूर के नगरों की चला जाता, समुद्र-तट पर घूमता जाता कि लौटने पर वह मोनी मिले, परन्तु वह मोनी में आँसू भरे दीव्या पर बीटी मिलनी और बड़ी चाह उसकी बनी रहती। मैंने उसे भारा-बीटा भी, परन्तु इसमें उसकी कामना और अधिक बढ़क उठती थी। और मैं परेशान हो गया।

परन्तु उस अभिमन्त्रित तप्या ने फिर मुझे बचा दिया। एक दिन मेरे पास प्रमुख के भीतरी मुँह का रास्ता खड़ीक आया। मैंने उसका एक बाँट हाथीदाँत का बनाया जो मुँह में एक बार दूँट दिया था और बाकी को बिलकूल मेरे ऊर्ध्व माने में बंद दिया। जब तक कि वह नगर में मामूली बायें-बायों में उच्छ्वाधिकारियों में मिलना शुरू, वह निश्चय मेरे पास भी आता रहा। उसने इसी बीच मेरी इस दामी को, जिसका नाम मेरे बीतलू रख दिया था, देखा और वह उस पर आक्रमण हो गया। अर्द्धक मोरा और मोरा की तरह लबका था। उसकी दाढ़ी मोपी और चमकदार थी और उसकी आँखों में बड़ादुर्ग और हिम्मत जैसे बूट-बूट कर मगी हुई थी। बीतलू उसे मलबाई दृष्टि से देखा करनी थी क्योंकि जिसकी मो लई बाँट की ओर सर्वप्रथम आकर्षित होती है। अर्द्धक उसके सामने खड़ी कर मर मिरा और फिर वह कमजोर वस्त्र भी दुनानी और वह अपने कम परन्तु दीव्या उसका मोरन कटा पड़ता था। अर्द्धक के देस में मिर में वीर लड़कियाँ

बैकी होतीं और ऐसा नग्न प्रदर्शन उसे अत्यधिक उत्तेजित करने लगा ।

आखिरकार एक दिन अपने को रोकने में असमर्थ होकर उसने गहरा श्वास लेकर मुझसे कहा : "सिन्यूहे—मिली ! तुम वास्तव में मेरे मित्र हो और तुमने मेरे भूँह में चमचमाता हुआ सोना लगाकर मुझे जंवा दिया है । इससे निश्चय ही मेरे देश में मेरा सम्मान बढ़ जायेगा । मैं तुम्हें इसके बदले में ऐसे उपहार दूँगा कि आश्चर्य से तुम्हारे दोनों हाथ ऊपर उठ जायेंगे । फिर भी आज मैं तुम्हें एक कष्ट देना चाहता हूँ ।"

मैं चुप रहा । तो वह फिर बोला :

"तुम्हारे घर में रहने वाली इस स्त्री को मैंने जब से देखा है मैं बेहाल हो गया हूँ । इसकी चाह मुझमें इतनी अधिक हो गई है जैसे कोई बिस्ली मुझमें घुस कर मुझे कुरेद रही हो । ऐसी सुन्दरी आज तक मैंने कहीं नहीं देखी है और मैं समझ सकता हूँ कि तुम इसे कितना अधिक चाहते होगे...

"फिर भी मैं चाहता हूँ कि तुम इसे मुझे दे दो...मैं इसे अपनी रानी बनाऊँगा । तुम समझदार आदमी हो और मैं तुमसे इसे माँगता हूँ और मैं इसका मूल्य तुम्हें दे दूँगा... परन्तु यदि तुम राज्ञी से नहीं दोगे तो मैं एक दिन इसे बलपूर्वक उठा ले जाऊँगा ।"

सुनकर क्षुभी से मैंने दोनों हाथ उठाये ही थे कि कप्ताह ने अपने बाल मोच डाले और बड़बड़ाने लगा : "आज का दिन कितना खराब है कि मेरे सारिक की चहेती स्त्री को तुम से जाना चाहते हो...इसे देखकर तो इसका रिक्त स्थान अतुल धन से भी पूरा नहीं किया जा सकता...इसका पैट कितना सुन्दर है ! उसे तो देखकर ही तुम्हें पता चलेगा कि यह कितनी सुन्दर है ।"

और वह बड़बड़ाना रहा । स्मर्त्ता आकर उसे व्यापार की सब खालें पता चल गई थी । वह उसका अधिक से अधिक मूल्य वसूल करना चाहता था ।

बीफू ने उसे रोते देखा तो स्वयं भी रोने लगी और कहने लगी, "नहीं मैं कहीं नहीं जाऊँगी," पर भूँह पर हाथ लगाकर उँगलियों में से अजीब को तलचाई दृष्टि से देखती भी जाती थी ।

मैंने हाथ उठाकर दोनों की चुप किया फिर गंभीर मुद्रा में बोला :

“अम्भुरु के राजा अजीरु ! तुम मेरे मित्र हो। यह सच है कि यह स्त्री मुझे बहुत प्यारी है और मैं इससे ‘बहिन’ कहता हूँ। परन्तु तुम्हारी मित्रता का मूल्य मेरी निगाहों में सबसे ऊँचा है। इस मित्रता के नाते मैं यह स्त्री तुम्हें बिना मूल्य लिये ही उपहार में दूँगा। तुम इसे ले जाओ। मैं अपने-आपको धोखा नहीं देना चाहता क्योंकि इसकी निगाहों से भी जान गया हूँ कि यह तुम्हें चाहने लगी है। यदि तुम्हारे शरीर में एक जंगली बिल्ली है तो निश्चय ही जानना कि इसके शरीर में जाने कितनी जंगली बिल्लियाँ उछला करती हैं। तुम इसके साथ जैसा चाहें करो—यह आज से तुम्हारी है।”

अजीरु मुनकर खुशी से चिल्ला उठा। वह बोला : “सिन्धुहे ! तुम मिस्री अवश्य हो और यह भी सच है कि सारी बुराईयाँ मिस्र से ही संसार में फैलती हैं; परन्तु तुम उदार हृदय वाले अच्छे आदमी हो। आज से तुम मेरे भाई हो। अम्भुरु के सारे देश में तुम्हारा नाम यश को प्राप्त होगा। मेरे बगल में मेरे सिंहासन पर तुम मेरे अतिथि बनकर बैठोगे...तुम मेरे लिए अन्य राजाओं से भी बढ़कर रहोगे...यह मैं शपथपूर्वक कहता हूँ।”

उसने हँसकर कीफतू की ओर देखा। वह उस समय गहरे रंगीन वस्त्र पहने हुई थी जिनमें से उसका गोरा शरीर दमक रहा था। उसकी घीवा रङ्ग की हुई थी, पर स्तन मग्न थे। अजीरु ने गहरा श्वास छोड़ा और उसका हाथ पकड़कर खींचा और तब उसके स्तन डोस उठे। उसने एक ही सटके में उसे ऐसे उठा लिया जैसे उसमें कोई बोझ ही नहीं था और वह उसे लेकर बाहर अपनी कुर्सी में बिठाकर ले गया।

तीन दिन तीन रात स्मर्ना में उसे किसी ने बाहर नहीं देखा। वह मेरे पास भी नहीं आया। उसने अपने-आपको अपने घर में कीफतू के साथ बंद कर लिया था।

कप्ताह और मैंने उससे पीछा छूटने पर खुशी मनाई।

परन्तु उसने मुझसे कीफतू का मूल्य न लेने के सिलसिले में काफी बर्हा-गुनी की।

परन्तु मैंने उत्तर दिया : “उसे यह युवती भेंट में देकर मैंने उससे मित्रता बढ़ा ली है। आखिर तो वह राजा ही है हालाँकि उसका मौजूदा

राज मवेशियों के लिए छोड़े हुए चारागाह से बड़ा नहीं है। फिर भी बल की कौन कह सकता है कि क्या होगा? राजा की दोस्ती भी लाभदायक हो सकती है... शायद सोने से ज्यादा यह कभी काम आये।"

अपने देश लौटने से पूर्व अजीरु फिर मेरे पास एक बार आया और बोला : "जो कुछ तुमने भुझे दिया है उसका मूल्य तो मैं निश्चय ही नहीं दे सकता, सिन्धूदे क्योंकि भला उसकी बराबरी कौन-सा उपहार कर सकेगा? यह सचकी तो इतने मजबूत की है कि इतना तो मैं अदाय भी नहीं लगा सका था। उसकी आँखें बिना चेहरे के घुँघुँ की भाँति गहरी है... और हालाँकि उसने मुझसे से मेरा पीरप, खँनून की बीज में से हील की भाँति निचोड़ लिया है फिर भी मैं किन शब्दों में वर्णन करूँ कि उसे मैं कितना चाहने लगा हूँ। आज तो मैं मरने हूँ क्योंकि मेरा राज्य छोटा-सा है, पर किसी दिन मैं तुम्हें निहाल कर दूँगा। तुम जब कभी किसी प्रकार की सहायता के लिए कहो, बहो होगा। अगर तुम्हारा कोई अपमान करे अपना हानि पहुँचाये तो मुझसे कहना और मेरे भादमी उस व्यक्ति का बध कर देंगे चाहे वह कहीं क्यों न छिप जाये और तुम्हारा नाम भी बीज में नहीं आयेगा।"

उसने मेरी मर्दन में अपने भस्ते से मोने की खड़ीर उतारकर पहना दी। पर ऐसा करने समय उसके मूँह से आह-भी निकल गई। मैंने तुरन्त अपने गले में उतनी ही मोटी सोने की खड़ीर उतारकर उसके गले में डाल कर मित्रता का दावा भर दिया। वह प्रसन्न हो गया और उसकी निगाहों में मैं बेहद खड़े गया। मुझसे गले मिलकर वह फिर चला गया।

हर साल के मुनाजिब अब की बार फिर खड़ीरी सोमो ने सीरिया की सीमाओं पर हमला कर दिया। मैं जब जब उस औरत से छुटकारा पा गया था तो स्मर्ना से बाहर जाने की इच्छा मुझे होने लगी। मैंने भी स्मर्ना में आज्ञा और सारो से अधिक हलचल मची हुई थी, क्योंकि अब की बार खड़ीरी सोमो ने बटना नगर में मिछी मीनिजो को लपटा वहाँ के शासक की मार डाला था। वह सोमो इस बार बेदरी से औरत-बच्चे सब को मार रहे

ये और लूट में कसर नहीं छोड़ रहे थे। परन्तु कराऊन की सेनाएँ भी उन्हें दबाने सेनाइ के रेगिस्तान में होकर टैनिस आ गई थीं।

सीरिया में युद्ध छिड़ गया था और मैंने कभी युद्ध देखा नहीं था। मैं भी उसका अनुभव करना चाहता था और चासवर जब मैंने सुना कि मिस्री सेना का नायक बनकर होरेमहेब आ रहा था तो मेरी उससे मित्रता की सासना उग्र हो उठी। अपने एकाकी जीवन में पुराने मित्र से मिल सने को मैं बेचैन हो उठा और मैं चल दिया। समुद्र तट के सहारे-सहारे हम एक मास साढ़ने वाले जहाज में चले। हम एक कोटसिचे नगर में पहुँचे, जिसका नाम जेरुसलम था और जो बहाइ के ऊपर बसा हुआ था। यहाँ मिस्री सेना सैन्य भी और होरेमहेब ने यहाँ पड़ाव डाला था।

जब मैं उससे मिला तो उसने मुझे मेरी सीरियन पोशाक में नहीं पहचाना। वह बोला, "मैं एक गिन्गूहे को जानता था जो अच्छा वैद्य था। वह मेरा मित्र था।"

परन्तु जब उसने मुझे पहचान लिया तो मेरा हृदय में स्वागत किया। उसने मुझे युद्ध में भाग लेने के लिए आमन्त्रित भी किया। उसने कहा, "अम्मन की कसम! तुम सिग्यूहे! मेरे मित्र मुझे यहाँ इस गन्दे शहर में खूब मिले!" और फिर सब लोगों को भगाकर मेरे लिए भविला भेगाई। पीने-पीने हम पुरानी जानें करत रहे। फिर वह बोला -

"तब जब मैं पढ़ने तुमने मिला था, मैं मृगं वा वर तुम बुद्धिमान थे और तुमने मुझे नेक सलाह दी थी। परन्तु अब देखो मैंने यह लूटने की बाबुल अपनी बुद्धिमत्ता से ही पाई है।

"जब लूटारी लोगों ने हमला किया तो मैंने कराऊन के सम्मुख भागना भी कि वह मुझे इन्हीं दबाने यहाँ जमे। कोई ऐसा दल नामने में अहिंसी नहीं बना क्योंकि युद्ध में उन लोगों को आशय नहीं मिल पाता? हमारे अहिंसित लड़कियों के पास बने आने हैं और उनकी जो विष्णु और जो अहिंसित युद्ध में होती है— वह बहुत ही भयानक भयनी है— वह मैं अपनी तरह जानता हूँ।

"परन्तु कराऊन जेरुसलम में आने देखा था और वहाँ बसा था है और उसका बाकी वालों में तीन कोई बागना ही नहीं है। वह बागना है

कि बिना खून-खराबा हुए खूबीरी दवा दिये जायें ।”

और वह ठहाका लगाकर हँसा । फिर कहने लगा :

“सिन्धूदे ! असली बात यह है कि कराऊन के इस विचित्र देवता ने तो मुझे परेशान कर दिया है । उसका रूप बाली की तरह है और वह अपने हजार-हजार हाथों से जीवन मोटा करता है । कराऊन का कहना है कि सभी बराबर हैं—मानिक दास सभी । क्या दिमाग है कराऊन का ? मेरे बिचार से वह पागल है... भला कभी हो सकता है कि खूबीरी बिना खून-खराबा के मगा दिये जाएँ —हूँअ !”

वह फिर मदिरा पीने लगा । फिर बोला :

“मेरा अपना देवता तो होरस है और वैसे मैं अम्मन के विरुद्ध भी नहीं हूँ । परन्तु अम्मन के पुजारियों की शक्ति इतनी अधिक बढ़ गई है कि उन्हें रोकने के लिए कराऊन के नये देवता—इस एटोन की भी आवश्यकता है । यहाँ तक तो सब ठीक है और एटोन के मंदिर इत्यादि के निर्माण भी सब ठीक है परन्तु इससे आगे सभाई को बुझने का प्रयास भयानक है क्योंकि सत्य तो उस लेड बाबू के समान है जो किसी बच्चे के हाथ में हो । बाबू को तो ध्यान में रखना चाहिए और सभी काम में लाना चाहिए जब उसकी आवश्यकता हो । अतएव शासक के लिए सत्य बहुत ही हानिकारक है ।”

उसने फिर घुँट लिया फिर कहा :

“मेरे बाबू की वसम ! सीबीड छोड़कर जाने पर मुझे बड़ी खुशी हुई क्योंकि वहाँ देवताओं की लड़ाई हो रही है । अम्मन के पुजारियों ने कराऊन के बारे में अनेक कहानियाँ मढ़कर प्रचलित कर दी हैं कि उसकी पैदाइश सच्ची नहीं है इत्यादि । और फिर वह जो मित्रजी की लड़की थी न ! वह जो साम्राज्ञी बनाई गई थी, इतने में मर गई । और अब आई की पुत्री नेफरतीनी साम्राज्ञी बन गई है । है तो यह भी मुन्दर पर है वह जाने बाग की असली बेटी —बड़ी खालाक—बड़ी मक्कार !”

मेरी आँखों के सामने मित्रजी की उस बच्ची राजकुमारी का सामूहिक बेहरा घूम गया—वह जो मित्रजी से लेना करती थी ।

“वह बच्ची कैसे मर गई ?” मैंने पूछा ।

“वैद्य कहते हैं कि मिस्र की आबोहवा उसे माफ़िक नहीं आई थी, पर यह सब झूठ है क्योंकि मिस्र के बराबर अच्छी जगह कोई है भी नहीं। बेहतर यही है कि हम न चले। पर यदि मैं अपराधी को दूढ़ने निकलूँ तो अपना रथ आई के घर के सामने रोक दूँ।”

रात में हम सो गए। भोर में जब उठे तो बाहर सेना में खड़बड़ हो रही थी। शीघ्र ही सींग फूँके जाने लगे और सैनिक पक्षिवद्ध होकर सज-कर खड़े होने लगे। उनके नायक भाग-भागकर ठीक खड़े होने की आज्ञा देने और गलती करने वालों पर चाबुक फटकारते थे। जब सब ठीक हो गया और सेना सन्नद्ध हो गई तो होरैमहेब अपने मिट्टी के बने गन्धे डेरे से बाहर निकला। उसके हाथ में उसकी सोने की चाबुक थी और एक दास उस पर छाता लगा रहा था। तो एक ओर उस पर से मस्खियाँ उड़ रही थी। वह चिल्लाकर बोला :

“मिस्र देश के सैनिकों ! आज मैं तुम्हें युद्ध में लेकर जाऊँगा . क्योंकि जामूसो ने अभी सूचना दी है कि पहाड़ के दूसरी तरफ खबीरी आ गए हैं। वह बितने हैं यह पता नहीं चला है क्योंकि जामूस डरकर भाग आया थे। परन्तु मेरे विचार से इतने तो होंगे ही कि तुम सबको खरम कर सकें और तब मुझे तुम्हारी यह मनहूस सूरतें देखनी नहीं पड़ेंगी। और तब मैं मिस्र लौट आऊँगा और फिर एक असली वीरों की सेना लेकर लौटूँगा।”

उसने खतरनाक निगाहों से सैनिकों को घूरा। किसी का साहस नहीं हुआ कि बोल सके : वह फिर बोला :

“मैं तुम्हें युद्ध में ले जाऊँगा—मैं सबसे आगे जाऊँगा और चाहे तुम मेरे पीछे न भी आओ तो भी मैं तो बाब का पुत्र हूँ। मैं धकेला ही खबीरियों का नाश कर दूँगा... फिर भी कान खोलकर सुन लो... जो मेरे पीछे नहीं आया उसे मैं चुन-चुनकर चाबुक से छील दूँगा। मेरी चाबुक से खून बहेगा। खबीरियों के भाजों से मेरी चाबुक ज्यादा खतरनाक है। खबीरियों में कुछ भी भयानक बात नहीं है। केवल उनकी चिल्लाहट ही भयानक होती है। यदि उससे भय लगे तो अपने कानों में मिट्टी भर लो पर बुझियों की भीति वहाँ डरने ए न आओ... जीनकर तुम उनकी मवेशियों बाँट लेना—उनकी स्त्रियाँ सुंदरी हैं और वह वीरों को बहुत पसन्द करती

हैं...वह सब तुम्हारी होगी।"

सैनिकों ने एक साथ हल्सा किया और अपने भावों से ढाँसे बजाई।
होरेमहेब ने शानुक फटकारी और मुस्कुलकर फिर कहा :

"तुम्हारा जोश देखकर मे खुश हूँ...परन्तु पहले हमे फराऊन के मंदिर में जाकर एटोन को सिर नवाना है।"

और सब सेना अलग-अलग द्काइयों में तरह-तरह के झंडे लिए अत्यन्त बेकायदे से चलती हुई नगर से बाहर निकली, पीछे-पीछे उच्च पदाधिकारी और सबके पीछे अपने अगस्तकों के साथ होरेमहेब चला। मुझे उसने अपने ही साथ रखा। नगर के बाहर सफ़ाई का बना हुआ एटोन का मंदिर बना था। अन्य मंदिरों से यह भिन्न था क्योंकि बीच में यह खुला हुआ था जहाँ बेदी बनी हुई थी। वहाँ किसी देवता की मूर्ति नहीं थी जिसे न पाकर सैनिक परेशान हो गए। होरेमहेब ने कहा :

"देवता घाली के रूप का है अतएव आकाश में तपते हुए सूर्य को देखो...देखो जब तक तुम उस पर दृष्टि लगा सको, वह अपने हथार-हथार हाथों से आमीर्बाद देना है...परन्तु आज बुद्धभूमि में शायद वह तुम्हारी पीठ पर साल मुईयों की भीति चूसे।"

सैनिक बड़बड़ाये कि फराऊन का देवता बहुत दूर था—इतना दूर कि वह उसके सामने सेटकर अभिवादन भी नहीं कर सकने थे।

मंदिर में दुजारी ने, जो एक युवक था, प्रार्थना की। उसके सिर पर केग थे और कंधे पर पक्षे बस्त्र था। देर तक वह सूर्य और एटोन की स्तुति करता रहा और सैनिक परेशान होकर रेत में घेर मसलने रहे। जब प्रार्थना समाप्त हुई तो उन्होंने बीच की माँस ली और फराऊन का जय-जयकार किया।

सैनिक चल दिये। उनके पीछे जैसगाइयों में और गधों पर सामान चला। होरेमहेब सबसे आगे अपने रथ को मगाता हुआ चला और बाकी के ऊँचे पदाधिकारी अपनी बुमियों पर बैठकर गर्मी की गिरावट करने हुए चले। रसद इत्यादि के अधिकारी के साथ मैं गधे पर बैठकर चला।

मेरे साथ मेरी दवादारु का बक्का था।

सेना सायंकाल तक चलती रही। बीच में थोड़ी-सी देर के लिए उन लोगों ने खाना खाया। लोग चलते-चलते गिर जाते थे, कइयों के पैरों में छाले पड़ गए थे। नायकों की चाबुक खाकर भी गिरे हुए उठकर खड़े न हो पाते थे। जब कभी बगल के पहाड़ों में से कोई तीर चला देता, जो किसी सैनिक के शरीर में चुभ जाता, और वह कराह कर गिर पड़ता था।

हल्के रथों के आगे का मार्ग साफ कर दिया था। रास्ते के सहारे कई खबीरी चियड़ों में लिपटे हुए मरे पड़े थे।

और हम पहाड़ी पार कर गए। आगे एक बहुत बड़ा खुला मैदान था जहाँ खबीरी लोगों का पड़ाव पड़ा हुआ था। हौरमहेब ने सींगी फूंकने की आज्ञा दी और सेना को आक्रमण करने के लिए सन्नद्ध किया। सामने बेगुमार खबीरी पड़े हुए थे और उनकी चिल्लाहट से आकाश गूँज रहा था। हौरमहेब ने पुकारकर कहा :

“मीच मेंढको ! घुटने मजबूत कर लो। लड़ने वाले शत्रु बहुत थोड़े हैं, बाकी यह भीड़ सब भेड़ है।...मवेशी, औरतें और बच्चे ! जोर लगा दो और यह सब तुम्हारे हो जायेंगे।”

खबीरी चढ़े आ रहे थे। वह हमसे बहुत ज्यादा थे। उनके भाले घम-घमा रहे थे। उन्हें देखकर हमारे सैनिकों का धैर्य छूट रहा था परन्तु वह भागने लायक भी नहीं रह गए थे। नायक चाबुक कटकार रहे थे और सैनिक सन्नद्ध हो गए। तीरन्दाजों ने घुटने गाड़कर घनुष खींचे और एक साथ हजारों तीर ‘बजट’ ‘बजट’ करके छूट गए। और युद्ध छिड़ गया। भयानक कोलाहल फैल गया। खबीरियों की चिल्लाहट और उनके मारे विकराल थे इसमें तनिक भी संदेह नहीं था। उन्हें मुनकर रोम-रोम भय से सड़ा हो जाता था।

हौरमहेब चिल्लाया : “बढ़े जलो ! मदे कुप्तो !”

और भारी रथ बेग से भागे। धूल से आकाश भर गया। कुछ भी दिखाई नहीं देता था। हौरमहेब के निरुत्साह में सया हुआ पर फरफरा रहा था। खबीरी बहादुरी से लड़ रहे थे। उन्होंने अनेक मिथी सैनिकों को मौत के घाट उगार दिया। पृथ्वी खून से लीग गई। सभी ओर भयानक

बोलाहूत हो रहा था, अस्त्र-शस्त्र सदस्रदा रहे थे। तीरछूट रहे थे, गालियाँ मुनाई दे रही थी और सबके ऊपर मरते हुएों का दारुण चीत्कार फैल जाता था। मेरा गधा बहुत रोकने पर भी मुझे युद्ध के मध्य में ले गया। वह न रुका। आकाश में गिद्ध चक्कर लगाने लगे।

तभी हौरैमहेव के सैनिकों ने खबीरियों के पड़ाव के पिछले हिस्से पर प्रहार किया जहाँ उनकी स्त्रियाँ थी और वहाँ आग लगा दी। खबीरियों ने घबराकर उधर देखा। अपनी स्त्रियों को छतरे में देखकर वह उधर लौटे और हमारे सैनिकों का उत्साह दूना हो गया। वह समझे कि शत्रु भाग रहा था। बस फिर क्या था। वह टूट पड़े। दारुण हत्या प्रारंभ हो गई। पृथ्वी खबीरियों की लाशों से पाट दी गई। इस आकस्मिक आक्रमण से खबीरी घबरा गए और भागने लगे। परन्तु वह धीरे लिए गए थे। उन्होंने हमियार डाल दिये और घुटनों के बल बैठ गए। परन्तु वह समय दया करने का नहीं था। बच्चे दूरे सबके भेजे मुगदरो से खोल दिये गए। हौरैमहेव की आज्ञा से सींगे फिर फूँक दिये गए। पूर्ण विजय प्राप्त हो चुकी थी।

परन्तु मेरा गधा फिर भी युद्ध के मैदान में उछल रहा था। वह रोके रुकता ही नहीं था। मैं उस पर लाज की तरह सदा हुआ था। सैनिक उस स्थिति में मुझे देखकर हँसे। आसिरकार एक सैनिक ने उसकी गाल पर बड़ा मारा, तब कही वह रुका। और तब से सैनिकों ने मेरा नाम 'जगली गधे का बेटा' रखा दिया।

अब कैदियों को घेरा गया। उनकी मवेसियाँ अगणित थीं। हौरैमहेव ने जब गर्भ से सेना के बीच घेर के सिर वाली देवी सैलमट की मूर्ति पेटी खोलकर स्थापित की तो सैनिकों ने चिल्लाकर उसका जयघोषना किया और उसपर खून छिटका। वह पीत स्तनों की उन्नत किये हुए अत्यन्त प्रसन्न प्रतीत हो रही थी।

सारी रात सैनिक खबीरियों की स्त्रियों से घनात्कार करते रहे और मैं मरीजों की मरहमपट्टी करता रहा। खबीरी वास्तव में अत्यंत निर्धन लोग थे जो मवेसियों को घराकर बड़ी कठिनाई से अपना और स्त्री और बच्चों का पालन करते थे। जैसे वह मानी भी थे। मैंने उनसे से

भी कइयों के घाव सी दिये थे परन्तु जब उन्होंने अपनी स्त्रियों की चिल्लाहट सुनी तो अपने टाँके फाड़े और खून बहाकर मर गए।

मेरे हृदय में यह जीत, जीत की तरह नहीं जम पाई गो हौरेमहेव ने मेरे साहस की अत्यन्त सराहना की। जब मैंने उससे पूछा कि सबसे आगे रहने पर भी उसके कोई चोट या घाव क्यों नहीं लगा तो वह कहने लगा :

“मैं बाउ का पुत्र हूँ और संसार में बड़े कार्य करने के लिए उत्पन्न हुआ हूँ। फ़राऊन के पास मुझे मेरा बाउ ही लाया था। यह सच है कि जब मैं फ़राऊन के महल में आ गया तो उसे वह स्थान रुचिकर नहीं लगा और वह उड़ गया और फिर कभी नहीं सौटा। लेकिन जब मैं सेना के साथ सेनाई के रेगिस्तान को पार कर रहा था तो बड़ी कठिनाइयों का मुझे सामना करना पड़ा। भूख और प्यास से मेरा बुरा हाल हो गया था। और तभी एक दिन जब मैं रेगिस्तान में भिक्कार के लिए गया तो मैंने देखी एक अग्नि देवी जो कुछ दूर पर जल रही थी...वह ऐसी थी जो कभी नहीं बुझती थी...निरन्तर जलती रहती थी.. इससे मेरी हिम्मत बढ़ी। और किसी को वह दिखाई नहीं दी थी। उसे केवल मैंने और मेरे रथवान ने देखा था...तुम उसे बुलाकर पूछ सकते हो। तभी से मुझे विश्वास हो गया कि मेरे निश्चित समय से पहले कोई अस्त्र मेरे शरीर को नहीं छूएगा।”

तीसरे दिन हौरेमहेव ने अपनी सेना को तीन भागों में बाँटा। कुछ के साथ उसने लूट का माल जैरसेलम भेजा कि वह वहाँ उसे बेच आवे क्योंकि उस रेगिस्तान में कोई सौदागर उन्हें मील लेने नहीं आया जैसे कि और स्थानों में लोग आ जाया करते थे। एक और जत्था, मवेशियों को चराने बस दिया और कुछ को लेकर वह स्वयं खबीरियों के पीछे चला क्योंकि उसने सुन लिया था कि वह लोग छिपकर अपने देवता को उड़ाकर ले जाने के प्रयास में थे।

मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध हौरेमहेव अपने रथ में चढ़ाकर ले गया। उसने कहा : “तुम्हें युद्ध का आनन्द दिखानेगा...चलो !” और मैं उसकी

... उस रथ में सड़ा हो गया। रथ को वह पागलों की भीति ... ले जा रहा था। बड़े-बड़े पत्थरों पर से, वह भड़कावू करता हुआ

जु-वेर से जा रहा था। मैं हर क्षण मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा था कि
 १३ पर अब रथ लौटा, अब लौटा। शरीर झँझोड़ डाला था उस रथ ने,
 १४ मैं शिथिल हो चुका था।

और फिर रथ खबीरियों पर तूफान की तरह बरसा। फिर सैकड़ों
 १५ भागने लगे और उनके नीचे खबीरियों के बच्चे, बूढ़े और स्त्रियाँ
 १६ सब दी गईं। पुरखों के तनो में भाले छेद दिये गए। उनके डेरो में आग
 १७ गा दी गई। मैंने देखा...बहु युद्ध नहीं था...खबीरी लड़ नहीं रहे थे...
 १८ हुत्पा थी—निर्मम हुत्पा!

परन्तु खबीरी लोग इससे सोल गए कि उनके लिए रेगिस्तान में भूखो
 १९ र जाना अच्छा था, बनिस्वत सीरिया पर हमला करने के। खबीरी के
 २० नाम से पैट भरने और सीरिया के सैलों से अपनी फटी खचा को मलने
 २१ बजाय, अब उन्होंने रेगिस्तान में लड़प-लड़पकर मर जाना ही उत्तम है,
 २२ इ बात समझ ली।

और मैंने युद्ध के आनन्द देख लिये। होरेमहेब ने एक बार फिर सीमा
 २३ परखरी की गड़वा दिया जो खबीरियों ने उखाड़ दिये थे। खबीरियों के
 २४ बता के टुकड़े-टुकड़े करने के उपरान्त उसे संक्षय की मूर्ति के सम्मुख
 २५ ला दिया गया। इस देवता का नाम 'जहबैह' था। बने हुए खबीरी घने
 २६ जंगलों में भाग गए। अब वह खमूर के पत्ते हिला-हिलाकर गाना गाना
 २७ जा गए थे।

५ -

होरेमहेब ने जैरसेलम लौटकर सीमाप्राप्त के सुटे हुए नागरिकों को
 २८ ही का मनात्र और उन्हीं के पात्र देव दिये। उन्होंने कुछ हाँकर
 २९ पने बत्त फाड़ कामे और बहु बिल्लिये : "अरे यह लुटेरे तो खबीरियों
 ३० भी बदतर है," परन्तु उनके पास घन भी बची नहीं थी क्योंकि उन्होंने
 ३१ पने मन्दिर, व्यापारीगण और घर-बसूत करने वालों से क्षण लिये थे।
 ३२ ॥ होरेमहेब ने इस भीति तमाम लूट के सामान को सुवर्ण और चाँदी में
 ३३ रंगित कर निशा और सैनिकों में उसे बाँट दिया। अब घेरी समझ में
 ३४ था कि पाउज हलनी वादाद में कैसे मर गए थे, अब मैंने उनके पात्र

साफ करके सी दिये थे और औपधियाँ भी सपा दी थी। अधिक लोगों के बीच लूट का सामान बँटने से हिस्सा कम मिलता, अतएव धायलों को रात में औरों ने मार डाला था।

सायंकाल के समय उम कच्ची शोपठी में जहाँ हीरेमहेव टहरा हुआ था मैं और वह बातें करते हुए मदिरा पी रहे थे। मैंने कहा :

“मित्र की शक्ति महान् है। कोई अब उसका सामना करने की क्षमता नहीं रखेगा। खबीरी भी समाप्त हो चुके हैं। फिर अब तुम अपनी सेना को छुट्टी क्यों नहीं दे देते... उनके डरे से बचपू जाती है और वह बात-बात में हिंसा पर उतर जाते हैं।”

“तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो,” वह काँस सुजाते हुए बोला। क्योंकि सेनापति के डरे में जूँ की कमी नहीं थी। वह कहने लगा : “मित्र की यह धारणा ही गलत है कि उसके सामने खड़े होने का किसी को साहस नहीं है। दुनिया बहुत बड़ी है और छिपे हुए स्थानों में वह बीज बोये जा रहे हैं जिनमें से विनाशकारी अग्नि धारों और फूट निकलेगी। उदाहरणार्थ अम्मुर्ग के शासक को ले लो, जो दिनोदिन घोंड़े और रथ एकत्रित कर रहा है। उसकी दावतो में उच्चपदाधिकारी उससे कहने लगे हैं कि उसके पूर्वज हौ पहले सारे संसार के शासक थे, और है भी यह बात सच; क्योंकि ‘हार्डर्सस’ के अन्तिम वंशधर आजकल वही रहने हैं।”

“अम्मुर्ग का राजा अबीरु तो मेरा मित्र है।” मैंने कहा, “मैंने उसके दाँत बनाये थे। उसके पास एक स्त्री भी है जो उसकी रानों में से उसकी शक्ति सींचा करती है।”

“तुम बहुत-सी बातें जानने हो।” मुझे गौर से देखते हुए उसने कहा, “तुम स्वतन्त्र मनुष्य हो और मन चाहे जहाँ जा सकते हो। तुम्हें अनेकानेक भेद मालूम हो सकते हैं जो हर किसी के लिए दुर्लभ हैं। अगर मैं तुम्हारी तरह स्वतन्त्र होता तो मैं स्थान-स्थान जाकर वहाँ की बातें सीखता। मैं मिननी और बेबीनीस जाता और इस बात की जानकारी प्राप्त करता कि हितैषी लोग आजकल कैसे रथ-वाम में सजे हैं और किस भाँति उनकी सेनाएँ वरजिभ करती हैं। समुद्री टापुओं में जाकर यह जानने की कोशिश करता कि उनके जहाज कैसे होते हैं जिनकी आजकल बड़ी परवा है। परन्तु

तीरेमहेश यह काम अब चाहे तो भी सीरिया में नहीं कर सकता। परन्तु तुम विन्यूहे ! तुम तो सीरियन वस्त्र पहने हुए सीरियन भाषा बोलते हुए नहीं मैं मिल-जुल सकने हो। और फिर तुम ठहरे वैसे जिसका सभी से संपर्क होता है और तुम यदि ऐसी जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा भी करो तो किसी को तुम पर शक नहीं होगा। इन बातों के अतिरिक्त तुम्हारा भाषण सादा और दृष्टि स्नेहभरी है और लोग समझने हैं कि तुम बड़े व्यक्ति हो। फिर भी मैं जानता हूँ कि तुम्हारा हृदय बन्द है जिसमें गहरे भेद और गहरी ही बातें छिपाए सोखते हो। है न यही बात ?”

“शायद ! पर तुम चाहते क्या हो ?”

“यदि मैं तुम्हें काफ़ी सोना देकर इन देशों को भेजूँ कि वहाँ जाकर किसी हिकमत और अपना नाम रोशन करो तो कैसा रहेगा ? माल-माल और बा-असर लोग, यहाँ तक कि राजा लोग भी तुम्हें बुलाएंगे कि उनका इलाज करो और तब तुम मेरी आँखों से उन्हें देखकर, और मेरी नौ से उनकी बातें सुनकर जब मित्र लौटो, मुझे वह सारे भेद बतला जाओ जैसे अवश्य है। क्यों ?”

“मेरा मित्र लौटकर जाने का कोई विचार नहीं है। और फिर इस काम में सतरे बहुत अधिक हैं। मैं उसका लटकाया जाना पसन्द नहीं करता” मैंने बेहमी से उत्तर दिया।

मुनकर उमने कहा, “कल की कौन जानता है विन्यूहे ! कि क्या होगा तुम्हारा लयाल है कि तुम मित्र अवश्य लौटोगे क्योंकि जिस किसी ने बार भी नील का पानी पिया है उसकी प्यास संसार भर में नहीं नदी पानी। यहाँ तक कि बिड़ियाई और सारस भी वहाँ जाइँगे मे लौट आने के लिए सोना धूल के समान है। काल, हमसे मैं ज्ञान प्राप्त कर सकता, तब तक तुम यह उत्तरे लटकने वाली बाल बहने हो यह बात तो मैं जान गणिषो की भनभनाहट के समान ही समझता हूँ। मैंने तुमसे उन देशों की जियाँ तोड़ने या किसी के साथ कोई कुछाई करने के लिए नहीं कहा बड़े-बड़े मगरों में मन्दिरो में राहगीरों को क्या-क्या करके नहीं मुभाया ? सोने की बर्तन नहीं है ? फिर तुम्हारा हुनर तो तुम्हें हर जगह मकता है और शामकर उन मुन्को में तो बहुत ही ज्यादा जहाँ लोग

अपने वृद्धों को कुल्हाड़ी से मार डालते हैं और रोषियों को मरभूमि में मारने के लिए छोड़ आते हैं। बादशाह सोच अपने शक्ति-प्रदर्शन करने के लिए अपनी सेनाओं को सजाकर बाहर निकालते हैं। बस यही यदि तुम उनकी विशेषताओं को, उनके अस्त्र-यस्त्रों को ध्यान से देख लो और उनके माना प्रकार के रथों और अन्दाजन मैनियों को गिन लो तो भ्रमा जमी को तुम पर गच क्यों होने लगा ? कहने है हिन्दी लोगों में दिगी ऐसी धातु का आविष्कार कर लिया है जो बहुत मजबूत है और हमारे साम्राज्य को बाट डालनी है। सब-भूट की तो पना नहीं पर यदि यह बात गच है तो मूचना प्रधानक अवश्य है। फिर यह भी जाँच करो कि यहाँ के मैनिय तैय मंगे, लापे-रिये, लमड़े है भयवा मेरे इन यूहों जैमे ही है।... इन मधमे मङ्-कर मुझे एक जानकारी और चाहिए —कह वह कि इन सभी साम्राज्यों के हृदय में क्या है... मेरी ओर देना।”

मैंने उसकी ओर देना और झुंझे लगा वह गुस्से, देवता के समान बलिष्ठ व्यक्तित्व लरीर में बस रहा था। उनके तबो ल मे अग्नि की लारें निचल रही थी। उन्हें देखकर मेरा दिल दहल उठा। मैं उनके सामने गिर भुजा दिया और कहा

“तुम महान हो।”

“तुम अब विश्वास क्यों हो कि मैं अविचार करने के लिए ही उभरा हुआ हूँ ?” उनमें मन्द स्वर में गुंथा।

“मेरा हृदय मुझमें बहता है कि तुम मुझे जाना है लकन हो पान्थु देना क्यों होगा है, मैं कहूँ नहीं सकता।” मैंने उत्तर दिया। मेरे मुँह में मेरी बुझान मोड़ी हो गई थी। फिर भी मैंने कहा : “तुम निश्चय ही शक्तिशाली हो... और जो काय मुझमें मेरे लिए निर्धारित किया है वह पूर्णतः मेरे लिये होगा जानेवा। मेरी जानें और काम मुझमें होने। यह मैं नहीं कह सकता कि जो मुझमें है मुझे हूँ या जो मेरे मुँह में बलवा है उनमें मेरे हिन्दी मुझमें समझ की निचले; क्योंकि मैं इस सम्झने में मुँह हो हूँ। फिर जो मैं कुछ कहूँगा वह अवश्य मुझमें बलवा है... मुझमें मान के लिए वह, जो-ह मुझमें निचला के लिए... और दूसरे कि देवताओं की

मायद ऐसी ही इच्छा है अगर सचमुच ही देवता होते भी है तो !”

“मेरे खयाल से तुम्हें पछठाना नहीं पड़ेगा कि तुमने मियता की ! तुम्हें मैं अतुलित सुवर्ण दूँगा— यह जानकारी मेरे लिए जरूरी है क्योंकि प्राचीन फराऊन लोग इसी भाँति स्थान-स्थान से बातों की जानकारी रक्षा करते थे ।” उसने कहा । फिर अब हम बिसृष्टने लगे तो उसने अपनी मर्मादा की परवाह न करते हुए मेरे पास छुए और मेरे कंधों को अपने बँहरे से छुआ और कहा : “तुम्हारे जाने से सिन्धू है ! मेरा मन उदास है... तुम अकेले हो, तो मैं भी तो अकेला हूँ ! मेरे हृदय के रहस्य को भला कौन जानता है ?”

मायद वह उस समय राजकुमारी बैकेटमौन की अद्भुत और मोहिनी मुस्कान को याद कर रहा था ।

उसने मुझे अतुलनीय सुवर्ण दिया—इतना अधिक कि मैं सोच ही नहीं सकता था कि वह मुझे देगा और समुद्र तट तक मेरे साथ सैनिक भी भेजे कि मार्ग में डाकू घेर घन न छूट लें । वहाँ आकर मैंने सारा घन व्यापारियों के पास अमा करके मिट्टी की तल्लियों पर उनकी मुहरें लगवा-ली । धन मुझे डाकूओं का कोई डर नहीं रहा और मैं स्मर्ना की ओर जहाज में बैठकर चल दिया ।

६

जिस समय मैंने अपनी गाजाएँ की थी दुनिया चासीस-चासीस साजों युद्ध का नाम ही भूल गई थी । व्यापारी निर्विघ्न रूप से व्यापार करते और फराओ के सैनिक जहाजों की रक्षा करते थे । सीमाएँ सब खुली हुई थी और सभी नगरों में सुवर्ण का स्वागत था । लोगों में आपस में सनातनी या धिन्धाम नहीं था और जब देश-देश के व्यापारी लोग आपस में मिलने तो एक-दूसरे का अभिवादन किया करते थे ।

सेवो में फसलें लदी लड़ी रहतीं और चरवाहे भालों के स्थान पर

बांसुरी बजाकर मवेशी चराने जाने थे। अंगूर की बेलें फूल रही होतीं और पेड़ फलों के भार से झुके-झुके हो जाने थे। मंदिरों में पुजारी लोग तैल से चिकने और छाये-पिये मोटे-साजे पड़े रहने और अगणित बतियों का घुआ मंदिरों में सदा छाया रहता था। देवता भी मोटे हो रहे थे और उनकी कृपा से घनिक और अधिक घन बटोरने और गरीब और गरीब हो जाते थे। शायद उन दिनों मूर्त भी और उज्ज्वल रूप से नमस्कृत था और हवाएँ हल्के-हल्के चलती थीं। आजकल के घुरे उमाने से वह दिन सचमुच कितने अच्छे थे यह मैं कैसे कहूँ।

जब मैं स्मर्ता लोटकर अपने घर पहुँचा तो बप्ताह ने मुझी से बिल्लाते हुए मेरा स्वागत किया और नेत्रों में आँसू भरकर मेरे पैरों पर गिर पड़ा। वह कहने लगा :

“घन्य है यह दिन जो मेरे स्वामी घर लौट आये हैं। मैंने तो समझा था कि कुछ में तुम मार डाले गए होगे। घेरी भया तुम मानने ही बच थे ..पर वह तो कहो कि हमारा देवता (वह छोटा-सा पत्थर) बड़ा शक्ति-शाली है जिसने तुम्हें बचा लिया। आज तुम्हें देखकर मेरा हृदय अत्यंत प्रमत्त है और प्रमत्तता मेरे नेत्रों से होकर आँसुओं के रूप में बह रही है... हालाँकि तुम्हारे न आने से मैंने अपने-आपको ही तुम्हारा बारिद समझा था—और तुम्हारा मारा मोना स्मर्ता ने व्यापारी लोगों में मैं से लेना—फिर भी इस हाथ ने निकम्मी हुई दीपन के लिए मुझे तनिक भी मजबूत नहीं है क्योंकि तुम्हारे बिना मैं या मे बिछुड़े हुए मेमने की तरह हूँ और मुझे दिन में भी अँधेरा ही अँधेरा लगता है ..” वह बहुत देर तक बचक करता रहा। और जब वह रुका ही नहीं, बोमना ही कहा गया तो आँखें ऊँचकर मुझे उम्र खुश करना पड़ा। फिर मैंने कहा : “अब सीप घाना की नौवारी करो क्योंकि वह यात्रा बर्षों की होगी। हम बिनली और देवीजीम की ओर आयेगे।”

बप्ताह मुनकर फिर रोने-झाड़ने लगा। इसी बीच वह बाड़ी मुन्नाम हो रहा था और जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जाता था, उसने ऐसी-वैसी बहनें शुरू कर दी थीं जैसे ‘हमारा घर’, ‘हमारा देवता’ और ‘हमारा स्मर्ता’ इत्यादि। मैंने उससे कहा :

"मुझे विश्वास है कि किसी दिन तुम अपनी बदतमीजी के लिए उल्टे सटकाये जाओगे..." वह चुप हो गया और तैयारी करने लगा ।

और हम यात्रा पर चल दिये । क्योंकि कप्ताह ने कसम खाई थी कि वह जहाज पर कभी कदम नहीं रखेगा अतएव हमने कारवाँ के साथ सफर करने का निश्चय किया । मार्ग में कोई विशेष घटना नहीं घटी । लैबनॉन की सैबार की लकड़ी मैंने देखी जो मिस्र के महलों में लगाई जाती थी और जिससे अम्मन की नाव बनाई जाती थी । रेगिस्तान में सूखी हवाई चली और बदन फट गए; यहाँ तक कि बहुत सैल शरीर पर चलना पड़ा । सरायों में खूब खाने-पीने को मिला और कहीं भी डाकू इत्यादि से धोखा नहीं पाया । यहाँ-वहाँ सरायों में मैंने रोगियों को भी औषधियाँ दी । सिबार के जंगलों में पेड़ इतने ऊँचे थे कि यदि मैं उनकी ऊँचाई के बारे में किसी मिस्री से कहता तो कभी विश्वास नहीं करता । मार्ग में इन जंगलों में बड़े स्वच्छ थे । यहाँ के जंगलों में गजब की सुगन्ध थी । मैंने समझा कि यहाँ रहने वाले कभी दुःखी नहीं हो सकते थे परन्तु जब दासों को लकड़ी काटकर समुद्र तट तक उसे दौते देखा तो दिल काँप उठा । उनका दुःख अपार था । उनके हाथ और पैर सब पेड़ की छालों और उनके औजारों से कटे हुए थे और पीछों पर जानुक से बने पावों को भस्मियों ने सड़ा दिया था ।

आखिर हम कादेश नगर में पहुँच गए । यहाँ एक बड़ा किला था पर उसमें कोई पहरा नहीं था । मिस्री हाकिम और सिपाही सब नगर में अपनी छुट्टियों के साथ रहते थे । उन्हें भाषद याद भी नहीं रहा था कि वे सैनिक थे । मुझे यहाँ कप्ताह की पीठ में पड़े छालों के पुर शाने तक ठहरना पड़ा । इस बीच मैंने यहाँ बहुतों का इलाज भी किया । यहाँ के मिस्र वैद्य बिल्कुल नातायक थे—इतने अयोग्य कि यदि कभी उनका ना जीवन-गृह की पुस्तक में लिखा गया था तो उसे अब अवश्य मिटा देना चाहिए था ।

यही मैंने अपने नाम और उपाधियों की एक मुहर एक भीमती पर्यटन पर खुदवाकर बनवाई । यहाँ मिस्र की भाँति मुहरें अँगूठियों में नहीं पहनते हैं बल्कि लम्बी गोलाकार बनवाकर गले में पहन लेते हैं कि जब उसे मिस्र की लकड़ी रखकर घेर दिया जाय तो उसका अक्ष उत्तर आये ।

यहाँ से फिर हम चल दिये और सीमा पार करके नाहरानी पहुँचे। अब हम यात्री-कर देवर मितन्नी लोगो की भूमि में आ गए थे। यहाँ लोगो ने हमारा स्वागत किया। उन्होंने कहा, "तुम भिभी हो इसलिये हम तुम्हारा स्वागत करने हैं। तुम्हे देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है परन्तु हम उदास भी है क्योंकि तुम्हारे क़राक़न ने हमारी रक्षा के लिए सैन्य और हथियार और मोना नहीं भेजा है। अफ़वाह यह है कि कोई देवता हमारे राजा के पास इब्रान में भेजा गया है हालांकि यहाँ हमारी रक्षा करने से ही नितबेह की देवी इनर मौजूद है।"

उन्होंने मुझे और बप्ताह को घरो पर बुलाकर भोजन कराया, मदिरा पिनाई इत्यादि। बप्ताह ने मुझसे कहा :

"मालिक यहीं हम रहें तो बहुत ही अच्छा हो क्योंकि यहाँ के लोग भोले हैं और हम उन्हें खुब बेवकूफ़ बनाकर उनमें धन ऐंठ सकेंगे।"

मितन्नी का राजा अपने दरबारियों सहित उन दिनों गर्मियों की बरह में पहाड़ों पर चला गया था और मैंने इनकी परेशानी भुगतनी मज़ूर नहीं की कि वहाँ जाकर उनसे मिलना। परन्तु हौरेमदेव के बड़े अनुगार मैं वहाँ के बड़े लोगों से मित्रा और गरीबों से भी मित्रा। सभी वेपन थे। मितन्नी बिभी उमाने में इस्तिशानी शौच था परन्तु आजकल हवा में उड़ना-आहूना प्रतीत होता था। उसके एक ओर पूर्व में बेबीलोन था तो उत्तर में पक्की ज़ानियाँ थी, और पश्चिम में टिनैनी लोग थे जिनका देश 'हानी' कहलाता था। मैंने टिनैनियों के बारे में जिनका सुना था कि वह भयानक भोले थे उनकी ही मेरी इच्छा बड़ी जान को प्रबल हो उठी परन्तु पहले मैं बेबीलोन जाना तय किया।

मितन्नी के बार्गिन्डे बड़ के छोटे थे, उनकी स्थिति मृदुर थी और बच्चे जिनसे वे जैस मरत थे। हो सकता था कि वह कभी ज़बरदस्त थे और उन्होंने उत्तर-दक्षिण पूर्व और पश्चिम में राज्य किया था, परन्तु वह तो एक ऐसी बात है जिसे सभी राज्य करने वाले से कहा करने है। मुझे तो इनका शक़ था कि ज़बने क़राक़न विश्व में राज्य करने के लक्ष्य से यह लोग उनके आर्थन से और उन्हें धर भ्रष्ट थे। दो बीड़ियों से यह लोग अपनी लाइवों को बड़ी मज़ाद की सेवा में खेद रहे थे। मुझे इन लोगों से बच

करने के बाद पता लगा कि उनके देश को सीरिया और मिस्र की हाल की तरह बेबीलोन की महान् सन्धि और जयती जातियों के विरुद्ध काम में लाया जाता था, और केवल इसी कारण से क्रूरान्न उनके राजा को बनाये रखता था और उन्हें हथियार, सिपाही और सुवर्ण दिया करता था। परन्तु वह लोग इस बात को समझते नहीं थे, और अपने देश और अपनी शक्ति का बेहद धर्मन्ध करते थे।

और मैंने देखा कि वह ऐसा देश था जिसका अधिक्य अंधकारमय था। लोग इस तरफ से बेचिफ़ थे और खाने-पीने, वस्त्रों और नुकीले जूते और ऊँची टोपियों में मस्त रहते थे। वह लोग जवाहिराती के भी कुशल पारंगी थे। वहाँ के लोगों के हाथ-पाँव मिश्रियों की भाँति पतले थे और स्त्रियों की लम्बा तो इतनी अधिक गोरी, नर्म और पारदर्शी होती थी कि अन्दर से नीली नर्से भी दिखाई देती थी। उनके आचरण मन्त्र और बोली मीठी होती और छुटपने से ही वहाँ की स्त्रियाँ और वहाँ के पुरुषों को मन्दाकत के साथ चमना सिखाया जाता था। वहाँ की रंगशास्त्राओं में भी कभी झगड़े नहीं होते थे। मुझे उनके लिए डर लगा करता क्योंकि जो मुझ मैंने देखा था और यदि जो कुछ 'हाती' राज्य की बाबत मैंने सुना था वह सब सच था तब तो मितलमी दूबा ही समझना चाहिए था।

उनके बीच धातुर और योग्य होते थे। और उनका इलाज ऊँची श्रेणी का था। परन्तु वह सिर सोलने की विधि से अवभिन्न थे।

वह लोग मेरे पास इलाज कराने आये। जिस प्रकार उन्हें परदेशी वस्त्र पहनने और परदेशी मदिरा पीने का शौक था उसी प्रकार परदेशी इलाज के भी वह शौकीन थे। उनकी स्त्रियाँ मेरे पास मुस्कराती हुई आई और उन्होंने मुझसे अपने दुःख कहे और कहा कि उनके पुरुष आलसी, धके हुए और पौरुष से खाली थे। उनकी बातों का अर्थ मैं समझ गया पर मैंने उन्हें आने न बढ़ने देने में होशियायी की क्योंकि मैं परदेश में उनके कायदे-कानूनों को नहीं तोड़ना चाहता था। मैंने उन्हें स्मर्ता में सीखी हुई औप-धियाँ दी कि वह उन्हें मदिरा में धोसकर अपने पुरुषों को विलाया करें। स्मर्ता उन दिनों इस प्रकार की औपधियों के लिए प्रसिद्ध था और वहाँ से चलते समय उनसे उबल औपधियाँ बनाना मैं सीख आया था। मैं कह नहीं

सबता कि उन स्थियों ने वह औपधियाँ अपने पत्थियों को दीं प्रपञ्च करने मित्रों को, बैसे मुझे मित्रों की ही सम्मानना अधिक मगनी है, पर यह अवश्य है कि उनकी हविष्य पूरी हो गई होगी। उनमें से बोझो ही स्थियों के वस्त्रों से जिगमे मुझे उन पर छाई हुई आपत्ति और भी बड़ी प्रतीत होने लगी थी।

वास्तविकता यह थी कि इन लोगों को अपने राज्य की सीमा के बारे में कोई ज्ञान नहीं था। हितैत्ती लोग वन्यगो को उगाड़कर से जाने और जहाँ उनके जी में भरता बड़ी लगा देने थे। यदि कभी मितन्नी आपत्ति करने तो वह हँसकर उनसे कहते : 'साहम हो तो लगा दो मनुष्यही दगहें।' मितन्नी मुनकर चुप लगा जाने क्योंकि जो कुछ उन्होंने हितैत्तियों के बारे में सुन रखा था उसे ध्यान में रखते हुए उनसे विरोध पैदा करना वह समझदारों नहीं समझते थे। हितैत्तियों की क्रूरता की यहाँ तक कहानियाँ कही जाती थी कि वह मनुष्य को पीटकर उसकी चीखें मुनकर और धावों से बहने रक्त को देखकर आनन्द मनाने थे। सीमाप्राप्त पर यदि कोई मितन्नी का रहनेवाला उन्हें मवेशी खराने से रोकता तो वह उसे पकड़कर उसके हाथ काट डालते थे और खड़ी फसलें उगाड़ देते थे। या फिर पैर काटकर आदमी से कहते कि वह दौड़कर जाय और अपने राजा से उनकी शिषापन करे। सिर की छाल फाड़कर आँखों पर उल्टी उतार देते और फिर कहते : 'अब सही स्थानों पर परधर गाड़ दे।' उनका अत्याचार अमानुषिक था। लोग कहते थे कि वह टीढ़ी दस से भी अधिक भयानक थे। टीढ़ियों के चले जाने पर पृथ्वी फिर से अनाज उगाती है परन्तु जहाँ होकर एक बार हितैत्तियों का रथ निकल जाता वहाँ निश्चय ही घास भी पैदा नहीं होती थी।

यहाँ की सभी बातें मैं जान चुका था और अब मैंने यहाँ अधिक रक्ताध्यर्थ समझा। केवल एक बात रह गई थी और वह यह कि मितन्नी के घेरे भेरी इस बात को, मैं सिर खोल सकता हूँ, नहीं मानते थे। घेरे ज्ञान पर यह एक आघात था। और सभी एक दिन घेरे पास एक छनी-मावी व्यक्ति आकर बोला कि उसके सिर में निरंतर समुद्र के गर्जन का रोर-सा हुआ करता है जिससे न उसे दिन में चैन है न रात को आराम। वह उससे बेहोश तक हो जाता है और इस वद्वद उसके होता है कि उससे तो वह मर जाना बेह-

तर समझता है। मितन्नी बैद्यों ने उसे लाइलाज बहकर छोड़ दिया था।

वहाँ के बैद्यों की मौजूदगी में मैंने तीसरे दिन उसका सिर सोला और प्लाहौर ने जिस प्रकार उस हड्डी का भेजा साफ किया था उसी भाँति मैंने उसके भेजे में से चिड़िया के अंडे के बराबर मैल, जो शायद मैदान की रूह का अंडा था, अत्यंत सावधानी से साफ कर दिया। फिर चाँदी की मोटी चट्टर सोसले में लगाकर सिर सी दिया, मरौज पूरे समय तक होश में रहा और जब मैंने उसका पाव सी दिया तो उठकर खड़ा हो गया था और उसने मुझे धन्यवाद देते हुए कहा : “अब मेरी तबसीफ दूर हो गई है, अब वह शोर मुझे सुनाई नहीं देता... जो पीडा मोड़ी-महुत हुई वह उस निरंतर होने वाली पीडा के सामने तो नहीं के बराबर थी।”

अब मितन्नी के बैद्यों ने मेरी बातों पर हँसना बंद कर दिया था। मेरा नाम दूर-दूर तक फैल गया और लोग मेरे हुनर की प्रशंसा करने लगे। तीसरे दिन वह रोगी नींद में उठकर चल दिया और ऊपर से गिरकर मर गया। परन्तु इसके लिए किसी ने मुझे दोषी नहीं ठहराया।

एक नाव किराये पर करके मैं और कण्ठाह नदी के बहाव के साथ बेबीलोन के लिए चल दिये।

बेबीलोन साम्राज्य से हम चैलडिया नाम के नगर में पहुँचे जिसे कैसाह-टिस-यूमि भी कहते थे क्योंकि वहाँ के रहने वाले ‘साईटिस’ कहलाते थे। परन्तु मैं अपने वर्णन में इसे बेबीलोन ही लिखूँगा क्योंकि यही नाम प्रसिद्ध है। यह जगह अत्यंत उपजाऊ है और दूर-दूर तक यहाँ मैदान ही मैदान फैले हुए हैं जिनमें स्थान-स्थान पर सिचाई की नहरें खुदी हुई हैं। मिट्टी औरतें भुषकर अनाज पीसती हैं और यहाँ वह दो पत्थरों के बीच बैठकर उसे पीसती हैं जो प्रायः अधिक कठिन कार्य है।

पेड़ यहाँ इतने कम हैं कि उनका काटना जुर्म माना जाता है। जो कोई नया पेड़ लगाता है वह देवताओं की कृपा का भागी हो जाता है। यहाँ लोग तेल से चुपड़े-चिबने और खाये-पिये और मोटे-स्ताबे हैं और मोटे लोगों की भाँति भुजमिजाज हैं जो अधिकतर हँसा करते हैं। यह लोग

गहरा खाना खाते हैं और इन्हीं के यहाँ मैंने एक विचित्र चिड़िया देखी जिसका नाम उन्होंने 'मुर्गी' बतलाया। यह उड़ नहीं सकती थी और मनुष्यों के बीच ही रहती थी और नित्य मगर के बड़े के बराबर एक अंश देती थी जिसे वह लोग बड़े चाव के साथ खाते थे। हालाँकि उन लोगों में यह बड़िया पदार्थ माना जाता था फिर भी मैंने उसे खाने का साहस नहीं किया।

परन्तु इस नगर की विनाशता और धन देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। इसका परबोट पर्वत के समान ऊँचा था और देवता के लिए बनाई हुई मीनार आकाश के मध्य मानो घुस गई थी। मकान यहाँ के पाँच-पाँच मंजिल ऊँचे थे और लोग उनमें एक-दूसरे के ऊपर रहते थे—यहाँ की सी छतों पर बाँध में नहीं थी।

इसका देवता मारूँक था। इसका मंदिर का तोरण अम्मन के द्वार से ऊँचा था और सूर्य के प्रकाश में उस पर सगे परपर चमकमा उठते थे। इस द्वार से मारूँक की मीनार तक एक सड़क जाती थी जो आगे चलकर बंद हो जाती थी। यह इतनी चौड़ी और साफ थी कि उस पर होकर एक साथ कई रथ निकल जा सकते थे। इस बुजुर्ग के ऊपर ग्योनिगी लोग रहते थे जो अष्टौ-बुरे दिन तथा मनुष्य के भाग्य को उसका अग्रगण्य बनाकर बतला देते थे।

मेरे पास इतना सुवर्ण था कि मंदिर के लड़ाने में बाह्य जब गिनकर ला सकता था। मैंने वहीं द्वार के पास एक कई मंजिल ऊँची गलियारा में घर बनाया। यहाँ ऊपरी मंजिलों पर छतों पर बाग लगाये गए थे वहाँ पेड़ और फल-पुष्प लिये रहते थे। मेहरी यहाँ बहुत मिनती थी। इस मर्राय में बड़े-बड़े आदमी ही ठहरा करते थे—जैसे राजपूत जबकि ऊँच व्यापारी नहीं। यहाँ कमरे में मोटे बर्तन बिछे थे और जगनी जानवरों की गर्म लातों से सीया मजबूत हुई थी, दीवारों पर रंग-बरंगे पत्थर काटकर भिन्न बने हुए थे जो अक्षिपुत्र कामोत्प्रेक्षक थे। इसका नाम इसका था अन्न-धन था और मगर में सभी लोग वस्तुओं के साथ यह भी देवता की ही पत्तरीय थी।

यहाँ मैंने मर्राय मगर के लोग देखे और जाना आयाँ नृत्त। यह लोग

बाजारों में ऊँचे व्यापार किया करते थे। लोग कहते थे कि बेबीलोन ससार के मध्य में था और यहाँ का व्यापार बहुत ऊँचे दर्जे का था। व्यापार यहाँ सबसे महत्त्व का विषय था। नगर कोट तथा निते यह लोग आत्मपरार्थ बनाते थे सड़ने के लिए नहीं। यहाँ व्यापारिक क्षेत्र इतना बड़ा था कि देवता भी आपस में व्यापार करते थे अर्थात् एक मंदिर दूसरे मंदिर से व्यापार करता था। फिर भी उन्हें अपने सजे हुए सैनिकों पर गर्व था। यह सोने-चाँदी से भरे कबच और गिरस्त्राण पहनते थे।

मेरा पत्र मुझसे पहले ही यहाँ आ पहुँचा था। एक दिन मेरे पास हुस्तर के आनन्द भवन में एक आदमी आया और उसने कहा कि बेबीलोन के नबूनाद ने मुझे बुलाया था। कप्ताह मुनते ही आदित के मुताबिक घबराया और उसने कहा : "मत जाओ...चलो यहाँ से भाग चलें.. राजाओं से मिलकर कोई लाभ नहीं होगा.. उन्हें मारे न जाएँ," मैंने कहा : "मूर्ख ! हमारे पास हमारा देवता जो है !"

मुनकर उसने हाथ मले और कहा, "देवता छोटा-सा है और काम बड़ा है। और फिर हर बेजा काम में उसकी ज़िन्दागी की परवाह करना भी बेजा है। ..पर खैर जब तुम जाओगे तो मैं भी साथ चलूँगा ताकि मरें तो इकट्ठे मरें ! परन्तु एक बात करो। आज मत जाओ क्योंकि आज हमारे का आखिरी दिन है और सारा बाजार और लोगों के घर तक बन्द है। और फिर जब जाना ही है तो क्यों न इश्बत के साथ जाओ...उससे कहो कि बल वह ले जाने के लिए कुर्सी लेता आवे।"

मैंने देखा कि वह बात पले की कह रहा था। मैंने बादशाह के आदमी से कहा, "तुम मुझे मामूली परदेसी समझ सकते हो यह तुम्हारी मर्जी है पर मैं बादशाह के पास कल जाऊँगा आज नहीं, क्योंकि आज खाली दिन है और फिर बस भी तब जाऊँगा जब तुम्हारा बादशाह मेरे लिए कुर्सी भेजेगा क्योंकि मोहर से बिगड़े पैर लिये मैं बादशाह के सामने नहीं जाना चाहता।"

वह बोला, "मिथी कोड़े ! यह बोल तुम्हें भाते से छिदाकर कही मरवा न दें।"

पर साफ सगता था कि वह मेरे शब्दों से अत्यन्त प्रभावित हुआ था क्योंकि दूसरे दिन जब वह नीटा तो कुर्सी लेकर आया, हास्ताकि वह कुर्सी

मामूली थी जैसी कि साधारण व्यापारियों को बुनाने के लिए भेजी जाती थी।

कप्ताह ने उसे देखकर मातियाँ बकी और वह चिल्लाया, “संत और तमाम संतान तुम्हारा नाश करें ! माहूँक तुमपर बिच्छू छोड़े ! यहाँ से भाग जाओ ! क्या तुम यह समझने हो कि मेरा मातिका इस टूटी कुर्मी पर जाएगा ?”

दास फटे नेत्रों से देखने लगे। उस आदमी ने कप्ताह को अपना डंडा दिखाया और दशक एकत्रित होकर हँसकर बहने लगे, “अपने उस मातिका को तो दिखा जिसके लिए यह कुर्मी ठीक नहीं है !”

कप्ताह ने तुरन्त उस सराय की बड़ी कुर्सी किराये पर मँगवाई जो काफी रकम की थी। यह एक बहुत ही ज्ञानदार और बड़ी कुर्सी थी जिसे बालीस दास मिलकर उठाते थे और जिसमें केवल शक्तिशाली राज्यों के राजदूत इत्यादि चढ़ा करते थे या फिर परदेसी देवताओं की सवारियाँ निकाली जाती थी। और जब मैं मुनहरी व स्पहली खरी से मड़ी हुई कामदार पोशाक पहनकर नीचे उतरा तो सोचो की हँसी चम गई। मेरे गले और वक्ष पर सुवर्ण में खचित जवाहिरात सूर्य के प्रकाश में चमचमा रहे थे। मेरे गले में मोटी-मोटी सोने की जड़ीरें पड़ी हुई थीं। सराय के दास मेरे पीछे-पीछे सिंघार और आवनुस से बने हुए मेरे दबाओं के बस्तों को लेकर चले। लोगों ने मेरे सामने सिर झुका दिए। वह कहने लगे, “यह व्यक्ति तो सचमुच ही देवताओं जैसा योग्य लगता है... चलो हम लोग भी इसके पीछे-पीछे राजमहल को चलें।”

महल के दीर्घ द्वार पर सैनिकों ने भीड़ को भातों से रोका। हातों की दीवार-सी खिच गई जिन पर सोना और चांदी चमकने लगा। जब मुझे भीतरी प्रागण की ओर ले जाया गया तो मैंने देखा भागें के दोनों ओर अगणित उड़ते हुए प्रस्तर के दीर्घ और विशालकाय सिंह रखे थे। यहीं मुझे एक बूढ़ा मिला जिसके गाल लटके हुए और नेत्रों में क्रोध था। उसकी टोड़ी मुड़ी हुई थी और वह वहाँ के पड़े-निसे लोगों की भक्ति बानों में सुवर्ण के ऋंडल पहने हुए था। वह मुझे देखकर बोला :

“तुम्हारी हरकतों से मेरा जिवर जलने लगा है। तुम आये क्या हो

अपने साथ नाहक भीड़ लगाकर साथे हो और तुमने व्यर्थ कर हुआ मचावा दिया है। दुनिया के चारों कोनों के मालिक ने तुमसे पूछा था कि यह आदमी कैसा है जो अपनी इच्छा से आता है और वादशाह की मर्जी से नहीं आता और जो जब आता है तो साथ हंगामा भी मचाता है।”

मैंने उसको उत्तर दिया, ‘तुम्हारी बखबक मुझे मस्जिदों की भिन्न-भिन्न-हट-सी लगती है फिर भी मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम हो कौन जो तुमसे यह सब पूछने हो।’

‘मैं दुनिया के चारों कोनों के मालिक का सबसे बड़ा बैर हूँ।’ उसने कहा, ‘और तुम कौन ठग हो जो यहाँ हमारे मालिक को झूठने आये हो? यदि वह तुम्हें खुश होकर सोना या चाँदी दे तो समझ लो कि उससे मैं तुम्हें आघात देना होगा।’

‘तब तो तुम मेरे विचार से मेरे नौकर से बातें करो जिसका काम बीच के बदमाशों को हटाना है। परन्तु फिर भी तुम्हारा सुझावा देखकर मैं तुम्हें दोस्त बना सकता हूँ हालाँकि तुम जानते कुछ भी नहीं हो। मैं अपने हाथों के यह सुवर्ण के कड़े तुम्हें दे दूँगा केवल यह दिखाने के लिए कि सोना मेरे लिए पैसे के नीचे की धूल से बढकर नहीं है...मैं तो केवल ज्ञान का मूला हूँ।’

जब मैंने उसे बाँह से उतारकर सुवर्ण-बलप दे दिया तो वह हैरत में रह गया और इतना चबरा गया कि उसने मेरे साथ बप्ताह को भी अन्दर चला जाने दिया।

सभाद बनें शूरियाश एक हवादार विशाल कक्ष में नरम गहो पर गाल की हाथ से दबाये बैठा था। वह एक विगड़ा हुआ उद्बुद्ध लड़का था। कमरे की दीवारों पर रम-बिरंगे फरशर समचमा रहे थे। उसके पैरों के पास एक सिंह बैठा था जो हमें देखकर गुर्राया। बूढ़ उसे देखकर भूमि पर उल्टा पेट गया और होठों से पृथ्वी पिसने लगा। कप्तान ने भी उसकी नकल की परन्तु जब उसने सिंह की गुर्राहट सुनी तो झपटकर उठ बैठा जिसे देखकर वादशाह हँसते-हँसते पीछे झुक गया। वह इतना हँसा कि उसकी आँखों में पानी आ गया। फिर अपने दर्द की याद कर वह कराहने लगा उसका एक गाल इतना सूख गया था कि उसकी बहवाली आँख भी आधी ही खुली थी।

यह उस घंटा को देखकर गुराया तो वह झट से बोला, “यही वह मित्री है जो युताये से कस नहीं आया था। केवल एक शब्द श्रीमान् बह दं और सैनिक इसका हृदय फाड़ देंगे।” परन्तु बादशाह ने उसके साथ देकर कहा, “यह समय व्यर्थ बातें करने का नहीं है... पहले मेरा इलाज करो। मेरा दर्द इतना ज्यादा है कि अगर शीघ्र टीक नहीं हुआ तो शायद मैं मर ही जाऊंगा। कई रात तो मैं सो भी नहीं सका हूँ।”

बुद्ध पृथ्वी पर सिर पटककर बहने लगा, “हे मसार के चारों कोनों के मालिक! जो कुछ भी कर सकते थे वह सब हमने करके देल दिया है हमने मन्दिर में जबड़े और दाँत सब चढ़ा दिये हैं कि जो भूत श्रीमान के जबड़े में घुस गया है वह निजल जाए। इससे ज्यादा हम कुछ क्या कर सकते हैं क्योंकि अपने पवित्र शरीर को आप हमें छूने तो देते नहीं हैं और मेरा विचार है कि यह गदा मित्री भी कोई लाभ नहीं पहुँचा सकेगा।”

तब मैंने कहा, “मैं मिस्री हूँ, सिंगूहे—वह जो कराऊन द्वारा ‘एवारी’ कहा गया था—वह जिसे बुद्ध के बीच सैनिकों ने ‘जगती गये का बेटा’ कहकर पुकारा था—श्रीमान को देखकर मर्ज जानने की आवश्यकता मुझे नहीं है क्योंकि आपका सूजा हुआ गाल साफ बता रहा है कि अन्दर डाढ़ बिगड़ गई है जिसे आपने समय के अन्दर, जैसा कि निश्चय ही आपके बँधों ने आप से कहा होगा, नहीं उपड़बाया है। ऐसे दुःख अधिकतर बालकों के हुआ करने हैं और संसार के चारों कोनों के सम्राट् को शोभा नहीं देने जिसके सामने स्वयं सिंह भी काँपा करते हैं जैसा कि मैं प्रत्यक्ष भी देख रहा हूँ। फिर भी आपकी पीड़ा तीव्र है और मैं इसे ठीक कर दूँगा।”

बादशाह ने वैसे ही बैठे-बैठे कहा :

“तुम सबमुच बड़े साहस से बोलते हो। अगर मैं ठीक होता तो तुम्हारी जुवान बटवाकर तुम्हारा जिगर चिरवा देता—पर इस समय मैं अपना इलाज कराना चाहता हूँ। मुझे शीघ्र अच्छा कर दो और मुझे भड़ा इनाम मिलेगा पर अगर तुम मुझे कष्ट दोगे तो मैं शीघ्र मरवा डालूँगा।”

“ऐसा ही हो।” मैंने कहा। फिर अपने ओझार बाहर निकालकर उन्हें पवित्र अग्नि में शुद्ध करने लगा और साथ-साथ मैं कहता भी गया, “मेरे एक छोटा-सा देवता है पर है वह अत्यन्त अग्निशाली। कल मुझे उसने

नहीं आने दिया तो मुझे जीवनदान दे दिया क्योंकि आपके मुँह का संतान आज ही पका है। मैं इसे बहुत ही आसानी से और बिना दर्द किये हुए फोड़ दूँगा। वैसे देवतागण बादशाहों को भी पीड़ा से मुक्त नहीं करते परन्तु यह मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे काम के बाद आपको बेहद आराम मिलेगा।”

और मैंने मदिरा गर्म करने की आज्ञा उस बैद्य को दी। वह बड़बड़ाया और उसने अपना सिर पृथ्वी पर दे मारा पर मैंने उसकी कोई परवाह नहीं की।

बादशाह कराहता हुआ बैठा था। वह सुन्दर लड़का था और मुझे वह भा गया था।

उस मदिरा में मैंने सुन्न करने की औषधि मिलाकर उसे पिलाया जिसे पीकर उसके नेत्र चमकने लगे और वह सोता :

“मेरा दर्द जाता रहा है... अब मुझे तुम्हारे चाकू-चिमटी की कोई चिन्ता नहीं है।”

परन्तु मेरा आत्मिक बल अधिक था। उसका सिर अपनी काँख में मजबूती से दबाकर मैंने उसका मुँह खुलवाकर उस फूले मसूदे में अपना गर्म चाकू घुसाकर मवाद निकाल दिया। वह चाकू के दर्द से चिल्लाया जिसे सुनकर वह सिंह उठ बैठा और उसने इहाइ लगाई। उसके नेत्रों से अंगारे धरसने लगे और उसने पूँछ उठाकर छड़ी कर ली। परन्तु सीमा ही वह धुनने लग गया। अब उसका दर्द जाता रहा था। मैंने उसके गाल ऊपर से तनिक दबाकर उसे और आराम दिया। अब वह दर्द जाता रहा था और धूक-धूककर उसने सारा मवाद और रक्त निकाल दिया था। वह बोला :

“मिस्री सिन्धूदे ! गो तुमने मुझे छू दिया फिर भी तुम घण्टे हो !”

बूढ़ भीतर ही भीतर जल गया और उसने कहा, “ऐसा तो मैं भी कर सकता था यदि श्रीमान मुझे अपना सरीर छूने की आज्ञा दे देते और दाँतो वाला बैद्य तो इससे भी अधिक धातुर्य से इस काम को कर लेता।”

और अब मैंने कहा कि उसका कथन सत्य था तब तो वह प्रादुर्भाव-चकित रह गया। “परन्तु”, फिर मैंने कहा, “दल लोगो का आत्मिक बल मेरे समान प्रबल नहीं था जो कि वैद्य में होना चाहिए क्योंकि बादशाह की

पीड़ा भी विधिवत् ही दूर की जा सकती है अन्यथा नहीं। यह लोग अपने प्राणों के भय से डरते थे और इलाज ठीक नहीं कर रहे थे। अब मैंने इलाज कर दिया है और श्रीमान् के अनुचरों का स्वागत है कि वह मेरा ज़िगर फाड़ डालें।”

बादशाह ने फिर थूककर गाल दबाया जहाँ अब दर्द बिल्कुल नहीं था और कहा :

“आज तक मैंने तुम्हारे समान निर्भीकतापूर्वक बोलने वाला व्यक्ति नहीं देखा मिन्यूहे। परन्तु तुमने मेरी पीड़ा हरी है अतएव मैं तुम्हारी उद्दण्डता को क्षमा करता हूँ—और साथ ही साथ तुम्हारे अनुचर के प्राण भी छोड़ देता हूँ जबकि उसने मुझे तुम्हारी कान्त में सिर जँगाये रोने देखा निमा है। और फिर इसलिए भी उसे माफ़ करता हूँ कि उसने अपनी मूर्खता से मुझे हँसाकर सुन किया था।” फिर बप्ताह से कहा, “बैसा फिर करो।”

पर उगने उत्तर दिया, “यह मेरी तोहीन है।”

बनैबुरियास ने मुम्कराचर उगगर मिह को सलवार दिया। और जब मिह उमड़ी और चला तो वह भागा और बिबाह घर चढ़ गया। मिह भी दीवान के सहारे पिछले दोनों पीरो पर लडा हो गया तो वह और ऊपर उठ गया और अछर-भा मटक गया। बादशाह का हँसी के सारे बुरा हान था।

द्विः उसने मुझे साथ बिदाकर मदिरा पिवाई और खाना पिचाया। कई चाँदी के धानों में उनम भोजन परोसा गया जिन्हें मैंने चाव से खाया और उनम मदिरा पी। मैंने कहा :

“आपके दर्द का अगनी कारण यह बिगरी हुई दाढ़ है और यदि यह सीककर न निहायी गई तो आपका दर्द भीट मचता है। अब यह भीड़ का मूत्रन बैठ आय तो उसे उखाड़ा मैंना आवश्यक है।”

उसका बेहता मूत्रकर ब्याह पत्र गया और वह बोला : “दे परदेनी। तुम पादनों की भाँति बहुत अजिब बात करने हो।” द्विः कुछ सोचकर कहा, “हो मचता है कि तुम ठीक कहते हो क्योंकि हर जाँ में यह दर्द बन जाता है अब मेरे पीर टूटे हो जाते हैं। उस समय दर्द इनना बढ़ जाता है कि मैं करना बेहतर समझने मचता हूँ। यदि वह बने उखाड़ा हो अगनी

है तो तुम इसे उखाड़ोगे क्योंकि उस दाँत वाले बैद्य को तो पास भी नहीं आने दूँगा..."

मैंने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया : "आपका दाँतोवाला बैद्य ही उसे उखाड़ेगा क्योंकि इस काम में उससे चतुर और कोई नहीं है—वह मुझसे भी ज्यादा होशियार है। बैद्य मैं पास सड़ा रहेगा और आपके हाथ पकड़-कर आपकी हिम्मत बढ़ाऊँगा। मैं अपनी नाना देशों से प्राप्त विद्याओं से आपका ध्यान बँटा दूँगा और इस बीच जो दो हफ्ते का समय ठीक रहेगा जिसमें आपके मूँह की भूजन भी बँठ जाएगी, आपको कुत्सा करने के लिए एक अति उत्तम औषधि दूँगा जो बैसे तो बुरे स्वाद की होगी और मूँह में थोड़ी-थोड़ी सनेगी भी, परन्तु इस भूजन को शीघ्र मिटा देगी और बाद में दाँत उखाड़ते समय भी सहायक सिद्ध होगी।"

वह नाराज हो गया, "और अगर मैं यह सब न करूँ तो?"

'आप मुझे बचन दें कि यह सब मेरे बड़े अनुसार होगा और यह मैं जानता हूँ कि ससार के चारों कोनों का शासक बचन देकर कभी नहीं फिर सकता। और यदि आपने मेरा बहा कर दिया तो मैं आपका दिल अपने हुनर से खून कर दूँगा—पानी को खून बना दूँगा—और फिर आपको उसका कारण भी सिखा दूँगा कि आप अपना रियाया को बमत्कार दिखा-कर प्रभावित कर सकें। परन्तु आपको बचन देना होगा कि आप उसे रहस्य ही बनाये रखेंगे क्योंकि यह अम्मन के मंदिर के प्रथम श्रेणी के पुजारी होने के नाते मैंने सीखी है और यदि आप बादशाह न होते तो मैं आपको यह कभी न बतला सकता था।"

और तभी कस्ताह पिल्वाया : "अरे इस दुष्ट जन्तु को शीघ्र हटाइये, मेरी कमर दुख रही है...अन्वधा मैं नीचे उतरकर इसका बध कर दूँगा।"

वर्नेबुरियास फिर जी भरकर हँसा और उसने मुझसे कहा : "इसे मुझे बेश दो...मैं तुम्हें बहुत धन दूँगा बड़ा मसखरा आदमी है यह!"

जब हम वहाँ से लौटे तो मैंने उस बूढ़ बैद्य से कहा "दो सप्ताह बाद फिर आपसि आनेवाली है। अभी से बलि देकर देवताओं को सन्तुष्ट कर लिया जाय तो उत्तम रहेगा...क्यों?"

वह धर्मवीर मनुष्य था। उसे मेरी सलाह बहुत ही भली लगी।

दांत वाले बंध को भी लेकर उसने मुझसे मिलने का वचन दिया और बाहरी प्राण से बैठे मेरी कुर्मी उठानेवाले चालीसों दामो को भोजन कराया और मदिरा पीने को दी। जब मैं वापस चला तो दाम गाना गा-गाकर मेरे यज्ञ को बसाने आ रहे थे। मेरा नाम उन्होंने पूरे नगर में फैला दिया। भीड़ें मेरे पीछे चली आ रही थी परन्तु कप्ताह अपने श्वेत गधे पर चढ़ा हुआ नाराज चला आ रहा था और मुझसे बोलना भी न था क्योंकि उसकी सौहीन हो गई थी।

दो सप्ताह बाद मर्दूक की युद्ध में मैं बादशाह के बंधों से मिला और हमने मिलकर एक भेड़ मंदिर में बलि चढ़ाई। पुजारियों ने उसका ज़िगर देखकर, क्योंकि उस देश में ज़िगर देखना एक विशेषता थी यह कहा: “बादशाह अत्यन्त क्रुद्ध होगा परन्तु कोई आश्मी मारा नहीं जायेगा परन्तु तुम्हें पजो और भालों से सावधान रहना चाहिए।”

फिर हमने नज़ूमियों से कहा कि वह अपनी स्वर्ग की पुस्तक देखकर बतलाएँ कि वह दिन शुभ था अथवा अशुभ। उन्होंने कहा कि दिन न तो शुभ था न अशुभ, बेहतर था कि हम कोई दूसरा दिन छांटते। फिर पुजारियों ने हमारी प्रार्थना पर जल में तैल डालकर भाग्य देखकर कहा कि उसमें कोई विशेषता उन्हें प्रतीत नहीं हुई—खासकर कोई बुरा शकुन उन्हें नहीं दीला। जब हम मंदिर से चले तो एक गिट्ट एक मनुष्य का सिर पजे में पकड़े हमारे ऊपर से उड़ गया जो उसने दीवाल से उल्टे लटके हुए किसी मुर्द के शरीर से गोच लिया था। पुजारियों ने इसे अच्छा लक्षण बताया हालांकि मुझे यह बहुत ही उल्टा प्रतीत हुआ।

इन सब भविष्यवाणियों से सचेत होकर हमने बादशाह के सैनिकों और उस सिंह को कटा के बाहर छोड़कर अन्दर से द्वार बन्द कर लिये क्योंकि अपने गुस्से में मुझसे था कि वह उन्हें हम पर छोड़ देता जैसा कि मुझे उन लोगों ने बताया, होता आया था।

सम्राट् वर्नेबुरियाण मंदिरा से चक होकर बहादुरी के साथ आया परन्तु जब उससे दांत वाले बंध के पास कुर्मी पर बैठने को कहा गया तो

भय से पीला पड़ते हुए बोला : “मुझे राज्य के बहुत ही आवश्यक कार्यों को करने अभी जाना है... मैं पीने में उन्हें भूल ही गया था,” और मुड़कर जाने लगा। उसके बैद्य पृथ्वी पर खोले पड़े थे और होठों से जमीन पोछ रहे थे। तभी मैंने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा : “धीमान् धैर्य रखें, सब काम पलक मात्र में हो जायेगा... तनिक भी पीड़ा नहीं होगी,” और मैंने बैद्यों को काम शुरू करने की आज्ञा दी। औजारों को पवित्र अग्नि में गुड़ किया और मैं उसके मुँह में सुन्न करनेवाली औषधियाँ मलने लगा। जीघ ही यह बोला : “बस अब मत मलो... मेरा मुँह और जिह्वा लकड़ी जैसी हो गई है। फिर हमने उसे कुसी पर बिठाकर उसका मुँह खोलकर अन्दर लकड़ी फँसा दी कि वह उसे बन्द न कर सके। मैंने उसके हाथ पकड़कर उसे धीरज बंधाया और उसके दाँतों वाले बैद्य ने बेबीलीन के सम्पूर्ण देवताओं को जमाकर चिमटी में इतनी सफाई की एक ही झटके में वह डाढ़ खींचकर निकाल ली कि मैं देखता ही रह गया। इतनी सफाई का काम मैंने इस सम्बन्ध में आज तक कभी नहीं देखा था। हालाँकि बादशाह उस समय पीड़ा से नै-नै-नै-नै करने लगा था और कूड़ हो उठा था और जिसे सुनकर बाहुर सिंह ने गरजकर द्वार से टपकर दी थी और द्वार को बारम्बार पत्थरों से खुरचने लगा था।

जब उस बादशाह का सिर छोड़ दिया गया और उसके मुँह से वह लकड़ी निकाल ली तो वह सच प्रत्यक्षकारी प्रतीत हुआ; क्योंकि पात्र में उसने खून दूककर चिल्लाते हुए बकना शुरू किया। उसके नेत्रों में अधुं भर आये थे और वह गरजकर सैनिकों को आज्ञा देने लगा कि हम सबको मार डाला जाय, उसने सिंह को भी पुकारा कि वह हम सबको पादकर ला जाय और फिर लकड़ी लेकर अपने बैद्य—उग बूढ़ को मारने लगा। दाँत वाला बैद्य समझा कि उसका अन्त समय आ गया था और पड़ा-पड़ा कर-कर काँप रहा था। तभी मैंने उससे (बादशाह से) कहा कि वह कुत्ता करे। उसने बैसा ही किया। खूब कुत्ता करने के बाद जब रक्त रक्त गया और पीड़ा भी नहीं रही तो वह तनिक शान्त हो गया। फिर मुझसे बोला : “अपने बचनानुसार मुझे अब वह बमाल दिखाओ।” हम एक और कमरे में गए क्योंकि उस मनहूस बस में अब वह एक सच भी रखना पसन्द नहीं

करता था। मैंने एक पात्र में जल ढालकर उसे बादशाह और उसके वैद्यों को चढ़ाया कि वह उसे परत लें कि वह जल ही था। फिर मैंने उसे धीरे-धीरे एक और पात्र में छोड़ा और सभी आश्चर्य से देखने लगे क्योंकि बटरक्त में परिणित हो गया और सभी ने चिल्लाकर आश्चर्य प्रगट किया।

बादशाह ने प्रसन्न होकर अपने वैद्यों को सब इनाम बाँटा। दाँत वाले वैद्य को तो उसने वास्तव में भातदार बना दिया। जब सब चले गए तो मैंने उसे रक्त बनाने की वह विधि भी बतला दी जो, जैसाकि सभी जानते हैं, कितनी सरल है, परन्तु सभी हुनर जड़ में आसान ही तो होते हैं। बादशाह ने मेरी बड़ी तारीफ़ की और फिर तुरन्त अपने दरबारियों को महल के बड़े तालाब के पास बुलवाकर सबके सामने उस जल को रक्त में बदलकर जब दिखा लिया सभी चैन पाया। और तब बड़े और छोटे, जवर्दस्त और सीधे सभी भय से उसके चरणों पर खोद गए।

बर्नेबुरियाश प्रसन्न हो उठा, वह दाँत का दर्द अब विलुप्त भूल गया था। मुझसे वह खुश होकर कहने लगा : "मिस्री सिन्यूहे ! तुमने मेरा इलाज कर दिया है, मेरी तबियत खुश की है और मुझे कमाल सिखाया है। मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। माँगो क्या चाहते हो और वही तुम्हें मिलेगा।"

मैंने उत्तर दिया : "सत्तार के चारों कोनों के सम्राट् बर्नेबुरियाश ! वैद्य होने के नाते मैंने आपके सिर को अपनी कोल के नीचे दबाया है और जब आप चिल्ला रहे थे तो आपके दोनों हाथ पकड़े हैं। मैं परदेसी हूँ और जब अपने देश लौटूँगा तो बेबीलोन के प्रबल सम्राट् की ऐसी मार लेकर नहीं जाना चाहूँगा। अतएव अपनी छोड़ी पर आप एक दाढ़ी बाधें और अपनी विशाल काहिनी को एक बार मेरे सामने होकर निकालें कि जब मैं आपकी उस प्रबल शक्ति को देख दूँ तो पृथ्वी पर ओंघा गिरकर आपके सामने सिर झुका दूँ...अपने-आपको घूल समझने लग जाऊँ...जब यही चाहता हूँ और मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

मेरी प्रार्थना से वह प्रसन्न हो उठा। वह कहने लगा : "तब मुच मेरे भामने आज तक ऐसे कोई नहीं बोला सिन्यूहे ! मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करता हूँ, हालाँकि पूरे दिन मुझे मुर्ख सिंहासन पर बैठकर सलामी लेनी पड़ेगी। मेरे नेत्र थक जायेंगे और मैं जम्हाइयाँ लेने लूँगा।

परन्तु तुम्हारी खातिर यह सब मैं करूँगा।”

ब्रह्मापद का दिन निश्चित हो गया और उसके सम्पूर्ण देश में फैली हुई उसकी सेनाओं को आने की सूचना भेज दी गई।

इस्तर के मंदिर के द्वार के सामने सेना का प्रदर्शन हुआ। सुवर्ण सिंहसन पर सम्राट् बैठा और उसके पैरों के पास सिंह बैठा। आसपास उसके उच्च पदाधिकारी पूरी तरह सजकर बैठे। सम्राट् उन सबके बीच ऐसा लग रहा था जैसे सोने-चाँदी के बादलों पर बैठा हो।

और तब धनुर्धरो, घाते बालो, सुसज्जित सैनिकों और रथों का समुद्र उमड़ पड़ा। रथों के भारी पहिये बावलों की भाँति घरजने लगे और सैनिकों की पदचाप से पृथ्वी कोलने लगी, मेरी आँखें ठहरने लगी और घुटने कोपने लगे।

मैंने ब्रह्मापद से कहा, “यह तो समुद्र की रेत की भाँति है जिनकी गणना भी कठिन है... फिर भी गिनो तो सही इन्हें।”

उसने विस्फारित नेत्रों से कहा, “वास्तविक, यह असंभव है क्योंकि इतनी तो सायब गिनती ही नहीं है।”

परन्तु मैंने फिर भी उन्हें गिनने का प्रयत्न किया। मैंने देखा कि सम्राट् के अंगरक्षक सोने-चाँदी से भरी डालें, कवच और शिरस्त्राण पहने हुए थे और तल्ल लगे चिकने चमक रहे थे, वह साये-पिये स्वरूप थे। वह इतने मोटे थे कि बैलों की भाँति हाँकते हुए बादशाह के सामने से चले जा रहे थे। परन्तु वह मोटे ही थे। जो बाहर से आये थे वह गदे और तपे हुए लगने थे। उनकी खालें धूप में काली हो गई थी और उनमें से पेगाब की दुर्गन्ध आती थी। उनमें से कईयों के पास भाँसे भी नहीं थे। उनकी आँखों पर मस्त्रियाँ भिन्नभिन्न रही थी। उनके रथ भी पुराने थे जिनमें से दो-चार के तो पहिये भी हिल रहे थे। और तब मैंने समझ लिया कि सैनिक हर देश में ऐसे ही होते हैं।

सायकाल सम्राट् ने मुझे बुलाकर गर्व से मुस्कयाने हुए मुझमें पूछा “मेरी शक्ति देखी सिन्धुदे?”

मैं उसके सन्मुख पृथ्वी पर बैठ गया और मैंने धरती को चूमकर उत्तर दिया, “वास्तव में आपके समान शक्तिशाली सम्राट् और कोई नहीं है।”

और लोग आपको मसाले के चारों कोने का सम्राट् व्यर्थ में ही नहीं कहते । मेरी जानें थक गई हैं, मेरा सिर चकरा गया है और मेरे हाथ-पाँव भय से काँप रहे हैं क्योंकि समुद्र की रेत के कणों की भीति आपके पास सैनिक है... आपकी बाहिनी दुर्दम्य है । ”

वह खुश हो गया । फिर हमने मदिरा पी और भोजन किया । फिर वह मुझे अपने हरम में ले गया जहाँ देश-देश की स्त्रियाँ उसने एकत्रित कर रानी थीं । वहाँ दीवालों पर यौन सम्बन्धी मग्न चित्र बने थे और अनेकानेक भागनों से स्त्री-मुरूप युग्म दिलाये गए थे । उसने मुझे वही एक रात किसी भी स्त्री के साथ बिटाने की आज्ञा दी । परन्तु जब मैं चुप रहा तो वह बारम्बार कहने लगा । अन्त में मैंने बहाना बनाकर कहा कि मुझे एक रोगी का सिर लोचना था जिसके लिए यह आवश्यक था कि मैं स्त्री मण्डप में उक्त समय तक दूर रूँ अन्यथा देवताओं के क्रुद्ध होने का भय हो सकता था । वह मान गया ।

मेरे लौटने से पूर्व उसने कहा “नदियाँ उफान रही हैं... नया वर्ष लग गया है अतएव पुजारियों ने आज मे तैरहवाँ दिन उत्सव के लिए निश्चित किया है । और उम्मी दिन नकली सम्राट् का दिवंगत मनाया जायेगा । इस बार मैं तुम्हें इसमें एक आश्चर्य दिलाऊँगा... परन्तु अभी मैं बगमाऊँगा नहीं क्योंकि फिर तो मेरा सारा मजा मारा जायेगा । ”

मैं लौट आया ।

देवीमन्दिर में मैंने वहाँ के बंधों से उनके इलाज की बहुत-सी अच्छी बातें सीखी, वहाँ के पुजारियों के उद्योतिष-ज्ञान का मुझपर बड़ा प्रभाव पड़ा । मैंने उनमें अँधे के ज़िगर को देखकर भविष्य की बातों का ज्ञान सीखा । पानी पर तैरा देखकर हाँसे वाली बातों को सीखने में भी मैंने काफी समय व्यतीत किया ।

वहाँ के पुजारियों ने एक दिन पानी पर तैरा तीरावर और अँधे का ज़िगर देखकर मुझसे कहा, “तुम्हारे जन्म के बारे में कुछ नहीं जान जा क्या जा सकता है... ऐसा लगता है कि तुम साधारण मिश्री हो नहीं हो बल्कि समार में कोई विशिष्ट कथा लेकर उन्मत्त हुए हो... अँधे का ज़िगर नहीं बनता था है । ”

और आश्चर्यचकित होकर सब मैंने उन्हें बतलाया कि मैं किस प्रकार रात की रात में बहा दिया गया था इत्यादि। मुनकर यह बोले, “यही हमने सोचा था।” फिर उन्होंने अपने यहाँ के एक बादशाह सार्जन की कथा सुनाई जिसने सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने नीचे दबा लिया था पर जो स्वयं भी मेरी ही भाँति रात की टोकरी में बहकर आया था और उसके जन्म के बारे में किसी को पता नहीं था। बाद में उसके महान् कार्यों को देखकर हो जाना गया था कि वह देवनाओं की सत्ता था।

मुनकर मेरा हृदय भय में काँप उठा। मैंने हँसने की चेष्टा करते हुए पूछा, “मेरे बारे में तो कम से कम आप लोग नहीं सोचने होंगे कि मैं भी किसी देवना का पुत्र हूँ ?”

परन्तु वह नहीं हँसे और सम्भीस्तापूर्वक बोले, “हम यह बात नहीं जानते परन्तु स्वयं माय को छिपाना भी एक गुण है और हम यीमान् के सम्मुख मनमस्नक हैं,” और वह मेरे सामने पृथ्वी पर औष्ठे बैठ गए। एक बार फिर जब भेड़ का ज़िगर देखा गया तो उन्होंने मुझे भय से देखा और प्रणाम किया। वह बोले “भारती माय-देवा विचित्र है... आप देवता की सन्तान हैं... आपके मरीर में राज-रक्त बहता है... आप सत्तार पर हुकूमत करने के लिए पैदा हुए हैं...”

पल्ल में जब गया जाना पड़ने लगा और रातों की बराके की सदी बज हुई और थोड़ी बर्षी लगने लगी, तो पुजारी लोग नगर के बाहर आकर देवनाओं को उनकी कर्तों में से निकालने गए और फिर बिल्लाकर बहने लगे कि वह आग उठे है। और तब बेबीलीन के नगर में धूम मचने लग गई। स्थान-स्थान पर लोग रग-बिरग बस्त्र पहनकर नाचने-गाने लगे और भीड़ की भीड़ बाज़ारों में टूट पड़ी। भीड़ ने दुकानें लूट ली और मैनिर्वाँ से भी अधिक भोर मचा दिया। इन्दर के मन्दिर में पुषतिर्पा और तरजिर्पा आकर अपने विवाह का आय लाने लगीं और जो भी उन्हें पसन्द करना था जिसे भी वह पसन्द करनी उसीके साथ सब के बीच खुले में निर्वन्धना-पूर्वक लिपट जानी थी। इस उत्सव का अन्तिम दिन 'नबली सभा' का

दिक्क' कहनाया था।

अब मर बेबीलीन की रीतिरिवाजों से मैं काफी परिचित हो गया था परन्तु उक्त दिन मूर्ख निश्चयने मे गहने ही जब इमार के दीर्घ तौरन पर मैनिक मदिरा पीकर चिम्पाने हुए उपद्रव करने लगे तो मैं धबका गया और मैंने समझा कि मगर मे बनवा हो गया था। अभी उन लोगों ने, भीड़ की भीड़ ने, द्वार तोड़ दिया और वह लगे चिल्लाने, 'हमारा सम्राट् कहीं छिप गया है ? मूर्ख निश्चयने बाना है... उमे जन्दी माओ।' "

अभी अंधेरा ही था, भीड़ से ओर गहरा हो गया। मगान जना दी गई और सराय के दाग भय से काँपने लगे। कप्ताह डर के मारे मेरे पलंग के नीचे छिप गया। परन्तु मैंने एक ऊनी चादर ओढ़कर द्वार खोला और उनके सामने खड़े होकर रोब से कहा, "यह तुम लोगों ने क्या गड़बड़ी मचा रखी है ? होश मे आओ और मेरे सामने सम्भवकर पेज आओ क्योंकि मैं किसी सिन्पूहे हूँ— जंगनी गधे का बेटा, जिमका नाम तुमने अवश्य ही सुना होगा।"

सुनकर वह हर्षोन्मत्त होकर चिल्लाये, "हमें सिन्पूहे की ही जरूरत थी!" और उन्होंने मुझे उठा लिया और मेरी चादर खींच ली। अब मैं उनसे घिरा बिलकुल मग्न लडा था। नम्र देखकर वह एक-दूसरे के कोहनी मारकर हँसते हुए कहने लगे, "यह तो सचमुच ही खतरनाक है... हमारी घोरतों को इससे खतरा है क्योंकि इसके खतने को देखकर वह अवश्य इसे चाहने लगेंगी... स्त्रियाँ तो हर नयी वस्तु से आकर्षित हो जाती हैं!"

बेबीलीन मे खतने की प्रथा नहीं थी। मुझसे खूब उपहास करने के बाद उन्होंने बताया कि वह कप्ताह की तलाश मे थे जिसे सम्राट् ने आज के लिए चुना था। वह वहाँ जाकर सम्राट बनाया जायेगा। अपना नाम सुनकर कप्ताह पलंग के नीचे ऐसा काँपा कि पलंग भी हिलने लगा और वह शीघ्र पकड़ लिया गया। उसे बाहर खींचकर लोगों ने उसके सामने सिर झुकाये और उसका जी भरके उपहास बनाया। कप्ताह ने भय से काँपने हुए मुझसे कहा, "अब मृत्यु आ गई... मैं तो गया ही पर मालिक तुम इस बुरे नगर से भाग जाओ... परन्तु इतना अवश्य करते जाना कि मेरी मृत्यु के बाद मुझे दीवाल से उतार लाना और मेरे शरीर को किसी ढंग से स्थायी

बना देता । मेरे शरीर की नदी में मत फेंक देना ।”

सुनकर सैनिक फिर चिल्लाये और बोले, “मार्दूक की कसम इससे अच्छा बादशाह हमें नहीं मिल सकता था ।”

फिर यह उसे भालों की मूँठों से ठेसते हुए पकड़कर ले गये ।

मुझे भी बड़ी चिन्ता हुई और मैं सुरुस्त वस्त्र पहनकर महल की ओर चला । अभी सूर्य उगने से देर थी पर सारा नगर जैसे उमड़ पड़ा था । सभी जगह से लोग मदिरोन्मत होकर महल की ओर जा रहे थे...भीड़ पर भीड़ उमड़ी पड़ रही थी ।

महल के बाहरी प्राणण में घोर सन्नाह हुआ था, और मुझे विश्वास हो गया कि हो न हो बसवा अवश्य हो गया था और अब जब आसपान से सैनिक उसे दबाने आयेगे तो नगर में रक्त बहने लगेगा ।

परन्तु भीतरी प्राणण में जागर जो कुछ घेरे देखा तो आश्चर्यचकित रह गया । सिंह के पैरों वाले सुवर्ण सिंहासन पर बर्नेबुरियाज राजसी वस्त्र पहने हाथों में राजदंड इत्यादि लिये स्वर्ण छत्र के नीचे बैठा हुआ था । उसके पीछे और कमलों में पुजारी वर्ग और उच्चपदाधिकारी लोग खड़े थे । परन्तु उन सबकी परवाह नित्ये बिना सैनिक बप्ताह को लेकर सिंहासन के पास पहुँच गए । और उन्होंने बर्नेबुरियाज को सिंहासन से बलपूर्वक उठा दिया और उसके हाथ से राजदंड इत्यादि छीनकर उसे टोक मेरी तरफ़ मान कर दिया । तत्पश्चात् वह उसके गोरे मुलायम शरीर को नोचने लगे तो वह भागा । मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मझाद् इस सबको हँस-हँसकर हाथापाई करता हुआ सहन कर रहा था । सैनिकों ने कहा, “अरे इसके मूँह में तो अभी भी छिद्र की बाँध जाती है . हरम की स्त्रियाँ भी बेचारी इस दृष्टी के साथ ही जाने बया करती हैं...इससे तो अच्छा यह बुरा मिन्नी है...बप्ताह तो ऊबड़स्त मर्द टहरा...बाह ! इसे ही बनाओ मझाद् ।”

और उन्होंने उसे राजसी वस्त्र पहनाकर राजमुकुट उमने तिर पर रख दिया और उसके हाथों में राजदंड इत्यादि पकड़ा दिये । अब उसे सिंहासन पर बिठा दिया गया तो सबसे पहले स्वयं बर्नेबुरियाज ने ही पृथ्वी पर ओंघे तिटकर उगवा अभिषादन किया और फिर सैनिक बैठा ही करने लगे । अबीर समा था । भीड़ें उमड़ रही थीं, हल्ला हो रहा था, टहाने लग

रहे थे, और सभी नये सम्राट् की जयजयकार कर रहे थे, लगता था जैसे पूरा महानगर पागल हो गया था।

कप्ताह सिंहासनाब्ध होने पर बोना, "यदि मैं वास्तव में सम्राट् हो गया हूँ तो आज्ञा देता हूँ कि मदिरा आने दो...जल्दी करो दासो ! चलो अन्यथा मेरा डडा सबकी सबर सेगा...हाँ मदिरा...सबको पिलाओ... मेरे उन मित्रों को भी जिन्होंने मुझे सम्राट् बनाया है और मैं खुद तो गते तक उसमें ही डूब जाना चाह रहा हूँ।"

मुझे एकदम पता चल गया कि मार्ग में उन्होंने उसे तीव्र मदिरा काफी तादाद में पिला दी थी। उसकी आज्ञा सुनकर ठहाके लगने लगे। लोग उछल पड़े और उसे एक बड़े कमरे में धकेल ले गये जहाँ भोजन और मदिरा का प्रबन्ध किया गया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि बर्नेबुरियाग स्वयं दामों की भाँति नम्र होकर वहाँ कप्ताह को सड़े-खड़े मदिरा पिला रहा था। बाहरी प्रांगण और उसके भी बाहर भेड़ और बैल का मास लोगों को बाँटा जा रहा था और मदिरा की तो जैसे नदी बहाई जा रही थी। सभी भोर उत्सास ही उत्सास दिखाई दे रहा था। और जब सूर्य निकल आया तब तो उस कोलाहल का जैसे कोई ठिकाना ही नहीं रहा।

मैंने मौका देखकर कप्ताह से कहा, "कप्ताह मेरे पीछे-पीछे चले आओ ...चलो भाग चलें...इनमें अवश्य कोई भेद है।"

परन्तु उसने तो मदिरा पी रखी थी और वह सम्राट् बना हुआ था भला मेरी क्यों मानता ? मेरी ओर मुँह मोड़कर कहने लगा, 'तुम्हारी बात मुझे जानों के पास मक्खियों की भिनभिनाहट जैसी लगती है...अब जब मैं बादशाह बन गया हूँ तो अपनी रियाया को कैसे छोड़ दूँ !"

इसी प्रकार वह बहकना रहा और लोग उसे सिलाने रहे। अन्त में लोग उसे हरम की ओर ले गए। कप्ताह ने कहा, "ससार के चारों कोनों का मालिक होने के नाने मैं हरम का भी पूर्ण स्वामी हूँ। इसी मदिरा और भाँग खाने के बाद मुझे सिह का मांस खाना आ गया है...मैं निचो से रगरेनिया करना चाहता हूँ।"

परन्तु बर्नेबुरियाग अब हँस नहीं रहा था। वह हाथ पर हाथ रखकर मज रहा था। मुझे देखते ही वह मेरे पास आकर बोला, "निगूहे ! तुम

मेरे मित्र हो और बँध होने के नाते तुम हरम में जा सकते हो...तुम इसके साथ अन्दर जाओ और इसकी गतिविधि पर दृष्टि रखो कि यह मेरी स्थितियों से कोई बेजा हरकत न कर बैठे। अन्यथा मैं इसे ज़िदा जलवा दूंगा और...और इसे उल्टा लटकवा दूंगा...परन्तु यदि हमने ऐसा नहीं किया और मीमा के अन्दर ही रहा तो मैं वायदा करता हूँ कि इसे सरल मृत्यु प्राप्त होगी।'

मैंने उचित अवसर देखकर पूछा, 'सम्राट् को इस प्रकार दासों की भाँति कत्ल पहुँचे और सभी द्वारा उपहासित देखकर मेरा मन उदास हो गया है.. यह सब क्या है?'

उसने उत्सुक होने हुए उत्तर दिया, "आज नफ़्थी सम्राट् का दिवस है...हर साल ऐसे ही एक सम्राट् एक दिन के लिए चुना जाता है। पर यह अवश्य है कि ऐसा विदूषक अभी तक मैंने नहीं देखा। उसे मालूम नहीं है कि अन्त में इसके साथ क्या होने वाला है।"

"क्या होने वाला है?" मैंने पूछा।

"सूपाँस होने ही जैसे ही इसके तिर पर राजमुकुट रखा जायेगा वह मार डाला जायेगा। मैं इसे बुरी मौत मार सकता हूँ परन्तु आमनीर पर इन्हें मर्दाना में विष फिलाकर मार दिया जाता है। उसे पीकर वह सो जाने है और इन्हें मृत्यु का पता नहीं चलता।"

और तभी नाक से रक्त टपकना हुआ कप्ताह हरम से बाहर निकला। सभी बुरी तरह हैम रहे थे। स्वयं सम्राट् भी हँसी न रोक सका। उस कोलाहल के बीच भी कप्ताह रो-रोकर चिल्लाकर बह रहा था, "कबछनी में मेरा क्या हाल बिधा है! मुझे बुझी लूसट हज्जिनें दे रहे थे...और जब मैंने उस नवविजयित बली को छुना चाहता तो वह दोरनी की तरह मुझ पर सपटी और मेरी नाक पर जूना दे माघ!" फिर मुझे देखकर वह चिल्लाया, "मिनूहे! तुम तनिक अन्दर जाकर उस दोरनी सुदरी का तिर खोज दो और उसके अन्दर से ज़ेनान उठा दो...निश्चय ही उस पर ज़ेनान सवार है अन्यथा वह भला सम्राट् के मूँह पर जूता मारती?"

बर्बुरियाज ने मेरे कोहनी मारकर धीरे से कहा, "मिनूहे! अन्दर जाकर देख आओ क्या मायरा है। निश्चय ही यह कल बामी नई स्त्री होगी

जो शेरनी की भाँति बफरी होगी...तुम तो बँध होने के नाते जा सकते हो...कंबल मुझे शाम तक अन्दर नहीं जाने देंगे।" और वह मेरे पीछे पड़ गया। आखिर मुझे जाना ही पड़ गया।

अन्दर जाकर मैंने देखा कि बूढ़ा कुरूप हव्निने रंग-बिरंगे वस्त्र पहने हुए चिल्ला रही थी, "हमारा वकरा कहाँ चला गया...हमारा प्यारा... उसे बुलाओ...!"

एक बड़े डील वाली हव्निन जिसके काले स्नन काले रसोई के पात्रों की भाँति पेट तक सटक रहे थे चिल्लाई, "अरे मेरा प्यारा मुझे दे दो... मैं उसे अपनी छाती से लगा लूँ...अरे मेरा हाथी मुझे दे दो जो सूँड़ मेरे चारों ओर सपेट से!"

परन्तु हिजड़ों ने मुझसे कहा, "इन स्त्रियों पर श्रीमान् ध्यान न दें क्योंकि यह नकली सम्राट् का स्वागत करने मदिरा पीकर अपने होश खो बैठी है...बैसे एक लड़की अन्दर है जो सचमुच ही बीमार लगती है और उसे बंध की आवश्यकता है। वह शेरनी की भाँति बफर रही है और उसके हाथ में एक तेज चाकू है।"

अन्दर मैंने देखा कि रंगबिरंगे पत्थरों का बना हुआ एक विराण बुढ़ा या तिममे जल जन्तु घने हुए थे। उनके मुँहों से जल निकल रहा था। एक ऐसे ही जन्तु के ऊपर बड़बड़ एक युवती बैठी थी और उसके हाथ में एक बड़ा-सा तेज छुरा बमबमा रहा था। उसके बपड़े सब पट गए थे क्योंकि शायद उसे हिजड़ों ने पकड़ने का उद्योग किया था और जब वह छुड़ाकर भागी थी तो वह कट गए थे। चारों ओर बुरी तरह शोर मचा हुआ था। और वह लड़की भी कुछ कहती भी लग रही थी। मैंने देखा कि वह सचमुच ही मुदरी थी। मैंने शोर बन्द करने के लिए एक-दो बार हाथ उठाया पर जब वह न रुका तो मैं गुरमे ने हिजड़ों पर दूट पड़ा और चिल्लाकर कहा, "निकल जाओ सब यहाँ से...यह बसा कहती है मुझे सुनने दो... और इन कब्जागो को भी बन्द कर दो जो शोर मचा रहे।"

और तब जब पूर्ण निम्नस्वरा छा गई तो मैंने सुना कि वह अर्धःस्वर में दिक्कत भाषा बोलती हुई माना जा रही थी।

"बन्द कर दहू माना जयभी विष्णी। और बाहर निकल आ बनें।"

मैं देखता हूँ कि तू सबकुछ ही बीमार है।”

उसका गाना धम गया और फिर वह मुझसे भी खराब बेवीलीन की भाषा में बोली, “यहो आ बदर कि मैं तेरा हृदय इस चाकू से फाड़ सकूँ... मैं बेहद भूखी जो हूँ।”

“मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहता।”

‘ऐसे ही सब पुरुष कहते हैं और फिर सब झूठ बोलने हैं। मैं यदि पुरुष-सपने चाहूँ तो भी नहीं कर सकती क्योंकि मैं देवता पर चढ़ाई जा चुकी हूँ...यह चाकू मैं इसीलिए रखती हूँ कि यदि कोई आपत्ति न डल सके तो अपने मार लूँ...और वह काना जो अभी आया या वह तो कभी मेरा स्पर्श न कर पायेगा।” और उसने घुना से बूक दिया।

“दुर्लभ स्त्री” मैंने कहा, “भोज उठा और यह चाकू फेंक दे क्योंकि मुझे भय है वह तेरे कही लग न पाय। हिजबों ने मुझे खरीदने में निश्चय ही सम्राट् का काफी सोना खर्च किया होगा।”

“मैं दासी नहीं हूँ” वह तिनककर बोली, “मुझे यह लोग घुराकर ले जाये हैं...अगर तुम्हारी आँखें होती तो तुम इस समय को पहचानते...पर क्या तुम कोई और भाषा नहीं बोल सकते ?”

“मैं मिस्त्री हूँ” मैंने अपनी भाषा में उत्तर दिया, “मेरा नाम सिल्वीदे है—वह जो एककी है—वह जो अगली गधे का बेटा है—मेरा पेशा वैद्यक है...मुझसे तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।”

मुनकर वह एकदम जल में कूद पड़ी और तैरकर मेरे पास आ गई। वह बोली, “तुम मिस्त्री हो और मुझे यह ज्ञात है कि मिस्त्री लोग स्त्रियों से बलात्कार नहीं करते। अतएव मैं तुम पर विश्वास करती हूँ परन्तु यह चाकू मैं अपनी रक्षा के लिए रखती हूँ क्योंकि संभव है कि आज ही मुझे अपने रक्त की नलियाँ काट डालनी पड़ें। यदि कोई मेरे शरीर को छूकर मेरे देवता को वक्षुपित करना चाहेगा तो मुझे ऐसा करना ही होगा। यदि तुम देवताओं से डरते हो और मेरा भला चाहते हो तो मुझे यहाँ से छुड़ा ले चलो...वैसे मैं तुम्हें भी प्रतिकार में अपना शरीर कभी न दे सकूँगी क्योंकि हमारे यहाँ ऐसा करना निषिद्ध है।”

“तुम्हें छुड़ाने का मेरा कोई विचार नहीं है” मैंने आपरवाही से उत्तर

दिया, फिर कुछ रुककर कहा, "सम्राट् मेरा मित्र है और मैं उसे दुःख पहुँचाना नहीं चाहता, ग्राहक जब तुम्हारे पीछे मुर्खों के पहाड़ चर्च कर गिये गए हैं। ही एक बात मैं तुम्हें बतसा दूँ -- वह यह कि जो मोटी मर्क के समान काना आदमी तुमने देखा था, वह सम्राट् नहीं है। वह तो नकलें यादशाह है जो बेबन आज ही रहेगा। बल से अमलें सम्राट् फिर राज्य करेगा और वह एक सुन्दर मर्क है। अभी उसके दाढ़ी भी नहीं उगी है पर वह तुमसे आनन्द प्राप्त करने की सोच भी रहा है। मेरे खयाल से तुम्हारा देवता यहाँ तक तुम्हारी सहायता नहीं आ सकेगा और तुम्हें उनके (सम्राट् के) समीप तक जाना पड़ेगा। इससे बेहतर यह है कि तुम उठो और सुन्दर वस्त्र धारण करो, इन वालों की सुन्दर मर्क करो क्योंकि मैं देखता हूँ, तुम अच्छी खासी खूबमूरत हो।"

सुनकर वह मुस्कराई। उसने अपने गीले केश छूकर गीली उँगली से होंठ और भवें पोछी फिर वह बोली, "मेरा नाम मीनिया है। जब तुम मुझे इस बुरे देश से निकाल कर मेरे साथ भाग चलो, तब मुझे इसी नाम से पुकारा करना।"

सुनते ही मैंने हताश होकर दोनों हाथ उठा दिये और मैं तेज बंदों से वहाँ से चल दिया पर न जाने क्यों मेरा हृदय उसकी ओर मुझे खींचने लगा और मैं लौटकर उससे बोला, "मीनिया ! मैं सम्राट् से तुम्हारे बारे में बातें करूँगा। इससे अधिक और भला मैं कर भी क्या सकता हूँ। तुम उठो और श्रुगार करो। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें सभी औषधि दे दूँगा। जिससे फिर तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था, हो रहा है।"

"कुछ भी करो पर मेरी सहायता करो", वह बोली, "और इसी हेतु अब तुम्हें मैं अपना यह चाकू दिये देती हूँ जिसने मुझे अब तक बचाया है। और एक बार जब इसे मैंने तुम्हें दे दिया तो मुझे विश्वास हो जायेगा कि भविष्य में मेरी रक्षा तुम स्वयं करोगे, मुझे धोखा नहीं दोगे और इन बुरे मुल्क से बाहर चलोगे।"

मैंने देखा वह अब भी मुस्करा रही थी। वह निश्चय ही मुझसे अधिक चतुर थी।

बाहर मुझे बर्नेबुरियाश मिला। उसने मुझने उसके बारे में पूछा। मैंने कहा, "तुम्हारे हिजड़े मूख हैं जो ऐसी सड़की ले जाते हैं जो पुरुष को पास ही नहीं जाने देती। वह पागल लगती है और अपने किसी देवता के लिए पहले से ही सकलियत हो चुकी है। बेहतर होगा यदि उसे छोड़ दिया जाय, क्योंकि वह बुद्धि से भी उस मानूम होती है।"

लेकिन मुनकर बर्नेबुरियाश हँस दिया। उसने कहा, 'तुम तो जानते हो कि मेरी अभी दाढ़ी भी नहीं उगी है। स्त्रियों के आतिथ्य में मैं ऊब उठता हूँ। ऐसी ही स्त्रियाँ मुझे बहुत पसन्द हैं जो हठ करती हैं क्योंकि तब मैं उन्हें नंगी करवाकर हिजड़ों से पिटाता हूँ। उदा ही इनका सबसे अच्छा इलाज है। मैं दाढ़े के साथ चर्ता हूँ कि आज ही रात उसे इतना पिटाऊँगा कि उसकी पीठ सूज जायेगी और वह चित्त लेट भी नहीं सकेगी... और तब मुझे बड़ा आनन्द मिलेगा।"

जब वह चला गया तो मेरे हृदय में उसके प्रति अब तक का मैत्रीभाव लौप हो गया और फिर मैंने उसका भला कभी नहीं सोचा। मीनिया का चाकू अभी मेरे हाथ में था।

उसके बाद मेरे लिए वह सारा उत्सव पत्रिका ही गया। हालाँकि अभी बेबीलोन के पुजारियों से 'भिट के गिर देखने की विधि' पूरी तरह से मैं नहीं सीख पाया था और बर्नेबुरियाश से मित्रता होने के कारण मुझे अटूट धन भी मिलने की आशा थी, फिर भी न जाने क्यों मुझे वह सब दूर लगने लग गया। रह-रहकर मीनिया का सुन्दर चेहरा मेरी आँखों के सामने आ जाता और कप्ताह के लिए जो सम्राट की एक व्यर्थ की सनक के कारण आज क्षाम मारा जाने वाला था, मुझे बड़ा दुःख होने लगा—वह मेरा नौकर था तो नम से कम बादशाह उसे ऐसी परिस्थिति में डालने के पूर्व मुझसे पूछ तो लेता।

तीसरे पहर मैं नदी किनारे गया, और मैंने एक नाव किनारे पर ली और मत्ताहों से कहा :

"बैसे आज नकशी सम्राट का दिवस है और मैं जानता हूँ कि तुम

मदिरा पीकर आनन्द मना रहे हो; परन्तु यदि तुम मेरा काम करोगे और माय को मेरे कहे अनुसार से बनोगे तो मैं तुम्हें दूना इनाम दूंगा। मेरा एक धनी भाचा मर गया है और मुझे उसकी माय को हमारे पुराने घर पर जो भिनन्नी के बिमारों पर स्थित है ले जाना है—देरी हो जाने में उसके मड़ने व मेरे भाई इत्यादि आकर विरामत का अगडा करने लगेंगे और तब मेरे हाथ कुछ न लग पायेगा—अनएव यदि तुम जल्दी करो तो तुम्हें भर-पूर इनाम दिया जायेगा।”

गुनकर वह बहवकाने लगे परन्तु जब मैंने उन्हें दो बड़े घड़े मदिरा के खरीद दिये तो एवदम उन पर टूट पड़े।

वहाँ से मैं सीधा मुर्ख पर गया वहाँ मैंने एक भेड़ को काटकर बलि दी। उसके जिगर को देखकर मैं कुछ विशेष अर्थ नहीं लगा सचा क्योंकि मैं अपने ही विचारों में इतना अधिक लोया हुआ था कि कुछ पना न लग सका। फिर मैंने वह तमाम रक्त एक चमड़े के थैले में भर लिया और महल की ओर चल दिया। जब मैं हरम के द्वार पर पहुँचा तो मेरे मुँह के सामने से एक अबावील उड़ गई और इस अच्छे शगुन से मेरा मन हल्का हो गया। हिजड़ों को हटाकर मीनिया से मैं अकेले में मिला और उसको वह लून भरा थैला और चाकू देकर मैंने जो कुछ उसे करना था सब समझा दिया। हिजड़ों से कह दिया गया कि मीनिया को दवा दी गई है उसे कम से कम शाम तक कोई न छेड़े जिससे दवा अपना असर कर सके।

तत्पश्चात् मैं उठकर बाहर आ गया। जब सूर्य छिपने लगा तो मैंने बर्नेडुरियाश से कहा : “मुझे विश्वास कैसे हो कि कप्ताह की मोत बिला तकलीफ हो जायेगी ?”

वह बोला : “जल्दी करो और स्वयं जाकर देखा सो क्योंकि बूढ़ा बूढ़ उसकी मदिरा में विष मिलाने वाला है। सूर्यास्त हो रहा है और उसका मारा जाना रीति के अनुसार आवश्यक है।”

मैंने जाकर देखा कि बूढ़ विष मिलाने की तैयारी कर रहा था। जब मैंने उससे कहा कि मुझे सम्राट् ने भेजा था तो उसने मेरा विश्वास कर लिया और कहा : “अब तुम स्वयं ही विष मिला दो क्योंकि दिन-भर मदिरा पीने से मेरे हाथ काँप रहे हैं। तुम्हारा नौकर क्या है गडब का

मूर्ख है—हूँमाने-हूँसाने उसने मेरा बुरा हात कर दिया है।” और वह चला गया।

मैंने वह विष फेंक दिया और मदिरा में ‘पीपी-गुण’ का रस मिला दिया—अधिक नहीं कि वह विष का काम करने लगे—वर्तक इतना कि अपना पूरा अमर दिखा जाम। फिर उसे लेकर सबके बीच कप्ताह के पास जाकर कहा, “कप्ताह, बस तो शायद तुम मुझे पहचानना भी अपनी तोहीन समझोये क्योंकि तुम तो अब सम्राट् हो गए हो। आज मेरे हाथ से मदिरा पी लो जिसमें कि जब मैं मिश्र को लौटूँ तो यह तो कम से कम कहूँ कि सक्षार के चारों कोनों का मालिक मेरा मिश्र था... उसने मेरे हाथ से मदिरा पी ली।

कप्ताह ने उत्तर दिया, “इस मिश्री की बातें मुझे, मक्खियों की भिनभिनाहट जैसी मालूम होती हैं। हालाँकि मैंने आज मदिरा खूब पी है, आज मैं मदिरा नाम की किमी वस्तु को नहीं ठुकरा सकता, और वह उम्रे पी गया। और उसी समय सूर्य डूब गया और वह भी गिर पड़ा। गिरने हुए वह बोला, “ओफ़ मीढ़ का रही है,” और उसने मेकपोग लीचकर अपने ऊपर डाल लिया। उसके लिचने से मेक पर रखी समस्त मदिरा की प्यानिर्मा, पड़े-थड़े पात्र, घाने की सामग्री इत्यादि भूमि पर बिखर गई।

और तभी मकाले जला दी गई। एकदम मौत का सा सन्नाटा छा गया। लोगो ने पृथ्वी पर गिरकर बर्नेबुनियास को अभिवादन दिया। कप्ताह के शरीर से राजसी वस्त्र उतारकर जो मदिरा में भीग रहे थे बर्नेबुनियास को पहनाये गए। सिर पर राजमुकुट रखा गया और हाथों में राजदंड इत्यादि दे दिये गए। जब वह सिंहासन पर बैठ गया तो उसने कहा :

“पूरे दिन कोलाहल होता रहा है और हम बक गए हैं—फिर भी हमने उन मोठे से लोगो को देख लिया है जिन्होंने आवश्यकता से अधिक उद्दण्डता की है—शायद वह समझते थे कि हम फिर राजदण्ड नहीं संभालेंगे, सैर,” फिर उसने अधिकार के स्वर में आज्ञा दी :

“इन सोनेवालों को चाबुक लगाकर बाहर निकाल दो.. बाहरी प्राण में भीड़ पर घुड़चढ़ी छोड़ दो... मगा दो उन सबको... कुचल डालो

...और इस मूर्त को यदि यह मर चुका है तो घड़े में बन्द कर दो क्योंकि मैं इससे ऊब गया हूँ।”

कप्ताह पीठ के बल पड़ा था। वैद्य ने उसे देखकर कहा : “यह गांवर की मक्खी की भाँति मर चुका है।”

नौकर तुरन्त एक दीर्घ मिट्टी का घड़ा ले आये जिसमें कप्ताह बन्द कर दिया गया और उसके दक्कन पर मिट्टी लगाकर मुहर लगा दी गई। बेघीसौन में मृतकों को गाड़ने की यही रीति थी। फिर उसे पृथ्वी के अन्दर गाड़ दिया जाना था। सम्राट् ने कहा कि उस घड़े को पहले सातों के नकली सम्राटों के साथ तहस्तानों में रख दिया जाए। यहाँ मैं बोल उठा : “यदि सम्राट् को आपत्ति न हो तो मैं कुछ निवेदन करूँ,” और उसकी आज्ञा पाकर मैंने कहा : “यह मिथी था और हमारे देश की प्रथा के अनुसार मुझे इसके शरीर को शाश्वत काल तक के लिए मसाने लगाकर रखना होगा कि इसकी आत्मा पश्चिमी देशों की यात्रा आसानी से कर सके... इसमें तीस से सत्तर दिन तक लग जाना है जैसा कि आशुभी का रखा होता है। परन्तु यह तो केवल मेरा नौकर था। इसके शरीर को बनाने में तो तीस ही दिन लगेंगे। यदि सम्राट् आज्ञा दें तो मैं यह कार्य करूँ... ऐसी हानत में मैं तीस दिन तक दरबार में हाज़िर नहीं हो सकूँगा क्योंकि उन दिनों मेरे हृद-गिर्द हममें से निचली हुई बुरी आत्माएँ भी निश्चय ही रहेंगी।”

सम्राट् ने आज्ञा प्रदान कर दी और मैंने वह मिट्टी का मग्गा पत्र उटवाकर महल में बाहर अपनी कुर्सी पर रखा दिया। चुपचाप मैंने उसमें दो-एक छंद भी बना दिये कि ऊपर हवा जानी रहे।

फिर मैं छिपे हुए रूप में पहुँचा। हिजडे मुझे देखकर मुग़ हूए क्योंकि वह चाहते थे कि बादशाह के आने के पहले ही मीनिया टीक हो जाए। मैं मीनिया मीनिया के बक्ष में चला गया परन्तु अब मैं वहाँ से मुत्तल सीटकर अपने दाग ओषकर होने लगा तो वह खबर गए। मैंने कहा : “अब क्या करें ! मुझ लोगों ने खरी मत्तल की कि उनकी देवभाव बरी की। वह देवो उमने चाकू से अपनी रूपा कर भी है और मृत में पड़ा होकर पड़ी है।”

हिजड़ों ने जो जाकर खून देखा तो भय से काँपने लगे । उन्होंने उसे छूने का भी साहस नहीं किया क्योंकि आदमन हिजड़े रक्त देखकर भयभीत हो जाते हैं । मैंने कहा :

“तुम लोग और मैं अब एक-सी परिस्थितियों में फँस गए हैं । यदि बादशाह ने अपनी इस चहेती को मरा हुआ देख लिया तो तुम भी मरे और मैं भी मरा । जल्दी से एक चटाई में इसे जपेट दो जिससे मैं इसे बाहर ले जाकर फेंक आऊँ और जमीन पर से खून जल्दी से धो दालो । अब तो केवल एक ही उपाय है । शीघ्र जाकर एक और मुन्दरी दाम्नी खरीद लाओ जो कोई परदेशी हो और यहाँ को भाषा न बोल सकती हो, न समझ सकती हो और उसे इसके स्थान पर लाकर रख दो । उससे कुछ ऐसी बातें करने को कहो जो वह न कर सके और फिर जब बादशाह या आम तो उसे नगी करके उसके सामने मारो । बादशाह प्रसन्न हो उठेगा ।”

हिजड़ो ने मेरी बातों का तथ्य सपक्का और मेरी प्रशंसा की; परन्तु नई दासी के मूल्य के लिए वह झगड़ने लगे क्योंकि मीनिया के मरने का आधा दोष मुझ पर भी तो था । आन्तरिकार आधी कीमत उन्हें देकर मैं उस चटाई में लिपटी मीनिया को उठाकर बाहर चला आया । अपनी कुर्सी पर उसे भी रखकर मैं नदी तट की ओर चल दिया ।

७

नाव बती चली जा रही थी—वेदीलीन की पहुँच से हम बहुत दूर निकल आये थे । मैं तैरकों के नीचे लेटकर सोने का उपक्रम कर रहा था क्योंकि मैं बेहद थक गया था । मीनिया इस बीच चटाई खोलकर निकल आई थी और अपने शरीर पर पड़े हुए खून को मदी के जल से धो रही थी । उसकी गोरी पतली-पतली उँगलियों के बीच से टपकता हुआ जल चन्द्रमा के प्रकाश में मोतियों जैसा लग रहा था । वह मुझे देखकर चढ़बढ़ा रही थी : “तुम्हारी सलाह से ही मैंने अपने-आपको उस रक्त से भिगोकर

गन्दा बिछा था और मैं अण्डित हो गई—और जब तुम मुझे चटाई में घोंटकर लाये थे तो आवश्यकता से अधिक तुमने मुझे दबाया था जिससे मेरी दम घुटने लगी थी—मैं अच्छी तरह सोच भी न सं पाई थी—यह सारा दोष तुम्हारा ही है।”

प्रथम तो मैं बेहद थका हुआ था, दूसरे उसकी बातें मुझे बहुत बुरी लगी। मैंने बटकर कहा :

“अपनी जुबान बन्द कर बदमाश औरत ! जो कुछ मैंने तेरी खातिर बिछा है उस सबको गोबता : तो भी बरता है कि तुझे नदी में दे माँ” जहाँ कि जी भर के नहा सकेगी। अगर तू न होनी तो इस वक़्त मैं देवी-सौन के सम्राट् के दाहिने तरफ बैठा होता और कुर्न के समान पुजारी दिना कुछ छिपाये हुए मुझे अपनी बिछा सिखाने और मैं ससार भर का योग्य वैद्य बनकर रहूँता। तेरे ही पीछे वह समस्त सोना भी मेरा मारा गया जो मुझे मेरे मरीजों से मिलता। अब मेरा धन भी धोखे में आ गया है क्योंकि मन्दिर के सज्जाने में मैं अपनी मिट्टी की सत्तियाँ भय के कारण दिला नहीं सकना। इस सब की जड़ तू है—बुरी थी वह घड़ी जब मैं तुझे देखा और अब हर साल उस दिन मुझे फटे वस्त्र पहनकर सिर पर राख डालकर अनिष्ट टालना पड़ेगा।”

सुनकर उसका सुन्दर मुख उदास हो गया और वह धीमे स्वर से बोली : “अगर तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो सो मैं नदी में कूदे जाती हूँ—तुम मुक्त हो जाओगे।”

वह उठकर कूदने ही को थी कि मैंने उठकर उसे पकड़ लिया और कहा : “अब अपनी मूर्खता न दोहराओ—वरना मेरी समस्त मेहनत बेकार चली जाएगी—देवताओं की वसम मुझे सोने दो मीनिया ! क्योंकि मैं बेहद थक गया हूँ !”

और मैं चटाई ओढ़कर लेट गया क्योंकि रात ठंडी हो गई थी। और थोड़ी देर बाद मीनिया मेरे पास आकर लेट गई। कहने लगी : “मैं यदि कुछ और नहीं कर सकती तो तुम्हें गर्मी तो पहुँचा ही सकती हूँ,” वह जवान थी और उसका शरीर मेरे बगल में अंगीठी सा बहक रहा था। मैं शीघ्र ही सो गया।

जब मैं जागा, हम उल्टी धार में बहुत दूर आ चुके थे और नाव वाले बड़ाबड़ा रहे थे :

“हमारे कपे लकड़ी जैसे हो गये हैं और पीठ दुखने लगी है । क्या तुम हमें मारना चाहते हो ? कहाँ है तुम्हारा घर जो अभी तक नहीं आया ? क्या उसमें आग लग गई है जो हमें उसे बुझाने जाना पड़ेगा ?”

मैंने सख्ती से कहा : “जो दीज देगा उसी की पीठ पर मेरा डंडा पड़ेगा.. तुम्हारा पहला पड़ाव आज दोपहर को होगा और तब मैं तुम्हें उलम मझिरा पीने को दूंगा जिसे पीकर तुम चिड़ियों से चट्कने लग जाओगे । परन्तु यदि तुमने गड़बड़ी की तो समझ लो कि मैं तमाम बीतालों को जगा दूंगा जो तुम्हें खा जायेंगे, क्योंकि मैं पुजारी हूँ और जादूगर भी हूँ ।”

मैंने यह उन्हें डराने के लिए कहा था परन्तु मूर्ख तेजी से चमक रहा था और उन्होंने मेरा विस्वास नहीं किया । वह बोले : “हम इस हैं और यह अवेला है ।” और एक ने मेरी तरफ मुझे मारने के लिए अपनी पह-बार भी चलाई ।

और उसी लंग नीका के मूल की ओर से एक जबरदस्त आवाज आई : बप्ताह मिट्टी के पात्र को अन्दर से बजा रहा था और घुरी तरह चिल्ला रहा था । नावियों के चेहरे सफेद पड़ गये और वह एक के बाद एक सब जल में बूद पड़े और क्षीप्त ही ठहरकर दृष्टि के बाहर हो गए । नाव जब धार के बीच बहने लगी तो मैंने जलर का परस्पर नदी में डाल दिया ।

मीनिया बगड़े से बाहर आई और तिर के बाल बाढ़ने लगी । वह मुन्दरी सूर्य के प्रकाश में अद्भुत लग रही थी । बांस के क्षुरमुटो में सारम बोल रहे थे ।

मैंने दौड़कर उस पहे का इक्षण खीन दिया और कहा : ‘ गढ़े हो जाओ ।’

बप्ताह ने अपना बिगड़ा हुआ सिर धक्काधक्का बाहर निकाला । मैंने आज तक बँता डरा हुआ मूख कभी नहीं देखा । वह कराहा : “यह सब बँसी मूर्खता है ? मेरा राजमुकुट और राजदण्ड कहाँ गया ? मैं तो नगा हूँ और ठंड से सिड्क गया हूँ, मेरा गिर फटा जा रहा है और हाथ-पैर सब

जैसे सीसे के हो गये हैं सिन्यूहे ! मुझे ऐसा उपहास बिल्कुल पसन्द नहीं है, ध्यान रखो कि सम्राटों से इस प्रकार खेल करने का साहस नहीं करना चाहिए ।”

मैं उसकी नालायकी की सजा उसे देना चाहता था इसलिए मैंने भोले यनने हुए कहा :

“तुम्हारी याने मेरी समझ में ही नहीं आ रही है—भायद तुम अब भी नशे में ही हो क्याह । बेबीलोन से जब हम चले थे तो तुमने नाव में इतनी प्यादा गड़बड़ की थी कि आखिरकार तुम्हें मल्लाहों ने पकड़कर हम मिट्टी के पात्र में बन्द कर दिया था । तब भी तुम सम्राटों और न्यायाधीशों की याने कर रहे थे ।”

मुनकर क्याह ने जोर से आँखें बन्द कर ली, और पहले दिन की व माद करने की कोशिश करने लगा । फिर बोला, “मासिक ! अब मैं क्या मदिरा नहीं पिऊँगा । हमसे तो मुझे विविध स्वप्न आने लगे हैं । मुझे य आ रहा है कि मैं जाने कहाँ का सम्राट् बना दिया गया था और तब मैं सिंहासन पर बैठकर इसाक किया था । और जाने क्या-क्या हुआ था या नहीं वह रहा है ।”

और तभी उसकी दुष्टि मीनिया पर पड़ गई । हाट से वह पड़े के अन्दर फिर छिप गया और वहाँ से रोनी आवाज में बोला, “मासिक ! अभी मैं मेरा नशा नहीं गया है, या फिर मैं स्वप्न देख रहा हूँ । क्योंकि अभी मैं नाव की दूसरी ओर एक लड़की को देगा है—यह वही है जिसके साथ मैंने क्या आनन्द भोगे थे...या बैंगी ही कोई लड़की मुझे दिला रही है ।”

और मीनिया ने त्राकर उसके साथ पकड़कर उसे दठा लिया और कहा, “मेरे ही साथ तुने क्या राग ऐसा किया था न ? बोन ?”

क्याह का कं के मारे बुरा हाल था । अपनी एक ही आँख बन्द करके वह घोंरे में बोला, “मिस्र के मगूम देवताओ ! मुझे लप्ता करो क्योंकि मैंने मन्दिरों देवताओ की भी मयनों में बलि दे दी है—लेकिन तुम तो वही हो ! क्योंकि वह तो बोरस स्वप्न ही आया ।”

मैंने उसे बाहर निकाला और उसे एक कड़वी औषधि दी कि उसका पेट साफ हो जाए और फिर उसके बना करने पर भी उसकी कमर में एक

१) बाँधकर उसे पानी में धकेल दिया जिससे उसे दिये गए विष और
 २) ही साम मंदिरा का बसर उतर जाए। फिर उससे कहा, "यही तुम्हारा
 है। जो कुछ तुमने स्वप्न में देखा था वह सभी सत्य था परन्तु यदि मैं
 पूरी समय से सहायता न करता तो निश्चय ही तुम अब तक मिट्टी के
 में मूँदे हुए पत्थरों के नक्ली साम्राज्यों के साथ कब में पहुँच गये होते।"
 और जब मैंने बप्ताह को वह सारी बातें बतलाई तो वह मुँह फाटे
 में मुनना रहा और मुझे उसे कई बार समझाना पड़ा क्योंकि उसकी
 १ में ही नहीं आता था। सब सुनकर वह बोला, "तब तो मुझे मंदिरा
 ने भी बचपन नहीं पानी पड़ेगी क्योंकि जो कुछ हुआ वह सब सत्य था—
 २) जो उसे स्वप्न समझकर ही मंदिरा ने भ्रम किया था।" और वह आराम
 ३) मंदिरा के इश्कन को खोलकर फिर पीने लगा। उसने मित्र के
 पदेबनाओं की दुहाई दी और बीच ही नये में बुर होकर फिर सो गया।
 मुझे उगरी हम हरकत से इनका गुस्ता आया कि जो किया कि मैं
 बल में धकेल दूँ परन्तु तभी मीनिया ने कहा, "बप्ताह ने ठीक ही तो
 है। आज मन्नी से निष्पन्न जाए तो कम की क्या छिक? यह जगह
 १) अच्छी है—हम बाँसों की आर में छिने हुए हैं, सारस खोल रहे हैं।
 २) प्य-दूरा और सुवर्ण जैसा जमजमा रहा है—फिर क्यों न हम भी
 मत होकर आनन्द मनाएँ?"
 मैंने गोबा और पापा वि वह बुद्धिमानी की बात कर रही थी। फिर
 १) कहा :
 'जब तुम दोनों ही मूर्खता पर तुले हुए हो तो फिर मैं क्यों न कहूँ ?"
 २) पर हम दोनों नदी में बूढ़कर गुरु नहाने और मंदिरा पीकर आनन्द
 ३) में। मीनिया ने अपने देवता के लिए बलि दी और फिर जो अद्भुत
 गने बिना तो मैं बलिया बामकर रह गया। जब उसने नृत्य रोका
 दीर्घ श्वास छोड़कर कहा :
 मीनिया ! मैंने अपने जीवन में एक ही स्त्री से अभी तक बहिन कहा
 न उगवा आनिपल अग्नि के मयान और उसका शरीर मूलमा देने
 १) जन्मान की धर्मि था जिसने मुझे कोई आनन्द प्राप्त नहीं हो पाया।
 २) १ ! उस आदु से मुझे मुक्त कर दो जिसमें मुझे तुमने जेबावर मेरे

हाथ-पांव ढीले कर दिये हैं। मेरी ओर उन नेत्रों से न देखो जो नदी के जल पर फैले हुए चन्द्रमा के प्रकाश जैसे लगते हैं। अन्यथा कहीं मैं तुम्हें भी 'बहिन' न कहने लग जाऊँ और तब तुम मुझे अन्य स्त्रियों की भाँति बर्बाद और मृत्यु की ओर ले जाओगी—यह मैं जानता हूँ !”

उसने मेरी ओर विचित्र दृष्टि से देखा, फिर कहा, “शायद तुम किसी विचित्र स्त्री के फेर में पड़ गये हो—सिन्धूहे ! शायद तुम्हारे देव की स्त्रियाँ ऐसी ही होती हो—पर मेरे सम्पर्क में तुम्हें कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। मैं तुम्हें फँसाना कभी नहीं चाहूँगी क्योंकि मेरा देवता मुझे पुरुष-सम्पर्क के लिए तो आज्ञा ही नहीं देना।”

और उसने मेरा सिर अपने कोमल हाथों में लेकर अपने घुटनों पर रख लिया और मेरे गालों पर तथा चानों में उँगलियाँ फेरती हुई बोली :

“स्त्रियाँ ऐसी भी होती हैं जो तरे-धरे को मरमूमि बना देती हैं। हुआ मैं विष धोल देती हूँ कि जो भी उनका जल पिये वही मर जाए। परन्तु ऐसी भी तो होती हैं जो मरमूमि में फँवारे की भाँति होती हैं, और उड़ते हुए उद्यान में नीहार की स्वच्छ बूंद जैसी पवित्र होती हैं। तुम मुझे, शायद तुम्हारे बाल काले और कड़े हों और तुम्हारे भेजे में मूर्खता भरी है फिर भी प्यारे और लुभावने लगने लगे—और इसीलिए मैं और भी उदास हूँ कि जो कुछ तुम मुझसे चाहते हो वह मैं तुम्हें नहीं दे सकती—यदि सच यह है कि स्वयं तुम्हें चाहकर भी तुम्हें आत्मसमर्पण करने में असमर्थ हूँ।”

मैंने उसकी गहरी हरी आँखों में देखकर उसके हाथ सज्जनी से पकड़ कर कहा :

“मीनिया, मेरी बहिन ! मैं देवताओं से ऊँच गया हूँ। बाम्बू में इन सबको मनुष्य ने ही भय के कारण मान लिया है। अपने देवता से छुड़ी तो क्योंकि उमरी माँग खूब है—वह तुम्हारा मुँह छीनना चाहता है। मैं तुम्हें दूर, बहुत दूर ऐसे देव में ले चर्चूँगा जहाँ तुम्हारा वह देवता कभी न पहुँच सकेगा—वहाँ हम बाँवों के झुरमुट में रहेंगे। घाम और गलितियाँ गायेंगे और जगलियों के साथ जीवन व्यतीत कर देंगे। निश्चय ही तुम्हारे देवता की कोई भीमा तो होगी ही—हम उसमें भी बाहर बने पड़ेंगे।”

“मेरा देवता मेरे हृदय में बसा हुआ है।” वह बोली और अपने मुँह

लया । फिर धोड़ी देर बाद वह कहने लगी -

“मैं भी कोई सँवार नहीं हूँ जो तुम्हारा आश्रय न समझी होऊँ । मैं भी निभायाँ जानती हूँ और उन्हें तिर भी सबती हूँ । मैं छुटपन से ही । की सुननाल मे पली हूँ और बँसो के घने मीनो के बीच हड्डारो मेयो के सम्मुख नाची हूँ । जायद तुमने तो कभी ऐसा दृश्य देखा भी ना जब युवक और युवतियाँ मोड़ो की बीच नाचने हो ।”

“मैंने कभी सुना भी नहीं है,” मैंने उत्तर दिया, “पर यदि मुझ्गा र मैं मोड़ो के लिए छोड़ दूँ तब तो वह वाग कुछ मुझे खँबनी नहीं । नि सुना है कि मीरिया में पुजारी लोग पृथ्वीमाणा की कान के लिए यो को बकरों के साथ छोड़ देने हैं ।”

और तभी मेरे गानो पर तड़ानड कई ओर के पण्ड उमने दे भारे रह मुझे मालियाँ देने लग गई । मैं उठकर बड़ी से चला आया ।

धोड़ी देर तक वह एरी से होलक-मी बजानी रही फिर बाँध से फँस-हुए बग उठी और उसने अपने सम्पूर्ण वस्त्र उतार फेंके और अपने में लैल लगाया फिर वह हलती पूर्ण के साथ जगदी मुख्य करने लगी पडे मेयो से देखता ही रह गया । उसके धमाकी से लार डगमगाने पर उसे जैसे हमका ध्यान ही नहीं था । उस लाकब्दगरी देर को तथा दुष्कृत मुख्य की, क्रियम वह अपने अल-अल को लबा लेती थी और की तरह लचकीली होकर कभी हाथो पर मुख्य करने लपती तो कभी न, देखकर मेरे मन का मोड़ चल गया और मैं उसी मेयो से उसे चला ।

वह वह पानी से भीग गई और कचकर खू हो गई तो उसने अपने को चक्को से डँक निदा और बैठकर रोने लगी ।

नि उमने कहा : “मेरे कारण न राओ भीनिया ! मैं मुझसे कुछ भी नहीं भीगूँगा, मुम निर्दिष्ट रहो ।”

मैंने अंगू पोटाकर मेघ उठाने और कहा, “मैं तो अपने भाग्य पर है जिसने मुझे मेरे देखने से दली दूर कर दिया है और इतना दुर्दर दया है कि एक दुर्भे के मेयो के सम्मुख मेरे देर इदमग लगे हैं ।”
मे अर्ध उमका मुझसे था । वह फिर बहने लगी :

“हमारे देश में हर पूणिमा को एक सुन्दरी युवती देवता के प्रकोष्ठ में भेज दी जाती है। जो युवती इसके लिए छँटती है वह इसे अपना भाग्य समझती है। हमारा देवता समुद्री देवता बतलाया जाता है और एक अन्ध-कार-सम्पूर्ण विभाल घर में रहता है। कोई भी उसके पास एक बार जाकर फिर वापस नहीं लौटता। कहने हैं कि उससे एक बार मिलने के बाद संसार में उस युवती के लिए कोई प्रसन्नता नहीं बच रहता। कोई कहता है कि उसका सिर बेल जैसा है और कोई उसे बेल के सिर वाला मनुष्य देह वाला अद्भुत प्राणी बतलाता है। मैंने छुटपन से ही देवता की शंका, उसके सह-वास और उसके साथ अमरता प्राप्त कर लेने की बातें सोची हैं—हालाँकि जब मेरा नाम उसके लिए छँट लिया गया था, उसके एक भास के अन्दर ही एक शाम जब हमारी नाव नदी में भटक गई थी तो मुझे सौदागरों में उठाकर सुन्नर खेबीलोन में आकर बेच डाला था, परन्तु फिर भी मैं देवता की परिणीता तो हूँ ही। वैसे मैं उस बन्धन से अब मुक्त हूँ परन्तु हृदय मेरा देवता में ही लग चुका है। अब मैं केवल उसी की हो सकती हूँ अन्य किसी की नहीं। देवता के सम्मुख हमें वहाँ नृत्य करना होता है और इसी-लिए छुटपन से ही हमें बेलों के पीने सीपों के सामने उनके चारों ओर से बचकर नृत्य करना सिखाया जाता है। यही है मेरी कहानी सिम्बूहे! और इसी-लिए मैं तुम्हें चाहकर भी तुम्हें...”

‘तुम्हारे बेलों का नाम सुनकर मैं अब समझ गया हूँ कि तुम्हारा देग जीट है।’ मैंने कहा, “स्मर्ता में मैंने सुना था उस स्थान के बारे में। वहाँ लोगों में यह भी कहा था कि देवता के उस घर के अन्दर से जाकर पुत्रायी लोग युवतियों की हत्या कर देते हैं जिससे वह कभी लौटकर आ ही न सकें—पर तुम निश्चय ही अधिक जानती होगी क्योंकि तुम जीट की ही हो।”

कोई और होता तो नायद उममे बलात्कार कर देता। परन्तु मैंने उसे छोड़ दिया। क्यों? क्योंकि यह मैं समझ गया था कि वह अपने देवता में विमुख होकर कभी मुझ न पा सकेगी। देवताओं का अमर ही होता है उन पर जो उन्हें मानते हैं, उन पर विश्वास करते हैं।

शाम होने-होने बग़ाह नींद में जाग उठा और बोले मायना हुआ
ममूह (दादी) मेरा हुआ कहने लगा ।

‘देवना बी बगम — ही भुन गया — अममन बी भी बगम । अब मो
मे बिम्बुन टीक हूँ । दर भुन मे तो मेरा भुन हान हूँ ।’

और बिना पुँदे ही कह हमारे मान पर आ रहा । दिन उभे देवने ही
बता :

‘‘छाई ! छाई लो हानन कुरी हो गरी है और नु बार-बार बहिया
दीकर मो जाना है । जानना है कि मछान के नीजिन हुँदकर हपर आ निवने
तो नीलो ही दलदे लदे मछन बालिन ?

बग़ाह में मिन मुराया और विन कुछ मोचकर बता, ‘‘माव मो दह
हम नीलो मे मेई मरी या मचनी बडाकि दह बरी बहून है और विन माव
केने वर बाव भुने पगम भी मरी है बडाकि दलदे हाव म दाने वर जान
है । वरभु दहा रबला भी मचन मे लाली मरी है । दलमिन हमे छाई मे
मुराया बिनादे उदरकर बाव देना बालिन, बीमे भी माव बाने का मरीव है
माव दोरकर लो जादेन मरी बडाकि दही बरी काम-मान लिले हान होन और
दलदर वर दल मिनकर हवाही हवाही ही वर है बडाकि बहून देर मो बह
दलदर बी, मरी वरेम । विन बहकाह के नीजिन का भी भव है । अममन
हम बीने बहदे मचकर वर मे वर लालन मेकर छाई मे वर देना बालिन
मिनमे जादे मचकर हवाही बीमे बहरी को देवकर मिली का वर मरी ।

दलबी छाई मे लाले का । हव लाले मुराया बहरी वर वर बह मे बीला
वरे वर दल । बह वर भी हवमे दल लाल ली । बी बहरी बीहदलो के
बहव वर दलका दही बहकाह का दलमिन बीमे दल बग़ाह बी बीह दल
हाना बीहकर लाला दिला हानमिन बह कुरी लाले बिनाय वर मुरा का ।
दलन बह

‘दलदु वरन म दले बालिन वर बीह दलका और दल वर वर बीला
विन मुरा बीह ही । मुरावे मिन वर वर बीहकाह वर और मिन वर बीहकाह वर
वर वरन बहकाह वर बीह ही लाला है । वर मुरा ली बहकाह वर वर ।
बी बीहकाह वरन मिनमे बीह मुराईका और दल लाली बहकाह वर लाला मिन
वर ली । हव लाले हवाही बहकाह को दल लाले वर म वरन वर मिन

न हमें कोई टोकेगा।”

फिर हमने जितना सोना-चाँदी हमारे पास बचा था उसे अपनी कमरों में बाँध लिया और चल पड़े। चलने समय दो पात्र भरकर मदिरा भाव में छोड़ आये। कप्ताह ने कहा “नाविक जाने ही मदिरा देखकर पढ़ने इने पीयेंगे और इस बीच हमें दूर निकल जाने का मौका मिल जायेगा। यदि उसके बाद उन्होंने आधिकारियों से जाकर शिकायत की तो भी उनकी इस नशे की हालत में उनकी बातों का कोई विद्वान नहीं करेगा—उल्टे उनकी पीठ पर डडे और पड़ेगे।”

और हम बेबीलोन के गाँवों में होकर पद-यात्रा करने लगे। हम इनके गढ़े और गरीब लगते थे कि कोई हमारी ओर ध्यान ही नहीं देता था। धूप से हमारी छाते जल गई थी और मैं लोगो की ज्योतिष से उनके भविष्य बनाया करता। मार्ग में यदि कोई सभ्रांत व्यक्ति कुर्सी पर जाता होता तो हम रास्ता बनते उसे सिर मुका देते। कप्ताह गडब का झूठ बोलता, उसने सहजादियों की जादू की अनेकानेक बधाएँ लोगों की गड़-गड़कर सुनाई। उसने कई स्थानों पर कहा कि ‘अमुक’ देश में लोग ऐसे होते थे जो साल में एक बार भंडिये बन जाया करते और जब सोचने-सोचने थक जाते तो अपने सिर को कंधे पर में उतारकर काँत में दबा लेते थे। लोग उसका विद्वान कर लेते और उसे खूब अच्छा खाना खिलाते थे। मीनिया अपने देवता के सामने नृत्य करने के लिए नित्य नृत्य करके अपनी आदत बनाये रखती और उसे देखकर लोग उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते और कहते “ऐसा नृत्य कभी न देखा न सुना।”

इस यात्रा में मैंने यह सीखा कि हर देश में भाषाएँ, देवताओं के नाम और रीति-रिवाज अवश्य भिन्न होते हैं परन्तु सभी जगहों में धनवान और गरीबों का रहन-सहन, मोचने की शक्ति और अधिकारों के पीछे लगे एक से ही होते हैं। गरीब हर जगह एक से ही होते हैं—उनका दुःख सभी स्थानों में अनर्गनीय होता है। मेरा हृदय उनके दुःख को देखकर त्रिप्त गया और गाँवों में उस भेष बदले हुए काल में भी मैं उनका दयालु स्निह बिना न रह सका। कड़ियों के फाँड़े मैंने काटे और घट्टन सों की आँखें मार कीं।

और इसी तरह हम मितन्नी देश की सीमा पर पहुँच गये। वहाँ चर-वाहों ने हमें सरीब जानकर मार्ग दिखाया और सीमा के सैनिकों से भी हम से कोई प्रवेग-शुल्क वसूल नहीं किया।

नाहरानी नगर में पहुँचकर हमने अल्ले वम्प सर्रीदे और फिर वहाँ की सबसे अच्छी सराय में ठहरे। और क्योंकि मेरा धन समाप्त हो चला था, मैंने वहाँ अपना पेशा शुरू कर दिया। मितन्नी देश के लोग भी कई औपधियों से आकर्षित होकर मेरे पास आने लगे और मेरे पास फिर सोना खरगने लगा। मीनिया की सुन्दरता से लोगों ने आकर्षित होकर उसे माल मिला चाहा। और कप्ताह फिर आराम करके मोटा होने लग गया।

दिन गुजरने लगे और मेरा धन बढ़ने लगा। मीनिया दिव्य रात्रि के समय रोनी और मुझे पुरा करती। मैं जानता था कि वह मुझमें क्या चाहती थी। परन्तु मैं उससे बिछुड़ना नहीं चाहता था। अन्त में मैंने एक दिन हानी देग जाना निश्चित किया। वहाँ हितैसी लोग रहने थे जिनके बारे में मैंने बहुत कुछ गुप्त रखा था। मैंने मीनिया से कहा।

“हाली देग में छोट सीधे जहाज जाने है यहाँ ॥ नही; अन्यथा पहुँचे वही जाना ठीक रहेगा।” परन्तु मैं जानता था कि मैं उसे धोखा दे रहा था। पर उससे बिछुड़ना भी तो मैं नहीं चाहता था। करना भी क्या, शास्त्र कह जब वह अपने देवता से मिलने को इतनी इच्छुक थी। मैं यह तो जानता ही था कि एक बार छोट पहुँचने पर तो वह मुझसे सदा के लिए बिछुड़ जायेगी।

एक बारशी के साथ हानी देग जिसे पेटा भी कहने थे, मैंने जाना निश्चय किया। कप्ताह ने जब यह सुना तो वह चिस्लाने लगा और उसने मिय के तमाम देवताओं की दुहाई दे डाली। फिर अपने छोटे से देवता का नाम लेकर वह यात्रा की लैदारी में लग गया। उसे मुझे विश्वास दिवाना पड़ा था कि यात्रा समुद्र के रास्ते नहीं करनी थी क्योंकि वह जल के मार्ग में अशुभ ही भय करता था।

मितन्नी बारशी के साथ यात्रा में कोई बिसेपना नहीं पड़ी। हितैसी

मोगों ने हमें रास्ते में साने-बीने की कमी नहीं होने दी। वह लोग बहुत बड़े होन हैं। उन्हें सर्दी-गर्मी तो जैसे सताती ही नहीं है। उन्हें छुटने से ही बटोर जीवन व्यतीत करना सिखाया जाता है। मुझ उन्हें अत्यन्त श्रम होता है। कमजोर मुल्कों से वह घृणा करते हैं और उन्हें दबा लेते हैं और पराजयी लोगों से मित्रता बनाये रखते हैं।

उनका राष्ट्र कई छोटे-छोटे गाँवों, कबीलों और नगरों में बँटा हुआ है। हर एक में एक-एक राजा होता है और वह सब हानी देश के सम्पादकों ही अथवा मानिक मानकर चयन हैं जोकि अपने पर्वतीय नगर हनुमान में रहता है। कभी उन सबका सबसे बड़ा पुजारी सेनापति और उच्चतम न्यायाधीश है। नगर पर राज्य करने के दोनों अधिकार—नागरिक और धार्मिक उसको प्राप्त है। ऐसा पूर्ण अधिकार मैंने कहीं नहीं देखा न सुना। गभीर जगह और नामक मित्र में तो धार्मिक वर्ग का सम्पादक के ऊपर भी आधिकार रहता है।

यद्यपि लोग नगर के बड़े नगरों का उल्लेख करते हैं तो प्राचीन या बेबीलोन और कभी-कभी निनवैह (जो मैं नहीं देखा है) का ही नाम लेते हैं। कोई द्वितीयों के इस महानगर हनुमान का नाम नहीं लेता हनुमन्ति पर्वत पर बसा हुआ यह नगर अत्यन्त मोघनीय और महान्। यहाँ ऊँची ऊँची पथार में लगी हुई इमारतें हैं और यहाँ का परबोण अत्यन्त है। इसका कारण मैंने यहाँ आकर यह जाना कि यहाँ के सम्पादक अपने देश को परदेसियों के लिए विष्णुन बन्द कर रखा है। देश के केवल बने राजदूत सम्पादक के सामने पहुँचकर उत्तार घंट कर सकते हैं बिना पूर्ण बिना प्रमाण है। यानी है। अन्यथा बहूनों को तो अपने उत्तार प्राप्त के कठिनी बरस में गलत कर लेना पड़ता है। जो भी परदेसी सारी आया है उस पर राज्य की ओर से कहीं निराह नहीं जाती है। उसके पीछे बड़ा सम्पत्ति अने विचार है जो उनकी सर्जिस्ट को देना करते हैं। वेने इस के लोग मैं न जान है सर्जिस्ट काह्न के आँखों के साथ अनेक से बने करते हैं। दर्द वह हम बिना अहर्निश करत करते होते हैं जो दन्ते बड़ बड़ ही अत्यन्त करते हैं और वह सम्पादक में उनके बीजे-बीजे कहीं कुछ महत्त्व पर आता है। पर सम्पादक के वह उनके सर्जिस्ट को देना करते हैं। दर्द काही उनके कुछ

पूछे भी तो उत्तर देने हैं "मुझे मालूम नहीं" या "मैं समझ नहीं"।

इस देश में सम्य देशों की भाँति सैनिक नौकर नहीं रहे जाने। यहाँ हर नागरिक सैनिक होता है। उनका दर्जा उनके जन्म से नहीं माना जाता बल्कि इससे जाना जाता है कि उसकी कितनी हैमियन है। यदि किसी के पास रथ होता है तो वह ऊँचे दर्जे का सैनिक माना जाता है। अन्य बड़े नगरों की भाँति हस्तुगाम व्यापारिक केन्द्र नहीं है। यहाँ तो जैसे घर-घर लौहसारी खुसी हुई हैं और दनादन अस्त्र-शस्त्र बनाये जाने हैं।

जब मैं वहाँ पहुँचा, उन दिनों वहाँ महान् मुम्बिमुन्एमा अट्टाईस वर्ष तक राज्य कर चुका था। उसका नाम ही लोगों के लिए आतंक का विषय था। लोग उसे केवल सुनकर ही सिर झुका लेते और दोनों हाथ उठाकर उसकी स्तुति करने लग जाते। वह नगर के बीच एक परंपर के बने हुए विद्यालय महल में रहता था और उसके चारों ओर अनेक कपारों प्रचलित थीं जैसे हर देश में हर सम्राट के चारों ओर होती हैं, खास कर जब कि वह उन्वैस्त हो। मैं उसे कभी नहीं देख पाया।

हस्तुगाम में लोग अपनी बीमारी छिपाकर मर जाना ज्यादा प्यार करने हैं बजाय इसके कि उसका इलाज कराया जाय। यहाँ रोगी होना जैसे अपमान का विषय माना जाता है। दुर्बल बच्चों और रोगी दासों को तो वह बिना हिचके मार डालते हैं, इसीलिए वहाँ के बेटे प्रायः गेंवार हो होते हैं क्योंकि उन्हें रोग का ज्ञान ही नहीं होने पाना। फिर भी उनके पास शरीर की गर्मी धामन करने की विविध और आश्चर्यजनक औषधियाँ होती हैं जिन्हें सीखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। हिनैमियों को जैसे घ्रातु से भय नहीं होता।

फिर भी सभी महानगर के रहने वालों की आदत एक-ही नहीं होती है। जब मेरे ज्ञान और विलक्षण इलाज की ख्याति फैली तो लोग मेरे पास गाम के बाद छिप-छिपाकर आने लगे। वह मुझे उनके रोगों को छिपाकर रोगों के लिए असम उपहार देने से क्योंकि यदि उनका रोगी होना अन्य कोई जान लेता तो वह समाज में लोगों की निगाहों में गिर जाते। हस्तुगाम में यहाँ मुझे भय था कि भूगो मरने की हासन न पहुँच जाय, मैंने काफ़ी धन कमाया। योनिजा मेरे रोगियों के मामले अपना अद्भुत नृत्य बरनी

और सोच उसे बहुमूल्य उपहार देने। वह इससे अधिक उससे और कुछ न चाहें क्योंकि एक तो वह कभी किसी स्त्री से वलात्कार नहीं करने, दूसरे वह उदार हृदय भी होने हैं और प्रसन्न होकर मुक्त हस्तों से उपहार और धन लुटाने हैं।

एक दिन मेरे पास सम्राट् का एक उच्चपदाधिकारी आया जो उसके पुस्तकालय का निरीक्षण करता था। वह कई भाषाएँ लिख और बोल सकता था और राज्य के तथा अन्तर्राष्ट्रीय पत्रव्यवहार किया करता था। मैंने उसका इलाज किया और मीनिया ने उसे नृत्य से सुभाया। थोड़े ही दिनों में मैंने उसे विश्वास दिला दिया कि मैं मित्र से निकाला हुआ व्यक्ति था जो वहाँ कभी वापस नहीं आ सकता था। यह कि मैं वैद्य होने के नाते केवल धन कमाने और ज्ञान प्राप्ति के लिए ही उत्तुङ्ग था और इसीलिए देशाटन किया करता था। बातों ही में बातों मैंने उससे पूछा, 'हस्तुजाग परदेशियों के लिए अन्ध क्यों कर रखा गया है?' जबकि वह मीनिया के नंगे कंधों की सुन्दरता देख-देखकर ललचा रहा था। उसने मदिरा का घूंट लिया और मेरी ओर देखा। मैंने फिर अपना प्रश्न दोहराया और कहा, "...और खासकर जब यह इतना बड़ा और महान् नगर है—क्यों नहीं यहाँ भी परदेशियों को आनंद दिया जाता कि अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान फैल सके?"

उसने उत्तर में कहा, "हमारा महान् सम्राट् सुम्यसुल्लिगुमा जब सिंहासनाब्द हुआ था तो उसने कहा था, "तीस साल में मैं हाती देश को ससार का सबसे बड़ा देश बना दूंगा और अब वह तीस साल पूरे होने वाले हैं। और तब मेरा विचार है कि ससार यहाँ के बारे में इतनी अधिक जानकारी प्राप्त कर लेगा कि..."

'लेकिन' मैंने कहा, "बेबीलोन में तो मैंने साठ के साठ गुने और फिर साठ गुने, इतने सैनिक बादशाह के सामने बर्बाद करने देने थे जिनके पैरों की आवाज ऐसी थी जैसे कोई समुद्र गरज रहा हो। और यहाँ तो दस बादमी भी इकट्ठे चलने मैंने नहीं देने हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि इस पर्वतीय प्रदेश में तुम लोग इन रथों का क्या करने हो जब उन्हें चला नहीं गवने? यह तो मैदानी इलाकों के लिए होते हैं। यहाँ विभिन्न जग

है नि पर-पर सोहमारी है।”

वह मुनवर हँसा, फिर बोला :

“मिथी मिथूदे ! सैध होकर मुम्हारी यह चिन्ता खर्च नहीं बहरी जा सकनी क्या ? शायद हम रम बेचकर ही अपना निर्वाह करने हों, तो ?” और उसने अपने नेत्र अघर्मूदे बरके मेरी ओर और मेरे देगा ।

“यह बिरुममनोय बाल नहीं हो सकनी”, मैंने कहा, “क्योंकि भेटिये अपनी दाढ़ें छोरी को उछार नहीं देने ।”

मेरी निर्भीकता पर वह मुग्ध हो गया । शायद उसे अब बिन्तुम ही मर नहीं रह गया था । वह बही ओर से हँसने लगा और उसने अपने घुटने लुब ठोके । फिर कहा

“हिनियाँ का म्याय सैदावों मे भिन्न होरा है । शायद मुम्हें और मुम्हारे देस बागो को हिनियाँ का म्याय देखने के लिए अब बहुत प्रतीक्षा नहीं बानी पड़ेगी मिथूदे । मुम्हारे देसों मे अभी मौसम मरीकों पर गजब करने है । परानु हाजी देस मे ऐसा नहीं होरा । यहाँ तो कपडान दुर्बम पर राज करने है ।”

“परानु हमारे मदे जगज्ज का तो एक मया देवता बनता है जो दूध मरि बाहता ।” मैंने जोरा तो वह कहने लगा

“बह मे जानना है क्योंकि मैं ही तो मछाद के तयाम पत्र पाता हूँ । एतका बह देवता जानि का पाठ मक्करो मिलता है और दूध मया रक्क-पात्र नहीं बाहता । इसे उतमे कोई आपत्ति नहीं है बल्कि हम तो उसे बाहते है अब मर कि बह मिथ मे मया सैदावों मे बना रहे । मुम्हारे जगज्ज मे हमारे मजानु मछाद के पात्र एक दिखी मरीम रैना परब धिखा है जिसे बह जीवन का बिना बहका मुबारका है । और हमारा कामक भी कुछ बरों मर निम्बव ही जानि पड़ेगा और बिदेस मर मे अब मर कि मछाद एत मोल धिज्जा रहेगा जिसमे कि और लीका मोला और मजानु मरीम का मनेम और मोदमरिया व मजानु मरुम मरुदे और मरिमा मरि रक्क मरुदे का मरुदे । इन मरुदे लिए अब बहुत मजानी होना है और हमारे मछाद के दाँती हनुज्ज मे मजानु मर के मरुम मरुदे और निम्बव मरुदे बाहे एक मर मर निदे है जिसे बह मुनर हमों के उछार देगा है ।

लेकिन वह ऐसा क्यों करता है यह मुझे नहीं मालूम ।”

“तुम्हारी भविष्यवाणी से कोए और गीदड़ भले ही खुश हों पर मुझे तो यह विषय सुनने को भी बुरा लगता है,” मैंने कहा, “मितन्नी में तुम लोगों के जुल्मों की भयानक बातें नहीं जाती हैं, आखिर सम्प्र होकर ऐसी बातें तुम लोग करते क्यों हो ?”

‘सम्प्रता ?’ उसने पुनः मदिरा ढालकर कहा, “यह क्या होती है ?” वह मदिरा पीने लगा । थोड़ी देर बाद फिर बोला, “यदि हमसे आगम सिखने-पढ़ने का है तो हम भी कई भाषाएँ सिख-पढ़ सकते हैं और मिट्टी की तख्तियों को किताबखानों में जमा कर लेते हैं । हमारा तो उद्देश्य यह है कि हमारा आतंक चारों ओर फैल जाय, कि जब हम उठें तो सड़े बिना ही दूसरे हमारे सामने भय से हथियार डाल दें । क्योंकि हम भी बरबादी नहीं चाहते कि भार-काट, तोड़-फोड़ के बाद किसी जगह को दबायें, तुमने तो सुना होगा कि डरपोक दुस्मन को आघा हारा हुआ समझिये ?”

‘इसका मतलब है कि सभी तुम्हारे शत्रु हैं ।’ मैंने कहा, ‘तुम्हारा कोई मित्र नहीं है ?’

“हमारे शत्रु वह जो हमारे सामने आयें और मित्र वह जो हमारे सामने सिर झुकाये और हमें नजरे दें,” वह आराम से हथेली फैलाकर बोला ।

“परन्तु क्या तुम्हारा कोई देवता ऐसा नहीं है जो तुम्हारे इन कुबर्माँ को रोके ?” मैंने उसकी अवहेलना करते हुए कहा, “जो क्या सही है क्या गलत है तुम्हें बताये ?”

“यह जानना तो बहुत ही सरल है,” उसने कहा, “सही वह जो हम चाहते हैं और गलत वह जो हमारे पड़ोसी या अन्य कोई चाहते हों । इस सिद्धान्त से जीवन और राजनीति दोनों ही सरल हो जाती हैं । बंते मैं जानता हूँ कि हमारा सिद्धान्त मैदानों के सिद्धान्तों से तनिक भिन्न है । वहाँ देवता लोग उसे सही समझने हैं जो अमीर चाहते हैं और उसे गलत समझने हैं जिसे गरीब पसन्द करते हैं ।”

“इन देवताओं के बारे में जितना अधिक ज्ञान मैं एक्त्रिज करता हूँ उतना ही उदास हो उठता हूँ ।” मैंने धुनापूर्वक कहा ।

उसी काम मैंने भीनिया से कहा, “हाली देश मे मैं जो कुछ जानना चाहता था वह मैंने जान लिया है, अब हम फीट चल सकते हैं। मुझे वहाँ सागों की बढबू आने लग गई है और मेरा दम सा घुटने लगा है।”

तत्पश्चात् कुछ उच्च अधिकारियोंकेद्वारा जो मेरे मरीज थे, मैंने आम रास्ते से समुद्र तट पर पहुँचने के लिए आज्ञा प्राप्त कर ली। हालाँकि जोगी ने मुझसे बहुत कहा कि मैं न जाऊँ परन्तु मैंने जामा ही जब निश्चय कर लिया था तो फिर उन्होंने मुझे अधिक नहीं दबाया। हल शादा की भयानक दीवारों को छोड़कर हम गधों पर चढ़कर निकल आये। मार्ग के दोनों ओर जाहूगरो की सार्सें पड़ी थी और गुलाम जिनकी आँखें निकाल ली गई थीं, भारी-भारी चक्की के पाट चला रहे थे। पूरे बीस दिन बाद हम समुद्र तट पर आ पहुँचे।

हम इस नगर में कुछ समयतक रुके रहे, हालाँकि यह छोटा, कोलाहल-पूर्ण और सारी बुराइयों और ज़ुर्मों का केन्द्र था। जब किसी छोटे जहाज को हम देखते जो फीट जाता होता तो भीनिया कहती, “यह जहाज इतना छोटा है कि अवरध मार्ग में डूब जायेगा—मैं इसमें नहीं जाऊँगी,” जब बड़ा जहाज देखती तो कहती, “यह लीरियन जहाज है—मैं इसमें नहीं जाऊँगी” और किसी ओर की जब हम देखते तो कहने लगती, “इस जहाज के कप्तान की आँखों में शीतान है, यह हमें परदेश में बेच दालेगा।”

और हम उस नगर में रुके रहे। मुझे इसकी भी कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि मेरे पास तो वहाँ भी बहुत काम आ गया।

एक दिन मेरे पास मन्दरगाह का उच्चाधिकारी अपनी चैचक का इलाज कराने आया। मैं इस रोग के शमन की विधि स्मर्ता में सीख चुका था और मैंने उसका इलाज कर दिया। जब वह ठीक हो गया तो बोला : “सिन्धुदे ! मैं तुम्हें क्या दूँ ?”

मैंने कहा : “मुझे तुम्हारा सोना नहीं चाहिए, मुझे तो तुम अपना यह चाकू दे दो जो तुमने कमरमें लटकाकर रखा है। यह मुझे तुम्हारी याद सदा दिलाता रहेगा—उपहार मेरी दृष्टि में धन से अधिक मूल्यवान होता है।”

मुनकर उसने विरोध करते हुए कहा : “यह तो एक मामूली चाकू है— न तो इसकी धार ही तपी हुई है न इसकी मूँठ में चाँदी लगी है।”

मैं जानता था कि वह मुझे डालने का प्रयत्न कर रहा था क्योंकि उन्हें उनके सम्राट की आज्ञा थी कि वह उन वस्त्रों को न बेचें न किसी को दें। वह नहीं चाहता था कि उस नई धातु के बारे में बाहर संसार में कोई जानकारी फैले। वह उसे अपने समय तक छिपा रखना चाहता था। मैंने इस नीली चमकती धातु के बने हुए एक-दो चाकू मितलनी में भी धनिकों के पास देसे थे और वहाँ वह उनके घोड़ के दसगुने सोने में भी नहीं खरीदे जा सकते थे। वह उनकी मूँठ पर सोना जड़वाकर बड़े गर्व के साथ उन्हें कमर में बाँधने थे। परन्तु यहाँ उसका मूल्य कुछ भी नहीं था क्योंकि यहाँ यह बिक ही नहीं सकता था।

यन्त्रगाह के उच्च अधिकारी का ज्ञान था कि मैं शीघ्र ही अन्य देश को जाने वाला था अनएव जब मैं उस चाकू को लेने पर ही अड़ा रहा तो उसने उसे मुझे दे डालने में कोई आपत्ति भी नहीं समझी। इस तरह वह अपने लिए अपना सोना भी बचा रहा था। उसने मुझे वह दे दिया।

वह इतना पैसा था कि उससे बेहतरीन हजामत बन जाती थी। टाँग के बने अस्त्र-शस्त्रों की धारों को वह काट डालता था और उसकी अपनी धार का कुछ भी नहीं बिगड़ता था। मैंने उसके फलक पर चाँदी फिरवाई और मूँठ में सोना जड़वाकर कमर में सटका लिया।

इस नगर में एक स्थान ऐसा भी था जहाँ बेलों के सामने युवक और युवतियाँ नृत्य करते थे। और यही मैंने मीनिया को प्रथम बार कुछ हाँव के सम्मुख अद्भुत नृत्य करते हुए देखा। एक पतला वस्त्र पहने सिर के मुनहले बाल सोले वह अद्भुत सुन्दरी किसी देवी की भाँति नृत्य कर रही थी। साँझ ढक्कराकर उस पर टूट रहा था पर वह जैसे फूल की भाँति हवा में तैर जाती और पता भी नहीं चलता था कि जब उसने उसके सींग पकड़ कर कला लगाई और बेल की पीठ पर आ गई। कभी वह अघोर दिव्यता तो कभी भूमि पर। लोग चिल्ला रहे थे, “ऐसा कभी नहीं देखा।”

और मैं स्वेद दनय उत्सुक हृदय लिये उस देवी नृत्य को फटी आँखों से देख रहा था।

इसके कुछ ही दिन बाद छोट का एक जहाज आया। यह न बहुत छोटा था न बहुत बड़ा और इसके कप्तान की आँखों में शैतान भी नहीं था। वह भीनिया की मानुषाया बोलता था। भीनिया मुझसे बोली : “मैं इसमें चली जाऊँगी—यह मुझे मेरे देवता के पास निविध्न पहुँचा देगा—अब मुझे आना दो—मुझे अब तक के कष्ट के लिए क्षमा करो।”

“तुम तो जानती हो भीनिया कि मैं स्वयं भी तुम्हारे साथ चोट जा रहा हूँ,” मैंने कहा।

और उसने मेरी ओर चाँदनी में चमकते हुए समुद्र के समान नेत्रों से देखा और अपने रंगे हुए होठ हिलाये और ब्रह्मान जैसी ध्वनि नचाई। वह बोली :

“मेरे साथ तिन्यूहे ! तुम चोट क्यों चलना चाहते हो ? मैं तो इस जहाज में बिना किसी अतरे के सीधी पर पहुँच जाऊँगी—तुम व्यर्थ कष्ट क्यों कर रहे हो ?”

“तुम तो जानती हो भीनिया।” मैंने उत्तर दिया।

और उसने दीर्घ द्वास छोड़कर अपनी उँगलियाँ मेरे हाथों में दे दीं फिर कहा : “हम साथ बाकी आगे बढ़ गये हैं तिन्यूहे ! मैंने इनके सारे देव और इतने सारे लोग देव लिये हैं कि अब मेरी मातृभूमि मेरे लिए कोई विशेष महत्व नहीं रखती और अब मैं अपने देवता के लिए उतनी उत्सुक नहीं रहती। तुम तो जानते हो कि मैंने जान-बूझकर इस यात्रा को बाकी टाला है कि इस आय तो शायद टन ही आय। पर हार ही मैं जब मैं फिर बीलों के सामने नाचती हूँ तो मेरे मन में यह मान जम गई है कि यदि तुम्हें मैंने आत्मसमर्पण कर दिया तो मेरी मूर्त निश्चित हो जाएगी।”

“बहु टोर है, डोक है,” मैंने ऊबते हुए उत्तर दिया : “बहु सब तो पुरानी बातें हैं, उन्हें दोहराने में क्या प्रयोजन भी रहा है ? ॥ तुम्हें पाना भी तो नहीं चाहता कि तुम्हारा देवता मुझसे हाथ धो बैठे। और फिर जो कुछ तुम्हारे पास से मिल सकता है, चप्पाह के बड़े अनुसार, किसी भी सुवर्ण दागी से मिल सकता है—यह तो सभी एक ही बात है।”

और सब वह पहुँचकर उठी। उनके नेत्र सहरे हरे हो गये। उसे वह अलुप्त स्वीकार नहीं था कि मैं किसी अन्य स्त्री की ओर आँख उठाकर

भी देखें।

उमके प्रेम का यह अनुठा व्यवहार था कि न तो स्वयं ही समरंग करती थी न किसी और से सम्बन्ध रखने देती थी। परन्तु मुझे उस विविध परिस्थितियों में भी आनन्द का अनुभव हुआ। आखिर संसार की विविधताएँ ही तो मन को आकर्षित किया करती हैं।

और हम तीनों बोट की ओर चत दिए। जहाज के सगर उठा रिये गए—मामने अगस्त समुद्र उमड़ रहा था।

८

दिन और रात बीतने लगे और हमारा जहाज हिलता हुआ अर्ध समुद्र में चला आ रहा था, परन्तु मेरी बीनिया मेरे साथ थी और मुझे कोई चिन्ता नहीं थी।

कप्ताह मम्माहों में अपनी देज-देज की चर्चाओं की बीगें हो जाता। उमने उनसे कहा कि मिला से समरी आने समय समुद्र में जब तूफान ने मस्तूम में पाव को उठा दिया था तो मेवम यह और जहाज का कत्तानही बेचिक्क बने रहे थे बाकी सब लोग भय से रो-रोकर झुने-झाने जान दे रहे थे। उमने यह भी कहा कि नीच के समुद्र में मिलने के स्थान पर ऐसे ऐसे समुद्री जन्तु पाये जाने थे जो नाव सहित लोगों को खा जाते थे। पान्नु मन्नाह भी पूरे दीर्घाजीन थे। उन्होंने उमसे भी लफ्फी बालें गुमाई बिड़े सुनकर भय में उमके गोगटे लगे हो गये और यह भाषा-भाषा मेरे गण आया कि मैं उसे दिखामा हूँ। यह बोले, "समुद्र के ऊपर छोर पर बन-धिन बने गये है जिस पर आकाश टिक्का हुआ है। मुदूर समुद्र में मक-नियों की झुंड़ी और बगों बाकी सुन्दर मारिणी रहनी है जो बरानी बाली की प्रतीका में रहा करनी है। जैसे ही कोई उनसे पास गया और उन्हें उस पर आतु छोड़ा।"

जहाज के सोने की अब बीनिया के बारे में कहा जाता कि वह देव-

निर्मात्य थी तो वह उसकी हृदय से अट्टा करने लगे । परन्तु उनसे जब मैंने उनके देवता के बारे में पूछा था तो बोले : “हम तुम्हारा आशय नहीं समझे परदेशी,” या “हमें नहीं मालूम,” इनके अतिरिक्त तीसरा उत्तर मुझे उनसे नहीं मिला ।

और आखिर हम क्रीट आही पहुँचे । भीनिया अपने देश की पहाड़ियों को देखकर रो दी । मेरा हृदय बैठने लगा क्योंकि अब समय पास आ रहा था जब वह मुझसे निश्चित रूप से विछुड़ जाने वाली थी । क्रीट के बन्दरगाह में करीब एक हज़ार पोत लड़े थे । कप्ताह ने उन्हें देखकर आश्चर्य से कहा कि यदि वह उन्हें स्वगन्ध न देखता तो कभी विश्वास नहीं करता कि सत्सार-भर में कुल मिलाकर भी इतने जहाज हो सकते थे ।

नगर बन्दरगाह से मिला हुआ था । न ही कुर्जे थी और न नगर कोट और न किले न मोर्चे । क्रीट के समुद्री घाक ऐसी अर्बदस्त है—उसके समुद्री देवता की घाक खासकर ।

सारे नगर में जहाँ-जहाँ भी मैं गया, मैंने क्रीट का सा सौन्दर्य नहीं देखा । जिस प्रकार चमकती हुई भाप किनारे की ओर उड़ती जाती है, जिस प्रकार इन्द्रधनुष के पंखों रंगों से जल का कुलकुला समझने लगता है और जिस प्रकार सीप के सम्पर्क से घोड़े भी चमक उठते हैं—ठीक वैसे ही मेरी आँखों में क्रीट सुभावना बनकर बस गया । सारे सत्सार में मनुष्यों के मुझ इतने निकट और वास्तविक नहीं होने जो यहाँ अनुभव होने लगते हैं । यहाँ मौके की मूल के अनुसार ही लोग चले हैं और उनके विचार हर घड़ी हर पल बदलते रहते हैं । यही कारण है कि यहाँ ३ लोगों से कोई ध्वन नहीं लिपा जा सकता । बार्नलिप में यह लोग अत्यन्त सीधे और गुणों से पूर्ण होने हैं क्योंकि इनके समापन में भी गणित होना है । पर इन लोगों में मरु के लिए न तो कोई शब्द ही है और न कोई उसकी चर्चा हो सकता है । उसे वह छिपाकर रखते हैं और जब कोई मर जाता है तो उसे न जाने जब हटा देते हैं कि अन्य उसे देखकर दुखी न हो जायें । वह लोग मेरे विचार से अपने मुँहों को अमाने हैं हालाँकि मैंने बड़ी दिने समय

टहरा था, उम बीच न किसी को जलते देखा न मरने ही। वहाँ मैं बर भी नहीं देखी। केवल कुछ प्राचीन काल के राजाओं की कब्रें वहाँ थी और लोग उनसे इतनी दूर चक्कर लगाकर बचकर निवृत्त थे कि लगता था इस प्रकार वह अपनी मृत्यु ही टाल देंगे—अथवा मृत्यु से छुटकारा पा जायेंगे।

अन्य देशों की भाँति यहाँ इमारतें, मंदिर और महल देखने में जबरदस्त नहीं हैं क्योंकि यह लोग अपना उद्देश्य बाहरी चमक-दमक के बजाय भीतरी आराम अधिक समझते हैं। इन्हें सफाई और शुद्ध हवा पसन्द है। उनके घरों में कई वातायन और स्नानजूह होते हैं जहाँ गर्म और ठंडे जल के चाँदी के तल लगे रहते हैं जिन्हें धुमा देने से बड़े-बड़े होठ भर जाते हैं। यही नहीं कि ऐसा केवल धनिकों के यहाँ ही पाया जाता हो बल्कि मित्राम बन्दरगाह में रहने वालों के, बाकी सभी स्थानों पर यही आराम पाया जाता है।

यहाँ स्त्री और पुरुष दोनों ही शृंगार करते हैं। उनके सुन्दर सुँठे हुए शरीरों पर वह एक भी रोम नहीं रहने देते—और स्त्रियाँ विलक्षण वेश-विन्यास करती हैं। अधिकतर वह अपनी ही भाषा बोलने हैं और हालाँकि इनका सारा धन समुद्री व्यापार से ही आता है फिर भी यह बन्दरगाह जैसी गन्दी जगह जाकर अपने जहाज देखना उचित नहीं समझते। मामूली हिसाब से भी यह घबराते हैं और इन्हें हर काल के लिए कामदार की आवश्यकता होती है। और इसीलिए योग्य परदेसी लोग इनसे बाकी धन कुछ ही समय में कमा लेते हैं।

इनके पास ऐसे-ऐसे माद्य हैं जो बिना किसी मनीषज्ञ के भी बजने हैं और इन्होंने तो बल्कि संगीत के रागों की भी पुस्तकें बना ली हैं।

और एक बात जो सभी जगह सुनी थी वास्तव में बिल्कुल सही है—और वह है यह कहावत—कि यह तो कीटन की भाँति झूठ बोलना है, शायद ही मैंने ग्रीट ना-मी झूठे नहीं और सुना हो।

वहाँ कोई मंदिर दिखाई नहीं देता—लोग अपने माँझों को चराने और उनके सामने सुबकों और युवतियों के नृत्य देखने निरत हो जाते हैं—दृगमें वह कभी नहीं चूकते। बँतों पर यह शर्मा भगाकर दाँव लगाया करने हैं और इस प्रकार जुए में लोगों का बारा-न्यारा इनमें होता है।

उनके यही राजा की भी कोई विशेष कद्र नहीं की जाती और उससे लोग चाहे जब जाकर मिल सकते हैं। यह आवश्यक नहीं होता कि वह अपनी फुरसत से उनसे मिले अथवा लोग अपनी फुरसत से जाकर उससे मिल आते हैं। अतः केवल इतना है कि वह एक बहुत ही विस्तृत महल में रहता है। जैसे उससे वह उपहास इत्यादि भी बराबरी में कर लेते हैं।

मदिरा वह लोग कभी इतनी नहीं पीने कि बेहोश हो जायें या चट्टी करने लगें।

स्त्रियाँ—विशेषकर विवाहित स्त्रियों पर कोई प्रतिषेध नहीं होता। वह चाहे जिस घर पुष्प की अंघाणामिनी हो सकती है और इसी भाँति पुष्प। स्त्रियाँ अपने स्तनों को बस्त्रों से नहीं ढँकती।

परन्तु जो देवनिर्मात्म्य युक्त अथवा युक्तियाँ होती हैं वह सभोग से वंचित रहती हैं। ऐसी की बड़ी इच्छा होती है।

यहाँ की जिस परदेशियों की सराय में हम बन्दरगाह पर उतरकर ठहरे, वह इतनी अच्छी और आरामदेह थी कि देवीसौन का 'इतर का आनन्द भवन' उसके सामने तुच्छ लगने लगा।

मीनिया गया-घोकर अपने बरा से जब भुगार करके निकली तो मैं उसके सौन्दर्य और बस्त्रों को देखना ही रह गया।

उसके सिर पर एक छोटी-सी टोपी लगी थी जो दीप जैसी लगती थी। पैरों में ऊँची एड़ी की काठ के जूने थे जिनसे चलने में निश्चय ही उसे बुरा होता होगा। मैंने उसे रंग-बिरंगे पत्थरों से बना हुआ एक हार दिया जिसे मुझे एक व्यापारी ने यह कहकर दिया था कि यह उस दिन का अत्यन्त प्रचलित हार था हालाँकि अगले दिन के शारे में यह कुछ नहीं बह सकता था। मीनिया के बस्त्रों में से उसके नग्न-स्तन बाहर तने हुए निकल रहे थे जिनकी बीचों बीच उसने लाल रंग रखा था। उसने मुझसे आँखें नहीं मिलाई पर हठ कगती हुई बोली : "मैं कोई अपने-स्तनों के प्रदर्शन से डरती थोड़े ही हूँ? सोच देखें तो सही कि अन्य छोटी की स्त्रियों में यह किसी भाँति कम नहीं है।" और बास्त्रव यह उन्नत स्तन पोषण की सीमा को मानो पाँडे दे रहे थे।

छोट का नगर सप्तर के अन्य नगरों से कितना भिन्न था ! यहाँ न

सोर या न भीड़। मकान हवादार, प्रकाश से पूर्ण और सुन्दर थे। मीनिय मुझे एक अनेक व्यक्ति के पास से गई जो ऊँची हैसियत का था जैसा था जब हम पहुँचें तो वह खड़े जाने बैलों की फहरिस्त देख रहा था कि कि पर दोब लगाये। मीनिया का सावद उसके घर में निकट का सम्पर्क था। जब उसने मीनिया को देखा तो अपनी फहरिस्त भूलकर उसने उसे मुनी से आनिमन में लेकर प्यार किया और कहा -

"तुम वहाँ क्यों गई थी? मैंने तो समझा कि तुम सावद देखा के घर अपने भाए ही क्यों गई थी फिर जाने वहाँ गई—फिर भी मैंने तुम्हारा नाम अभी तक देवनिर्माण स्थलों में ही रक्त छोड़ा है—सावद तुम्हारा कस भी लाओ ही पड़ा है—पर वही मेरी स्त्री ने उसे तुम्हारा न दिया हो...? क्योंकि वह उस स्वान पर एक कुछ बनवाना चाहती थी।"

"कह ?"

"हाँ, वह मछली पालन के लिए बहुत उतावली हो रही थी।"

"कौन मीनिया? मीनिया कब से मछली पालने लगी? मीनिया ने आश्चर्य से पूछा।

कुछ देते हम प्रश्न में खंगल गया हो कुछ ने उत्तर दिया "मही... मही वह मीनिया नहीं है—यह तो मेरी मही स्त्री है—इस समय सावद वह धरने किसी पुरुष विषय का अपनी मछलियाँ दिया रही है..." फिर मुझको देखकर वह बोला "और वह मछलन कौन है?"

मीनिया ने मेरे बारे में जब तक कुछ उसे बताया दिया तो कुछ ने मीनिया के स्नानी का देखकर कहा

"परन्तु मैंने तो सुनना अपना कौन-से वन ही कहा है न? क्योंकि मुझसे इन कुछ वनवन में बताया बड़े हो भड़े है मीनिया, मैं पूछा है कि सावद तुम कामोसेवना में आने विषय के साथ "

"मही।" बीच में ही मीनिया मुझे से बोले उठी। फिर उसने मेरी इसमें छोड़कर कहा "जो वह मैं कह रहा हूँ तो मुझे विचारण का जेरा बर्ताना का कि केही कीर की समी की हाट में एक बार मेरे बीमार की हाट में ही खूबी है तो मुझे अब फिर तुम्हें कहना चाहें हाथ पालन में खूबी है। मेरा मतलब था कि मुझे सावद देखकर मुझे मुझे ही

और तुम हो कि अपनी हार-जीत में लगे हुए हो ।” और वह रोने लगी ।

बुद्ध परेशान हो गया । फिर बहाने लगाकर कि उस माईनौस के पास जाना था, सटक गया । माईनौस कीट के राजा को कहा जाता था ।

तत्पश्चात् मीनिया भी मुझे लेकर माईनौस के पास गई । वहाँ अगणित लोग विभिन्न वेश-भूषा पहने मिले जो हँस-हँसकर आपस में तथा माईनौस से बातें कर रहे थे । महल में अमंज्य कक्ष थे जो सभी हवादार और प्रकाश से पूर्ण थे और सभी सुन्दर सजे हुए थे । भीतों पर वहाँ सुन्दर मछलियाँ और रंग-बिरंगे पुष्प बने हुए थे । माईनौस मुझसे मिली भाषा में बोला और उसने अत्यन्त प्रमत्तता दिखाई कि मैं उसे (मीनिया) सही-सलामत उसके देवता के हेतु लौटा लाया था । यही मुझे मालूम हुआ कि मीनिया राजपति की थी ।

जब हम दोनों के स्थान में पहुँचे तो मैंने देखा कि वह स्थान स्वयं एक महानगर था जहाँ अगणित सौंठ बँधे डकरा रहे थे और खुरो से पृथ्वी जोड़ रहे थे । वहाँ हमे मीनिया के पुराने जान-बहुचान वाले कई युवक और युवतियाँ मिली । सभी मीनिया को देखकर खुश हुए । परन्तु एक बात माईनौस के यहाँ और इस स्थान में भी एक सी ही थी—सभी लोग के परब्राह्मण थे, खुरी होनी थी और वह भी शक्ति और एक किसी बात पर स्वातन्त्र्यक जमकर मान नहीं करते थे । सभी में एक अजीब-सी मस्ती थी ।

अन्न में मीनिया मुझे एक छोटी-सी इमारत में कीट के सत्रसे बाँध पुजारी के पास ले गई । जिस प्रकार वहाँ का राजा सदा माईनौस ही कहलाता था वही भाँति वह बड़ा पुजारी भी सदा माईनौसीय कहलाता था । इसका शीट में सबसे बड़ा सम्मान था और साथ ही सब इससे बेहद डरते थे । लोग अपनी बातों में उसका नाम नहीं लेते थे और उसे बँतों वाला आदम कहकर ही आपस में पुकारते थे । स्वयं मीनिया भी उसके पास जाते डरते थी परन्तु वह उसे मेरे सामने जना नहीं रही थी । वैसे मैं उसकी आँदोहर उसके हर भाव अब बतला सकता था ।

यह हमसे एक अँधेरे कक्ष में बिना । उसे देखकर एक बार तो मैं सचमुच ही समझा कि जो कुछ कीट के देवता के बारे में मैंने सुना था वह सच था । परन्तु जब हम दोनों ने उसकी मुँहवर अभिवादन कर दिया

उसने अपना वह चेहरा उतार दिया। मैंने देखा कि वह तपे हुए रंग का एक सुन्दर पुरुष था जिसके रोम-रोम में जैसे अधिकार कुट-कुटकर भरा हुआ था। उसने मुझे मोनिया को वापस लाने के उपलक्ष्य में धन्यवाद दिया और कहा कि मैंने उसके देश की भलाई की थी क्योंकि उसकी बचाने का कार्य था देवनिर्माल्य की रक्षा करना, जिससे उनका देवता प्रसन्न होता था। फिर उसने कहा, "तुम्हारी सराय में तुम्हारे लिए उत्तमोत्तम उपहार तुम्हारे लिए प्रतीक्षा करते तुम्हें मिलेंगे।"

"उपहार एकत्रित करना मेरा काम नहीं है।" मैंने कहा, "मैं तो ज्ञान का भूषा हूँ जो मैं देश-देश जाकर ढूँढ़ता फिरता हूँ। मैंने बेबीलोन और हितैतियों के बीच जाकर उनके देवताओं को भी देखा है और अब श्रीट के देवता के बारे में सुनकर यहाँ आया हूँ। यहाँ का देवता पवित्र युवक और युवतियों को पसन्द करता है तो सीरिया में मन्दिरों में रंगमालाएँ होनी हैं जहाँ स्त्रियाँ संभोग में ही निपुणता दिखाती हैं और पुरुषों को प्रसन्न करती हैं। वहाँ के पुजारी हिजडे बना दिये जाने हैं जिससे उन स्त्रियों से जो संभोग करे सो बाहर का ही हो।"

"परन्तु हमारा अन्य देशों के देवताओं से भिन्न है। वैसे हमारे बन्दर-गाह पर तुम्हें भ्रमण और बलि के भी मन्दिर मिलेंगे। पर हमारा देवता एक जीविन बन्तु है; अन्य देशों की भाँति सबड़ी, पत्थर या धातु का नहीं बना है, और मरा हुआ नहीं है। उसे केवल देवनिर्माल्य युवक और युवतियाँ ही देख पानी हैं। उसका मपर्क इतना गुस्सकर है कि फिर उसे छोड़कर कोई नहीं छोटता हालाँकि वायदा यह है कि वह चाहे तो एक मास बाद सोट सकता है। परन्तु अभी तक कोई नहीं सोटा। जब तक हमारा देवता जीविन है, श्रीट समुद्रों पर शासन करता रहेगा। वैसे हमारा जहाजी बेड़ा भी खवर्दस्त है। उमने यह भी बतनाया कि उनके देश में त्रिम युवनी का नाम वहाँ जाने के लिए बारी में आना है वह बहुत ही भाग्यवान समझी जाती है। और सभी उसकी इश्वरत करने हैं।

मैंने कहा : 'स्मर्ता में सोय आगमान को देवता मानने है क्योंकि वहाँ मेह से अन्न पकता है। श्रीट में जायद समुद्री देवता की इमलिए मान्यता है क्योंकि वहाँ मारा वैभव समुद्री व्यापार से ही जाता है। वैसे मैंने

मुद्र में रहने वाले मल्लाह देगे हैं जिनके शरीर चेटील और चुरे होने हैं ।
 मैं तो समुद्री देवता पर कोई धडा नहीं होती हालांकि मैंने सुना है कि
 हीना देवता किमी अन्धकारपूर्ण भूल-भुलैया में रहता है और देग के
 चमे सुन्दर युवक व युवतियाँ उसको अग्नि पर दिये जाते हैं । चाहता तो
 मैं भी कि उसे जाकर एक बार देस सकूँ ।”

मार्डिनोटोरम ने मुनकर ठंडी तरह से केवल इतना कहा, “पूणिमा को
 अनिया देवता के पर जायेगी । तुम भी उसे जाने हुए देस सकते ।”

“और अगर वह मना कर दे तो ?” मैंने जोर से प्रश्न किया । क्योंकि
 अनिया का बिछोह अब मुझे वास्तविक दिग्ग ने लग गया था ।

“ऐसा कभी हुआ ही नहीं है । मीनिया स्वयं साँधों के सम्मुख नृत्य कर
 भी है और वह अकस्य जाता पाहेगी ।” उमने इत्मीनान से जवाब दिया
 और अपना पैर का सिर ओढ़ लिया । हम वहाँ से उठ आये । परन्तु मैंने
 ऐसा देना कि मीनिया अब दुःखी हो गई थी ।

जब मैं ताराप में अपने निवास-स्थान की लौटा तो मैंने देना कि कप्ताह
 परगाह की मदिरा की दुकानों से गुब पीकर लौटा था । मुझे देगने ही
 मता :

“मानिक ! मौकरो के लिए तो यह सबसुख परिणामी देस है । यहाँ
 मैं कोई मारना-पीटना नहीं है न किसी मानिक को यही याद रहता है
 उनके बटुने में विना मोना और विनने जवाहरान थे । यदि कोई
 मानिक दुगता होकर किसी मौकरो को निजाल दे तो मौकरो का उस दिन
 जाये और दुगरी मुद्रह फिर आकर अपने काम में लग जाये । यहाँ उन
 मानिक को विनने दिन की कुछ याद ही नहीं रह जाती है ।”

फिर वह अपन कस में चला गया वहाँ आकर वह क्षण भर करके
 मैं कि उगली आदन की अपने-आप जाने करना हुआ कहने लगा मानिक !
 मैं देस में विनने जाने होने वाली है । मदिरा की दुकानों पर जहाँ ही
 मैं वह रहे के कि चीट का देवता पर देया है और कि यहाँ के दुकानों
 पर अदधीन होकर मना देवता बूँद रहे है । यह है मना देवता का देवता

लिया और मेरे मित्र मुझे बुला रहे हैं जहाँ मुझे काफी समय लग जायेगा । और फिर परमों ही तो पूजिमा है !” मैंने उपेक्षा का भाव दिखाने हुए उसे बिड़ाने के लिए कहा :

“जोड़ में मैंने बड़े-बड़े नवीन अनुभव किये हैं, यहाँ की वेशभूषा अद्भुत है । जब मैं तुम्हारा नृत्य देख रहा था तो मुझे सुन्दर स्त्रियाँ अपने उन्नत पौन स्तनों को हिला-झुकाकर बुला रही थी । उन्होंने मुझे अपने घर भी बुलाया है । मैंने वह मुझसे कुछ अधिक माँसल थी और सावद मनचली भी अधिक थी ।”

वह एकादम कड़ी पड़ गई । मेरी झोंक पकड़कर मेरी ओर आत्मिय नेत्रों से देखकर फुटकारती हुई बहने लगी :

“तुम मेरे रहने किसी अम्ह स्त्री से सम्बन्ध नहीं रख सकते, नही बभी नहीं...तुम्हारी निमाहों में मैं बुझती हूँ- यह मैं जानती हूँ पर मेरी मित्रता की इतनी मर्यादा अवश्य करो—मेरे रहने पराई स्त्री को मन गमाओ !”

“मैं तो उपहास कर रहा था तुम्हें बिड़ाने के लिए ।” मैंने कहा पर मेरा भी दिन भर आया था ।

और फिर मैं चला आया था । उन मैनों के गोबर की बड़बू मेरे दिमाग में घुम गई थी जो निबलनी ही न थी । अब भी अब बभी मैं मैनों का गोबर देख लेता हूँ तो तबियत मचलने लग जाती है । सराय आकर मैं अपने गेमियों की सेवा-गुथूपा करने लगा और उन्हें औषधियाँ देने लगा । दीवानों के दूगरी और सँ हँसी-मजाक और मरीच गूनाई दे रहा था ।

शाम के अँधेरे में मैं अपने बगरे में आकर अपनी बटाई पर गो गया । बप्ताह को मैंने दीपक जलाने से मना कर दिया था । मैं उदास हो रहा था । चाँद मुझे कुरा लग रहा था क्योंकि बही तो मेरी बहिन को सुताने छीन रहा था । और लकी बिबाद खुले और भीनिया अन्दर आ गई । वह इस समय अपनी पुरानी पोसाक पहने हुए थी । उसके गिर के बाज एक मुन्दरे पीने में बँडे थे । मैंने चौककर पूछा :

“भीनिया ! अब कैसे आई ? मैंने तो मयला था कि तुम अपने देवता के पास जाने की पैदारी कर रही होगी । उसने जँदनी उठाकर कहा, “छीरे

बोली, मैं नहीं चाहती कि और लोग हमारी बातें सुनें।”

वह मुझसे सटकर बैठ गई और फिर चाँद को देखकर कहने लगी, “बैलो घाले गृह में अपने सोने की जगह मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है और न अब मैं पहले की भाँति अपने मित्रों में ही सुख अनुभव करती हूँ। लेकिन इस रात तुम्हारे पास क्यों चली आई हूँ—यह मेरी खुद समझ में नहीं आ रहा है—शायद तुम्हें नींद आ रही हो—तो सिन्यूहे ! मैं चली जाऊँगी।”

फिर वह कुछ रुककर कहती गई, ‘मुझे नींद नहीं आई और मुझे हर रात की भाँति औपधियो की गद्य सुँघने की इच्छा होने लगी—कप्ताह के कान मलने व बाल खींचने की इच्छा होने लगी कि वह जाने क्या ऊँट-पटांग बोलता रहता है—यात्राओं और अनेकानेक देश के लोगों को देखने के बाद अब मुझे बैल, साँड़ और यहाँ के खेल के मदानों के शोर अच्छे नहीं लगने। इनकी हरकतें अब मुझे बच्चों की सी मूर्खता लगती है—और अब तो मुझे देवता के घर जाने की भी बंसी इच्छा बाकी नहीं रह गई है। मेरा हृदय और मेरा मस्तिष्क दून्य हो गया है। सभी ओर मुझे दुःख ही दुःख दिखाई देता है। अभी तक मुझे इतनी वेदना कभी नहीं हुई थी। सिन्यूहे ! मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि फिर मेरे हाथों को अपने हाथों में ले लो जैसे कि हमेशा से लिया करते थे। और जब तक तुम्हारे हाथों में मेरे हाथ रहेंगे तब तक मैं मृत्यु से भी नहीं डरूँगी—हालाँकि मैं जानती हूँ कि तुम्हें मासल स्त्रियाँ अधिक पसन्द हैं।”

मैंने उसको उत्तर दिया, ‘मीनिया ! मेरी बहिन ! मेरा बचपन और मेरी जबानी गहरी परन्तु जूढ़ जल की धारा के समान थी। और मेरा पौष्ट्य एक बड़ी नदी के समान था। जो फैला और फैला परन्तु तब जल गदगद हो गया और फिर वह गन्दे गहरे खड्डों में भर गया जहाँ से उतका बहना बन्द हो गया। परन्तु मेरी मीनिया ! जब तुम आई तो तुमने उन गड्ढों में उस तमाम जल को निकालकर फिर एक स्वच्छ धारा में बहा दिया जिससे मेरी तमाम ग्लानि और विषमता दूर हो गई। और तब दुनिया मुझे देखकर मुस्करा उठी। तुम्हारी ही सातिर मैं अच्छा बना। मैंने स्वर्ण ध्योम किये बिना रोंगियों का इयाज किया और मृग पर किसी देवता का कभी कोई अमर नहीं हुआ, न मैंने उन्हें धाना ही। लेकिन अब

जब तुम फिर अपनी जाओगी तो मेरे जीवन की ज्योति फिर बुझ जायेगी। और तब मैं मरभूमि में एक कोर के समान रह जाऊँगा। मुझे अब किसी के प्रति सम्भावना नहीं रह गई है—मैं मनुष्य मात्र से घृणा करने लग गया हूँ—और देवताओं के बारे में एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता—

“बनो मेरी नीनिया हम भाग लें। दुनिया में देव कई हैं परन्तु नहीं केवल एक है। उसके किनारों की बगली भूमि पर मैं तुम्हें ले चलूँगा वहाँ बान के मुरमुड़ों में जलभी बसने के-दा करती है और जहाँ निम्न ही मूर्ख अपने मूर्खों रथ में सवार होकर पूर्व से पश्चिम की ओर आकाश में होकर निकल जाता है। नीनिया बनो और हम दोनों मिलकर एक मटकी तोंड में और फिर हम सभी-गुरु हो जायेंगे और फिर कभी न बिछड़ेंगे—और जब हम मर जायेंगे तो हमारे शरीर मगलों से अमर बना दिये जायेंगे कि हम पश्चिमी देव की यात्रा भी साथ ही साथ प्रेमपूर्वक कर सकें।”

नीनिया ने मेरी भैंसें, पसकें और मेरा सँह अपनी डँगलियों में शृंखल करे हाथों को अपने हाथों में दबाया, फिर कहा :

“जगर में ऐसा करना भी चाहती तो भी नहीं कर सकती थी क्योंकि बीट के एक भी जहाज ऐसा नहीं है जो हमें छिपा ले या घाटी में भगाकर ले जाय। बाल्यविराग तो यह है कि मेरे ऊपर अभी भी पहला लग रहा है और मैं यह कभी महसूस नहीं कर सकती कि यह लोग मेरे कारण मुगहारी हूँ। अब तो मुझे कष्ट जाना ही होगा—क्यों ? यह मुझे मान्य नहीं। शायद माईनाटीम कारण जानता हो।”

और मेरे सीने में मेरा दिन ऐसा गुना हो गया जैसे कोई लाली बर हो और तब मैंने कहा :

“किस क्या होनेवाला है यह सप्ता कीम जान सकता है ? परन्तु मुझे नहीं लगता कि तुम देवता के घाटी में कभी लौट सकोगी। शायद मनुष्य के अन्दर बने हुए उन मूर्खों के महलों में बर मूलर देवता मुझे मोह ले कि तुम लौटना ही समझ लेंगे। तुम मुझे भी जान जानो। परन्तु तब तो यह है कि मैं इन भू-विस्तीर्ण या जीवन की विराग नहीं कहूँ। मैं कई देवों से कई प्रकार के देवता देव विदे और उन

विशेषता नहीं देगी। यह सब कपोल कल्पित बातें हैं। अतएव एक वान में सुमसे कह दूँ और यह वह कि यदि तुम निश्चित अवधि के अन्दर मेरे पास सौटकर नहीं आ गई तो समझ लो कि मैं तुम्हें बूढ़ता हुआ स्वयं उम देवता के घर में घुस जाऊँगा और फिर तुम्हें पकड़ लाऊँगा—और यदि तब तुम्हारे साथ भी न आना चाहो तब भी जबर्दस्ती घसीट लाऊँगा—क्योंकि तुम्हारे बिना तो मेरे लिए जीवन में कोई सुख ही नहीं रहेगा।”

उसने धरकर मेरे मुँह पर अपना कोमल हाथ रखकर कहा “हिग! ऐसा नहीं कहते। बल्कि ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए देवता का घर अंधेरा है और उसमें किसी भी अजनबी को मार्ग नहीं दिखाई देता। और फिर बाहर भी पहचान रहता है और बड़े ताँबे के फाटन चढ़े रहते हैं। कम से कम यही मेरे लिए बड़ी तसल्ली की बात है। बरना शायद तुम अपने पागलपन में मुझे बूढ़ते हुए चले ही आते। परन्तु सिन्धूदे मेरा विश्वास करो कि निश्चित अवधि के पश्चात् मैं तुम्हारे पास अवश्य सौट आऊँगी। मेरा देवता ऐसा निष्ठुर नहीं होगा कि मेरी प्रसन्नता में भी अड़चन डालेगा। वह तो अत्यन्त सुन्दर और प्यारा देवता है जो क्रीड को शक्ति प्रदान करता है, और हर क्रीडन का भला सोचता है। उसी की कृपा से जैतून के वृक्ष फूलते-फलते हैं और खेत अनाब उगलते हैं और जहाज बन्दरगाह से बन्दरगाह निर्बाध तैरते रहते हैं। वही हमारे लिए अनुकूल हवाएँ चलाता है और जब धने कुहासे में हमारे जहाज फँस जाते हैं तो उन्हें मार्ग दिखाता है। फिर भला वह मेरी खुशी में क्यों अड़चन पैदा करने लगा?”

छुटपन से ही वह उस अन्धविश्वास की छाया में पड़ी थी। वह अन्धी थी। और हालाँकि मैं अपनी सुई से अन्धों की आँखें खोलकर उन्हें नई रोशनी दे देता था फिर भी मैं उसकी आँखें न खोल सका। मैंने उस मर्ल-सूरी की हालत में उसे चिपटा लिया और उसे धूमता हुआ उसके स्निग्ध शरीर पर हाथ फेरने लग गया। वह मुझे उस समय रेगिस्तान में फँसारे की भाँति दिखाई दे रही थी।

उसने कोई आपत्ति नहीं की। उल्टे अपना मुख मेरी गर्दन पर रखकर वह सिसकने लगी। उसके आँसुओं से मेरी छाँवा भीग गई। फिर वह

वे देवता मर गये

बोली : "सिन्धूहे ! मेरे मित्र ! यदि तुम्हें मेरे लौट आने की बात प्यारी है तो मैं आज तुम्हें बिस्ती बात के लिए भना नहीं करूंगी । जिस तरह आनन्द प्राप्त हो उसी भाँति मुझसे ले लो—चाहे मुझे मरना हो पर आज तुम्हें मैं सब कुछ देने को तैयार हूँ । मैं मृत्यु से भी नहीं बचोकि तुम्हारी बाँहों में तो मैं उससे भी नहीं डरती ।"

"और क्या उससे तुम्हें भी कुछ मिलेगा ?" मैंने पूछा, उसने देने में कुछ हिचकिचाहट की ।

"मैं नहीं जानती," उसने उत्तर दिया । "इतना तो जानती हूँ कि मन और जरीर दोनों बेचैन है । तुम्हें देखकर मैं कमजोर हो उठती पहले मुझे मेरी नृत्यकला ही अत्यन्त प्रिय थी और मुझे मेरी कमजोरी पर धृष्टता हुआ करती थी । परन्तु अब तुम्हारा संग और तुम्हारा स्पर्श अत्यन्त प्रिय लगता है चाहे इससे मुझे कुछ ही बचो न भुगतना पड़े । मैं बाद में पछताने लगी । परन्तु यदि इससे तुम्हें खुशी होगी तो मुझे खुशी होगी—क्योंकि तुम्हारी खुशी मेरी खुशी है और इससे अधिक चाहती भी नहीं हूँ ।"

अपना आतिथ्य निमित्त करते हुए मैंने उसके बालों और आँखों को धपसपाकर कहा : "मेरे लिए यही बहुत है कि तुम मुझसे आज मिल गई और हम फिर उसी भाँति मिले जैसे पहले बेबीलीन में मिले थे । फीता मुझे दे दो ।"

उसको एकदम शक हो गया । आँखें आधी मूँदकर अपनी हाथों को अपनी रानों पर मतती हुई वह कहने लगी :

"मायद मैं काफी दुनती हूँ और तुम सोचने लगे कि मेरे पास तुम्हें आनन्द न प्राप्त हो सकेगा—निश्चय ही तुम मेरे बजाय एक और सुन्दर स्त्री पसन्द करोगे—लेकिन मैं भी तुम्हें पूरा सुख प्रयत्न करूंगी—तुम्हें निराश नहीं करूँगी—जितना मुझसे सम्भव है वह सब आनन्द तुम्हें दूँगी ।"

मैंने मुस्कराकर उसके स्निग्ध और सुदृढ बन्धों पर हाथ रख कर कहा : "बीबीजा ! मेरी दृष्टि में तो तुम्हारे समान सुन्दरी और मही है और न तुमसे अधिक आनन्द ही मुझे कोई दे सकती है ।"

यह कैसे हो सकता है कि तुम्हें तुम्हारे देवता के सम्मुख आगति में बाध-
कर मैं तुम्हारे शरीर से सुख भोगूँ ? मुझे एक सुखी मूली है जिसमें हम
दोनों ही को आनन्द प्राप्त हो सकेगा । मेरे देव की विधि के अनुसार हम
दोनों अपने बीच अभी एक घड़ा फोड़े सेते हैं और फिर हम दोनों स्त्री-
पुरुष, पत्नी-पति बन जावेंगे हानाँकि फिर भी तुमसे मैं कुछ नहीं भोगूँगा ।
हमारे विवाह का न कोई गवाह होगा—न कोई पुजारी आयेगा और न
किसी मंदिर की पुस्तक में हमारा नाम ही लिखा जायेगा—”

और उस रात जब मैं मीनिया को अपनी बांहों में कमकर सोया तो
उसके गर्म श्वाभ मेरी गर्दन पर लगा दिये । उसके गर्म प्रेमाधुओं से मेरा
बदन भीग गया । मेरा विचार है कि जो सुख मुझे उम्र समय मिला शायद
तब न मिलता यदि मैं उससे वह वस्तु ले लेता जिसे देना उसके लिए नियंत्र
बना हुआ था, मुझे तब ससार बहुत ही अच्छा भाचूम होने लगा—और
करुणा से मेरा हृदय गद्गद हो उठा था ।

दूसरी सुबह मीनिया फिर बेलों के सामने नाची, मेरा दिल धड़कने
लगा पर उसके कोई चोट नहीं आई । परन्तु इसके बाद नाचनेवाले एक
युवक से खरा-सी चूक हो गई और वह साँठ के माथे पर से जो फिसला
तो साँठ ने उसके शरीर को सीधो से फाड़ डाला । वह मर गया, सभी
स्तब्ध रह गये । फिर स्त्रियों ने आकर उसके रक्त को छुआ और वह चीख
मारकर भागने लगी । परन्तु पुरुषों ने केवल इतना कहा : “बहुत दिनों
बाद ऐसी घटना घटी है परन्तु आज का खेल रहा सर्वोत्तम,” फिर वह
अपनी हार-जीत का हिसाब करने लगे । उस रात भी मीनिया मुझसे न
मिल सकी ।

दूसरे दिन सुबह ही मैंने एक कुर्सी किराये पर की और मैं उस जुलूस
के साथ नगर के बाहर चल दिया जिसमें मीनिया को देवता के घर ले
जाया जा रहा था । पूरे जुलूस में एक विचित्र नीरव वातावरण था ।
मीनिया एक सुवर्ण के रथ में सवार थी जिसमें पुरों की किलिंगियाँ सजे
हुए घोड़े जुते हुए थे । साथ में बहुत से लोग कुर्तियों पर बैठकर जा रहे थे
और वह सभी मीनिया पर गुणगुना कर रहे थे, सबसे आगे सुवर्ण में सज्जा

ये सुवर्ण की मूठ की तलवार लगाये माईनोटोरस सुवर्ण का बैल मुसलमान जा रहा था ।

देवता का घर एक नीची पहाड़ी जैसा था जिसके ऊपर भास जंगली फूल सिल रहे थे । और पीछे की तरफ से यह जाकर एक बड़े पहाड़ से मिल गया था । सामने भारी लबि के फाटक लगे हुए थे—इतने भारी कि एक किवार को हटाने के लिए दस आदमियों की जरूरत होती थी ।

और अब झुलूस द्वार के पास पहुँच गया तो मीनिया को ले माईनोटोरस आगे बढ़ा । द्वार अचिरक खुला और भीतर घुप अगध दिखाई दिया । माईनोटोरस ने हाथ में जसती मशाल ली और मीनिया लेकर अन्दर घुसता चला गया । फाटक पीछे से बन्द कर दिये गए और ताला लगा दिया गया ।

और तब मुझे लगा कि मेरी मीनिया मुझसे हमेशा के लिए छिन गयी ।

बाहर सुबक और सुबतियों ने नृत्य आरम्भ कर दिया था । मुझे नहीं जाने कब तक मैं बेसुध वहाँ रेत में पड़ा रहा । मेरी दुनिया उजड़ गयी ।

फिर जब कप्ताह ने कहा : “यदि मेरी दृष्टि मुझे धोखा नहीं देती बैल तो वापस निकल आया है—पता नहीं कैसे ? क्योंकि फाटक तो है ।”

मैंने मुड़कर देखा—सचमुच माईनोटोरस वापस आ गया था । मैं भी उस उत्सव में भाग ले रहा था और नृत्य कर रहा था । मुझे देखकर एकदम जोश आ गया और मैंने सपककर उसका हाथ पकड़ लिया और उससे पूछा : “कहाँ है मीनिया बताओ ?”

उसने मेरा हाथ छटक दिया पर जब मैं फिर भी अड़ा रहा तो होकर बोला : “पवित्र उत्सव की कार्रवाइयों के बीच में पड़कर व्यर्थ करना हमारे यहाँ निषेध है; परन्तु क्योंकि तुम परदेसी हो अतएव यह हो ।”

“कहाँ है मीनिया ?” मैं फिर चित्लाया पर तभी कप्ताह मुझे पूर्वक घसीट ले गया । जसग लाकर वह मुझसे बहने लगा : “क्यों

सबका ध्यान अपनी ओर खींचकर भ्रूषता दिखा रहे हो? माईनोटोरम जिस रास्ते से वापस आया है वह मैंने सब देख लिया है। वह एक बचन की छोटी सिड़की से निकल आया था।" और फिर उसने मुझे मदिरा पिलाना प्रारम्भ कर दिया। उसने उसमें पीपी फूल का रस चुपचाप मिला दिया था। जिसे पीकर मैं बेहोश हो गया। पर उसने मुझे बताया कि मैंने उसके साथ बेबीलीन में किया था वडे में खन्द नहीं किया बल्कि कम्बज लगा दिया।

पूरे दो दिन दो रात तक नृत्य जारी रहा। लोग जाते-आते रहे। और तीसरे दिन सभी लौट गये। केवल कुछ युवतियाँ अब भी नाच रही थीं।

जब माईनोटोरम लौटने लगा तो मैंने उससे जाकर अपने व्यवहार के लिए क्षमा माँगी और कहा कि मैं उन युवतियों को वहाँ रक्षक और देखना चाहता था। मैंने कहा : "यहाँ कई युवतियों और गृहणियों ने मुझे अपने स्तन हिना-हिमाकर मुझे रकने के लिए कहा है और मैं उनकी सुन्दरता पर मोहित हो गया हूँ अतएव मुझे यहाँ रकने की आज्ञा दे दो।"

उसने मुझे मूर्ख समझा और मुस्कराकर चला गया। परन्तु जाने-जाने शायद वह उन स्त्रियों की ओर गंजन कर गया कि वह मुझे अधिष्ठा-धिष्ठित रिताएँ क्योंकि उनके जाने ही मुझे खुशे बधाँ वाली स्त्रियों ने चारों ओर से घेर लिया।

और फिर वह केनि करती रही परन्तु मेरा मन उनमें विभुक्त नहीं लग रहा था। रात्रि होने पर वह सब चली गई।

पहले वालों को मैं नित्य ही मदिरा दिया करता था और अब आज फिर मैंने उन्हें मदिरा दी तो उन्हें कोई आश्चर्य या शक नहीं हुआ। परन्तु मेरी मदिरा पीकर वह बेहोश होकर सो गये। मैंने उनकी कमा से चारों निकासकर निहकी गोली और बप्ताह को साथ लेकर उस मुद्रा के अन्दर जाकर द्वार बन्द कर लिया फिर अन्दर जाकर सोन खा लिया।

अब मैंने बप्ताह से कहा :

"बप्ताह, चलो तो तुम मेरे साथ अन्दर चलो अवका और चलो; परन्तु मैं तो अपनी मीनिका को वापस लाने अवश्य चाहूँगा क्योंकि उन्हें बिना मुझे समार ही मूना-मा करने लगा है।"

और कप्ताह ने घेरे साथ ही रहना उचित समझा । उसने मदिरा का बड़ा पात्र उठाया और वह उसे पीने लग गया ।

सामने एक लम्बी गुफा थी जिसके घने अन्धकार में हमारी मशाल का प्रकाश बहुत ही क्षीण लग रहा था । हम आगे बढ़े । कप्ताह हाथ में मदिरा का बड़ा पात्र लिये चला आ रहा था । भय से उसके दाँत बज रहे थे । गुफा के छोर पर दस और गुफाएँ बनी हुई थी, यह सब ईंटों से बनी थी । मैंने बेबीलोन में सुन रखा था कि भूलभुलैयाँ आमतौर पर बैल की पसलियों की शकल की बनी होती हैं । अतएव मैंने आखिरी रास्ते से आगे बढ़ना तय किया । परन्तु कप्ताह ने तब कहा :

“जल्दी क्या है ? फिर यदि हम खतरे से चौकसी कर लें तो हर्ज भी क्या है ? हो सकता है कि इस भूलभुलैयाँ में हम मार्ग खो बैठें और उसने ईंट में एक कील ठोककर अपने झोले में से एक छोरे की गेंद निकाली । एक छोर उसका कील से बाँधकर वह गेंद से छोरा खोलता हुआ आगे बढ़ने लगा । उसकी उस चतुर युक्ति से मैं अत्यन्त प्रभावित हो गया क्योंकि इतनी आसान तरकीब मुझे निश्चय ही कभी न सूझती । परन्तु प्रत्यक्ष में मैंने अपनी इच्छा का पयाल रखते हुए उसकी प्रशंसा नहीं की और केवल कहा, “जल्दी करो ।”

अन्धकार में हम घूम-घूमकर आगे बढ़ते ही गये, बढ़ते ही गये । और हमारे सामने नये-नये रास्ते खुलते गये । कई बार रास्ता सामने से बन्द हो जाता और हमें झौटना पड़ता । आखिर में कप्ताह ने हवा सूँघकर कहा : “मालिक बीसों की गण लग रही हैं न ?” उसके दाँत अब भी बज रहे थे ।

मुझे भी वह घुरी गध आने लगी थी—घुणित और मिचली साने वाली और ऐसा लगने लगा जैसे हम किसी बहुत बड़े बैल के अस्तबल में आ गए थे । पर मैंने कप्ताह को आज्ञा दी कि वह साँस रोककर आगे बढ़े । उसने फिर मदिरा का घूँट लिया और आगे बढ़ा ।

परन्तु थोड़ी ही दूर जाकर मेरा पैर फिसल गया । रोशनी में देखा—वह किसी स्त्री का सड़ता हुआ मुँह था जिसके केश अभी भी लगे हुए थे । और तब मैं समझ गया कि मुझे बेरी मीनिया अब कभी नहीं मिलनी थी ।

मैंने लौटना चाहा परन्तु न जाने क्यों मैं फिर भी पागलों की तरह बढ़ता ही गया और कप्ताह डोरा खोलता हुआ चसता रहा।

कप्ताह एक स्थान पर हठात् रुक गया। सामने जो कुछ उसने देखा उससे उसके रोम भय से खड़े हो गए। दाँत बजने लगे। हाथ की मशाल हिलने लगी। मैंने देखा कि वह गोबर का एक बहुत बड़ा चबूतरा था जो सूख गया था। वह मनुष्य के बराबर ऊँचा था। कप्ताह बोला, "यह बेल का गोबर नहीं हो सकता। इतना बड़ा बेल तो इस गुफा में आ ही नहीं सकता। मेरा विचार है कि यह कोई श्वर्दस्त सर्प है!"

मैंने देखा कि वह बिलकुल ठीक कह रहा था। और मैं धराकर लौटना ही चाहता था कि मुझे मीनिया की याद फिर हो आई और पागलों की भाँति मैं फिर आगे बढ़ चला। मैंने अपने पसीजे हुए हाथ में अपना चाकू मजबूती से पकड़ लिया था। जानते हुए भी कि उससे मेरा कोई बचाव नहीं हो सकता था।

बदबू बढ़ती गई। यहाँ तक कि साँस लेना भी कठिन हो गया। और हमारे पैरों के नीचे हड्डियाँ धोलने लगी और गोबरों के ढेर आने लगे। अब दीवारें ईंट की नहीं थी बल्कि गुफा चट्टान में कटी हुई थी। निश्चय ही हम पर्वत के नीचे आ गये थे। रास्ता नीचे आने लगा। डलुआ मार्ग पर हम बढने लगे। पूरे रास्ते हड्डियों के ढेरों और दुर्गन्धपूर्ण हवा में हम चलने गए। अन्त में हम एक चट्टान के पास जाकर रुक गए। गुफा खरम हो गई और सामने ऊँचे पर्वतों से घिरा हुआ एक विस्तृत जलाशय था जहाँ क्षीण प्रकाश हो रहा था। हवा वहाँ की अत्यन्त विषाक्त और दूषित थी। भयानक हरी सी रोशनी में वह स्थान अत्यन्त भीमत्स लग रहा था। दूर वहाँ समुद्र का गर्जन सुनाई दे रहा था जहाँ चट्टानों से भी लहरें टकरा रही थी।

सामने उस जल में पक्तिबद्ध कई घमड़े के घँसे पड़े थे जो जल में फूल रहे थे। जब निगाह जमीं तो मैंने देखा कि वह कई घँसे नहीं थे बल्कि एक ही विशाल जंतु का शरीर था जिसकी साल जगह-जगह उमर आई थी। वह जंतु जल में मरा पड़ा था। वह इतना बड़ा था कि जिसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। उसका मुख एक भीमकाय बेल का सामान

था और शरीर कप्ताह के बड़े अनुसार सर्प का सा था। अब वह सड़कर हल्का हो गया था और जल पर तैर रहा था। मैंने देखा कि फ्रीट का देवता मरा पड़ा था—वह निश्चय ही महीनों से वहाँ पड़ा सड़ रहा था। परन्तु मीनिया तब वहाँ गई ?

और तभी मुझे मीनिया से पहले वहाँ आये हुए युवक और युवतियों का प्वास आया। और वह वहाँ गये ? इसी देवता के पास आने के लिए युवकों को रबी निषेध थी और युवतियों को गुरव ! और देन का छँटा हुआ सोन्दर्य वहाँ आता था। और मेरी आँखों के सम्मुख चित्र घूमने लगे। युवक और युवतियाँ भाग रही हैं और यह भीमकाय जस्तु उनका पीछा कर रहा है—और यह उन्हें गुफा की भुमभुनियों में जब सामने दीवाल भ्रमणी है अपने विशाल शरीर से टेरकर ला जाता है। हड्डियों की चबाक चुक देता है—एक महीने में एक मर भक्षण—वही था फ्रीट का देवता पर मेरी मीनिया वहाँ गई ? और निराश होकर मैं 'मीनिया', 'मीनिय' बिलगाने लगा। गुफा गूँब उठी। कप्ताह ने मेरा हाथ पकड़ा और जल भस्मर एक चट्टान की ओट में बसे हुए एक शरीर की ओर इगित किया ऊपर चट्टान पर ताड़ा खून मूला हुआ था। मैंने देखा वह मीनिया शरीर का त्रिकवा मूल केंद्रों में ला लिया था। मैंने उसके केशों पर बाली के जाल से उसे बहचाना। शरीर जल में हिन रहा था क्योंकि बेंग उसे बुरेद-बुरेदकर ला रहे थे, उसकी पीठ में होला हुआ आरपार तलवार का घाव था।

मैं समझ गया कि माईनोटीरस ने उसे पीछे से तलवार घुसाकर मारा था और जल में डाल दिया था। वह जाने कब से उस देवता कापु को बहान ही बनावे रखने के लिए इस मीनि युवक और युवतियों वहाँ तब लाकर अन्धकार धारपर जल में फेंक रहा था—

मेरे मुँह से एक भवानक भीम निबभी और मैं कबल छाकर दिसा और यदि समय से कप्ताह ने मुझे व पकड़ लिया होता तो निश्चय ही अपनी मीनिया के पास उसी समय पहुँच गया होता। उसके बाद मुझे मरी ग्रा।

अब मेरी आँखें खुली तो मैंने देखा मुबट हो चुकी थी और क

मुझे एक झाड़ी में लिये बैठा था। दूर छीट नगर दिखाई दे रहा था।

जब मेरी संज्ञा लौटी तो उसने मुझे बतलाया कि जब मैं बेहोश हो गया तो वह मुझे उठाकर बड़ी कठिनाता से बाहर लाया था। मीनिया तो मर ही चुकी थी अतएव उसे लाना तो उसने व्यर्थ समझा और साथ ही मदिरा पात्र को क्योंकि वह नहीं ला सकता था। अतएव उसने उसमें से सम्पूर्ण मदिरा पीकर उस पात्र को वही जल में फेंक दिया था कि दूसरी बार जब मार्दनोटीरस आये तो उसे देखकर चकराये। गुफा के मुहाने पर आकर उसने डोरा फिर से सपेट लिया था और कील भी उखाड़ ली थी कि उनकी तरकीब के बारे में किसी को पता न लग सके। बाहर आकर उसने खिड़की में ताला लगाकर चाबी फिर बेहोश चौकीदार की कमर में खाम दी थी।

उसने मुझे मदिरा पिलाई और फिर हम दोनों नगर की ओर चल दिये। मुझे अब ऐसा लग रहा था जैसे मीनिया को मैं पिछले जन्म में जानता था—उसके वियोग में मैं बिल्कुल नहीं रोया। गाना गाता हुआ पागलों की भाँति मैं कप्ताह का सहारा लिये चलने लगा। मार्ग में मीनिया के मित्र हमें मिले और कप्ताह ने मुझे बाद में बतलाया कि मेरी उस नशे की हालत को देखकर उन्होंने आश्चर्य प्रगट किया क्योंकि छीट में इस तरह सबके बीच नशे में धूमना अत्यन्त घृणित कार्य समझा जाता था। परन्तु उन्होंने मुझे परदेसी समझकर सब बातें जैसे भुला दीं और वह मुँह फेरकर चल दिये। उसके बाद मैं सराय में पहुँचकर नित्य पीने लगा। कप्ताह मुझे खलने लगा था क्योंकि वह मुझे उबड़स्तोरी खाना खिलाता था जब कि मैं केवल मदिरा ही पीना चाहता था। मुझे ध्यान आता कि मार्दनोटीरस की जाकर मैं हत्या कर दूँ क्योंकि वह मीनिया के अनिर्दिष्ट अनेक मुयक और युवतियों की निर्भय हत्या कर चुका था; परन्तु फिर ध्यान आता कि आखिर जब वह विज्ञान जन्तु जीवित था तब भी तो वह जान-बूझकर ही उन युवक-युवतियों को जाकर उसकी बलि चढ़ाया करता था। एक बात का मुझे सन्तोष था कि अब जब उनका देवता मर चुका था तो छीट वालों का अंत आ गया था क्योंकि यही तो थी उनकी भविष्य-वाणी। जो कुछ भी हो, पर मेरी मीनिया की मृत्यु बहुत ही आगामी से

हो गई थी और उसे अपने प्राणों को लेकर उस मरभयक जन्तु के सामने भागना नहीं पड़ा था। और चीट का जब नाम होगा—मैं सोचता हों मित्रों की यह बात से विह्वल स्थितियों में मृत्यु की भयानक चीखों में परिणित हो जायेंगी और वह सुन्दर इमारतें सब जलकर राख की ढेरियाँ बन जायेंगी—मार्सिनोटीस का सोने का खिर पीट-पीटकर लीज कर दिया जायेगा और फिर मृत के अन्य सामानों के साथ बोट लिया जायेगा।

और मुझे बप्ताह ने बताया कि मैं मृत हूँ। एक दिन बप्ताह मेरे सामने बैठकर जब रोने लगा तो मुझे बड़ा क्रोध आया और मैंने घुना ले बहा।

“क्यों रोना है तुम्हें ?”

वह बोला : ‘मालिक ! तुमसे अब मैं भी एक गया हूँ, तुमने अब हृदय री । मरने वाले तो मर गये और लौटने के नहीं ; पर तुम हो कि मरने पर लौटते हो । तुमने अपना सम्पूर्ण सोना-चाँदी लिवरियों में पीके पोंक दिया है—जीने हाथों से तुमने जब अपने मरीजों को देखना चाहा तो वह सब मुझे छोड़कर भाग गये वह कहते हुए कि यह तो बुरी तरह मरीजों से बुरा हो रहा है।’

आत्म में तो मैंने भी लोचों से बड़ी देखी-होकी कि देखो मेरा मालिक बंते हरिदाई छोटे की जगति बदिरा पीना है। मैं स्वयं बदिरा को उत्तम बन्धु मदाता का परम्पु अब तो तुम्हारे कारण लाभ्यन हूँ। तुमने पण-बाप्टा को भी पार कर दिया है। यदि तुम मरना ही चाहते हो तो फिर हम तरह की-बीकर मरने में अच्छा तो यह है कि एक बदिरा से भरे हुए होठ में दूध भर कर आओ। तब तो कुछ नाथ भी है।’

मैंने देखा कि वह विस्तृत टीक बह रहा था। मेरे हाथ अब देख के हाथ नहीं रहे थे। वह स्वरः जीवने से जीने अब मैं उनका मालिक नहीं रहा ना। मुझे उस हाथन से जाने कितने दिन और कितनी रातें निकल गई थी। मैंने बदिरा पीना बन्द कर दिया। वास्तव में मैं पराकाष्ठा को पार कर गया था। मैंने बप्ताह से कहा :

“तुम्हारी जाने मेरे जान से मस्तिष्कों की विरभिवारुड-बंसी लगन है—फिर भी मैंने अब बदिरा से हाथ पीच लेने का निश्चय किया है—

चलो स्मर्त्ता वापस चलें !'

और जहाज हमें त्रीट से दूर— दूर अनन्त समुद्र की ओर ले जाता ।

९

तीन साल के बाद जब मैं स्मर्त्ता लौटा तो मैं युवक नहीं रहा था— मेरा पौरुष थक चुका था । इस बीच मैंने कई देशों में ज्ञान प्राप्त किया था अच्छा, बुरा, सब । पूरी समुद्री यात्रा में मुझे समुद्र के हरे जल में से मीनिया की हरी आँखें झाँकती हुई दिखाई देतीं और मैं उसी की याद में सोया-खोया सा रहता था ।

स्मर्त्ता में मेरा मकान अब भी खड़ा था हालाँकि उसके किवाड़ों व खिड़कियों को चोर तोड़ गए थे । अन्दर से काम-काज का जितना सामान था सब गायब हो चुका था और पड़ोसियों ने मुझे समझे अँसों से गायब देख कर मेरे मकान के सामने की जमीन को काम में लाना शुरू कर दिया था और उसे बेहद गंदा कर दिया था ।

मेरे पड़ोसी लोग मुझे वापस देखकर खुश नहीं हुए बल्कि आँखें फिटा-कर आपस में बोले, "यह मिसी है और सारी बुराइयाँ मिस्र से ही निकलती हैं," अतएव मैं सीधा एक सराय में गया और बप्ताह को मैंने भाजा दी कि वह मकान को रहने लायक ठीक करे । फिर मैं उन व्यापारियों के पास गया जिनके पास मेरा धन जमा था । वैसे अब मैं गरीब होकर लौटा था यहाँ तक कि होरेमहेय का दिया हुआ तमाम सुवर्ण भी अब समाप्त हो गया था । धनी व्यापारी लोगों ने मुझे देखकर बहुत आश्चर्य किया साथ ही वह कुछ उदास भी हो गए । क्योंकि मेरी संवी मरहाजिरी से वह मेरे धन को अपना समझने लग गये थे । फिर भी उन्होंने दाढ़ी खोजने हुए मुझे गंभीरतापूर्वक हिसाब समझाया । बहुत से जहाजों में फायदा हुआ तो कुछ सौटकर ही नहीं आये थे । हिसाब के उपरान्त जो उन्होंने मुझे दिया तो मैंने देखा कि मेरी आर्थिक परिस्थिति इतनी जबर्दस्त अभी तक बची

नहीं हुई थी। मेरे पास अब बहुत धन हो गया था। स्मर्तों में रहने के लिए मुझे कोई चिन्ता नहीं करनी थी।

परन्तु मुझे वह व्यापारी लोग अलग बुलाकर बहने लगे, “सिन्धूहे ! तुम कुशल बैठ हो और इसीलिए हम तुम्हारा सम्मान करने हैं; परन्तु भाग्य बन नहीं हुआ दूसरी तरह की चल रही है। जो कर कराऊन को देना पड़ता है उसने यहाँ के लोग ऊब गये हैं और वह अब बिद्रोही हो गये हैं। हाज ही में गडको पर लोगों ने निशियों को परचरो में मार-मारकर हत्या कर दी है। अतएव हम तुम्हें सावधान किये देने हैं कि अश्विमे में भेषक बन रहने में ही लाभ है वैसे नहीं।”

बल्गाह ने बताया कि जब वह एक सराय में मदिरा पीने गया तो लोगों ने उसे बड़ी गुब मारा।

मैं अपने मकान में आकर अब अपने रोगियों की सुधूपा करने लग गया था। वहाँ भी रोगियों से मेरी आये दिन विल के फलों को लेकर लायें हो ही जाया करती थी। परन्तु युवा इत्यादि सब कुछ करने हुए भी लोगों का आना मेरे यहाँ कम नहीं हुआ क्योंकि बीमारी और दुःख-दर्द अनुप्य मान देलकर आते हैं न कि अल्प भयवा राष्ट्र।

एक शाम मैं इस्तर के मन्दिर में लौट रहा था कि मुझे मार्ग में तीन-चार आरमियों ने घेर लिया और आपस में कहा :

“यह तो मिली भगत है। हमारे मन्दिर की कुमारियों को तो यह लजने बाग। पुरान बिगाड़ देगा। है न ?”

“तुम्हारी इन कुमारियों को राष्ट्र का जानि की परवाह नहीं होगी—बहु तो सोना मँगनी है सोना —” मैंने कहा : “मैं तो रोख राख उनके पास गन्धोप के लिए आता हूँ और आता पहुँचा भी—इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ?”

और अब उन सबने विलकर मुझे घुम्नी पर दे मारा परन्तु अब मेरा मुँह उनमें में एक में देगा तो वह बिज्जाया और एकरम तमाम लोग मुँह ईश्वर आये और बहने दने “ओह यह तो निम्नदे बँद है। हमारे सम्मान अवीर का पिय !”

मुझे पता भी नहीं मला कि वह बीन के और कौन वह मुझे छोड़ कर

भाग गए जब कि वह इतने अधिक थे और मुझे इनकी आशानी में मार मरने थे ।

और तब मैंने सोचा कि मिय वापस चलना चाहिए । बप्ताह से मैंने अपनी इच्छा प्रकट कर दी ।

हामाजि मैं मीरिया के सोमो की भानि बरबादिक वहनने लग गया था फिर भी मुझ पर वहाँ के सोम मोबर इत्यादि फेंककर मारने लग गये थे ।

कुछ दिनों बाद मेरे घर के द्वार पर एक चुड़सवार आकर था। तो मुझको तथा मेरे पड़ोसियों को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि हम जैन और जंगली जानवर पर मियो या मीरियन नाम कभी धावा करना गमन नहीं करने थे । यह कहने में भी दिक्कत पैदा करना था जबकि यथा भयानक दिग्गम्य था । सोचा मैंने ज्ञान डाल रहा था तिनको प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा था कि वह बहुत मेढी के साथ आया था । सवार की योगाफ में आदि हो रहा था कि वह पहाड़ों का उतने वाला था जहाँ सोम भेड़ पालकर जीवन धारण करने थे । वह उतरकर मेढी से आकर हीनो हुए बांग ।

“जीन अपनी कुसी मीगाओ और जलो — मैं जम्बूर में आया हूँ — मुझे वहाँ के राजा अजीब से जेहा है । उसका पुत्र बीमार है और कोई उपाय इलाज नहीं कर पा रहा है । अजीब रोग की तरह मर रहा है और वा उसके पास जाना है उम्मी की हृदयों सोच देगा है । जम्बूर जीन अपनी दवाओ की बेटी मेहनत में साथ आओ । जम्बूर में मुझ्झागे निर कभी जाने भेगा हूँ और उसे मदक पर जान देकर बुलवाना हूँ ।”

“मने निर मे ला अजीब का काम जरी जेगा” मिर कहा, “पर की कि वह जेगा निर है जम्बूर जम्बूर हूँ । मैं मुझ्झागे जम्बूर की मैं निर भी बिना नहीं करना ।”

मेरा मन अपनी निर की सुबकी दिवकी में डूब गया था । और मैं एक बुद्धि निर से निरकर कुछ मीरियन जम्बूर करने जाँगे ।

जैसे जम्बूर के मैं एक कुर्सी जाने को कह दिया । मैं सोचा कि

अजीरू के साथ निश्चय ही आनन्द रहेगा क्योंकि यह वही तो था जिसके दांतों पर मैंने सोना चढ़ाया था और जिसे मैंने किफ्तीयू नाम की स्त्री दी थी ।

थोड़ी दूर जाकर जब पहाड़ी इलाका आया तो मुझे छोटे जुता रथ तैयार मिला । वह मुझे अनगढ़ पत्थरों पर नेकर भाग चला । भारी पहियों के नीचे जबदेस्त गडबड़ाहट होती और वह रथ इतना ख़ादा हिलता कि मेरा जोड़-जोड़ हिलने लग गया । मैं खबर नया, पर रथ था कि खण्डहर-खण्डहर भागा चला जा रहा था । मेरी हड्डी-पसली हिलने लगी और मैं चिल्लाने लगा । गाड़ी वाले को गालियाँ देने लगा । हर क्षण मुझे ऐसा लगता अब गिरा-गिरा-गिरकर मेरी गर्दन टूटी—रथ की बगली को मेरे हाथ स्थलः मजबूती से पकड़े हुए थे । मेरे पसीना छूट रहा था और मैं रथबान की पीठ पर धुंसे थी लगता, गालियाँ देता, पीसता; पर जैसे कोई परवाह ही नहीं थी उसे । रथ उसी रफ्तार से हडबड़ाहट करता भागा चला जा रहा था । दो-एक स्थानों पर रथ रुका और नये घोड़े बदले गए । जब मैं अश्रुपूर्व पहुँचा उस समय सूरज छिपा नहीं था । परन्तु मैं स्वयं रथ से उतरने के बाविल नहीं रह गया था । मुझे उठाकर वह सोय अन्दर ले गये । मगर अब बड़ा बन गया था । उसके चारों ओर ऊँचा कोट नया ही लिखा था । पर हमारे लिए द्वार पहले ही से खुले रहे गए थे । जब बाजार में होकर रथ निकला तो उसके पहियों के नीचे जाने बितनी गालियाँ मटकी इत्यादि टूट गई जो वहाँ हाट वाली स्त्रियों ने रस रखी थी; रथ को रक्कर उन्हें हटवाने का समय नहीं था और स्त्रियाँ चिल्ला रही थी ।

मुझे बाँह पकड़कर दो सैनिक पसीटकर अन्दर ले चले और दास मेरी ओपधि की पेट्टी को उठा लाये । महल में घुसने ही हम अजीरू से भिद गए जो तेज़ी से बाहर आ रहा था । और वह पावल हाथी की भीड़ विषाड उठा । उसने अपने लमाम बरन फाट डाले थे और केतों में रंग डाल ली थी । मुँह उसने नाखूनों से इनना रगड़ डाला था कि उन पत्थरों में से रक्त चिसचिमाने लग गया था ।

परन्तु मुझे देखते ही उसका वह उग्र रूप गान्न होकर विनीत बन गया और वह मुझसे लिपट गया । वह रोकर कहने लगा, “मेरे पुत्र को अम्हा

कर दो सिन्यूहे ! उसे अच्छा कर दो । और जो कुछ मेरे पास है वह सभी तुम्हारा हो जायेगा—”

“पहले मुझे उसे देख लेने दो” मैंने कहा । वह मुझे तुरन्त एक बड़े कमरे मे ले गया जिसमे अंगीठी जल रही थी हालांकि वह धीम्न ऋतु थी । कमरे मे एक पालना रखा था जिसमें एक बच्चा, जो सालभर से कम था, ऊनी वस्त्रों से लिपटा पड़ा बुरी तरह चीख रहा था । उसके माथे पर पसीना बह रहा था । हालांकि वह इतना छोटा था फिर भी उसके सिर— अपने पिता की भांति घने काले बाल थे । मैंने देखा कि उसे कोई खास नहीं था । यदि वह मर रहा होना तो उस कमजोरी में कभी इतना चिल्ला कर रो नहीं सकता था । पालने के पास भूमि पर किफ्तीयू पड़ी रो रही थी । वह अब पहले से मोटी और ज्यादा गोरी भी हो गई थी । कमरे अन्य भागों से दास चिल्ला रहे थे क्योंकि अजीरू ने ज़ुड़ होकर उन्हें पीटा था—इसलिए कि वह उसके पुत्र को ठीक नहीं कर सकते थे ।

“घबराओ मत अजीरू,” मैंने कहा, “तुम्हारा पुत्र अच्छा हो जायेगा परन्तु इस बीच जब मैं अपने बीजारे को शुद्ध करूँ तुम यहाँ से तमा लोगों को और इस अंगीठी को बाहर निकलवा दो ।”

“बच्चे को ठंड लग जायेगी” किफ्तीयू बोली पर तभी उसने मि ऊँचा किया और मुझे देखकर वह मुस्कराकर कहने लगी :

“अच्छा तुम हो सिन्यूहे !” और उसने अपने कंधे जो खुले पड़े थे उठाकर उन्हें जूड़े में बाँध लिया ।

अजीरू दीन स्वर में बोला :

‘बच्चे ने तीन दिन से न कुछ खाया है न पिया है—यह तो भिर्क रो रोकर जान दे रहा है । मेरा दिल इसकी चिल्लाहट सुनकर पानी-पान्न हुआ जाता है ।”

जब कमरा दास-दासियों से खाली हो गया और अंगीठी भी हटा दी गई तो मैंने कमरे की बिड़कियाँ खोल दी जिससे संध्या की मन्द म्मार अन्दर आने लगी । बच्चे का स्वेद मैंने पोछ दिया क्योंकि अब तक मैं भी ज़ुड़ कर चुका था । फिर मैंने उसके (बच्चे के) ऊनी वस्त्र खोलकर उसे मूँती चादर से उड़ा दिया । एकदम बच्चा चुप हो गया और अपने मोटे-

मोटे पैरों से सात चमकाने लगा मैंने उसका घेठ दबाकर देखा फिर उसके सारे शरीर को छूआ। हठात् मुझे एक बात सूझी और मैंने उसके मुँह में डेगली टाल दी। मेरा अनुमान बिस्कुल ठीक निकला, बच्चे का पहला दाँत उसके जबड़े में मोली की भाँति निकल रहा था।

और तब मैंने सनाबटी कोछ कुछ पर आकर बहा, “अडीक ! क्या इतनी सी बात के लिए तुमने स्पर्ना के सबसे बड़े बँध को खुसबाया है कि जिनके हाथ पैर तुम्हारे उस रथ में डीसे हो गए ? तुम्हारे बच्चे को को बीमारी है ही नहीं—बढ़ तो केवल अपने पिता की भाँति उतावला हो रहा है। हो सकता है कि इसे दो एक दिन बुखार भी हो गया हो और इसकी भी की हो पर अब इसे बुखार भी नहीं है। अगर इसने की भी है तो इसका अर्थ है कि यह उस गाँव दूध को हضم नहीं कर सकता था जो इस जबड़ेस्त्री पिलाया गया था। अब किफ्तीयू का दूध इसे न दिया जाय अन्यथा यह उसके स्तन को बाट डालेगा—देखो इसका पहला दाँत निकल रहा है और मैंने बच्चे का मुँह खोलकर वह दाँत दिखा दिया। अडीक खुशी नाचने लग गया और किफ्तीयू ने कहा कि ऐसा सुन्दर दाँत उसने आज तक कहीं नहीं देखा था।

जब किफ्तीयू उसे फिर ऊनी कपड़े पहनाने को आने बड़ी तो मैंने रोक दिया।

और अडीक फिर खुशी से नाचता फिर। उसे अपनी हैसियत और मान का भी समझ न रहा। वह कहता रहा :

“कितनी रातें मैंने जागकर इसके पालने के सहारे काटी है ? क्रोध आने कितने लोगो को मैंने मारपीट कर घायल कर दिया है—लेकिन तुम्हें यह तो समझ ही लेना चाहिए कि यह मेरा बेटा है; मेरा पहला बच्चा, मेरा सुवराज, मेरी आँखों का तारा, मेरा रत्न, मेरा छोटा शेर है जो एक अम्भूर का राजमुकुट धारण करके अनेकों पर राज्य करेगा। क्योंकि देग को तो मैं इतना बड़ा बना जाऊँगा कि वास्तव में इसका उत्तराधिकारी आनन्द भोगेगा—देखो इसके बाल कौसे शेर के से है—मैं दाँत साँप कहूँ सबका हूँ कि तुमने अपनी सारी यात्राओं में भी ऐसा सुन्दर बच्चा और कहीं नहीं देखा होगा।”

मैं उसकी बातों से ऊब उठा था। मेरा जोड़-जोड़ दुन रहा तत्पश्चात् वह मुझे बाह पकड़कर प्रेम से भोजन कराने ले गया। अने भाति के साथ पदार्थ चांदी के पात्रों में हमें परोसे गए और सोने के पात्रों में से अच्छी मदिरा दी गई। सा पीकर मैं तरोताजा हो गया।

उसका अथिति बनकर मैं कुछ दिन वहाँ रहा। उसने मुझे मन कर सोना चांदी दिया—मैं प्रत्यक्ष देख रहा था अब वह काफ़ी अमीर हो गया था। वह कैसे अमीर बना जब मैंने उससे पूछा तो केवल हँस दिया। उसने मुझे कारण नहीं बतलाया। उसने दाढ़ी सहलाते हुए हँस कर कहा, “जो स्त्री तुमने मुझे दी थी वही अपने साथ भाम्य लाई थी,” किफ़ीपू ने भी मेरी बड़ी इच्छा और सेवा की। जब वह चलती, उसके पीन निरंतर और स्तन हिलते तब उसके आमूषण बजने लगते। अजीरू उसके पीछे इ अधिक पागल था कि उसने अपनी और स्त्रियों के पास जाना करीब-करीब बन्द ही कर दिया था। वह कभी एक आध बार वह उनसे मिलकर वा निभा देता था—क्योंकि वह भी आसपास के छोटे कबीलों के सरदारों के बेटियाँ थी जिनसे उसने अपनी शक्ति बढ़ाने के विचार से विवाह किये थे। अजीरू ने अपनी बढ़ती हुई शक्ति के बारे में झीग मारी। उसी बातों में जाहिर किया कि मेरा पता उसे उसके कुछ आदमियों ने दिया था जो एक रात मुझे मारने लगे थे, पर फिर मुझे पहचान कर भाग गए थे उस उस बात के लिए दुःख था। उसने कहा।

“यह सच है कि कई मिश्रियों के सिर टूट जायेंगे—क्योंकि सबने बड़ा काम यह है कि विबलीस, सिडोन और गाया के लोग यह जान लें कि मिश्री भी मारे में मर जाता है, कि उसके शरीर से भी अन्य किसी की भाँति ही रक्त बह निकलता है। लोग उनसे स्पर्श ही इतने डरे हुए हैं और उन्हें अजेय समझते हैं।”

“परन्तु अजीरू ! “मैंने पूछा, “तुम्हें मिश्रियों से इतनी तीव्र घृणा क्यों है ?”

उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और मुस्कराया, फिर बोला :

“मुझे घृणा क्यों होने लगी ? क्या मैं तुम्हें नहीं चाहता ? तुम भी तो और तुमसे तो मुझे घृणा नहीं है। फिर मैं तो अराऊन के स्वर्ण-

गृह में पला हूँ। वही मैंने सीखा है कि विद्वानों की दृष्टि में सभी लोग बराबर होते हैं। कोई देश एक-दूसरे से न बुरा होता है न अच्छा। सभी जगह बहादुर, विद्वान, दरपोक, कूर और बदमाश लोग रहते हैं। अतएव राजा लोग स्वयं तो किसी से घृणा नहीं करते परन्तु घृणा राजा का सबसे बड़ा अस्त्र बन सकती है। जब तक यह भोगों के दिलों में नहीं बैठ गई जाती लोग हथियार बलाने में असमर्थ रहते हैं। मैं वहीं कर रहा हूँ जो मुझे अब करना चाहिए क्योंकि सीरिया और मिस्र के बीच आग लगाना ही मेरे लिए लाभप्रद है। मैं इस आग को तब तक फूँकूंगा जब तक कि वह लपट बनकर मिस्री छाक का सीरिया में अन्त न कर देगी। सभी नगरों में यह बात प्रत्यक्ष हो जाएगी कि मिस्री दरपोक, कूर, बुरे, सातवी और एहसान-फारमोश होने हैं और घृणा के योग्य हैं।”

‘लेकिन यह बात सच तो नहीं है’ मैंने टोका। अश्वीरु ने हाथ बढ़ाकर कपड़े मटके, फिर कहा :

“सिम्पूहे ! सच क्या है ? जब उनका रक्त इस सत्य को काफी सोख लेगा तो वह बसम साकर बहने लगेंगे कि असली सत्य यही है और यदि कोई उस समय उनका विरोध करेगा तो वह मारा जाएगा। सत्य तो यह होगा कि यही के भोग जान आएं, अतः उनके दिलों में यह बात पर कर आए कि वह स्वयं मिस्रियों से अधिक योग्य, अधिक वीर और अधिक ताकतवर हैं। वस फिर यही सत्य उन्हें हिंसा की ओर चलावेगा। यह भी तो सत्य ही है कि जब मिस्री सीरिया में आये वे तो अपने साथ रक्तपात और आग लाये वे, फिर क्यों न उसी सत्यसे उन्हें निकाला जाय ? सीरिया सभी स्वतन्त्र हो सकेगा।”

“स्वतन्त्र ?” मैंने अरते हुए पूछा, ‘कैसी स्वतन्त्रता ?’ उसने फिर अपने हाथ उठा दिये और वह मुस्करा दिया फिर बोला :

“स्वतन्त्रता शब्द के भी कई अर्थ होते हैं—कोई उसका कुछ अर्थ समझता है तो कोई कुछ और परन्तु जब तक वह मिल नहीं जाती तब तक तो उसकी कुछ चिन्ता है ही नहीं ? बहुत से स्वतन्त्र होने में लगे रहते हैं परन्तु जब स्वतन्त्रता मिल जाती है तो वह उसे केवल अपने लिए रख लेते हैं—मेरा विचार है कि एक दिन अम्पूरु की भूमि स्वतन्त्रता का

कहलायेगी—जो राष्ट्र उन सब बातों पर विश्वास कर लेता है जो भी उससे कही जाती हैं—उस मवेशियों के झुंड की भांति होता है जिसे झंडा लेकर एक द्वार से हाँका जा सकता है या शायद भेड़ के उस बच्चे के समान है जो अगली घंटी को सुनकर पीछे-पीछे चलता जाता है और समझता है कि वह ही उस झुंड का सरदार है।”

“तुम्हारे माथे में सबकुछ भेड़ का ही भेजा मरा है,” मैंने कहा, “क्योंकि तुम फराऊन ! उस महान् फराऊन की शक्ति से टककर लेना चाहते हो ! वह तुम्हें, तुम्हारे नगर को धरती में मिला देगा और तुम्हें व तुम्हारे लड़के को अपने जंगी अहाजों की कमानों से उल्टा सटका देगा।”

सुनकर वह केवल मुस्करा दिया, फिर बोला :

“तुम्हारे फराऊन से मुझे कोई खतरा नहीं है क्योंकि उसके भेजे हुए ‘जीवन के चिह्न’ नामक पदक को मैंने सहर्ष स्वीकार करते हुए उसके देवता का मंदिर अपने गहाँ बनवा दिया है। वह मुझपर इतना अधिक विश्वास करता है कि सीरिया ने किसी और पर नहीं करता—बल्कि अपने लोगों पर भी विश्वास नहीं करता क्योंकि वह अम्मन के माननेवाले हैं। चलो मैं तुम्हें कुछ दिखा दूँ—”

और उसने मुझे महल से बाहर लाकर दीवास के सहारे उल्टी सटकी हुई एक लाश दिखाई जिस पर मक्खियाँ मुरी तरह भिनभिना रही थी। वह बोला : “देखने हो उसे ! वह मिस्री है—ध्यान से देखो कि उसका छतना हो रहा है—यह मिश्र का कर-एकजित करनेवाला था। इतना उड़ण्ड और साहसी हो गया था वह कि मेरे पास धाँकर जवाब-सत्तब बनने लगा कि क्यों मैंने दो साल से मिश्र की नहरों रोक रखी थीं। मेरे सैनिकों ने उसके साथ खूब उपहाम किया और फिर उसे उसकी हिम्मत की सजा दे दी। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि मिस्री लोग अपनी मर्जी से यहाँ आना पसन्द नहीं करते क्योंकि इसके बाद फिर कोई और नहीं आया और यहाँ के व्यापारी लोग जो हैं, वह मिस्रियों की बजाय मुझे बर देना बरादा पसन्द करते हैं। मैंगिओ मेरे कब्जे में आ चुका है—वहाँ के मिस्री सैनिक कितने से बाहर निकसकर नगर में नहीं घुस सकते क्योंकि उन्हें अपने प्राणों का डर है। पत्थरों से मार-मारकर उनका भुत्ता बना दिया

जायेगा ।”

उसके पास देव-देवताओं से आई हुई मिट्टी की सजावियाँ थीं जो उसके सिलसले-पड़ने के काल में तजी रखी थीं । वह उसने मुझे नहीं दिखाई । उसके पास हिलैली राजदूत भी आते-जाते थे । मैंने उसे उनके बारे में जो मैंने नहीं देखा था सब बतलाया परन्तु उसनी बातें वह पहले से ही जानता था । साफ़ था कि वह मिश्र के विरुद्ध उसकी सहायता में रहा था । मैंने कहा ।

‘‘और गीदड़ मिस्रकर भले ही एक शिकार मार लें, परन्तु क्या तुमने कभी सुना है कि बकिया मास गीदड़ को मिला गया हो ?’’

वह केवल हँस दिया फिर बोला : ‘‘तुम्हारी तरह ज्ञान प्राप्त करने की मेरी व्यास बेहद है परन्तु राजकाज से मुझे इतना अवकाश नहीं मिल पाता । तुम्हारा ज्ञान अपार है क्योंकि तुम पत्नी की भाँति स्वतन्त्र हो—परन्तु यदि हिलैली सेना के उच्चाधिकारी मेरे लोगों को—मेरे सरदारों को, युद्ध की कला सिखाएँ तो हजे ही क्या है ? उनके पास नये-नये हथियार हैं और उनके सैनिकों को अनुभव भी अधिक है । फिर वह तो कुराऊन की ही सेवा है, क्योंकि यदि युद्ध छिड़ गया तो सीरिया ही तो हमेशा से मिश्र की डान रहा है ? वह सब हम अभी तय करेंगे ।’’

युद्ध का नाम आते ही मुझे होरेमहेब की याद हो आई । मैंने कहा : ‘‘तुम्हारा आशिष्य मैंने भी भरकर भोग लिया है अब मुझे भाना हो । परन्तु मैं तुम्हारे रथ में बापस नहीं जाना चाहता जिसमें हर बड़ी मुझे मृत्यु का भय बना रहता है । मेरे लिए एक कुर्सी बँबा हो । स्मृतों मेरे लिए अब खगल हो गया है जहाँ अब मैं रहना नहीं चाहता । अब नील का जल पीने को मेरा मन अबुलाने लगा है । मैं भीषण हीमिश्र की ओर जाने वाले जहाज में जाता जाऊँगा । यावद अब तुमसे कभी मिलना न हो सके । शीघ्र जाने कम क्या होनेवाला है ! मैंने दुनिया की काफ़ी कुपारियाँ देल भी हैं और कुछ कुपारियाँ तुमसे भी लीसी ही हैं ।’’

वह हँस दिया । फिर उसने उत्तर दिया :

‘‘कोई नहीं जानता कम क्या होनेवाला है ? सच है, तुमकले पात्थरों पर कोई नहीं बसती—तुम्हारी आँखों में जो चमकता है उससे मैं कह सकता हूँ कि तुम किसी स्थान पर अधिक दिन नहीं टहर सकोगे ।’’

उसके सैनिक मुझे स्मर्ना के नगरद्वार तक छोड़ गए। द्वार में घुमते ही एक अबावीन मेरे मुँह के सामने से उड़ गई। मेरा हृदय धक्-धक् करने लग गया। अजीरु का दिया हुआ सोना और चाँदी लेकर जब मैं घर घुसा तो कप्ताह खुशी से खड़ा हो गया और उसने अपनी आदन के अनुसार मकबक शुरू कर दी। मैंने उससे कहा :

“सब सामान और यह घर बेच डालो। हम लोग क्षीघ्र मिल जाने वाले हैं।”

जब बन्दरगाह में मैं जहाज पर चढ़ गया तो मेरे मन में घीबीब पहुँच जाने की ऐसी हूक उठी कि मैं नेत्र मूँदे वहाँ की कल्पना करने लगा। पतझड़ का मौसम था और सीरिया में उत्सव शुरू हो गए थे। वहाँ के पुजारी लोग लकड़ी के चाबुको से अपने मुँह स्रोंचने लग गए थे—और घावों से रक्त बहने लग जाता था—परन्तु यह सब और बाल की पूजा में काफ़ी देख चुका था। मुझे उन सबको देखने की अब कोई इच्छा नहीं प गई थी।

मेरे हृदय में उस काली भूमि में पहुँच जाने की हूक उठ रही थी। जहाँ की मदिरा और नील का जल पीने को मानो मेरा कंठ सूखने लगा था।

और हमारा जहाज हिला और चल पड़ा। सगर उठ गया था और नीचे मल्लाह अपने मजबूत हाथों से डाँड खला रहे थे। सीरिया पीछे छूटने लगा—दूर से वह हरा-भरा देश बहुत ही अच्छा दिखाई दे रहा था—लाल भूमि पर पड़ी हुई घात ऐसी लगती थी मानो किसी ने वहाँ रक्त-वर्ण मदिरा फैला दी थी।

मैं घर आ रहा था हालाँकि मेरा कोई घर नहीं था—और मैं संसार अकेला था।

जा रहा था—सामने अनंत समुद्र था। और मैं अपने में सो गया था।

फिर हमारे वगल से सिनाई का रेगिस्तान निकलने लगा—

उधर से लूटें चलकर इधर आने लगी ।

फिर पीला समुद्र आया जिसके आगे हरी भूमि दूर-दूर तक फैली हुई थी ।

मल्लाहों ने एक पात्र नीचे सटकाकर वह जल भरा— फिर वह सबने पिया । वह सारा नहीं था—वह नील का जल था—

कप्ताह ने कहा : “पात्रों तो सभी जगह एक-सा होता है—चाहे नील का ही क्यों न हो । मैं तो तब घर आया समझूँगा जब घोबीड़ की मदिरा को किसी अच्छी सराय में बैठकर पीऊँगा ।”

उसकी बातें मुझे बहुत घुरी लगी और मैंने मुँह बिगाड़कर कहा : “एक बार का गुलाम—हमेशा ही गुलाम रहा, चाहे वह उत्तम ऊनी वस्त्र ही क्यों न पहने हुए हो—उधर जाओ कप्ताह मुझे एक सचकदार बेंत ले देने दो—ऐसी जो नील के किनारे मिल सकती है—और तब तुम शीघ्र समाप्त आओगे कि तुम घर वापस आ गए हो ।”

परन्तु वापस उसने घुरा नहीं माना । उसने नेत्रों में अधु भर आये । उसकी टोही बाँधी और वह मेरे सामने मुँह पया और उसने अपने घुटनों की सीध में अपने हाथ फैला दिए फिर बोला :

“निश्चय ही मात्सिक ! आप मे सही शौके पर सही बात कहने की अद्भुत क्षमता है क्योंकि मैं बेंत की उम मीठी मार को, जब वह पीठ पर या पैरों के पीछे की तरफ बढ़कर खाल उखेड़ देती है, भूल ही गया था । आह मेरे मात्सिक सिगूहे ! यह एक ऐसा अनुभव है कि मैं चाहता हूँ कि तुम भी इस देवो और मीठो । मदिरा से, दूध से और बेंत के जगलों में जल में तैरती हुई बत्तखों से भी सज्जदार और सम्पूर्ण विश्व की मापात्रों से मधुर स्वर इस बेंत में से निकलता है । मैं अब समझ गया हूँ कि मैं घर वापस आ गया हूँ—ओह ! देवता के सद्गुण बेंत ! तू ही सबको अपने-अपने स्थान पर रखती है—नेरे समान सखार में और कोई नहीं है ।”

और वह बोली देर तक रोना रहा फिर अपने उम लाबीड़ पर सेल मलने चला गया । मेजिन मैंने देखा कि अब वह बीमारी सेल बाध में नहीं लाना था । विश्व की भूमि पास आ चुकी थी और उसे एक बार फिर ध्यान हो आया कि वह गुलाम था ।

अब हम निचले साम्राज्य के जबर्दस्त बन्दरगाह पर उतरे तो मुझे जीवन में पहली बार अनुभव हुआ कि मैं विदेशों के रंगबिरंगे वस्त्रों, घुंघराली दाढ़ियों और भारी शरीरों से कितना ऊब गया था। यहाँ कुत्तियों की सुंती हुई कमर, उनके कटिवस्त्र, उनकी मुँड़ी हुई ठोड़ियाँ, उनकी बोली, उनके पसीने की गंध, नदी की कीचड़ बेंत के पेड़, सब सीरिया से जितने भिन्न थे और उन सबसे मेरा कितना लगाव था।

जो सीरियन वस्त्र मैंने पहन रखे थे मेरे शरीर में अब घुमने लग गए और जब मैं बन्दरगाह से कई कागजों पर हस्ताक्षर करके छुटा तो सीधा बाजार गया और वहाँ मैंने नूती वस्त्र खरीदकर पहन लिये। मन जैसा एकदम हल्का हो गया। परन्तु कप्ताह सीरियन ही बना रहा क्योंकि उसे भय था कि कोई 'भाने हुए दातों' में उसे अब भी मँडूक रहा हो, हालाँकि सीरिया से वह एक प्रमाण-पत्र बनवा लाया था कि मैंने उसे वहाँ खरीदा था।

फिर हम अपना सामान लेकर नाव में चढ़े और नील के शाने ऊपरी साम्राज्य की ओर चल दिए। मार्ग में नावच ही किसी बन्दरगाह पर जहाँ-जहाँ नाव टहरी, बप्ताह मरायों में जाकर नदिदा पीकर न भाया हो। फिर वह लौटकर मत्साहों और नाव के कुत्तियों के सामने अपनी मावा की गर्व हाँकता और मेरे नजर की प्रशंसा करता—मोग उगमे लूब मडाक करने।

अब हम प्रतिक्षण मित्र में घुमने चले जा रहे थे। नील के किनारे सेतों में विमान बीजों को हाँककर खेन भोल रहे थे—विदियाएँ उड़ रही थी—लखुर के पेड़ लहरा रहे थे, दूर माईकाभोर के घने पेड़ों के झुरमुट के पास कच्ची गोपदियाँ दिखाई देने लगीं। वह जायद कोई मौन था। सब कुछ बीना ही था जैसा मैं छोड़ गया था—मित्र—मेरा मित्र मुझे आने मड में फिर भर रहा था।

और अब सामने बीजोड के शायन प्रहरी—वह नील कहाँ—तुँ की ओर चढ़े दिखाई देने लगे। इमारतें कागज-गाम लड़ी थीं—अब नदियों की गोपदियों के बयान पर उलम और ऊँच बयान दिलाने लगे और फिर दी नजर की दीवान जो पण्ड की गर्जना उठी लड़ी थी।

विशाल मंदिर, उसके अमल्य स्तम्भ, पवित्र झील और दीर्घ प्रासाद दिखाई देने लगे। पश्चिम की ओर मृतकों का नगर दूर तक फैलकर पहाड़ियों की ओर घुम गया था। फराऊन का मृत्यु-मंदिर सफेद चमक रहा था और महान् साम्राज्ञी के मंदिर के स्तम्भों की पंक्तियों के मध्य अब भी अमल्य फूल खिले दीख रहे थे। पहाड़ियों की दूसरी तरफ निषेध घाटी थी जहाँ सोफो और निष्छुओं के बीच फराऊन की बन्ध के पास रेत के अन्दर मेरे माता-पिता के गरीर अन्तर्निद्रा में सोये हुए थे। सुदूर दक्षिण की तरफ नील-अम के बिनारे पुष्पों से बड़े उद्यानों के बीच फराऊन का हवा-दार, भुवर्णगृह खड़ा था। और मुझे हीरेमहेव की याद हो आई—कहीं वही तो नहीं रहने लगा था वह कहीं ?

भाव जाकर जब बिनारे लगी तो मैं उस स्थान पर उतरा जहाँ सामने ही मेरा पिता संप्रष्ट रहा करता था और मेरी आँखों के सामने मेरा वध-पन घूमने लगा—यहाँ मैं जेला था—यहाँ मैं बड़ा था—यहीं मेरे अन्धे पिता ने मुझे पढ़ाया-लिखाया था और मेरी माता बीपा मुझे यही गर्म-गर्म रोटियाँ बिताने प्यार से खिलाया करती थी।

मैंने कप्ताह से कहा : "कप्ताह, मुझे यही इस गरीब बस्ती में, मेरे पिता के मकान के स्थान के पास (क्योंकि मकान तो गिरा दिया गया था) ही एक घर खरीद दो—मैं यहीं रहूँगा, हाँ मेरा सामान इत्यादि आत्र ही ठीक कर दो जिससे सबूह से ही मैं अपना काम चालू कर सकूँ।"

सुनकर उसका मूँह लम्बा हो गया। परन्तु उसने एक बार केवल मुझे घूरकर देखा फिर फिर लटकाये जाता गया। जायर वह सोच रहा था कि मैं बीबीज में जाकर किसी उत्तम स्थान में जहाँ घनी रहते थे, ठहरूँगा, जहाँ अनेक दास-दासियाँ सेवा करने के लिए हाथ बाँधे लगे रहेंगे।

उसी शाम को मैं एक छोटे से मकान में जाता गया। इसी को कप्ताह ने मेरे लिए खरीदा था। पहले वह किसी लीवा भलानेवाले का घर था। जब शाम हुई तो लीवों के चरों से रोटी सिबने की और मछलियों के बच आने लगी। दूर रक्तामाओं में तेज रोशनी हो रही थी और बीबीज—बीबीज उगमन उस्ताओं से आलोकित हो रहा था।

दूगरी मुबह मैंने कप्ताह मे कहा :

“मेरे घर के द्वार पर एक बटुन ही मामूली तख्ती टांग दो जिस पर केवल मेरा नाम लिखा हो—और लोगों मे कह दो कि मैं हर किसी का इलाज करता हू—चाहे वह गरीब हो चाहे अमीर और मूल्य जो भी वह देना चाहे—जो उनके बस का हो—सो ही लेकर सन्तुष्ट हो जाना हूँ।—हाँ व्यर्थ ही मेरी प्रशंसा उनके सामने मन करने लगना।”

“गरीबों का इलाज ?” कप्ताह ने आश्चर्य से पूछा : “वैसे है तो ठीक ? कहीं बीमार तो नहीं है ? गदगद पानी तो नहीं पी लिया है या बिच्छू ने तो नहीं काट लिया तुम्हें ?”

“यदि तुम मेरे साथ रहना चाहते हो तो जैसा मैं कहना हूँ वैसा करो अन्यथा तुम स्वतन्त्र हो चाहे जहाँ जाओ और रहो। मैंने तुम्हें तुम्हारे अब तक के अच्छे कार्य के लिए तुम्हें मुक्त कर दिया है। मेरा विचार है, तुमने वैसे अब तक मेरे पास से काफी माल जुरा लिया होगा जिससे तुम अपना घर बसा सकोगे चाहो तो विवाह भी कर सकोगे !”

“विवाह ? स्त्री ?” कप्ताह ने माथे मे दस डालकर आश्चर्य से पूछा : “निश्चय ही मालिक तुम बीमार हो तभी ऐसी बेसिर-पैर की बातें करने हो। मैं भला स्त्री क्यों लाने लगा जो मेरी जान को बवाल बन जाय ?—छोडो हम दान को—चलो पास ही मैं ‘मगर की पूँछ’ नामक मदिरालय है—वहाँ अनेक मदिराओं को मिलाकर उत्तम आसव बनाया जाता है जिसे पीने ही तबीयत सटके के साथ फड़क उठती है—चलो वहाँ तुम्हें मदिरा पिला सकूँ।”

“कप्ताह, मैंने उसी तरह कहा : “हर कोई जब दुनिया मे आता है तो मगा ही आता है और रोग के लिए अमीर, गरीब, भिखी और सीखिन सब एक होने है।”

“वह तो ठीक है—परन्तु उनके उपहारों मे तो अन्तर होता है ! वह बोला, “और फिर ऐसे विचार तो दासत्व भोगने हुए नवयुवकों के होते हैं—मेरे भी होने से जब तक कि बेंत ने उन्हें न भुसा दिया। आप तो दान नहीं है फिर इतना उदासी का कारण क्या है ?”

“और सुनो।” मैंने कहा, “यदि मुझे कोई घनाय बातक मिल गया तो

मेरा विचार उसे गोद ले लेने का है।”

“घोर बह नयों ;” उसने फिर प्रश्न किया, “मन्दिर में घनामालय बना ही हुआ है जहाँ ऐसे बच्चे पाले जाते हैं। वह बड़े होकर या तो मीसे दर्जे के पुजारी बना दिए जाते हैं या फिर फराऊन के सुवर्ण-ग्रह में स्त्रियों के बीच हिजड़े बनाकर भेज दिये जाते हैं।—हाँ एक बात मैं कहना चाहता था और वह यह कि एक दासी मोल ले ली जाय तो अच्छा रहे क्योंकि मेरे घूने हाथ-पैरों से अब अच्छी तरह से काम नहीं होता—वैसे ही मेरे पास काफी काम हो गया है।”

“यह तो मैंने अब तक सोचता ही नहीं था।” मैंने उत्तर दिया, “तुम ठीक कहते हो—पर फिर भी मैं दासी मोल लेना नहीं चाहता—तुम चाहो तो किसी स्त्री को नौकर रख सकते हो।”

और फिर मैं बाहर चल दिया।

मैंने सोचा अपने पुराने मित्रों से मिल आऊँ। ‘सीरियन जार’ नामक मन्दिरालय में मैंने टोपीमीन को बुँडा। पर वहाँ अब कोई गया किरायेदार रहना था। फिर मैं सेना के निजिर में गया कि हौरेमहेव से मिल आऊँ। परन्तु वह स्थान भी खाली था। न अखाड़े में कोई पहलवान लड़ रहे थे न भाने वाले निशाना साध रहे थे और न बड़े-बड़े पात्रों में खाना उबल रहा था। सब कुछ बीरान था।

‘शारदानाभो’ का एक नायक वहाँ अकेला बैठा था। उसने मुझे घूर-कर देखा और रेत में पैर बनाने लगा। उसका मुख बिना तेल लगा सूखा और हड्डी निकला हुआ था और जब मैंने उससे हौरेमहेव ■ बारे में पूछा तो उसने मुझे झुककर अभिवादन किया। उसने कहा कि हौरेमहेव अब भी मिस्र का सेनापति था परन्तु कुछ समय से कुछ देश गया हुआ था जहाँ वह सैनिकों को छुट्टी देने गया था। किसी को मालूम नहीं था कि वह अब लौटने वाला था। मैंने उसे एक चाँदी का सिक्का दिया जिसे पाकर वह अपने शारदानाभन की याद भूल गया और किसी अपरिचित देवता की शपथ लेकर वह मुस्करा दिया। जब मैं जाने लगा तो वह मुझे हाथ उठा-कर रोते हुए कहने लगा :

“हौरेमहेव अबदस्त आदमी है जो सैनिकों का दुःख दफ़टा है—वह

निर्भीज है।—वह तोर है—पर फराऊन बिना सींग की बकरी है। गिबिर मूने पड़े हैं—न तनया है न साना। मेरे माथी भीख मांगते फिरते हैं—क्या होने वाला है कौन जाने? अम्मन तुम्हारा भला करे, तुम बड़े अच्छे आदमी हो जो तुमने मुझे चाँदी का सिक्का दिया—मैंने महीनों से मदिरा नहीं छुई है—भर्ती करने वाले मिथी पदाधिकारिकायों ने कहा था कि डेर मारी चाँदी, बहुत-सी औरतें और भरभर कर पात्र मदिरा मिलेगी—और अय...? न चाँदी है न औरत न मदिरा !”

उमने उमोन पर सूक दिया। और सूक को रैर से रेत में रगड़ दिया। मैं चल दिया। मुझे उसके लिए दुःख हुआ। जिन सैनिकों को पहले फराऊन के उमाने में भर्ती किया गया था वह सब उसके पुत्र द्वारा निकाल दिए गए थे।

वहाँ से मैं जीवन-गृह में गया कि वृद्ध प्लाहीर के बारे में जाँच करूं। पर यहाँ जाकर पता चला कि वह तो मृतकों के नगर में पहुँच चुका था।

अब मैं सीधा मन्दिर में जा पहुँचा जहाँ अगणित स्तम्भ सड़े हुए थे। अम्मन का यह विशाल प्रागण जहाँ हमेशा भीड़ लगी रहती थी आज खाली-खाली दिखाई दे रहा था। तेंस लगे, उस्तरा फिरे पुजारी लोग आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे।

जब मैं मन्दिर से बाहर आया और फराऊनों की दैत्याकार मूर्तियों के पास से होकर निकला तो मुझे बगल में ही एक और नया मन्दिर दिखाई दिया। यह भी काफी बड़ा था। इसके चारों तरफ कोई दीवाल नहीं लिखी हुई थी। एक खुले मैदान में एक बाल स्तम्भ (आल्टर) कुछ फूल, अनाज के दाने और फल इत्यादि पड़े थे। एक दीवाल पर एटोन के सामने फराऊन बलि चढ़ाता दिखाया गया था। एटोन में से किरणें निकल रही थी जिनके भगले छोर पर एक-एक हाथ फराऊन को भ्रमय देता दिखाया गया था। इन हाथों में हर एक में 'जीवन चक्र' बना हुआ था। वहाँ जितने पुजारी थे सभी नीजवान थे, और उनके सिरों पर केस थे, वह लोग एटोन की स्तुति जब गाते जो उनके मुँहों पर असीम आनंद छा जाता—उसी भाँति जैसे मैंने उस पुजारी के मुख पर देखा था जिसने जेरूसलम में होरेमहेव और मेरे सामने स्तुति की थी। परन्तु इन सभी से अधिक आवश्यक वहाँ भारतीय

दीर्घ प्रस्तर के स्तंभ थे। इनमें हर एक में वर्तमान करारुन की हूबहू मूर्ति गढ़ी हुई थी। वह मूर्तियाँ ऐसी बनी थी कि एक साथ सभी दर्शकों को देखती थी। करारुन सीने पर हाथ बाँधे खड़ा था—हाथों में उसके शासन का दण्ड तथा कौटा था।

करारुन की हूबहू मूर्तियाँ देखकर जिनमें वह बैसा था विल्कुल वैसा ही दिखाया गया था। मुझे भव्यन्त आश्चर्य हुआ क्योंकि ऐसी बसा तो मेरे मित्र टोपीसीख की ही थी। अम्मन के मन्दिर में तो करारुन की मूर्तियाँ देव तुल्य सुन्दर बनाई जाती थी। और यहाँ जैसा बेडौल वर्तमान करारुन था वैसा ही दिखाया गया था। वही पतली-पतली टाँगें, मोटी जाँघें, हटी हुई गर्दन और उमरी हुई मात की हड्डियाँ प्रत्यक्ष लग रही थी। और सभी मूर्तियों में वही व्यंग्यपूर्ण मुस्कान खेल रही थी जो दिन से स्वप्न देखती-सी लगती थी। मेरा धन्यतर उन्हें देखकर काँप उठा क्योंकि यह पहली बार था कि जोधा ऐमनहोटप अपने वास्तविक रूप में गड़ा गया था। निश्चय ही उनका बनाने वाला शिल्पी मिला भर में अपूर्व साहसी व्यक्ति होगा।

मन्दिर में ज्यादा भीड़ नहीं थी। कुछ राजनी बस्त्र और जवाहरात जड़े कड़े पहिने हुए लोग वहाँ थे जो करारुन के घराने के मातुल पड़ते थे। मामूली आदमी पुजारियों के भजनो को सुन रहे थे वरन्तु लग रहा था जैसे उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। क्योंकि यह भजन अम्मन के भजनों से बिल्कुल भिन्न थे—जिन्हे लोग दो हज़ार सालों से—जब फिर-मिल बनी थी—सुनते आये थे। हालाँकि उनका धर्म भी वह नहीं जानते थे फिर भी वह उन्हें बटस्थ थे।

और जब प्रायःना हो गई तो एक बूढ़ जो वस्त्रों से गाँव वाला लगता था थड़ा से घागे घावा और उसने एक पुजारी से एक लामोच माँगा। लोग मन्दिरों में छाबीड़, रसक पञ्चु था जादू किया हुआ कागज का टुकड़ा मामूली दामो में सेने आया करते थे—यह प्रथा प्रचलित थी। पुजारियों ने उस बूढ़ से कहा कि उस मन्दिर में इस प्रकार की वस्तुएँ नहीं मिलती थी क्योंकि एटीन को जादू, भेंट, बलि इत्यादि की कभी आवश्यकता नहीं होती थी। वह तो उसके पास जो उसपर चढ़ि रखते थे, जैसे ही आ

जाता था। मुन कर बूढ़ नाराज हो गया और बड़बड़ाकर उनकी मूर्खता को कोसता हुआ बाहर चला गया और मैंने देखा कि वह सीधा अम्मन के मन्दिर की तरफ चला गया।

फिर एक मच्छी बेचने वाली बुढ़िया आई और पुजारियों की ओर श्रद्धा से झुकती हुई कहने लगी :

“क्या कोई एटीन को मैंड़े या बँसल भेंट में नहीं चड़ाता ? तुम जवान आदमी कितने कुबंल हो रहे हो ? यदि तुम्हादा एटीन अम्मन से भी क्यादा शक्तिमाली है, जो मुझे तो नहीं लगता, तो उनके पुजारियों को तो खूब मोटा-साजा और चुपड़ा होना चाहिए।”

मुनकर पुजारी लोग हँसे और आपस में घेतान लड़कों की तरह फुम-फुसाने लगे परन्तु उनमें सबसे बड़े ने गम्भीर बनकर कहा :

“एटीन रक्त की बलि नहीं माँगता।—एटीन के मन्दिर में अम्मन का नाम लेना ठीक नहीं है क्योंकि वह झूठा देवता है—उसका साम्राज्य शीघ्र छिन्न-भिन्न हो जाएगा—उसका मन्दिर खंडहर बन जाएगा—”

बुढ़िया भय से घबराकर पीछे हट गई और पृथ्वी पर झुक कर जल्दी-जल्दी अम्मन का चिह्न बनाकर चिल्लाई : “यह तुमने कहा था—मैंने नहीं कहा था—शाप तुम्हें ही लगेगा !”

और वह शीघ्रता से बाहर चली गई। उसके साथ और भी बहुत से निकल चले। लेकिन पुजारी लोग समवेत स्वर से हँसे और बोले : “जाओ, क्योंकि तुममें विश्वास की कमी है—परन्तु याद रखो कि अम्मन झूठा देवता है, अम्मन केवल एक मूर्ति है और उसका साम्राज्य ऐसे ही कटकर गिर जाएगा जैसे हँसिये के नीचे घास गिर जाती है।”

और तब जाने हुआ मे से एक घूमा और उसने एक पत्थर उठाकर निशाना साध कर एक पुजारी के मारा। पत्थर उसके मुँह पर आकर लगा और रक्त बहने लगा। वह मुँह ढँककर बुरी तरह रोने लगा और अन्य पुजारी लोग सैनिकों को बुलाने लगे। परन्तु मारने वाला भीड़ में मिलकर भाग गया था।

इस सबको देखकर मैं चिन्तित हो उठा। पुजारियों के पास जाकर मैंने कहा : “मैं मिस्री हूँ परन्तु अभी तक सीरिया में रहा हूँ। आप कृपया मुझे

अपने देवता के बारे में बनाएं—वह है कौन, क्या चाहता है और उसकी पूजा कैसे की जाती है ?”

पहले उन्होंने समझा में व्यग्न कर रहा हूँ परन्तु फिर कहा : “एटोन ही असली देवता है। उसीने धरती और नदी, मनुष्य और जन्तु और जो कुछ भी इस पृथ्वी पर है, सब बनाया है। वह शाश्वत है और अपने प्रारम्भिक अपने पुत्र फराऊन को दिखाई दिया था—वह फराऊन जो सत्य के लिए प्राकृतिक में ‘रा’ के नाम से पूजा जाता था। परन्तु वह एटोन के रूप में ही रहता है। एटोन ही केवल देवता है बाकी सब तो मूर्तिमाँ हैं। उसके लिए सभी ‘गरीब’, अश्वे-दूरे—सब एक से हैं और वह सभी पर अपना प्रकाश डालता है—हर एक को जीवन प्रदान करता है। वह सभी जगह मौजूद है और उसकी इच्छा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।

वह शाश्वत है और उसकी कृपा से फराऊन—उसका पुत्र—हर किसी के हृदय को पुस्तक की भाँति पढ़ सकता है।”

“फिर तो वह मनुष्य नहीं है।” मैंने विरोध किया।

उन्होंने आपस में सलाह की फिर उत्तर दिया, “हालाँकि फराऊन स्वयं मनुष्य ही रहना चाहता है—फिर भी हमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि वास्तव में वह ईवी शक्ति नियंत्रित है। और यह इससे पता चलता है कि थोड़े ही समय के अन्दर वह अपने कई जीवनो की बातें देख सकता है। लेकिन यह उन्हीं को पता चल सकता है जिन्हें वह प्रेम करता है—और इसीलिए कलाकार ने उसे इन स्तम्भों पर पुरुष और स्त्री, दोनों रूपों में दिखाया है क्योंकि एटोन एक जीवित शक्ति है, पुरुष के बीज को शीघ्र अक्षुण्ण करके स्त्री की कुक्षि से बच्चे को बाहर निकाल लाता है।”

और तब मैंने व्यापारिक रूप से हताश होते हुए हाथ उठाकर कहा :

“मैं तो एक बिल्कुल ही भोला आदमी हूँ—सायद उस बुद्धिवा से भी भोला जो अभी गई है और मेरी समझ में तुम्हारी बातें नहीं आ रही हैं। इसके अतिरिक्त मुझे ऐसा लगता है कि खुद तुम्हारी समझ में भी पूरी तरह से यह धर्म नहीं आया है क्योंकि मुझे उत्तर देने के पूर्व तुम्हें आपस में सलाह करनी पड़ती है।”

वह बोले : “जिस प्रकार सूर्य की वाली पूर्ण है, उसी प्रकार एटोन भी

पूर्ण है और जो कुछ भी उसके साम्राज्य में है—सौम सेता है और जीवित है—वह सभी पूर्ण है। मनुष्य के विचार अपूर्ण और कुटुम्ब की तरह हैं और इसीलिए हम मुझे सभी बातों का उत्तर नहीं दे सकते क्योंकि हम स्वयं अपूर्ण हैं और दिन-पर-दिन हमें सीखना-ही-सीखना है। केवल फराऊन को ही उसका पूरा ज्ञान है—फराऊन को—जो उसका पुत्र है और जो सत्य के सहारे ही रहता है।”

और जब मैं लौटा तो मेरे हृदय में वृक्षान उठा हुआ था। मैंने स्वयं से पूछा :

“क्या फराऊन और उसके पुजारियों को अन्तिम सत्य मिल गया था ? क्या उसीका नाम एटोन था ?”

जब मैं घर लौटा तो शाम हो चुकी थी—मेरे घर के द्वार पर मेरे नाम की तछ्ती लटक रही थी और बाहरी प्रांगण में कुछ रोगी मेरी प्रतीक्षा में बैठे थे जो देखने में सभी निर्धन लगते थे, कप्ताह एक नई मदिरा की बोतल लिए हुए सजूर के पत्ते से मक्खियाँ उड़ाता हुआ एक तरफ चुपचाप बैठा था।

मैंने अन्दर जाकर सबसे पहले उस स्त्री को बुलवाया जो एक बूछे हुए बच्चे को लिये हुए थी। इसका इलाज केवल कुछ तबिके के सिकके से भोजन खरीदकर खाना था कि वह अपने बच्चे को दूध पिला सके। तो मैंने कर दिया—फिर एक दास की उँगलियाँ मैंने जोड़कर बाँध दीं जो बस्ती में पिन गई थी, फिर एक लेसक आया जिसकी बदन पर एक बड़ा-सा गोला उठ आया था, उससे उसकी साँस भी ठीक तरह से नहीं चल पाती थी। ऐसे रोगी का इलाज मैंने स्मर्ना में सीखा था। जब वह जाने लगा तो उसने एक साफ़ कपड़े में बँधे तबिके के दो सिकके मेरी ओर बढ़ाये। प्रत्यक्ष था कि वह अपनी गरीबी पर सज्जित था। मैंने उन्हें उसी को लौटा दिया और कहा कि कभी निसाई में चूका लूँगा।

फिर पास ही रंगशाला में से एक युवती आई जिसकी आँखें दुसनी थीं और जिससे उसके पेशे में हानि होती थी। मैंने उसकी आँखें साफ़ कीं

और उनमें दवा डाली। वह भैरवी हुई मुझे दाम चुकाने मेरे सामने जमी खड़ी हो गई क्योंकि उसके पास देने की और कुछ नहीं था। मैंने उसे मना करके ॥ ल पहुँचाना उचित न समझकर कहा कि मुझे उन दिनों किसी विशेष व्यवहार के कारण स्त्रियों से दूर रहना पड़ रहा था। उसने मेरी बात का विश्वास कर लिया और मेरे नियमित अनुशासन से वह प्रभावित हुई। फिर मैंने उसकी जाँघों और पेट पर, जहाँ त्वचा विगड़कर सूजी हुई सी थी, दवा लगाकर हल्के नज़र लगाये, जिनमे उसके पीडा भी नहीं हुई और उसकी कुरूपता भी मिट गई। अब वह गई तो मेरी प्रशंसा करती हुई गई।

और इस प्रकार मेरी पहलेदिन की आमदनी से नमक भी नहीं खरीदा जा सकता था। अब बप्ताह ने मुझे धीधीड़ के चक्कर तरीके से मोटी पकी हुई बत्तख खाने की तो वह मुँह बिचराने लगा। उसके बाद रगीन बाँध के पात्र में उसने मुझे अम्पन के बगीचों में तैयार की हुई बेहतरीन मसिदा पिलाई।

उसने फिर इसमीनान से बँटते हुए कहा : “मेरा विचार है आज से तुम्हारा यम फैलने लग जाएगा और जब तुम्हें तक तुम्हारा प्राण मरीजों से लचकल भर जायेगा—मैंने अभी कुछ भित्तिरियों में आपस में बातें करने हुए सुना था।” वह कह रहे थे, “उस जोने में लीला गलानेवाले के घर जल्दी बसो—वहाँ एक बँध आया है जो बरी होशियारी से और दिना पीडा निये उत्तम इलाज करता है। वह इलाज के दाम तो मेठा ही नहीं है बल्कि गरीबों को दान भी दान देता है। उसने रगशाशाओं की बेरयाओं के गरीबों की कुरूपताएँ बीराफाडी करके दूर कर दी हैं और बदले में उनमें भी कुछ नहीं लिया है। जल्दी बनो क्योंकि जो पहले पहुँच गया वही प्रायदे में रहेगा—क्योंकि यह तो निश्चय है ही कि बँध को दीप्त ही अपना मरान बेच-बाधकर वही और भाग जाना पड़ेगा।”

मैं मुनकर हँस दिया। वह फिर बोला :

“लेकिन वह सब सूर्य है। जन्हे क्या मानुम कि तुम्हारे पास बिडना होता है। पूरी किन्दपी इन्ही तरह मुफ्त दवाज करो तो भी आगाम से दोनो वरन मोटी बत्तख खाओ और उत्तम मसिदा पीओ—कोई घाटा नहीं

है—लेकिन हज़ारों लोग एक में नहीं रहने—तुम्हारे मस्तिष्क में ठूफ़ान आने रहने है। यदि किसी दिन तुमने यह मकान मुझ सहित किसीको बेच दिया या धुगन दे दिया तो भी मुझे आश्चर्य नहीं होगा अतएव यदि मेरी दासत्व से मुक्ति जो तुमने इच्छा करके ली है—निश्चित में आ जाय तो अच्छा रहेगा—क्योंकि निश्चित के सामने जुवानी बातों का कोई मूल्य नहीं होता। इसके अनिश्चित एक कारण और भी है जिसे मैं इस समय बहककर तुम्हें तग गही करना चाहता।”

वह पतझड़ की गुदावनी सध्या थी। बच्ची छोपड़ियों के सामने उपले जल रहे थे। वन्दरगाह से सिद्धार की लकड़ी और सीरिया के सुगन्धित जल की खुशबू आ रही थी। भुनी मछलियों की खुशबू के साथ एकेशिया बुझों की सुगन्ध मिलकर एक विचित्र वातावरण पैदा कर रही थीं। मैंने ली मोटी बत्तल लाई थी—और मैं बेहद खुश थी। मैंने कप्ताह से कहा कि वह भी मेरे साथ अपने मिट्टी के पात्र में पिसे, फिर कहा :

“कप्ताह तुम स्वतन्त्र हो—कल राजा के सेलक तुम्हारी स्वतन्त्रता का प्रमाण-पत्र लिल देंगे। परन्तु यह बताओ कि तुमने मेरा सोना कहाँ रखा है? कौन से व्यापार में लगाया है? क्या मंदिर के खजाने में रख दिया है?”

“कभी नहीं।” वह बोला : “वहाँ रखने से तो उल्टा नुकसान ही है। प्रथम तो मंदिर वाले उसकी चौकसी के लिए ही धन माँगते हैं फिर वहाँ रखने से कर बसूल करनेवालों को पता चल जाता है कि जमा करनेवाले के पास बितना धन है। मैंने पूरे नगर में चक्कर लगाया है—और जोच की है—अम्मन आजकल जमीन बेच रहा है।”

“भूठ !” मैंने कहा : “अम्मन कभी नहीं बेचता—वह तो खरीदता है। उसने हमेशा से खरीदा है और देश की चौपाई भूमि का वह स्वामी है, और जो उसका एक बार हो गया वह फिर उसी का रहता है।”

“ठीक है, ठीक है।” कप्ताह ने कहा और मदिरा ढाली। फिर कहा : “भूमि में लगाया हुआ धन शाश्वत रहा जाता है—इसे कौन नहीं जानता वगैरें कि हर बाढ़ के उतर जाने पर राजकर्मचारी मित्र बने रहें—लेकिन यह सच है कि अम्मन भूमि बेच रहा है और छिपकर अपने धनों को बेच

रहा है, वह भी मस्ती । तुम तो जानते हो कि अम्मन के पास उत्तम भूमि है और ऐसी भूमि मोल लेने में कायदा ही कायदा है । अब तक अम्मन की बहुत भूमि बिक चुकी है और ठोस सोना तैयारियों में जमा किया जा चुका है ।”

“मुझे यह मन बहना कि तुमने भी उसमें कुछ भूमि खरीद ली है ।” मैंने भाँग घुमाकर कहा—

“मैं कोई धूल खोदे ही हूँ ?” वह बोला, “अम्मन की भूमि में जो दम बिट्टी में जो इतनी अच्छी और लाभप्रद दिख रही है वही न वही गोदक छिपा हुआ खरब बीटा है—पर है यह साग लगता कराऊन के मये देवता के ही कारण—लेकिन मैंने भी तुम्हारा लाभ देखने हुए कई इमारतें तुम्हारे लिए खरीद ली हैं—मकान, दुकान इत्यादि जिनका खानाना बिरासा भी काफी आयाया करेगा—मैंने उन्हें बहुत ही सस्ते दामों में खरीदा है ।”

आगे उसने यह भी बतलाया कि वह अनाद श्रम व्यापार करने की सोच रहा था । फिर उसने मुझे और लाभप्रद खोजना बनाई और वह भी दासों के व्यापार की । पर मैंने जब मना कर दिया तो उसने स्वयं भी मनोद की समि ली क्योंकि हृदय में वह भी उस कार्य को नहीं करना चाहता था ।

बाद में जब उसने ‘मगर की पूछ’ बनने की बरा तो मैं टहारा लगा-कर हंग दिया । मुझे वह सब उस दिन बहुत अच्छा लग रहा था क्योंकि मदिरा ने मुझे हर्षित कर दिया था ।

बन्दरगाह की घनी जगहों में बड़ी बड़ी दुकानों और गोदामों में घिरा हुआ एक अँधो-भीतरी में ‘मगर की पूछ’ नामक मदिरानय था । हमारी ईंटों की दीवारों काफी मोटी थी जिससे कमियों में यह ठहरा और जहाँ में लपट रहता था । मुख्य द्वार के ऊपर एक झुलावा हुआ पगर लटक रहा था जिसकी बीच की आँखें और घूने हुए खबड़े में अनेक दानों की पकियाँ दिखाई दे रही थी । बप्ताह मुझे उन्मुख होकर बन्दर में गया और मागिक-दुकान को गुमाकर अच्छी सदियों वाली कुमियों की तरफ चला । मैंने

बैठने के उपरान्त आश्चर्य से देखा कि वहाँ की दीवारों और भूमि पर लकड़ी जड़ी हुई थी और साथ ही साथ चारों ओर लम्बी समुद्री पाशाओं में प्राप्त पारितोषिक सजे रगे थे जिनमें हथियारों के भाते, परों की बत्तियाँ, गिराई, घोंघे और शंख इत्यादि थे, और पीट के चित्रित पात्र भी रगे थे।

कप्ताह को वहाँ सब जानने थे। जब उसने मेरी दृष्टि देगी तो गर्व से मुस्कराना हुआ कहने लगा - "निश्चय ही तुम्हें इन्हें देखकर आश्चर्य होगा क्योंकि यह केवल छठी ध्वनिियों के घरों पर सजे रहते हैं। पर आज तो कि यह पुराने जहाजों की लकड़ियाँ हैं। यह जो सामने पीली लकड़ी है यह पत के देग तक हो आई है—और यह भूरी सीरिया तब—अब वहाँ तो मदिराओं को मिमाकर बनाया हुआ उसमें वेग दिया जाय जिसे यहाँ के मातित ने अपने हाथ में हमारे लिए बनाया है।"

शस की भाँति अक्करदार एक सुन्दर फँसा हुआ गिमात मुझे दिया गया जिसे हमेंसी खोलकर लिया जा सकता था, मैंने उसे बिना देगे ही ले लिया क्योंकि मेरी दृष्टि उस स्त्री को देखने में अटक गई थी जो उसे लाई थी। वह आम तौर पर मराया में परोगनेवासी लहरियों की भाँति मुझी लानधी और न बराधनगी ही थी कि जिसके नंगे शरीर को देखकर आदक सिंच धने धावे, वह बायदे के वस्त्र धारण किये हुए थी और उगरे बालों में बाँदी की बालियाँ और नाङ्ग बलाइयों में लोरी की बूझियाँ थीं, उसने मेरी ओर निर्भीकता में देखा और तनिक भी नहीं समझी जैसे कि आम तौर पर स्त्रियाँ आगे भुका सेती हैं। उगरी धँसों के बाज उलटे हुए थे और बरा बमानदार थी, धूरे नेत्रों में मुस्कराहट और बड़े दोनों का विविध सम्मिश्रण था— वह सुन्दर चमकदार नेत्र थे—वह पूरी तरह देगने में सुन्दर, स्वयं और सुभाइनी समझी थी।

उसके नेत्रों में दमक हुआ मैंने उससे पूछा : "हे सुन्दरी ! तुम्हारा नाम क्या है ?"

बरा धीन स्वर में बोली - "मेरा नाम 'सैरिट' है—बामु मुझने सर्वत्र दुबरी की भाँति सुन्दरी कहना इतिम नहीं है बामुदर बरा का किसी लहरों की जोड़े बलाइयाँ बाते हो—मुझे बाता है कि क्या बरा ही बरा पब थीं एहाँ बातेने जो इस बाज को ध्यान में रखें—मिलनी बरा—दुब

जो एकाकी हो !”

आश्चर्यचकित होकर मैंने पूछा : “परन्तु मेरा तो ऐसा कोई विचार नहीं था कि तुम्हारी जाँचें सहलाऊँ ! और तुम्हें मेरा नाम किसने बतला दिया ?”

वह मुस्कराई और वह मुस्कराती हुई बहुत अच्छी लगी फिर व्यंग्य-रमक स्वर से कहने लगी : “तुम्हारा यश तुमसे पहले वहाँ आ पहुँचा है—जयती गये के पुत्र ! और तुम्हें देखकर तो मुझे अब पता लगता है कि तुम्हारा यश लूठ नहीं खोला था—बल्कि अथारमः सही था ।”

और मैं उसकी दो हुई मदिरा को पी गया—और पीने ही मेरा मिद गर्म हो गया—सारा घटपटाने लगा और ऐसा लगा कि मुझमें अग्नि ने प्रवेश पा लिया है । मैं सामने रखे घुने हुए कमल के बीजों को खाने लगा—मुझमें एक विशिष्ट स्फूर्ति आ गई और झुँह नमकीन हो गया । मुझे मेरा शरीर बिबिधा की भाँति हल्का लगने लगा । मैंने कहा :

“मैंट और सम्पूर्ण जीतानो की बसम ! जाने किस विधि से यह पेय बनाया गया है ! अद्भुत है इसकी रसि और आश्चर्यजनक है इसका रस—परन्तु यह मेरी अभी तक समझ में नहीं आया कि यह जो जादू मुझ पर हो गया है, यह इस मदिरा का है या मैरिट ! तुम्हारी मद भरी बीलों का, मेरी भुजाओं में अब जादू भर रहा है और मेरा हृदय एतदम प्रधान हो गया है । यदि अब मैं तुम्हारी जाँचें सहलाने लग जाऊँ तो आश्चर्य न करता क्योंकि यह मेरा नहीं इस प्याले का दोष होगा ।”

वह पीछे हट गई और हाथ उठाकर व्यस्य करती हुई कहने लगी—मैंने देखा वह सरहरे शरीर वाली स्त्री अत्यन्त सुभावनी लग रही थी । बोली : “तुम्हें इस प्रकार यहाँ, जो एक अच्छी सराय है—जाने लोगों का लक्ष्यस्थान है—बसम खाने हुए देखकर मुझे आश्चर्य होता है और फिर मैं इतनी बूढ़ा भी नहीं हूँ और बीमार्य भी बेरा नहीं छोड़ा है—हार्नकि लापद तुम इसका विश्वास न करो—कि तुम चाहे जैसे मेरे सामने बसम खाओ । यह गई यह मदिरा बनाने की विधि—यह मेरे पिता की मेरे लिए देन है कि जब मैं विवाह करके अपनी जाँचें तो अपने पति को देने बतला दूँ । और इसी कारण तुम्हारे इस दास ने मुझे इनके दिन दुमनाने

की चेष्टा की है। पर यह काना और बूढ़ है और निश्चय ही मृत-जैव पूर्ण तरणी इसमें आनन्द प्राप्त नहीं कर सकती—अब इसके पास सिवान इस तन्दूरखाने के खरीदने के और कोई चारा नहीं रह गया था—और इसे मोल लेने के बाद अब यह इस विधि को भी मोल लेना चाहता है, पर इसके बताने के पहले इसे हमें काफी सुवर्ण देना होगा।”

कप्ताह मुंह बना-बनाकर पूरे समय उसे धुप कराने की चेष्टा कर रहा था। और तभी मुझे पता चला कि कप्ताह ने उस तन्दूरखाने को खरीद लिया था। थोड़ी देर बाद जब मैंने उससे उस ध्यापार की हानि-साध के बारे में पूछा तो वह बोला :

“बाहे फराऊनो की शक्ति हिल जाय, चाहे देवताओं के सिंहासन हिल उठे—पर मनुष्य के कंठ में ध्यास की चटक तो हमेशा बनी ही रहेगी—और लोग यहाँ पीने-खाने तो आएँगे ही—मनुष्य खुशी में भी दुःख में, दोनों में मदिरा पीता है। फिलहाल तो मैरिट का पिता और मैं साथी रहेंगे और यही जादूगरनी इस पेय को बनाती रहेगी—मैरिट का पिता अम्मन का भक्त भी है और हर उत्सव में वहाँ बलि भी चढ़ाता है—यहाँ अम्मन के पुजारी भी कभी-कभी घाते हैं—शायद उन्हें खुश रखने की ही वह ऐसा करता हो—पर यह सब जानते हैं कि यह अम्मन दल का आदमी है। लेकिन मुझे संतोष तो इस बात का है कि मेरे इस काम से तुम्हें भी खुशी है...।”

जब हम वहाँ से चलने लगे तो द्वार के पास अँधेरे में मैंने मैरिट की स्निग्ध जंघा पर हाथ डाला पर उसने मेरा हाथ झटक दिया और कहा : “तुम्हारा स्पर्श शायद मुझे अच्छा लगने लगे परन्तु तब नहीं जब तुम इस मदिरा के नशे में झूमते होओ—”

मैंने अपने हाथ फँसाकर देसे और मुझे वह मगर के हाथों जैसे क्रूरप दस्तार्द देने लगे।

और पीवीज के गरीबों के मुहल्ले में मेरे दिन बीतने लगे। कप्ताह की भविष्यवाणी सच निकली क्योंकि मैं जितना कमाना था उसने पचासा छत्र

कर देता था । परन्तु फिर भी न जाने भुके कपो एक विचित्र आत्मसतोष होता था ।

कप्ताह ने घर के काम-काज के लिए एक बूढ़ा नौकर रख ली थी । वह ऐसी लगती थी जैसे जीवन से ऊब चुकी हो परन्तु वह बकबक चिन्तुल मही करती थी । उसका नाम मूती था ।

महीने-पर-महीने निकल गए और बीबीबू की असांख्य बढ़ती हो गई । हौरेमहेब के लौटने का कोई समाचार नहीं मिल रहा था । गर्मी की ऋतु आ रही थी और सूर्य का ताप उग्र हो गया था । कभी-कभी मैं कप्ताह को साथ लेकर 'मगर की पूछ' में मैरिट से दिल्हाजी करने जाता था हालाँकि वह मुझसे छिपी-छिपी ही रहती थी । मैंने देखा कि उस स्थान में हर किसी का स्वागत नहीं किया जाता था । यहाँ के ग्राहक गिने-बुने थे और उनमें हास्यिक बहुत से तो गिरहकट, चोर और डाकू भी थे, परन्तु यहाँ आकर वह सब सम्भीर बन जाते और अत्यन्त भद्र व्यवहार करते थे । जितने लोग आते थे उन सबका आपस में कोई-न-कोई सम्बन्ध होता और हर किसी का एक-दूसरे से कोई-न-कोई काम होता । केवल मैं ही एक ऐसा था जिससे किसी का कोई काम नहीं होता था—परन्तु मैं कप्ताह का मित्र था—

यहाँ फराऊनों का गुजगान होता तो उसको गालियाँ भी दी जाती, उसके नये देवता का उपहास किया जाता—

एक शाम एक सुगन्धी तंदूरखाने में आया । उसके बरत फटे हुए थे और केसों में रास लगी हुई थी । वह अत्यन्त उदास लग रहा था और अपने दुःख को 'मगर की पूछ' के देव में डुबोने आया था । वह चिल्लाने लगा—

'इस तकली फराऊनों का नाश हो—इस बारूद, इस सुटेरे का नाश हो जो अपनी इच्छा के अनुसार आज्ञा देता फिरता है । हमेशा से जहाँ अन्य देशों को व्यापार के हेतु जाने रहे हैं । और उनमें से अधिकतर साल-बे-साल मुनाफ़ा लेकर लौटने भी रहे हैं, परन्तु अब इससे और अधिक मूर्खता और क्या होगी कि फराऊन स्वयं बन्दरगाह पर गया और उसने जब देखा तो मस्जिदों और उनके परिवारों को वहाँ रोते पाया ।

मल्लाहों को तो डर मगा ही रहता है कि जाने लौटेंगे कि नहीं—क्यों उन्होंने तेज पत्थरों से मुंह सुरुच डाले और लहलहाते होकर किराऊन के सामने रोने लगे। किराऊन ने बजाय उन्हें पिटाकर सही रास्ते पर लाने के उल्टे यह आज्ञा दे डाली कि अब से कोई जहाज पत के देश को जायेगा ही नहीं—अम्मान हमारी रक्षा करे ! अब तो सभी व्यापारियों के कारोबार टपक हो जायेंगे—मासगोदामो में मास रखा ही रह जायेगा—मिट्टी के मुन्दर पात्र, चाँच के बर्तन सब व्यर्थ ! कुछ भी बाहर नहीं भेजा जा सकेगा—मिथी आदतिये भूसे मर जायेंगे !”

वह घबरा रहा—परन्तु जब तीसरा विभाग उसके कंठ से नीचे उतर गया तो वह मुस्कराया, फिर बहने लगा—“माघाजी ताया बोटो भाई (पुजारी) की सलाह लेकर किराऊन को रोचना चाहिए कि वह मनपाही आज्ञाएँ देकर लोगों को घरेमान न करे !—और—और—”

दिर वह इधर-उधर देखकर बोला—

“—घर जो नेत्र-गनीनी है—इसे सब बस्तियों का ही सरा ध्यान बना रहता है—अब दरबार में मिथी आँख के चारों ओर हवा रग लगानी है और माँस में नीचे नगी घुमनी है—मासकर पुरुषों के सामने !”

बप्ताह ने आश्चर्य में पुछा—“मैंने हिमी भी देश में ऐसी पोताक नहीं देखी है—तो क्या मुन्हारा मनपव है कि अब मिथी अपने ठिगे बगों को मोलकर बननी है ? और माघाजी भी ?”

मुनघी मुनकर नागाह होकर बोला—“मैं एक लालक आदमी हूँ जिसके घर में स्त्री-बच्चे सब हैं, मैं जना किसी स्त्री की माँस से नीचे देखने ही क्यों लगा—और मुन्हा भी ऐसा नहीं करना चाहिये !”

“अम्मान को मुन्हारा मूँड़ है जो गिनी चुपित बाने करने हों न कि स्त्रियों के मोलम के निचे बनाई गई यह पोताक जो अपनी टही और मुन-बार रहती है—इसमें स्त्री की मुन्दरगा भी अच्छी दिखाई देती है बर्तन स्त्री का बेट इन्फैट मुन्दरगा और मुन्दर हों ! मुन नीचे भी अच्छे बना कर देख करने के बजेट नीचे उलझ अहीन बस्त की नकली नट्टी लकी रगनी है जिसमें कोई के बटकी नहीं रह जाती !”

जब बप्ताह और मैं अपने लगे लगे लीन बिरुद में दूर के पलक बग

“मैं तो एकाकी हूँ ही पर तुम्हारी आँसे मुझसे कहती हैं कि तुम भी एकाकी हो। तुम्हारी कही हुई बातों को मैंने सोचा है और मैं भी विश्वास करने लगा हूँ कि कभी कभी झूठ सच ■ अधिक मुखकर लग सकता है यदि व्यक्ति एकाकी हो। तुम सुन्दर और स्वस्थ हो। यदि तुम ऐसी नई पोशाक पहिनने लगे तो निश्चय ही सुन्दरी दिखाई दोगी और तब जब तुम मेरे साथ मैडों वाले राजपथ पर बसोगी तो निश्चय ही तुम्हें अपने सौंदर्य का गर्व हो उठेगा।”

उसने अक्षकी मेरा हाथ नहीं छटका बल्कि मेरे हाथ पर हाथ रख-कर अपनी जाँघ पर उसे दबा लिया। और उच्छ्वासित स्वर से बोली : “जैसे तुम कहोगे वैसे ही होगा।”

फिर भी, जब मैं बाहर आया तो मुझे दुनिया रंगीन दिखाई नहीं दी। दूर नदी तट से कोई दुःख भरे स्वर मे बामुरी बजा रहा था।

दूसरी सुबह होरेमहेव बीबीज को लौट आया और उसके साथ एक सेना भी आई। परन्तु उसके बारे में कहने से पहले मैं यह बतला दूँ कि इस बीच मैंने दो स्थियों के सिर खोले। उनमें से एक अपने आपको महान साम्राज्ञी होने का दावा करती थी। दोनों ही मरीज ठीक हो गए। निश्चय ही वह ठीक होने से पहले से अधिक आनन्द का अनुभव करती होंगी।

१०

जब होरेमहेव लौटा उस समय बीबीज अब चरमसीमा को पहुँच रही थी। तालाबों में पानी सूख गया था और टीलियो ने फसलों पर हमला कर दिया था। बिट्टियाएँ नदी की बीचड़ में घुस चुकी थीं, परन्तु छानिको के उद्यान अब भी हरे-भरे और ठंडे थे और मैडों वाले राजपथ के दोनों ओर इन्द्रधनुषी-सी रंगों के विविध पुष्प खिले रहने थे। केवल घरीबों पर

धूल जमी रहती और उनके भोजन और पानी तक में धूल मिली रहती थी। दक्षिण की ओर फ़राऊनों का स्वर्ण गृह हरा-भरा लगता और उस प्रीष्म ऋतु के धुंधले आकाश की पृष्ठभूमि में दूर से अद्भुत नगरी-सा प्रतीत होता था। हालाँकि गर्मी अब काफ़ी तेज़ थी फिर भी अबकी बार फ़राऊन निचले साम्राज्य में अपने गर्मों के महलों में नहीं गया था और धीवीज़ में रका हुआ था। इससे सभी को एक अज्ञातभय लगा हुआ था कि न जाने क्या होने वाला था। जिस प्रकार तूफ़ान के पहले आकाश में अँधेरा छा जाना है वैसे ही लोगों के हृदयों में भय और आतंक के काले बादल छाये हुए थे।

धीवीज़ के राजपथों पर धूल से मैली ढाल लिये और धमधमाते हुए शिरम्भाण पहने हुए सैनिक नित्य बचावद करते हुए निकलते और उनके हाकिम अपने घोड़ों पर बलगियाँ लगाये हुए एँठने हुए चले जाने। छावनी में फिर से बड़े-बड़े पानों में सात किये हुए पत्थर पटके जाते और उनमें खाना पकाया जाता। परन्तु कहीं भी किसी सैनिक दिखाई नहीं देता था—जो ये सब या तो म्यूनियन से जो दक्षिण से आये थे अथवा उत्तर पश्चिम के रेगिस्तान से शारवाना लोग थे जो निर्दय होकर हत्या कर सकते थे। सभी काले-काले भयानक लगते थे।

नदी का मार्ग राजाज्ञा से बंद कर दिया गया था और सेना ने महानगर में अपना शासन प्रारम्भ कर दिया गया था। चतुर्पथों पर अलाव जलते रहते और पहरें लगा करते। धीरे-धीरे कारखानों में काम बन्द होने लगे। व्यापारी लोग दुकानों से सामान उठाकर गोशामों में बन्द करने लगे और तबूख़तानों पर हट्टे-कट्टे अवान क्यादा तादाद में नौकर रखे जाने लगे। लोग श्वेत वस्त्र धारण किये अम्मन के मंदिर में इकट्ठे होने लगे। वहाँ इतनी भीड़ लगने लगी कि भीतरी तमाम प्राणण भरकर बाहरी तोरण के भी बाहर लोगों के ठट्ट के ठट्ट जमा रहने लगे।

और इसी बीच एक दिन हस्ता उठा कि रात के अवसान में एटीन का मंदिर अपवित्र कर दिया गया था। किसी ने वहाँ के बलि स्तंभ पर, जहाँ नित्य पुष्प, अनाज इत्यादि चढ़ाये जाने थे, एक कुत्ते की सड़ी हुई लाश रख दी थी और वहाँ के चौकीदार का गला कान से कान तक फाट

झाला था। लोगों में जब यह समाचार फैला तो आतंक छा गया परन्तु बहुत से मन-ही-मन अत्यन्त हर्षित हुए।

“अपने औजार साफ करके तैयार रह लो मालिक ! मुझसे कप्ताहू ने कहा, “क्योंकि रात तक निश्चय ही तुम्हारे पास बहुत काम आ जायेगा—मायद दो-चार सिर भी खोलने पड़ जायें।”

लेकिन फिर भी शाम तक कोई सास बारदात नहीं हुई। नरो में चूर स्पृधियन सैनिकों ने कुछ दुकानें लूट ली थी। और दो-चार स्त्रियों के साथ बलात्कार कर दिया था। पहले के सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया और उन्हें सबके बीच कोड़े से पीटा जिससे उन दुबानदारों और उन स्त्रियों को सान्त्वना मिली।

यह जानकर कि होरेमहेव सेनापति वाले जहाज में मौजूद था। मैं भी बन्दरगाह गया। हालाँकि मुझे उससे मिल पाने की बहुत ही कम आशा थी। पहले वालों ने मुझे उड़ती हुई दृष्टि से देखा और मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और अन्त में मेरे बहुत कहने पर एक अन्दर सूचना देने गया। परन्तु वह जब लौटा तो मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे सुरत आदर बुलाया गया था।

और मैंने जीवन में पहली बार जमी जहाज अन्दर से देखा। वहाँ अनेकानेक अस्त्र-दस्त्र रखे हुए थे, बाकी सब वह मामूली ही था। होरेमहेव मुझे पहले से कुछ अधिक ऊँचा मानूँ हुआ और कुछ रोबदार भी उसका अधिक ही ऊँचा। उसके घुटने चौड़े और बाँहें गठिन दिमाई देनी थीं। परन्तु उसके चेहरे पर बिम्बा की गहरी रेखाएँ उभर आई थीं और उसकी आँखें लूनी लाल और पथी लण्ठी थीं। मैंने झुककर घुटनों के सामने हाथ सौंरे फैलाकर उसका अभिवादन किया।

वह बड़बी हँसी हँसने हुए बोला :

“देखो वह तिन्यूहे है—जमली गये का बेटा ! सबमुख तुम गुमपटी में ही भागें हो !”

अपने रतने की बजह से उसने मेरा आतिथ्य नहीं किया। लेकिन मुझपर अपने पास रखे हुए एक छोटी-छोटी आँखों वाले और नाड़े बंद के हाकिम से जो पथी के बारण हाँक रहा था, वह बोला : “यह लो,

धूल जमी रहती और उनके भोजन और पानी तक में धूल मिली रहती थी। दक्षिण की ओर कराऊनों का स्वर्ण गृह हरा-भरा लगता और उस बीच भूत के घुघले आकाश की पृष्ठभूमि में दूर से अद्भुत नगरी-सा प्रतीत होना था। हालाँकि गर्मी अब काफी तेज थी फिर भी अबकी बार कराऊन निचले साम्राज्य में अपने गर्मी के महलों में नहीं गया था और धीबीज में रखा हुआ था। इससे सभी को एक अज्ञातभय लगा हुआ था कि न जाने क्या होने वाला था। जिस प्रकार सूफान के पहले आकाश में भीरा छा जाना है वैसे ही लोगों के हृदयों में भय और आनक के जाने बाद छाये हुए थे।

धीबीज के राजपथों पर धूल से भीसी ढाल लिये और चमकमाने हुए गिरमनाण पहने हुए सैनिक नियत कवायद करने हुए निकलते और उनके हाकिम अपने घोड़ों पर बलगियाँ लगाये हुए खँडों हुए चले जाने। छावनी में फिर से बड़े-बड़े पात्रों में पाल लिये हुए परवर पड़े जाने और उनमें खाना पकाया जाना। परन्तु वही भी मिथी सैनिक बिलारी नहीं देना था—जो थे सब मानो स्त्रियन थे जो दक्षिण में भागे थे अपना उत्तर पश्चिम के रेगिस्तान में गारदाना लोग से जो निर्दय होकर हत्या कर सकने थे। सभी काले-काले भयानक लगने थे।

नदी का मार्ग साम्राज्य में बंद कर दिया गया था और गेना में महानगर में बदना सामन प्रारम्भ कर दिया गया था। अनुयायी वर अभाव लगने रहने और बहरे लगा करने। धीरे-धीरे कारवानों में काम बन्द होने लगे। व्यापारी लोग दुकानों में सामान उठाकर मोरामों में बन्द करने लगे और लूटमारवाँ पर हड़टे-बड़टे जवान खड़ा लादाद में लौट रहे जाने लगे। लोग इतने बरत छाँटते कि अस्मन के अदिर में दहड़े होने लगे। वही इतनी भीरमने लगी कि भीनरी नमाम प्राकल जगद्व बाढ़ी तोरण के भी कटूर भाँवों के टट के टट खमा रहने थे।

और इसी बीच एक दिन हम्मा उठा कि राज के अदयान में एलीन का मंदिर बर्हिष कर दिया गया था। किसी ने वही के बर्हिष खज वर, उहाँ लिये पुत्र, अनाथ हम्मादि बताये जाने थे, एक कृष्ण की मीठी हृदय लता उस ही की और वहाँ के चौकीदार का बचत काम के काम नद बच

दाना था। लोगों में जब यह समाचार फैला तो आतंक छा गया परन्तु बहुत से मन-ही-मन अत्यन्त हर्षित हुए।

“अपने औजार साफ करके तैयार रख लो मालिक” मुझसे कप्ताह ने कहा, “क्योंकि रात तक निश्चय ही तुम्हारे पास बहुत काम आ जायेगा—शायद दो-चार सिर भी खोलने पड़ जाएँ।”

लेकिन फिर भी शाम तक कोई खास बारदात नहीं हुई। नशे में धूर न्यूथियन सैनिकों ने कुछ दुकानें छूट ली थीं। और दो-चार स्थानों के घायल बन्दास्कार कर दिया था। पहले के सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया और उन्हें सबके बीच कोड़े से पीटा जिससे उन दुकानदारों और उन स्थानों की सन्तवना मिली।

यह जानकर कि होरेमहेब सेनापति वाले जहाज में मौजूद था। मैं भी बन्दरगाह गया हालाँकि मुझे उससे मिल पाने की बहुत ही कम आशा थी। पहले वालों ने मुझे उकती हुई दृष्टि से देखा और मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और अन्त में मेरे बहुत बहने पर एक अन्दर सूचना देने गया। परन्तु वह जब मौटा तो मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे तुरत अन्दर बुलाया गया था।

और मैंने जीवन में पहली बार जमी जहाज अन्दर से देखा। वहाँ अनेकानेक अस्त्र-धस्त्र रखे हुए थे, बाकी सब वह सामूची ही था। होरेमहेब मुझे पहले से कुछ अधिक ऊँचा मातूम हुआ और कुछ रोबदार भी उसका अधिक ही ऊँचा। उसके गुद्दे चौड़े और बाँहें पछित दिलाई देती थीं। परन्तु उसके चेहरे पर चिन्ता की गहरी रेखाएँ उभर आई थीं और उसकी आँखें छूती साल और दबी लगती थीं। मैंने भुक्कर घुटनों के सामने हाथ लीये फौतकर उसका अभिवादन किया।

वह कड़वी हँसी हँसने हुए बोला :

“देखो वह सित्नुहे है—जगती गये का बेटा ! सधमुष तुम मुमधरी में ही आये हो !”

अपने रतने की बजह से उसने मेरा आतिथन नहीं किया। लेकिन मुझकर अपने पास गये हुए एक छोटी-छोटी आँखों वाले और नाटे बदन के हाजिम से जो गर्मों के कारण हाँक रहा था, वह बोला : “यह सो,

धूल जमी रहती और उनके भोजन और पानी तक में धूल मिली रहती थी। दक्षिण की ओर क़राऊनों का स्वर्ण गृह हरा-भरा सगता और उस बीच ऋतु के घुंघने आकाश की पृष्ठभूमि में दूर से अद्भुत नगरी-सा प्रतीत होता था। हालाँकि गर्मी अब काफी तेज़ थी फिर भी अबकी बार क़राऊन निचने साम्राज्य में अपने गर्मों के महलों में नहीं गया था और धीबीज़ में रहा हुआ था। इससे सभी को एक अज्ञातभय लगा हुआ था कि न जाने क्या होने वाला था। जिस प्रकार तूफ़ान के पहले आकाश में अँधेरा छा जाता है वैसे ही लोगों के हृदयों में भय और आतंक के काले बादल छाये हुए थे।

धीबीज़ के राजपथों पर धूल से मैली ढाल लिये और चमचमाते हुए शिरस्त्राण पहने हुए सैनिक नित्य कवायद करते हुए निकलते और उनके हाकिम अपने घोड़ों पर कलगियाँ लगाये हुए ऐँठते हुए चले जाते। छावनी में फिर से बड़े-बड़े पात्रों में साल किये हुए पत्थर पटके जाते और उनमें खाना पकाया जाता। परन्तु कहीं भी किसी सैनिक दिखाई नहीं देता था—जो थे सब या तो न्यूबियन थे जो दक्षिण से आये थे अथवा उत्तर पश्चिम के रेगिस्तान से शारदाना लोग थे जो निर्दय होकर हत्या कर सक्ते थे। सभी काले-काले भयानक लगते थे।

नदी का मार्ग राजाज्ञा से बद कर दिया गया था और सेना ने महा-नगर में अपना शासन प्रारम्भ कर दिया गया था। चतुष्पथों पर अज्ञात जलते रहते और पहेरे लगा करने। धीरे-धीरे कारखानों में काम बन्द होने लगे। व्यापारी लोग दुकानों से सामान उठाकर मोदामों में बन्द करने लगे और तंदूरखानों पर हट्टे-कट्टे जवान क्यादा तादाद में नौकर रसे जाने लगे। लोग श्वेत वस्त्र धारण किये अम्मन के मंदिर में इकट्ठे होने लगे। वहाँ इतनी भीड़ लगने लगी कि भीतरी तमाम प्राणन भरकर बाहरी तोरण के भी बाहर लोगों के ठट्ट के ठट्ट जमा रहने लगे।

और इसी बीच एक दिन हस्ता उठा कि राज के अवसान में एटीन का मंदिर अर्पित कर दिया गया था। किसी ने वहाँ के बलि स्तंभ पर, जहाँ नित्य पुष्प, अनाज इत्यादि चढ़ाये जाते थे, एक कुम्भे की छड़ी हुई सास रख दी थी और वहाँ के चौबीसों का गला कान में कान तक पाड़

झना था। लोगों में जब यह समाचार फैला तो आतंक छा गया परन्तु बहुतों में मन-ही-मन अत्यन्त हर्षित हुए।

“अपने औजार साफ़ करके तैयार रह लो मालिक” मुझसे कप्ताह ने कहा, “क्योंकि रात तक निश्चय ही तुम्हारे पास बहुत काम आ जायेगा—शायद दो-चार सिर भी खोलने पड़ जाएँ।”

लेकिन फिर भी शाम तक कोई खास बारदात नहीं हुई। नशे में धूर स्पूबियन सैनिकों ने कुछ दुकानें सूट ली थी। और दो-चार स्त्रियों के साथ बलात्कार कर दिया था। पहरे के सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया और उन्हें सबके बीच कोठे से पीटा जिससे उन दुकानदारों और उन स्त्रियों को मानवना मिली।

यह जानकर कि होरेमहेब सेनापति वाले जहाज में मौजूद था। मैं भी अन्दरगाह गया हालाँकि मुझे उससे मिल पाने की बहुत ही कम आशा थी। पहरे वालों ने मुझे उकती हुई दृष्टि से देखा और मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और अन्त में मेरे बहुत कहने पर एक अन्दर घूबना देने गया। परन्तु वह जब लौटा तो मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे तुरत अन्दर बुलाया गया था।

और मैंने जीवन में पहली बार जहाँ जहाज अन्दर से देखा। वहाँ अनेकानेक अस्त्र-शस्त्र रखे हुए थे, बाकी सब वह माफूसी ही था। होरेमहेब मुझे पहले से कुछ अधिक ऊँचा मालूम हुआ और कुछ रीबदाब भी उसका अधिक ही ऊँचा। उसके पुद्गे चौड़े और बहि गठित दिखाई देनी थी। परन्तु उसके चेहरे पर चिन्ता की गहरी रेखाएँ उभर आई थी और उसकी आँखें सूनी सात और खबी लगती थी। मैंने शुचकर घुटनों के सामने हाथ लीये फैलाकर उसका अभिवादन किया।

वह बड़बड़ी हँसी हँसने हुए बोला :

“देखो वह गिन्गूहे है—जगभी धने का केठा ! सचमुच गुप्त गुप्तचरी में ही आप हो !”

अपने पदों की बजह से उसने मेरा आतिथ्य नहीं दिया। लेकिन मुझकर अपने पास गड़े हुए एक छोटी-छोटी आँखों वाले और नाटं बंद के हाथ में लो गयी के चारण हाँक रहा था, वह बोला : “यह लो,

मैं मानो।”

और उमने उमके हाथ में अपनी मोने की चाबुक दे दी। भगने दने में जटाऊ मोने का कटी उगारकर उसकी मोटी गर्दन में मोट दी। फिर बहा

‘अब मुम सेना को मैं मानो। अब लोगों का रक्त मुझारे गंदे हाथों से बहे।’

मेरी और मुझकर होरमउब ने फिर एकदम कहा

‘मिन्नुहे, मेरे मित्र, अब मैं स्वगत्य हूँ — मेरा विचार है कि मुझारे घर में मेरे पिता एक बटाई होगी जिस पर मैं अलाप में हाथ-पैर फँका कर मो मद्धमा भाल। मैं इन मूर्खों में फिर अपना हाथ डिनगा यह पता है।’

उमने उम पराईजानी के कपों पर हाथ रख दिये या उमने एक धिर नीका का, फिर मुममें कहा

‘इस अर्थक का देना मिन्नुहे। और इसकी दुनिया देना — इसी के हाथ में जगाऊन ने आज कीबीह का आत्म ब दिया है। अब मैं जगाऊन में बटाई बि बट बागन का हूँ। उमने इस मेरी प्रवृत्ति निरुक्त किया है — इस ईश्वर का हाथ लगाया है कि बिजनी बली जगाऊन का फिर मेरी प्रवृत्ति का बटाई है।’

बस इसी और उमने अपने बटन पीछे पर उमकी दुनी में इसी बली गी। मैं बसकित ही भला। उम हँस में हँसक क कहते, गर्दन और मूर्खी हलने में बसकित ही भला का।

‘मुमने मुझ में हँसा होरमउब,’ बस बली-ले बस बागन में बली, ‘कई मेरे हाथ मुझारे अर्थक का की चाबुक मुझ हाथ में ला बली है। मैं ल मुम बागन ही हँसक अपनी ईश्वर की और आज मुझारे में ही मान बला है — और मैं मुझे मुझ बागन का बला है। अर्थक मुझारे की बला की जगाऊन का बला का मैं ला है बली हलने। और बस बला है कि उम बली हलने — और मुझ हलने अब ही बला का बागन — ईश्वर मैं बला हलने।’

कहा बसकित अब होरमउब ने उमकी पीछे पर अब मुझ बागन का

वह 'ऊई' कर गया और हाँफने लग गया—और जो कुछ वह कहना चाहता था वह उसके गले में ही अटक गया। होरेमहेव ने तेजी से जहाज से निकलकर सीढ़ियों पर जैसे ही पैर रखा कि सैनिकों ने सीढ़े खड़े होकर भाते तानकर उसका अभिवादन किया। उसने उनकी ओर हाथ हिलाया और चिल्लाकर कहा :

"विदा मिट्टी के डेलो ! अब इस बिल्सी के बच्चे की आज्ञा का पालन करना—देखना कि वहीं यह रथ में से म सुड़क जाय या वही अपने ही चाकू से घायल न हो जाय ।"

सैनिक हँस पड़े और उन्होंने उसका जयनाद किया परन्तु वह उसे मुनकर कूड़ हो उठा और घूँसा तानकर चिल्लाया : "नहो मैं तुमसे विदाई नहीं ले रहा हूँ—मैं तुमसे दीघ्र भिलूना—क्योंकि तुम्हारी आँखें मुझे तुम्हारे इरादे बता रही हैं—मैं तुमसे कहता हूँ कि सम्मसकर रहना अन्यथा मुझे लौटकर तुम्हारी पीठों पर पिट्टियाँ बघवानी पड़ेंगी ।"

उसने अपना सामान जहाज पर ही रहने दिया क्योंकि वहाँ प्यादा हाताहत थी। फिर वह मेरे साथ चल दिया। अब उसने पहले की भाँति मेरे गले में हाथ डाल दिया और कहा : "आज मैंने बड़ी ईमानदारी का रास्ता पकड़ा है सि-पूहे ! आज मैं स्वतंत्र हूँ ।"

अब मैंने उससे 'मगर की पूँछ' के बारे में कहा तो वह बहुत खुरा हुआ और तब मैंने साहस करके उससे कहा कि वह कप्ताह के उस तँदूरखाने पर पहुँचा लगा दे। उसने पहले के हाकिम की आज्ञा दी, जिसने वायदा किया कि हमारे ही दिन वहाँ वह कुछ पुराने और डिम्बेश्वर सैनिकों को तैनात कर देगा—इस भाँति कप्ताह के लिए मैंने एक बड़ा काम कर दिया जिसने मुझे कुछ लगाना भी नहीं पड़ा।

"मगर की पूँछ" में अब मॅरिट उसके लिये बेम देवर बानी गई तो उसने कहा :

"स्वी तो मुन्दर है—नायद तुम्हाय—..."

"नही !" मैंने उत्तर दिया। "वह मेरी कोई नहीं है" परन्तु होरेमहेव ने उसके साथ कोई हस्त नहीं की। साम्बराज तब तक मॅरिट ने वह सामन से गुची गई पोसाक नहीं पहनी थी अन्यथा नायद वह उस पर हाथ कर

देता। परन्तु दूसरी बार मदिरा लाने पर जब मैरिट ने उसकी चौड़ी पीठ और गुगुलित बाटूओं को देखकर प्रशंसा-युक्त नेत्रों में उसे देखा तो मैंने तीव्र स्वर में उसे वहाँ से मगा दिया।

होरेमहेब तीसरा गिलास पीने के बाद बाँसों में आँसू भर बहने लगा :
 “कल धीवीज मे रका बहेगा मिन्यूहे। और मैं उसे रोक्ने के लिए कुछ नहीं कर सकता—फराऊन मेरा मित्र है और मैं उसकी भूलतता के दावजूद उससे प्रेम करता हूँ। एक बार जब मेरा बाज उसके पास लाया था, मैंने उसको अपने वस्त्र से उड़ाया था और तभी मेरा और उसका भाग्य जुड़ गया था....।”

फिर कुछ सोचकर उसने दीर्घ दबास छोड़कर कहा : “ओह ! मेरे मित्र तिन्यूहे ! उम दिन से जब हम उस गंदे देश सीरिया में मिले थे, अब तक नील में बहुत जल बह गया है। मैं अभी फराऊन की आज्ञा से कुश के देश से सेना को बर्खास्त करके आ रहा हूँ और हम्मी सैनिकों को धीवीज से आया हूँ, सच पूछा जाय तो दक्षिण में देश इस समय अरक्षित है। अगर ऐसे ही चलता रहा तो सीरिया में शीघ्र चलवे होना अवश्यम्भावी है। शायद तभी फराऊन की समस्त लौट आवे। जब से यह तिहासनाकूट हुआ है तब से न्यूबिया की सोने की खानों में काम बंद है—अब आलसी को दंड से काम पर लगाना जायज नहीं है—निश्चय ही फराऊन और उसका नया देवता दोनों ही विविध हैं।”

फिर वह चुप हो गया। मैंने कहा :

“पर अम्मन भी तो झूठा देवता है—घृणित भी है और उसके पुजारियों ने एक सम्बन्ध समय से लोगों को अंधकार में रखा है। यहाँ तक कि यह हालत हो गई है कि लोग उसके विरुद्ध एक शब्द कहने की भी हिम्मत नहीं करते।”

वह मेरी ओर घूरकर देखने लगा फिर बोला :

“और कल वह हटाया जाएगा—सबसे उसका हटाया जाना ठीक भी है क्योंकि देश में फराऊन के मुकाबले में दूसरी शक्ति इन पुजारियों की हो गई है—और यह उचित नहीं है। दूसरे देवताओं के पुजारी लोगों को भी अम्मन के पुजारियों ने दबा दिया है—लोगों का यह हाल है कि वह

पुजारियों द्वारा ही शासित हैं—और यह बात छतरे से साक्षी नहीं है।”

“मेरे विचार से एटौन अच्छा देवता है।” मैंने कहा, “कम से कम यह लोगो को घोंसे में तो नहीं रखता।”

“जो कुछ भी हो,” वह बोला, “पर देवताओं की शक्ति फराऊन से बढ़नी नहीं चाहिए।”

मैंने उसे हाड़ी-देन, पीट, बेबीलीन में जो कुछ मैंने देखा था सब उससे कह सुनाया—परन्तु वह भले में पूर धार्य ही उन सबसे कुछ लघ्य निगान सका।

सारी रात वह मेरी बाँहों में सोया, परन्तु पीबीज में सारी रात सैनिक घूमने रहे—उनके अस्त्र-जस्त्रों की लखलखाहट होती रही, बप्ताह और तंबूरखाने के मालिक ने बेर सारे सैनिकों को अपने यहाँ बुलाकर उन्हें मुफ्त मदिरा पिलाकर उनको अपने यहाँ रोक रखा कि वह आपत्ति के समय उनकी रक्षा करें।

उस रात पीबीज में धार्य ही कोई सोया हो। भयानक आतक छाया हुआ था—लोग बुरी तरह घनराये हुए थे। निश्चय ही फराऊन भी उस रात नहीं सो सका होगा—

परन्तु हीरेमहेब—जो जन्म-जात सैनिक था—गहरी नींद सोया—

अम्मन के मन्दिर के सामने सारी रात भीड़ें लगी रही। गरीब ठंडी पाल पर लेटे हुए थे। अम्मन के लेल लगे मोटे पुजारियों ने बलि पर बलि की और मामा प्रवार के जोग लगाये, फिर वह मौम और साध सामदियाँ लोगो में बाँटने लगे। मदिरा और रोटी के लो जैसे भहार लोन दिये गए थे। पुजारी लोग अम्मन का नाम जोरो से उच्चारण करने और लोगो को समझ देने कि जो भी उसके प्रति लक्ष्वा रहेगा वह धार्यन जीवन प्राप्त करेगा—

यह पुजारी लोग यदि चाहते तो रक्षणान बिलुन न होता—उन्हे केवल शुभना पड़ता था और तब फराऊन उन्हें शान्तिपूर्वक रह लेने देना बसोकि उसका देवता तो रक्षणान से बृष्ठा करता ही था। लेबिन अधिकार और घन ने उनके मस्तिष्कों को बेर दिया था, यहाँ तक कि वह मृत्यु में भी

अब नहीं डरते थे। वह यह जानने थे कि मुठ के घिसे-पिटे सैनिकों के सामने नागरिकों की भीड़ों और उनके अपने पहरेदार लोग ऐसे बहु जायेंगे जैसे नदी की बाढ़ में तिनके बहु जाते हैं। पर वह अम्मन और एटोन के बीच रक्तपात इसलिए चाहते थे कि कराऊन सदा के लिये लूनी और हथपारा बहाने लगे—क्योंकि गृहयुद्ध छिड़ने के बाद उसकी सेना के बाते-काते हथ्थी लोगों का मिमियो का रक्तपात करना अवश्यम्भावी होता—वह चाहते थे कि अम्मन की बलि चलती रहे चाहे उसकी मूर्ति फेंक दी जाय और उसका मंदिर बंद कर दिया जाए।

आमिरकार रान बीन गई और तीनों पट्टाडियों के पीछे से एटोन की बाती ऊपर उठने लगी—और रान की धीनमनस के स्थान पर गर्भों छाने लग गई। हर राजगण और बीराहों पर मीन चूके जाने लगे और कराऊन की आत्मा पड़कर मुताई जाने लगी, जिसमें कहा गया कि—अम्मन जबभी देवता था—और उसे हटा दिया गया था और वह हमेशा-हमेशा के लिए मानव हो चुका था—कि उसका नाम मयुर्न ऊपरी और निचले साम्राज्य में ममाम निसावटों, लुदावटों—यही सब कि कहां से भी हटा दिया जाय, अम्मन की समस्त भूमि मरेमिया, दाम-दामिया, इमारन, सोना-बांदी, ताँबा सब उल्ल ममसा जाय—बहु सब अब कराऊन और उसके देवता एटोन का ममसा जाय—कराऊन ने लोगो को आश्वासन दिया था कि वह उनके (अम्मन के) मंदिरों को मराने और उद्योगों का नवमाधारण के धूमन के लिए मैदान बना देगा—उसकी पवित्र बीबी को सभी के मदाने के लिए लौन देगा वहां लगीन लोग लड़ा लड़ें और स्वयननापूर्वक वहां वाली मर लेंगे—उसने वादा दिया कि वह उसकी आर मूर्ति को मीरी में बंद देगा—कामकर उनको जिनके पास भूमि लगी थी—जिनमें कि वह एटोन के नाम पर काटन कर के लुभी बीबीन ऊपरी मर लेंगे।

राजाका को अम्मन के अनुसार लोगों ने चुपचाप लुना पायु उनके बाद कभी कभी नाम बिम्बाने लगे, "अम्मन ! अम्मन !" नि-मामन इनकी उबरमन की कि बीनाने दिपने लगी। ऐसा लगेन मया बीन काटन ममर रहे ही—सबसे और कर रहा हो—और वह जाने बीनन परमने। उनके ममर और लंदेन पुने सेदरे सब से ऊपर मर, उनही ममर की बंदी

दिखाई देने लग गई—और उन्होंने देखा कि गो बह काफी घे फिर भी भीड़ के सामने कुछ नही के समान थे। धीवीच का महानगर उमड़ पड़ा था। इनकी भीड़ उन्होंने जीवनभर में कही नही देखी थी।

उस भयानक रोर से हौरैमहेव भी जाग उठा। उठकर हम सीने अम्मन के मन्दिर की ओर चल दिये। मार्ग में एक फव्वारे के पास हम फारिग हुए और मुंह-हाथ धोकर जब मन्दिर पहुँचे तो देखा कि वह मोटी विल्ली जैसा लगने वाला नया सेनापति अपने सैनिकों और रथों को मन्दिर के सामने भेजने में लगा हुआ था। जब उसे सूचना दी गई कि सब तैयार हो गए थे और हर सैनिक उसका उद्देश्य समझ गया था तो वह अपनी कलाई की हुई कुर्सी पर खड़ा हो गया और तीखी-पतली आवाज में बिलनाया :

“मित्र के सैनिकों! कुग के बीरो! बहादुर शारदानाओ! सब चलो और अम्मन की मूर्ति को उल्टा कर दो जो पापवस्तु है—कराऊन की आज्ञा पूरी करो और तुम्हारा उपहार अमूल्य होगा।”

इनका कहकर, क्योंकि वह समयला था कि उसका काम अब समाप्त हो चुका था। वह अपनी कुर्सी के नमं गहो पर बैठ गया और दास उसे हवा करने लगे क्योंकि बेहद गर्मी पड़ रही थी।

लेकिन मन्दिर के सामने असह्य लोग खड़े थे—बर्द-औरत, जवान-बूढ़े और बच्चे, जब रथ आगे बढ़े तो वह नहीं हटे। भयानक कोलाहल हो रहा था। और घोड़ों पर चाबुक चटकी और वह फुटके रथ के पहिये अर्किर झुटके—भीड़ न हटी और रथ के घोड़े, पहिये भीड़ पर चढ़ गए। भारी पहियों के नीचे शरीर कुचल गए, घोड़ों की टापो से सिर फट गए और भयानक चीत्कार से वातावरण गूँज उठा। सेनानायको ने देखा कि रक्तपात बिना वह आगे नहीं बढ़ सकते थे क्योंकि रक्त अब बहने लग गया था। उन्होंने सैनिकों को पीछे हटने की आज्ञा दी क्योंकि कर्राऊन की आज्ञा थी थी रक्तपात बिल्कुल न हो—फत्यर खून से भीग गए थे—घायल चीख रहे थे—भीड़ गर्जन कर रही थी अम्मन की जय-जयकार से आकाश गूँज रहा था। जब सैनिक पीछे हटे तो भीड़ ने समझा वह भाग रहे थे।

इसी बीच पैपीटमोन को ध्यान हुआ कर्राऊन ने अपना नाम इस राजाज्ञा में, बदलकर, एखनैटीन रख लिया था—क्यों न वह भी उसे सुन

रखने के लिए अपना नाम भी बदल डाले, जब सेनानायक उससे सलाह तथा आज्ञा लेने आये तो वह चुप लगा गया क्योंकि वह उसका असली नाम ले रहे थे। अंत में आखिरी पूरी फाड़कर बोला :

“मैं पैपीटैमोन नामक किसी व्यक्ति को नहीं जानता, मेरा नाम तो पैपीटैटोन है—पैपी-ऐटोन का प्यारा।”

सेनानायक जिनके हर एक के हाथों में एक-एक सोने का कोड़ा था और जो एक-एक हजार सैनिकों के जत्थे का कमान अपने नीचे रखने थे, सुनकर बहुत चिढ़े, रथों का नायक चिल्लाया : “बिना पैदे के गद्दे में जाए ऐटोन ! यह क्या मूर्खता है ? हमें अपनी आज्ञा दो !”

तब पैपीटैटोन ने उनका उपहास करते हुए व्यंग्य से कहा : “तुम लोग योद्धा हो या औरतें ? भीड़ भगा दो—यह रक्त न बहाना क्योंकि उनके लिए कराऊन ने खासतौर पर मना कर दिया है।”

उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और घृणा से झुक दिया। फिर क्योंकि वह और कुछ कर ही नहीं सकते थे, वह सौट गए।

इधर जब यह बातें हो ही रही थीं उधर भीड़ ने हथियारों को धर दबाया—उन पर पत्थर फेंके, कई हथियारों के तिर कट गए और वह गिर पड़े। वह अपने ही खून में मर गए। थोड़े बिदक गए और रथवानों को उन्हें रोकना बठिन मालूम होने लगा। पत्थरों की बीछारें बराबर आनी रही।

जब रथों का नायक अपने सैनिकों के पास पहुँचा तो उसने देखा कि सबसे उत्तम नस्ल के घोड़े की एक आख निबल आई थी और वह संगड़ा हो गया था। वह धर-धर काँप रहा था। देखकर वह झुंड हो उठा और पागल होकर चिल्लाया :

‘अरे मेरा सोने का तीर ! मेरा हिरन ! मेरा मूर्यपूज ! इन बर्मीनों ने इसकी आख निबल ली—टहर तो—!’ और वह रथ बढ़ा कर भीड़ में घला—फिर चिल्लाया : “कराऊन की आज्ञानुसार खून बहाना बर्जित है !”

फिर उसने बटकर सबसे ज्यादा चिल्लाने वाले बाघी को पकड़कर रथ में खींच लिया और उसकी गर्दन लगाव में फँसा कर खींची—वह

मनुष्य घुट कर मर गया। उसकी देखा-देखी अनेक रथ बड़े और उन्होंने बहुत से आदमी इसी भाँति मार डाले। घोड़ों के नीचे अगणित पिस कर मर गए। भारी पहियों से बहुत से बट गए और भयानक कराहे उठने लगीं—रक्त से पृथ्वी भीग गई। जब रथ चाले मरे हुए लोगों की लाशें पटकाने लगे तो भीड़ में भयानक घातक छा गया। तभी न्यूविद्या के सैनिकों ने धनुष खोले और प्रत्यंचा में जकड़कर वह लोगों को धोत कर मारने लगे, उन्होंने बच्चे भी घोंट दिये। परन्तु पत्थर अब भी फिक रहे थे और सैनिक उन्हें अपनी झाली पर रोक रहे थे। भयानक कोलाहल हो रहा था—और तभी भीड़ ने एक रथवान को खींचकर नीचे गिरा दिया। “मारो मारो” का नारा लगा—और लोगों ने उसके गिर की पत्थर पर दे मारा—बहु छटपटा कर मर गया—रक्त में रक्त मिलकर बहने लगा। भीड़ अब और कुछ हो उठी थी।

सेनापति पैपीटैटोन परेशान हो उठा था। उसे अपनी सूझान की बिल्ली का प्याग हो आया था। आज वह बच्चे देने वाली थी और वह यहाँ स्पर्ध में समय बीबा रहा था जबकि उसे इस समय उसके पाम रहना जरूरी था। वह चिल्लाया :

“मेरी बिल्ली अकेली है ! मुझे जाना है। एटोन के नाम पर जाओ और उस अभिषिक्त अम्मन की मूर्ति को उल्टा कर दो, बरमा गेट और समाम दीतानो की शपथ ! मैं तुम्हारे गने की खड़ीरो को छील लूंगा और तुम्हारे कोहों को तोड़ दूंगा....”

सैनिकों ने जब यह सुना तो वह समझ गए कि उनके साथ धोखा हो रहा था और उन्होंने कम-से-कम अपनी सैनिक सर्वादा रखनी चाही। उन्होंने झूह बनाया और भीड़ पर हमला कर दिया। भीड़ उनके सामने ऐसे साफ हो गई जैसे बाढ़ के सामने तिनका। हथियारों के भावें रक्त में साज हो गए और मृत बहने लगा—और उन्होंने सो धार हमने हिंस और हर बार तो पुष्प-रत्नी-बच्चे-बूढ़े मार डाले। एटोन के नाम पर भूमि लाशों से पट गई। अम्मन के मंदिर का दीर्घद्वार बन्द कर दिया गया और पुकारी उन्हें सार देने लगे। अब सोच भाये—सैनिकों ने उन्हें धुन-धुन-कर मारा—रथ उनके पीछे दीड पड़े और सब लोगों में भयानक आनक

फिर छा गया। लोग भाग रहे थे—गिर रहे थे—जितका जहाँ स
समाया गया वहीं छिपने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु प्रतिगोष्ठ की त
वार वहाँ भी उन्हें नहीं छोड़ती थी।

हथियारों पर लुन चढ़ गया और वह निरंकुश हो कर हाया क
लगे। भीड़ घबराकर एटीन के मंदिर में घुस गई और उन्होंने बड़ी
पुत्रागियों को बाट डाला और गान-रगम्भ का उलाह फेंका। रथ वहाँ भ
आ गए। और फिर जो मार-काट हुई तो एटीन के मंदिर का दिना
पक्का प्रागण रक्त में खमकने लग गया।

पर अम्भन का मोटा तबि का द्वार बन्द हो चुका था। द्वार से मंदिर
के पत्तेश्वर सीर बला रहे थे। मंत्रियों ने मंदिर चेर भिया था पर भागे
उन्हें और कुछ नहीं मूम रहा था। गाडा मूम रात्रपथ पर जम गया था—
उम पर मंत्रियों निममिता गरी थी।

पैरीटीन ने अपनी गुणों की पुर्मी पर बैँ हुए देखा कि दूर-दूर तक
माने कैनी नहीं थी—धूम उठ गरी थी—मंत्रियों निममिता गरी थी,
रक्त बह रहा था। बह बबरा गया और बरबु से बरेमान हो उठा। अपने
बागों को भागा दी कि अवल-धूम जबापा जाये अपने अपने बगै बा
हारे।

फिर भी उसे अपनी रिम्मी की याद आ गरी थी। बह माने मायकों
में घोषा।

‘मुझे डर है कि जो कुछ हुआ है उसे सुनकर जराइन प्रायम्न बूड
ही उगा। बागों के इनका सब करके भी मुझे अभी तक अम्भन की पुर्मी की
उदा नही बिना है उम्भ मात्रियों में रक्त की लारें बड़ा बी. जै. मैं अब भी
जराइन के नाम जाना हूँ—निश्चय ही मैं मुन्नाग वल भूना—और
बागों में अपने घर भी होगा बाउंगा। बागों के बिनी बाग बन्ना
देने बागी है—हिर भूने बल और बरबुने है—बड़ी बरबु बरबु है—भा
रा तम बरबु के नही ताउ बागों—बुद्ध जराइन को निश्चय बाग
हारा कि अब क्या बिना जाह।’

बह बबरा गया। मंत्रियों मंदिर में बह गए। भागे गरी गरी। पर बह
मंत्रियों की बागों की बागों के बाईं जो बह भूनी वर बरबु बागों बने।

फिर जो रातें गुजरी उनमें महानगर में जगह-जगह आग लगी—हमियाँ ने सोने के प्यालों में मदिरा मुफ्त पी और शारदाता और न्यूबिया के मैनिक घरों में घुस कर नर्म से नर्म गद्दों पर गृहणियों के साथ सोये। महानगर के सभाम गृहों का दखल लग गया—धोर-वदमान, बन्नबोर, उन्नक्के लूटमार करने लगे। वह न एटोन से डरते थे न अम्मन से। उन्होंने एटोन को धन्यवाद दिया कि ऐसा जुमदिन उन्हें दिखाया। एटोन का मन्दिर कराऊन की आशा से तुरन्त पवित्र कर दिया गया था और वहाँ भक्तों की मुक्त-हस्तों से जो जीवन पदक बाँटे गए थे, सारे बहमादा उन्हें ले आये थे और उन्हें पहनकर सैनिकों से मुक्त होकर सुली लूट कर रहे थे। यीवीश की शक्ति और संपत्ति चायल के घरीर से रक्त के समान बह रही थी।

होरेमहेव मेरे घर रुका रहा। क्रोध से उसके नेत्र लाल हो गए। मुली उसका विशेष सत्कार करती और बारम्बार उसे स्वादिष्ट भोजन परोसती।

होरेमहेव ने कहा : “मुझे अम्मन या एटोन की परवाह नहीं है—मुझे तो पुख केवल अपने सैनिकों के लिए है जिन्हें आजकल उद्दण्ड बना दिया गया है। इससे पहले कि वह फिर अनुशासन में लाये जायें मेरे कोड़े उनकी पीठों पर मुझे बरसाने पड़ेंगे। वह मेरे बड़े अच्छे सैनिक हैं और बस यही मुझे दुख है।”

और कप्ताहू दिनों-दिन मासदार होता गया। उनका बेहूरा चिकनाहट से सना हुआ चमका करता। रातों को वह अब ‘मगर की पूँछ’ में ही रहा करता क्योंकि सैनिक लोग उसे मदिरा के मूल्य में मुट्ठी भर कर सुवर्ण देते और तद्दूरखाने के पिछवाड़े के नक्षों में धोरी के माल के ढेर के ढेर जवाहिरात, सोना-चाँदी, चटाइयाँ इत्यादि के ढेर लगे रहते क्योंकि मदिरा के बढ़ते प्राहक इन्हें बिना मूल्य ठहरे ही पटक जाते थे। ‘मगर की पूँछ’ पर कोई हमला नहीं करता था क्योंकि होरेमहेव के मैनिक वहाँ पहरा दे रहे थे।

तीसरे दिन मेरी दवाइयाँ खत्म गईं और सोने के मूल्य में भी नहीं न

मिल गयी। लाशों और गदले पानी में जो रोग गरीबों के मुहल्लों में पड़े थे उनसे मैं लोगों को नहीं बचा सका। मैं बुरी तरह थक गया था और मेरे आँखें लाल हो गई थीं—मेरी तबीयत सबसे ऊब गई थी। अम्मन, ऐटो, गरीब-अमीर, जटम—सबसे, और मैं 'मगर की पूँछ' चल दिया। जाकर मैंने भर-भर कर मदिरा पी। फिर वहीं सो गया।

सुबह जब मैरिट ने मुझे जगाया तो मैंने देखा कि मैं रात-भर समीप साय उसी की चटाई पर सोया था। मुझे रान की बातों पर ध्यान हो आया और शर्म से मेरा सिर झुक गया। मैंने मैरिट से कहा: "जीवन एक ठंडी रात के समान है लेकिन यदि दो एकाकी मिल जाते हैं तो वह सुखकर हो जाती है—हालांकि उनके हाथ और उनकी आँखें साफ़ बतला देती हैं कि वह मित्रता बनाये रखने के लिए कितनी बड़ी झूठें—छिपा रहे हैं।"

मैरिट ने नींद की लुमारी में अलसाई हुई जम्हाई ली। फिर बोली: "तुम कैसे कहते हो कि मेरे हाथ और आँखें झूठ बोलती हैं? सैनिकों की उँगलियों को झटकने और उनके पैरों में सान भारती हुई मैं थक गई हूँ और मिन्यूहे! यहाँ तुम्हारे बगल में ही मुझे पूरे शहर में सुरक्षित स्थान मिल पाया है—जहाँ मुझ पर कोई हाथ नहीं डाल सकता। ऐसा क्यों है मैं नहीं वह सकती, लेकिन लोग कहते हैं कि मैं सुन्दर हूँ। मेरा पेट अत्यन्त सुभावना है—हालांकि तुमने उसको देखने का बच्क नहीं किया है।"

उसने मुझे मदिरा की जिसे पीकर मैंने अपना दिमाग साफ़ किया। उसने मुझे मुस्कराकर देखा परन्तु फिर भी उसकी आँखों की गहवाई में मुझे दुःख दिखाई दिया—जैसे गहरे कुएँ में पानी।

और धीधीध में बसाति बनी रही। नूट-लसोट, जोर-जबर्दस्ती और रक्तपात होता रहा। रातों को जगह-जगह स्त्रियों की चीखें सुनाई देनी जहाँ सैनिक बलात्कार करते। मुझे ऐसे समय अपने पिता और माता की याद हो आई और मैंने अपना एक उद्देश्य पूरा करने की टानी।

पाँचवें दिन सैनिकों ने अपने हाथियों की आज्ञा मानने में मी इन्कार कर दिया—उद्दण्डना पराजय की पशुंच चुकी थी। उच्चनदाशिकाग्यों ने जाकर पैरोट्टीन को दबाया कि वह शराऊन के पास जाकर वाग्नशिव मियनि समझ पाया। पैरोट्टीन स्वयं मुद्ध और रक्तपात में ऊब गया था

और फिर उसे अपनी विल्लियों से भी दूर रहना पड़ रहा था।

परिणाम यह हुआ कि करारुन के दूत मेरे घर हीरेमहेव को बुलाने आ गए। हीरेमहेव अपनी सीमा पर से सिंह की भाँति उठा—नहाया, वस्त्र बदले और बड़बड़ाने हुए चला गया। अब स्वयं करारुन का अधिकार भी खतरे में आ गया था—कल की कोई नहीं जानता था।

करारुन एखनेटोन के सम्मुख आकर उसने अभिवादन के उपरान्त कहा : “अब एक पल भी गपट करने का नहीं है—यदि तुम चाहते हो कि फिर सब कुछ वैसा ही हो जाय जैसा कि था तो मुझे अपना अधिकार तीन दिन के लिए दे दो—तीनरे दिन मैं उस अधिकार को तुम्हें लौटा दूँगा। तुम्हें कोई अकल नहीं पड़ेगी कि जानो कि क्या हुआ।”

“तुम अम्मन को उखाड़ दोगे ?” करारुन ने पूछा।

“निश्चय ही तुम्हारे ऊपर देवता सवार हैं,” हीरेमहेव ने कहा।

“लेकिन अब जो कुछ हो चुका है उससे अम्मन को उखाड़ना ही पड़ेगा यदि करारुन की धान कायम रखनी है—निश्चय ही मैं उसे उखाड़ दूँगा—परन्तु वह न पूछो कि मैं क्या करूँगा।”

करारुन ने कहा : “तो तुम उसके पुजारियों को कोई नुकसान मत पहुँचाना क्योंकि वह अवोध है—जानते नहीं हैं कि वह क्या कर रहे हैं।” हीरेमहेव कोष के घूँट को पीकर बोला :

“निश्चय ही तुम्हारा सिर सील देना चाहिए क्योंकि यह स्पष्ट है कि इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है—लेकिन फिर भी मैं तुम्हारी आज्ञा मानूँगा—कम-से-कम उस घड़ी की मर्यादा के लिए जब मैंने तुम्हें अपना उत्तरीय उड़ाया था।”

और करारुन ने रोकर उसे अपना कौड़ा और राजसी चिह्न दे दिया कि वह उन्हें तीन दिन तक रखे। यह सब बातें मुझे बाद में हीरेमहेव ने ही बताई थीं।

और करारुन के सुवर्ण रथ में आरुढ़ होकर हीरेमहेव नगर को आया और मुहल्ले-मुहल्ले में सैनिकों को आवाज देता हुआ—उन्हे नाम लेकर बुलाना हुआ वह रथ दोड़ाने लगा—विश्वस्त सैनिकों से उसने सींग फुँक-बादे और सैनिक जब उमड़ने लगे तो उन्हें विविध झंझों के नीचे एकत्रित

भय । चोटें । घन धन रहे थे । अब मंदिर के पुजारियों ने देखा कि फाटक टूट जाएगा तो सींगे जूँबवा दिए—उपर हथ्थी भी दीवारों के पास आ गये थे । सींगे जूँबवाने का अर्थ था कि मुनहू कर नौ जाय—व्यर्थ खून-गुनहा न हो । उनका कहना यह था कि अम्मन ने काफी बनि मे नी थी और अब वह उन सींगों को आगे बर्षी काम में आने देने के लिए मरने देना नहीं चाहते थे ।

मंदिर के बाँचे द्वार अर्धरात्रि खुल गए और होरेमहेब की आज्ञा से मैनिबो ने छन्दर की भीड़ को भागकर निबल आने दिया । लोग अपने जालों को लेकर भागे और गिगते-महते उन्होंने अपने घर लिए ।

अब होरेमहेब के बरुडे में बाहरी तमाम प्रांगण, गोदाम, पुस्तकाल, मंदिर के बाग़वाने इत्यादि सभी आ गए थे, बेबल बोडे से लोग मरे थे, फिर जीवन-गृह इत्यादि भी जीव लिये गए, होरेमहेब ने वहाँ के बँधों को आज्ञा दी कि वह नगर में जाकर काम्यों का इन्तज करें । मृनकगुहू की ओर बोर्ड नहीं गया क्योंकि वह तो एक ऐसा विभाग था जिसका बाहरी दुनिया से कोई सम्पर्क ही नहीं था ।

बराजु जब मेला छन्दर नाम मंदिर के सामने पहुँची तो अम्मन के पुजारियों ने अन्तिम विरोध किया । उन्होंने अपने मैनिबो पर जादू कर दिया और उन्हें ऐसी दवाएँ माँदरा में मिलाकर दिला दी कि वह भया-मरणा में दुष्ट बनने लगे । स्वयं पुजारी लोग भी हथियार लेकर सामने आ गए थे ।

राज जब वहाँ आरकाट होनी रही और अम्मन के शारे मैनिबो का बाहु मयापन कर दिया गया । बेबल मरने ऊँचे दहों के पुजारी अपने देवता की रक्षा को ले लगे रह गए । होरेमहेब की आज्ञा में दुष्ट बन्द कर दिया गया । मैनिब लाने को उठा-उठाकर नदी में फेंकने लगे—

और अब होरेमहेब ने पुजारियों के पास जाकर कहा : “मैं स्वयं अम्मन के विरुद्ध नहीं हूँ क्योंकि मैं होरस का खाकर हूँ जो मेरा माता है । फिर भी मुझे बराइन की आज्ञा का दामन तो बरमा ही होगा । बरा यह दुगारो लिप् और बंदो लिप्—दोनों के लिप् अच्छा न होगा यदि मैनिबो को मारने के लिप् कोई दुर्गि हो न मिले ? क्योंकि स्वयं मैं पवित्र मुनि का

शन कर रहे थे। उस रात पीबीच में एटीन के नाम पर महोत्सव मनाया जा रहा था और किसी और हवशी में कोई अन्तर नहीं रह गया था। इसकी देखा-देखी दरबार की स्त्रियों ने अपने शयन कक्षों में न्यूविया के हव्शियों का स्वागत किया और अपनी नई ग्रीष्म ऋतु की पोशाकों को फेंककर उनके पौरुष की परीक्षा की थी। और तब यदि कोई मंदिर के शायल सैनिक अपनी बेहोशी में कहीं दीवाल की छाया से निकलकर 'अम्मन-अम्मन' की आवाजें लगाते तो सैनिक उनके सिर पक्के फर्श पर लीज देते और स्त्रियाँ उनके चारों ओर मदोन्मत्त होकर नाचने लग जाती।

यह सब मैंने अपनी आँखों देखा था। सँसा था मनुष्य का जीवन कि कुछ ही मटो में हत्याओं को भूलकर उत्सव मनाने में लग रहा था। और मुझे नैफिट की कहीं बातें याद हो आईं। मुझे अपने माता-पिता की याद हो आई और मैं पागलों की भाँति उठा और कुछ सैनिकों को लेकर अपना एक अभीष्ट सिद्ध करने चल दिया। सैनिकों ने मुझे हीरेमहेब के साथ देखा था—वह मुझसे भय करते थे—तुरन्त मेरे साथ चल दिए।

मैं नेफर नेफर नेफर के घर के सामने जाकर रुक गया। यहाँ मेरे पैर लड़खड़ाने लगे परन्तु मैंने अपूर्व साहस से सैनिकों से कहा : "हीरेमहेब—फराऊन के सेनापति की आज्ञा है—इस मकान में घुस जाओ। तुम्हें एक स्त्री मिलेगी जो गर्ब से अपना सिर ऊपर उठाये रखती है—इसकी आँखें पल्ले की तरह हरी हैं—उसे यहाँ से आओ—परि वह विरोध करे तो उसके सिर में भाले की मूँठ मारी और उसे उठा लाओ—परन्तु उसे मारना मत।"

सैनिक हँसते हुए उस घर में घुस गए। शीघ्र ही वहाँ भगदड़ मच गई। वहाँ के अतिथि भागने लगे और नीकर पहरेदारों को बुलाने लगे। परन्तु तब तक सैनिक हाथों में चाहद में डूबी रोटियाँ, मदिरा के पाषट्यादिके साथ नेफर नेफर नेफर को उठा लाये थे। वह भागद उनसे लड़ी थी तभी उसके सिर पर गुम्मा उछल आया था। जहाँ भाले की मूँठ मारी गई थी, वहाँ थोड़ा खून भी निकल आया था। उसके सिर से ओढ़नी (विग) हट गई थी और वस्त्र फट गए थे। मैंने उसके स्तनों पर हाथ

रखा—वह गर्म थी परन्तु मुझे लगा जैसे मैंने किसी साँप पर हाथ र दिया था। उसका हृदय धड़क रहा था जिससे मैंने जान लिया कि व जीवित थी फिर भी मैंने उसे एक कासे कपड़े में लपेट लिया जैसे मुँह लपे जाते हैं और उसे लेकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। पहरेदारों ने मुझे नहीं टोका क्योंकि मेरे साथ सैनिक जो थे। मैंने दासों से कहा कि मृतकगृह कं

और इस भाँति नेकर नेकर नेकर से मैंने बदला ले लिया। परन्तु बाद में मुझे पता लगा कि मेरे इस बदले से उसकी कोई हानि नहीं हुई।

और मैं 'मगर की पूँछ' लौट आया जहाँ मैरिट से मैंने कहा : "मैंने अपना प्रतिजोड़ ले लिया है—परन्तु फिर भी न जाने क्यों मेरे मन को प्रान्ति नहीं मिल सकी है—मेरे हाथ-पैर अब भी ठंढे हैं हालाँकि रात काफी गर्म है।"

मैंने मदिरा पी और वह मुझे बुरी लगी। मैंने पुनः से कहा : "यदि कभी किसी स्त्री पर मैं हाथ रखूँ तो मेरा अरीर भग्न हो जाय। क्योंकि मैं जितना उसके बारे में सोचता हूँ उतना ही मेरा मन बढ़ता जाता है।"

मैरिट ने मेरे हाथ पकड़ लिये और स्नेहसिक्त स्वर से कहा : "ध्यान करनेवाली, भला चाहनेवाली स्त्री से शायद अभी तक तुम मिल ही नहीं हो।"

और मैं फिर मैरिट को बाहुओं में लेकर उसीकी बटाई पर लौ गया। मैंने जामें कहा : "मैरिट मैंने एक स्त्री के साथ पहले पहा फोड़ लिया है पर वह अब मर चुकी है—उसके तिर के साथ बाँधने का मोदी का पीना मेरे पास अब भी मौजूद है—परन्तु फिर भी यदि तुम कहो तो हमारा मिथना के कारण मैं तुम्हारे साथ फिर पहा फोड़ लूँ।"

उमने जगहाई ली और मेरे गालों को छूकर बोली :

"तुम्हें 'मगर की पूँछ' का प्य अब कभी नहीं पीना चाहिये—इसमें मुश्किल दूसरा दिन भी गराब हो जाता है।"

मैंने उसे ध्यान से अक में भर लिया। फिर उमने कहा : "तुम एकाकी हो और मैं भी हूँ, परन्तु मत्सर में और भी बहुत से ऐसे हैं। मैं तुम्हें किसी भी स्त्री के साथ रहने में कभी नहीं रोकूँगी—और न तुम्हीं को मेरे मार्ग में आना चाहिए। फिर तुम तो जानते हो कि मैं लड़कपाने में ही बरी हुई हूँ—न कोई मई मकड़ी हो हूँ कि पुरखों से परिचय न होर्ड—"

मेरा हृदय पक्षी की भाँति हल्का हो गया—मुझे उस समय लदा जैसे अब जब कुछ भी नहीं हुआ था और वो होना था वही मेरे लिए सब कुछ था।

दूगरी सुबह मैं मैरिट का साथ लेकर फराऊन की सवारी देखने गए। वह अपनी नई चीप्मन्तु की पोशाक पहने हुए अपने कपनीय संग का भी हातांकित वह तदूरसाने में ही पत्ती हुई थी—फराऊन के कृपापात्रों लिए पहले से ही निर्धारित स्थान पर जब मैं उसे साथ लेकर पहुंचा मुझे उसके कारण तनिक भी शमिन्दा न होना पड़ा।

मेरी बाला राजपय रगबिरगी छत्रियों से सजाया गया था और मा के दोनों ओर लोगों की अपार भीड़ लगी हुई थी। दोनों ओर उद्यानों पेड़ों पर लहके बड़ गए थे और पैपीट्टीन की आवाज से राजमार्ग पर अगणित फूलों की टोकरियां रख दी गई थीं कि रीति के अनुसार जब फराऊन आने लगे तो लोग उसके सामने फूल बरमावें। मेरे मन में इतना और आशा बघ रही थी क्योंकि देश की स्वतंत्रता का आभास होने लगा था। मुझे फराऊन के यहाँ से एक सुवर्ण का बड़ा पात्र दिया गया था। और मैं राजपरिवार का सिर तोलनेवाला बैच बना दिया गया था। वृष्ट में मेरे एक सुन्दर तरुणी लड़ी थी जो कि मेरी मित्र थी और जहाँ-जहाँ भी दृष्टि जाती थी मुझे लोग खुश और हँसते ही दिखाई देने थे।

फिर भी निस्तब्ध मातावरण छाया हुआ था—यहाँ तक कि मंदिर की छतों पर से कौबों की काँव-काँव भी मुनाई दे रही थी। उन दिनों कौबे और गिड धोबीज से इतने हिल गए थे कि वहाँ से लौटकर पहाड़ों को जाने ही न थे।

फराऊन ने अपनी कुर्सी के पीछे मुख पर रंगपुने हुए हथियों को लाकर गलती की। केवल उन्हें देखकर ही लोगों में क्रोध फूट निकला क्योंकि ऐसे बहुत थे जिन्होंने उनके हाथों इन दिनों चोट खाई थी।

लेकिन फराऊन ऐलनटोन लोगों के सिरों से भी बहुत ऊपर दिखाई दे रहा था—उसके सिरपर दोनों साम्राज्यों का ताज था—उसकी बांहें उसके सीने पर बंधी थी और हाथों में राजदंड और चावुक इत्यादि थे। वह मूर्तिवत बिना हिले-डुले बैठा था—ठीक उसी प्रकार जैसे हर समय के फराऊन लोगों के सामने बैठने आये थे—और जब वह आया तो भयानक

छा गया जैसे उसे केवल देखकर ही लोग घुंमे हो गए हों। मार्ग-... लोगों ने भाते उठकर उसका जय-जयकार किया और लोगों ने

राजसी कुर्सी के सामने फूल फेंककर जय बोलना शुरू कर दिया। लेकिन तभी भीड़ में उस जय-जयकार को चुप कराने के लिए आवाजें उठने लगी और उनके सामने वह जयकार नगाड़े के सामने तूती जैसा प्रतीत होने लगा। लोग आश्चर्य से गबरकर एक-दूसरे को देखने लगे और तब तमाम रीति-रिवाजों के विरुद्ध पराऊन हिला और उसने अपना राजदंड और कोडा उठाकर लोगों का अभिवादन किया—भीड़ पीछे हट गई और हटानु उनमें से कई बखरकठ समवेत गर्जन कर उठे—जैसे महासमुद्र में भी लहरें भीषण चट्टानों से टकराकर रोर कर उठी हों।

“अम्मन ! अम्मन ! हमे अम्मन वापस दे दो सारे देवताओं का राजा अम्मन !”

और अम्मन का जयनाद गूँजने लगा था। प्रत्येक जयनाद पहले से भयंकर होने लगा जिन्हे सुनकर पील-कौंचे उड़-उड़कर पराऊन के ऊपर बखर लगाने लगे और लोग बिस्ताये :

“नरसी पराऊन ! वापस आओ—आओ !”

अग-रक्षक डर गए। कुर्सी जहाँ थी बड़ी एक गई और साथ के सैनिक और उसके साथ बखरकर इधर-उधर हो गए परन्तु मेड़ों वाले उस राजपथ पर लोग ऐसे दूट पड़े कि उनका प्रवाह रोके न रहा और तब वह हामन हो गई कि जो कुछ हुआ उसका टीक-टीक पता नहीं था तथा सिवाही लोग भीड़ को रोक रहे थे पर भीड़ ही वह उनसे अपनी आत्मारक्षार्थ लड़ने लगे। हवा में भाले चले, लकड़ियाँ जसीं और पत्थर उड़ते दिखाई देने लगे और राजपथ पर रक्त बहने लग गया। मुमुक्षु रोर हो रहा था—मारो ! मारो ! वह हली ! वह ! जाने न पाये ! एटीन का नाम हो ! इत्यादि से बानावरण गूँज उठा।

परन्तु पराऊन के ऊपर किसी का हाथ नहीं उठा। वह मूर्ख का पुत्र था—तमाम पराऊनों की भाँति—उसका शरीर खिंच था—पूरी भीड़ में एक भी आदमी ऐसा नहीं था जो उस पर हाथ उठाने की शमना समता। उस पर स्वयं से भी हाथ तो हाथ, आँख भी नहीं उठाई या लपकी थी—मेरा विचार है कि पुत्रापी लोग भी ऐसा करने की कोश नहीं करने थे। पराऊन के मर निर्धन होकर देना, फिर वह अपनी शान भूलकर उठ करा

धा के गो मे उत्साही मिमणी ओ सब करगऊन गुनगुनौन के नये देवता के कारण बहाई गई थी; परन्तु करगऊन जैसे उगमे अनभिज्ञ था—वह अपने बंध में नयं चटार्ई पर सेटा हुआ था—जहाँ अनुचर उसके शरीर में मुगधित सेन मज रहे थे और मुगध भी जना रहे थे कि वह वहीं अपने देवता की मुगध न मूष से ।

दस दिन सैरने के बाद नदीफिर शुद्ध हो गई और नव करगऊन जहाज की बमान मे आकर खड़ा हो गया । तट की भूमि उस धीप्प ऋतु में पीली दिखाई दे रही थी और किसान लोग अपनी फसलों को इकट्ठी कर रहे थे । शायो को वह अपनी मवेशियों को नदी में लाकर पानी पिलाने और दुनाली घाँसुरियाँ आनन्द से उजाले ।

जब लोगों ने करगऊन का पोंन देखा ओ वह इतने बरब धारण करके नदी तट पर आकर खजूर की टहनियाँ हिलाकर बिल्ला-बिल्लाकर उनका अभियादन करने लगे । करगऊन की घागा से कभी-कभी जहाज किनारे लगा दिया जाता और तब वह अपनी प्रजा से बातें करने, उन्हें छूने और उनकी स्त्रियों और बच्चों को आशीर्वाद देने नीचे उतर जाता, भेड़ें भी शर्मीली बनकर आती और उसके वस्त्रों को अपनी नाक लगाकर सिर हिलाने लगती—और उन्हे देखकर वह बहुत खुश होता ।

रात्रि के अवसान में वह पोत की बमान मे सड़ा होकर चमकने हुए सितारों को धूरकर देखा करता । उसने मुससे कहा :

“नकली देवता की भूमि में इन सब गरीबों को बाँट दूँगा —” फिर एक बार कहा :

“मनुष्य का हृदय अंधेरी रात जैसा कासा है — धीबीज अंधेरी रात के समान है—एटीन का साम्राज्य उज्ज्वल है अतएव मैं धीबीज में नहीं रह सकता—सितारों से मुझे भय लगता है क्योंकि जब वह टिम-टिमाने हैं तो गीदड़ चिल्लाने लगते हैं—खेर अपनी माँद ॥ निकलकर रक्त पिपासा में दहाड़ने लगता है—मुझे पुरानापन कुछ भी अच्छा नहीं लगता । क्योंकि वह सब रात के समान है । अच्छे कितने अच्छे होने हैं सित्यूदे ! वही नये ससार—एटीन के संसार के सन्ने प्राणी हैं—वही आगे ————— के संसार को भर देंगे—संसार बदल

जायेगा—मैं पाठशाळाएँ हर जगह खुलवाऊँगा जहाँ पाठ्यक्रम बदल दूँगा—लिखना भी आसान बना दूँगा कि गाँव में लोग लिख सकें—पढ़ सकें—कि जब मैं उन्हें पढ़ाई का संदेश लिखकर भेजूँ तो वह स्वयं उन्हें पढ़ लें आह ! तब कितना आनंद होगा ।”

फराउन की बातों ने मुझे चक्कर में डाल दिया । इस नई लिपि के बारे में जिसकी ओर उसका संकेत था, मैं जानता था कि वह आसान थी परन्तु वह पवित्र नहीं मानी जाती थी और न प्रचलित लिपि के समान सुन्दर ही थी । मैंने कहा :

“नई लिपि सुन्दर नहीं है और न पवित्र है—और यदि सभी लिखना-पढ़ना सीख जायेंगे तो मिस्र का क्या भविष्य होगा ? ऐसा कभी नहीं हुआ है—फिर भला मेहनत कौन करना चाहेगा ? खेत सूने पड़े रह जायेंगे—और फिर जब लोग भूखे मरने लगेंगे तो लिखने-पढ़ने का आनंद कौन भोगेगा ?”

मुझे शायद यह सब नहीं बहना चाहिये था क्योंकि मुन्ते ही वह मुँह निकोड़कर मुझे से बोला :

“तो अधिकार मेरे इतने पास मौजूद है ! सिम्पूहे ! वह तुममें साक्षात्कार होकर बोल रहा है—तुम मेरे पवित्र मार्ग में शक के रोगों अटका रहे हो—परन्तु ध्यान रखो कि सत्य मेरे अंदर उज्ज्वल अग्नि की भाँति जलता है । मेरी आँखें अड़चनो के पार ऐसे देख सेती हैं जैसे वह अड़चनें सब पवित्र जल की हो और जो दुनिया मेरे बाद आयेगी उसे मैं साफ देल रहा हूँ—उस दुनिया में न घृणा है न भय है—लोग सब मिलकर मेहनत करने हैं और वहाँ न अमीर हैं न गरीब हैं—सभी बराबर हैं—सभी लिख-पढ़ सकते हैं और जो कुछ मैं उन्हें लिख कर भेजता हूँ उसे वह पढ़ सकते हैं—बोर्ड विली से ‘गदे सीरियल’ था । ‘घृणित हज्जी’ नहीं कहता—सभी भाई-भाई ॥ और मसार से मुँह समाप्त हो गया है—इस सबकी दम कर मेरी शक्ति बढ़ जाती है और मुझे इतना विश्वास आत्मनोप होने लगता है कि मेरा हृदय फूट उठता है और ऐसा लगने लगता है कि यह मुँहों से फट जाएगा ।”

मैंने उसे औपछि पिलाकर मुना दिया । मैं उसके पायलपन के बारे

में सोच रहा था और तब मुझे लगा कि उसके पागलपन में भी कितना सार था—कैसी थी उसकी वह बातें जो हृदय में झंक की तरह सग जाती थी—कितनी सचाई थी उसके संदेश में! मेरा विचार है कि उसका वह सत्य बाकी तमाम सत्यो से ऊँचा था। हालाँकि उसी सत्य के पीछे पृथ्वी रक्त-रजित हो रही थी, मैं सोचता हूँ कि ऐसा भी संसार वहीं हो सकता था जैसा एस्तेनटोन चाहता था—कहते थे कि मृत्यु के उपरांत पश्चिमी देश में ऐसा ही साम्राज्य मिलता था जहाँ होकर आत्मा को जाना पड़ता था—पर कौन जाने, क्योंकि मृत्यु के बाद का हाल बिताने देना था। शायद वह झूठी ही हो। मैंने आकाश में चमकमाते तारे देखे और मुझे अनुभव होने लगा कि मैं एकाकी था—और तभी मुझे लगा कि फराऊन एस्तेनटोन महान् था—शायद वह संसार को बदलने के लिए ही पैदा हुआ था—क्योंकि जो कभी नहीं हुआ उसे बढ़ कर दिखाना चाहता था—वह ममर्ष था, कर भी मचना था—फिर क्यों न मैं उसके साथ रहूँ और उसे महारा हूँ—उसका साहस बड़ाई? मिला ही तो गगार का मकम बड़ा देना है फिर क्यों न बड़ी मक्कतो सत्य का मार्ग प्रदर्शित करे? और मुझे लगा शास्त्र के नाम में जानू रीति-रिवाज टूट गए हैं—नई दुनिया का प्रकाश फैल रहा है।

पंद्रहवें दिन फराऊन की आज्ञा से पोन रोडा गया। बड़ी लट पर की भूमि न देवता की थी न किसी मनुष्य की। दूर तक बढ़ भूमि सुवर्णमयी बनकर सूर्य के प्रकाश में चमक रही थी—उसकी पृष्ठ-भूमि में भीनी पहाड़ियाँ पट्टेदार बनी खड़ी थीं। फराऊन ने वह भूमि एरीन को समर्पित कर दी। उसकी आज्ञा से बड़ी लट नगर स्थापित किया जाने लगा।—उसका नाम रखा गया—एस्तेनटोन स्वर्गों का नगर। यहाँ भूमि बूँदी हुई नहीं थी—वेकत कुछ बरसाहे बेंब की टट्टियाँ बाँधकर बसा करने में।

जहाँ पर जहाँ जाने लगे। बारीगर और कपाबार, और बार्ड और भुहार—सभी इकट्ठे होने लगे, और फराऊन स्वयं उन्हें नये नगर बनाने का नक्का मिलावाने लगा।—बड़ी उसका सुवर्णमय बनना था—बड़ी एरीन का महिर बनना था और सोनों के घर बनने में। बाबादे, और उनकी वह कच्ची झोँड़ियाँ उखार दी गईं, फराऊन

ने उन्हें आज्ञा दी कि वह महानगर के बाहर अपने कच्चे मकान बना लें।

उत्तर से दक्षिण की ओर और पूर्व से पश्चिम की ओर पाँच-पाँच सड़कें बनाई गईं और उनके दोनों ओर प्रायः एक से मकान बनाये गए—और नगर बनने लगा—बसने लगा—रात-दिन हथौड़े चलने रहे—परपर लगता गया, इंटें पकती गईं और मकान खड़े होते गए।

आठे आधे पर फराऊन बीबीज नहीं सोटा। उसका नगर बन रहा था, बस रहा था—और अब लगे पर लगे खुदते, परपर पर परपर रस्ता जाता वह खुशी से नाचने लग जाता। उसने अम्मन से प्राप्त तमाम धन इन नगर को बनवाने में खर्च कर दिया और उसकी मारी भूमि अम्मन निर्धनों को बाँट दी।

अब बाढ़ उनकी तो हीरेमहेब दरबार के अन्य लोगों सहित जहाज से उतरा—और एलर्टोन आया—वह फराऊन को समझाने आया था कि वह सेना को छुट्टी देने का अपना विचार बदल डाले।

परन्तु फराऊन अपने इरादे पर अड़ा रहा और दोनों की निरपेक्ष बहसों का कुछ भी नतीजा नहीं निकल रहा था।

हीरेमहेब ने कहा: “सीरिया में बगरी हलचल मची हुई है और वहाँ मिस्र के लोगों के लिये प्राण-भय उत्पन्न हो गया है। राजा अजीक मिथियों के प्रति भूणाका जोरो से प्रचार कर रहा है—इसमें अब तनिक भी संदेह नहीं है कि वहाँ बमबा हो जायेगा।”

और फराऊन एलर्टोन ने उत्तर दिया :

“मुझे मेरे महल का पता नहीं देना जिसमें कारीगर बांस की झारियों के बीच बस में तैरती हुई चलते-चलते कीट की चला के अनुसार, जमी प्रणाली में बिजुल कर रहे हैं ?—रह गई सीरिया में बसने की बात—मेरे विचार से वह असंभव है, क्योंकि वहाँ ॥ राजाओं के पाग में ‘जीवत-मृत’ भेद चुका है। राजा अजीक तो मेरा नाम रोम है जिसने मेरा ‘जीवन पत्र’ गलतमान सहज करने के उपरांत अम्मन की भूमि पर एटोन का मंदिर भी बनवाया है—जिसने निरबद्ध ही वहाँ मेरे मातृ के अतिरिक्त एटोन के मंदिर का विनाश संभव तो देना ही होता—वह सबकुछ देखने योग्य ही है हालाँकि उनके राज सड़ इंटों के ही बने है—

समय बचाया गया है—इसके अतिरिक्त मानो से दासों को कड़ी मेहनत करके पत्थर लाने पड़ते और वह दृश्य मुझे नहीं सुहाता—नहीं—नहीं—और हाँ अबीर—उस पर तुम्हारा शक करना व्यर्थ है। उसके पास से मेरे पास अगणित मिट्टी की तख्तियाँ आर्द्र है अपने व ऐटोन के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत ही इच्छुक है। अगर तुम चाहो तो मेरे किताब-खाने के लोग तुम्हें वह सब तख्तियाँ दिखा सकते हैं पर पहले किताब-खाना जरा ठीक हो जाय—अभी वह इमारत बनकर पूरी नहीं हुई है—”

होरेमहेब ने उत्तर दिया : “मैं उसकी मिट्टी के तख्तियों पर धूकता हूँ—जैसा झूठा वह स्वयं है वैसी ही वह तख्तियाँ हैं—लेकिन यदि मेना को छुट्टी दे देने का तुम्हारा विचार दृढ़ हो गया है तो कम से कम मुझे सीमा प्रवेशों में तो सेना को मुद्रुड कर लेने दो—क्योंकि अभी दक्षिण से कबीलों ने कुश की भूमि में और सीरिया में अपने मवेशी चराने के लिये हाँक दिये हैं—हमारे कासे मित्रों के गाँवों को वह जला रहे हैं क्योंकि वह फूम के बने हैं जो आग को झट पकड़ लेते हैं—”

“वह सब किसी शत्रुता से वह लोग नहीं करते।” फ़राऊन बोला :

“वह लोग बेहद मरीव हैं—हमारे मित्रों को दक्षिणी कबीलों के लोगों के मवेशियों को भी चराने देना चाहिये—हज़ क्या है ? और फिर कुछ गाँवों की खातिर पूरे-के-पूरे कबीलों से हमें घुषा भी नहीं करनी चाहिये—पर यदि तुम सीमा की रक्षा करने जाना चाहते हो तो वहाँ सैनिक भेजकर रख सकते हो क्योंकि राज्य की सुरक्षा का उत्तरदायित्व तुम्हारे ऊपर है—पर ध्यान रखना कि वह केवल रक्षा करें—हमलावर सैनिक न भेज जायें।”

होरेमहेब ने सिर पीट लिया। पर फ़राऊन कहता गया :

“तुमने पहले भी मेरा कहना नहीं माना था—यदि लोगों को तुम शुरू से ही ऐटोन का सदेश सुनाते तो आज ऐसे दिन देखने को न मिलते, —और हाँ, तुमने देखा कि मेरी दोनों पुत्रियाँ अब चल लेती हैं ? बड़ी से बड़ी से कितना प्यार करती है और उनके नाम एक छोटा-सा प्यारा-सा हिरन का बच्चा भी है जिससे वह मेला करती है—और वह गर्द

सुरक्षा की बात—सो तुम इन्हीं वर्खास्ति हुए लोगों को फिर रख सकते हो—और यह रख तो सब झगड़े और फिसाद की जड़ है—इन्को तोड़ देना चाहिये क्योंकि शक में शक पैदा होता है—हमें अपने पड़ोसियों में शक पैदा नहीं करना चाहिए।”

“इससे बेहतर होगा कि अपने रथों को अजीरू या हितंती लोगों को बेच डालो।” भ्यग्य और घृणा से हीरेमहेव बोला. “वह तो मुवर्ग देगे सबसे में और उससे तुम यहाँ इन्टे अधिकाधिक पकवा सकोगे।”

और रोज़ उनका झण्डा चलता रहा। फराऊन ने हीरेमहेव से कहा : “सीमाओं पर चाहे जितने सुरक्षादल रखो पर मेरे विचार से सबको सक्की के भालो से सज्जिन करो।”

हीरेमहेव ने मैम्फिस में तमाम जिलों के शासकों को इकट्ठे होने की आज्ञा दी क्योंकि वह देश के मध्य में था, ऊपरी और निचली सल्तनतों की सीमा पर। और जब वह अराज में बढ़कर आने ही वाला था कि दून आये और काफी खतरे के समाचार आये। सीरिया से बहुत से पत्र और मिट्टी की तथितियाँ भेजी हुई आई थी। उसकी सेना बढ़ाने की आज्ञा फिर बमक उठी क्योंकि अब उसे मान्य हुआ कि पीबीज के समझो ■ बारे में समाचार सुनकर अजीरू ने अपने राज्य की सीमा आये बढ़ा ली थी। सीरिया के मुख्य वेन्द्र मैगिडो में बसने हो गए थे और वहाँ के जिले में स्थित मिस्सी फौजों को अजीरू के लोगों ने घेर लिया था। मिस्त्रियों ने फराऊन से प्रार्थना की थी कि शीघ्र मदद पहुँचाई जाय अन्यथा जीवित रहना दुर्लभ था।

पर फराऊन ने जब यह सुना तो बोला—

“अजीरू गुस्मिल आदमी है। शायद उसने ठीक ही बिचा है क्योंकि मेरे दूनो में ही कुछ गड़बड़ी की मान्य होती है। जो कुछ भी हो उससे उसकी हारतों के बारे में पूछे बिना मैं उसके विच्छ कुछ नहीं करना चाहता। एक चीज मैं जरूर बरसकता हूँ, यह जरूर मुझे पहिले ही बर देना चाहिए था, अब जबकि एटोन का नगर काली भूमि में लडा हो रहा है सो मुझे ऐसा ही एक साल भूमि में बनवा देना चाहिए। सीरिया में, बुन में, मैगिडो बारवानों के मिलने का अड्डा है, ठीक है बही सबने उत्तम

रहेगा। परन्तु अभी तो मुझे शक है क्योंकि तुम कहते हो वहाँ हलचल है।”

और वह साँसने लगा। फिर कहने लगा :

“लेकिन तुमने मुझसे कहा था कि एटोन का मन्दिर जैरुसलम में बना है। हमने देखा था न जब तुम सबीरियों से युद्ध करने गए थे? ओह! उस युद्ध के लिए तो मैं कभी अपने-आपको क्षमा नहीं कर सकता। सैर, पर मैगिह्को के मुकाबले में जैरुसलम सीरिया के बीच में तो नहीं है, क्योंकि वह जरा और दक्षिण में है, फिर भी अब मैं क्या रखूँगा कि वह नगर भविष्य में एटोन का नगर बन जाय। इस समय वह केवल गाँव है। पर अब वह सीरिया का मुख्य केन्द्र बन आयेगा।”

और वह नेत्र झुँदकर एटोन के उस भविष्य में बनावे जाने वाले नगर की कल्पना में लो गया।

होरमहेब ने वह सब सुना तो उसका धैर्य जाता रहा और उमने अपनी बाहुक तोड़कर फराऊन के कदमों के पास फेंक दी। वह कुछ होकर अपने जहाज पर आया गया। वहाँ से वह मैगिहस आया गया जहाँ आकर उसने सारे देश की सेना का समूहन प्रारम्भ कर दिया। एल एटोन आकर उनको साथ ही हुआ क्योंकि मैंने उसे इगमीनाल में बेदीजीन, मिगमी और हानी देश में जो कुछ मैंने देखा था सब बगलाया, वह चुपचाप मुनगा रहा और मेरे उस बाजू पर हाथ फेरता रहा जो मुझे हानी देश में बहाड़ी कप्तान में भेंट में दिया था। उसने मुझसे पूछकर बहरी की मड़ियों, गुर्गों और बर्गों के मुख्य लोगों के नाम बिगवा निवे। मैंने उसे मवाह दी कि विदेश परिषद यदि वह उन देशों के बारे में सुनना चाहता था तो बल्गाह से मिले, क्योंकि कई जगहों में उसकी स्मृति मुझमें अभी भी।

होरमहेब एल एटोन से एक मया ला अन्त्यम खुद था और फराऊन ने उसके जाने जाने की लूनी मलाई। मुझमें वह मुश्किलता हुआ बोला—

“फराऊन एटोन की बड़ी इच्छा है कि हम मैगिहस को जो बंदी और यदि ऐसा होता हो है तो भना है बोन होना हूँ जो विश्व के उग्रतम भविष्य में ऐसा बल्गाह? मैंने सीरिया के इन में विश्व का कहेगा ला निरा।

। बर्गों सुगमय। उसी देश के बड़ी बर्ग है। मैगिहस हमारे हाथ में

नकल जाय तो शायद हमारा रहन-सहन भी सीधा-सादा हो जाय ।
सच्चा और पवित्र । ”

मेरा हृदय उसकी बातों से विद्रोह कर रहा था मैंने कहा :

“परन्तु सीरिया मे इस समय सारे बच्चों और स्त्रियों पर अत्या-
चार हो रहे हैं । स्मर्ता मे मिस्री किलेदार का एक लडका है, उसका नाम
रैमिसोस है । वह भूरी-भूरी आँखों वाला बड़ा प्यारा बच्चा है । मैगिड्डो
मे एक सुन्दरी मिस्री महिला रहती है जिसका मैंने इलाज किया था । वह
गर्भवती थी । ”

“वह सब मुझसे क्या कह रहे हो ? ” फराऊन ने ऊँचकर बीच मे ही
टोका, मैंने कहा :

“और सीरियन लोगों ने रैमिसोस को काटकर फेंक दिया हो और
उस स्निग्ध तबचा बाभी हनी के साथ बलात्कार करके उसे काट डाला हो
तो ? ” मेरा स्वर आवेश के साथ कुछ ऊँचा हो गया था ।

सुनकर फराऊन की मुद्रिष्ठ्याँ बघ गई और वह नेत्र अघपुँदे करके
बोला : “सिन्धूहे ! जानते हो कि यदि जीवन और मृत्यु मे से एक को चुनना
ही पड़े तो मैं सी मिस्रियों की जान के बदले हजार सीरियनों की जान
देना कभी पसन्द नहीं करूँगा ? क्योंकि यदि मैंने सीरिया मे कुछ किया
तो जाने कितने मिस्री और सीरियन दोनों ही मारे जायेंगे, यदि मैं बुराई
को बुराई से ही मारूँगा तो नतीजा और भी बयानक होया और यदि
बुराई का सामना अच्छाई से करूँगा तो शायद नतीजा इतना बुरा न
निकले । मैं किसी भी हासल में जीवन से मृत्यु को अच्छा नहीं समझता
और इसलिये तुम्हारी बातें सुनने मे असमर्थ हूँ । एटोन के नाम पर और
सत्य के नाम पर मुझे शांति से रहने दो क्योंकि मैं मरने वालों की भीत्सार
मेरतर नहीं सुन सकता । नहीं ! ”

और वह सिर झुकाकर सोचने लग गया । वह आवेश मे बरिप रहा
था, उसके नेत्र लाल हो उठे थे । मैंने देखा कि वह कैसा पागल था, परन्तु
फेर भी मैगिड्डो मे शत्रु के अत्याचारों को मैं भूल गया क्योंकि मैं उस
पागल को प्यार करने लगा था । वह कितना बड़ा सत्य कह रहा था । मुझे
नेश्चय हो गया कि यदि वह अधिक दिनों तक जीवित रहा तो अपना ही

राज्य छोड़ देगा। फिर भी उसका पागलपन बुढ़मानों की बुद्धि में ज्यादा अच्छा और मुन्दर प्रतीत हो रहा था।

नये नगर के बसाये जाने में राज घराने में दरार पड़ गई। राजमाता तामा ने अपने पुत्र के साथ उस रेगिस्तान में जाना मजूर नहीं किया। धीवीज उसका अपना नगर था जहाँ उसके पति फ़राऊन ने मूर्ख-गृह बनाया था। तामा ने निचने साम्राज्य में बैठ के जंगलों में अपना जीवन प्रारम्भ किया था। तब वह दसस्र बेचने वाली लड़की थी। वहाँ से उसके पति एमनहोटप ने उसे लाकर धीवीज में साम्राज्ञी बना दिया था। वह धीवीज छोड़कर वही नहीं जा सकती थी। राजकुमारी बीकेटेमौन ने भी उसी के साथ रहना मंजूर किया था। पुजारी 'आई' फ़राऊन के स्थान पर धीवीज में न्याय देने लगा। वह चमड़े में लिपटी हुई पुस्तकों को सामने रखकर फ़राऊन के सिंहासन पर बैठकर वहाँ शासन करता। धीवीज में सब कुछ पूर्ववत् था। बैबल नक्ली फ़राऊन नहीं था और न उसके होने का किसी को अफसोस ही था।

साम्राज्ञी नेफ़रतीती अपना तीसरा जापा कराने धीवीज आ गई थी क्योंकि धीवीज के वैद्यों और जादूगरनियों के बिना वह जापा कैसे कर सकती थी ?

उसने तीसरी पुत्री को जन्म दे दिया था। जो आगे चलकर रानी बनने वाली थी। जापा आसानी से कराने के लिए हम्मिन जादूगरनियों ने बच्ची का सिर पतला और लम्बा कर दिया था जैसाकि पहली दोनों लड़कियों का किया था। आगे चलकर जब राजकुमारियाँ बड़ी हुईं तो उनकी देला-देखी घरघार की स्त्रियाँ भी अपने सिरों के पीछे नक्ली सिर बांधतीं कि उनके सिर भी वैसे ही फूसे दिखाई दें पर राजकुमारियाँ अपने सिरों पर नित्य उस्तरा फिरवाकर अपनी लोपड़ियों का सौंदर्य प्रदर्शित किया करतीं और कसाकार उनकी प्रशंसा करने और अपने चित्रों में भी वैसे ही सिर के उभार बनाया करते थे।

और जब साम्राज्ञी नेफ़रतीती एलर्टेटोन लौटी तो लोगो ने देला कि

वह सौंदर्य में और अधिक निखर आई थी। कराऊन सिवाय उसके किसी और अपनी स्त्री के साथ रहना पसन्द नहीं करता था।

एश्टेटोन एक ही वर्ष में जंगल से महानगर बन गया। वहाँ बाजारों में सजुर के पेड़ दोनों ओर ज्ञान से सहराने लगे थे। सपूर्ण नगर एक उद्यान के सदृश्य था। वहाँ स्थान-स्थान पर पुष्प सिले रहने और फलों के पेड़ फूला करते थे। सुन्दर मकान, मनोहर चित्र और स्वच्छ जल से भरे कुण्ड वहाँ अगणित थे और बागों में पालतू हिरन घूमा करते थे। रगविरंगे फूल और रग-विरंगी मछलियों की वहाँ कमी नहीं थी। राजमागों पर हल्के रंगों की दीर्घकाय उबड़स्त छोड़े जिनके सिरों पर शतुर्मुख के पर लगे रहने, जब टेढ़ी गर्दन किये खींचते तो मानो नगर की महिमा स्वयं बोलने लग जाती थी और रसोदयो की नाना प्रकार की सामग्रियों से आगन्तुकों की भूख ■ जाती थी, वहाँ सारी दुनिया से मसाले लाये जाते थे।

और जब झाड़ा सौटा तो इस नगर को कराऊन ने एटीन को समर्पित कर दिया। जब वह अपने सुवर्ण रथ में बैठकर पक्के राजपथों पर से होकर उस उत्सव में निकला तो उसके मार्ग में फूल बिछा दिए गए और तारों के बाधों पर एटीन की स्तुति गाई गई।

कराऊन ने निश्चय किया कि मृत्यु के उपरान्त भी वह उस नगर को नहीं छोड़ेगा। जब नगर बन गया तो उसकी आज्ञा से पूर्वी पहाड़ियों के पास कक्षों का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया। कारीगरों व राजों के पास इतना काम था कि कि वह जीवन-भर वही रहकर उसे किया करते। और उन्होंने घर सौटकर ■ जाने का ही निश्चय किया क्योंकि वहाँ कराऊन की छाया में उन्हें सुख था—उनके पास धान्य और तैल की कमी नहीं थी—वह उन्हें मर-भरकर मिलता था और वहाँ उनकी स्त्रियाँ सुखी थी जो उन्हें दृष्ट-गुप्त संतानें देती थी।

बाद में कराऊन ने एश्टेटोन में मृतकों के शरीरों में मसाले लगाने का भी प्रबंध किया—और मृतक-गृह बनाया गया और इस सम्बन्ध में धीरे-धीरे से मृतक-गृह के विशेषज्ञ बसाये गए। कराऊन ने मुझे उस विभाग का अधिकारी बनाया। जब मृतक-गृह के साथ छोनेवाले जहाज ■ उतरे तो उनकी अन्धकार की प्रकृतिस्य आँखें वहाँ की चमकौंध में मंद गईं।

वह भी शीघ्र ही अपनी दुर्गन्ध सहित नये मृतकगृह में घुस गए—और उनमें मेने देखा कि मेरा पुराना मित्र रैमोज भी था—वह जिसका नाम नाक के रास्ते चिमटियों से भेजा बाहर निकाल लेना था। मैंने जब उससे मित्र कहा तो वह मुझे घूरने लगा फिर शीघ्र ही पहचान गया। मुझमें उससे नेफर नेफर नेफर के बारे में पूछने की उत्कंठा जाग्रत हो उठी। मैं अपने लिये हुए बदले के बारे में जानना चाहता था। और उसी ने मुझे बतलाया कि किस प्रकार उस बुरी स्त्री ने होश में आने पर उन सबको आपस में लड़ाया—उसके एक कटाक्ष पर साश धोने वाले एक-दूसरे को मारने को तुल जाते थे। उसको जब वह सब अपना खोरी किया हुआ सम्पूर्ण घन दे चुके तो भी उसकी पिपासा कम न हुई और तब उसके स्वर्ग की स्थानिह सोग घावस में एक-दूसरे की खोरी करने लग गए। बहूने तीस दिन तीस रातें वहाँ रही थी और निर्लज्ज होकर उनके बीच मल होकर रही थी—परन्तु उसने जब जाने की टानी तो कोई उसे नहीं रोक सबा था क्योंकि यदि एक उसे रोचता तो दूसरा भाकू लेकर उनके पक्ष में तैयार हो जाता था—जब वह गई तो तीन सौ दबन सोना—न जाने कितनी चाँदी और ताँबा, कपड़े, मसाने इत्यादि से गई थी और जाने-जाने वह गई थी कि अगले साल वह फिर आवेगी, यह देखने कि हमने इन बीच फिर खोरी से कितना घन इकट्ठा किया है। और तब मे मृतकगृह में खोरिया बढ़ गई थी।

रैमोज ने मुझे धन में बतलाया कि उन्होंने उसका नाम 'मैट-जेकर' रखा था क्योंकि वह मुन्दरी तो थी पर उसका सौन्दर्य मैट है ही समान प्रत्यक्ष ही था—

और तब मैंने जाना कि बदले में आत्मा मूल्य नहीं होती थी—उमरा अमर शक्ति होता है और अक्सर बर्तों के ही विपरीत उमरा अमर हो जाता है। वह उसी के हृदय को आग की भाँति जलना करता है। मैं स्व-मूच नेकर नेकर नेकर का कुछ भी न बिगाड़ सबा था हाँकि वह वह मृतकगृह में गई होगी तो निश्चय ही कई दिनों तक उसके शरीर में थी की दुर्गन्ध नहीं आ सकती होगी।

११

जलपट्टी में से जल बहते सभी ने देखा है ; और उसी भाँति जीवन भी बहता चला जाता है—बस यह पानी से नहीं नापा जाता बल्कि विशेष घटनाओं से विभूषित किया जाता है। मृदावस्था में पहुँचकर ही मनुष्य इस सत्य को पहचान पाता है जब उसे सभी कुछ बुरा मालूम होने लगता है—एक महत्वपूर्ण दिन कई वर्षों के मामूली जीवन से अधिक छाप मनुष्य के हृदय पर छोड़ता है—और यह सत्य मैंने नये महानगर एलर्टोन में रहकर सीखा जहाँ मेरा जीवन नील के जल के समान निर्वाध रूप से बहता रहा और मेरा जीवन मुझे स्वप्न की भाँति प्रतीत होने लगा था—दस साल मैंने क़राऊन एलर्टोन के मुक़र्र-गृह में बिता दिये—यह दस साल मेरे जीवन के सबसे छोटे साल थे जो हाथ भी न आए—एकदम फिसल गए।

एलर्टोन में मैंने अपने ज्ञान में कोई वृद्धि नहीं की—बल्कि जो कुछ विद्या मैंने देश-देशान्तरो में जाकर सीखी थी उसी के वन पर किया—जैसे मधुमक्खी नमियों में इकट्ठे किये हुए मधु को जहाँ में बैठकर खाती है—लेकिन जैसे बहता पानी पत्थर से कगारों को न जाने क्या काट जाता है—उसी भाँति आयु ने जायद मेरे हृदय में परिवर्तन कर दिया था—अब मैं पहले से अधिक शांत, और स्थिर चित्त का हो गया था—जायद इसलिए कि अब क़प्ताह मेरे पास नहीं रहता था— वह दूर पीपीड में 'मगर की वूछ' में मेरा व्यापार सँभाल रहा था—

और क़राऊन एलर्टोन के लिए एटोन के नगर की सीमाओं से बाहर होनेवाली समस्त दासों में जैसे कोई सम्बन्ध और शक्ति नहीं होती थी— वह सब उसके लिए वैसे ही निरर्थक थीं जैसे जल की छाती पर चमकती हुई चन्दा की चाँदनी।

पीपीड में दुबारी 'आई' क़राऊन का राजदंड लेकर दोनों साम्राज्यों पर शासन करता था—वह क़राऊन का समुर भी था और उन दिनों वास्तविक सम्राट् बना हुआ था। वह बुद्ध अवश्य था परन्तु महत्वाकांक्षी

था। अब जब अम्मन की शक्ति समाप्त की जा चुकी थी तो वह जानता था कि फराऊन का ही अधिकार सर्वोच्च था और इसीलिए वह उसे दूर-ही-दूर रखना चाहता था कि वह उसके शासन में आकर बाधा न डाल दे। जिस तरह भी होता वह घन समेटता और फराऊन के पास उसे भेजता रहता कि वह अपने नगर को बसाने, वहाँ नई-नई इमारतें बनाने और एदोन का प्रचार करने में व्यस्त रहे।

उसके शासन का सामोदार मैम्फिस में बैठा हुआ हौरेमहेब था जिसके ऊपर सम्पूर्ण देश की मुख्यवस्था का भार था—उसी की शक्ति से अम्मन का नाम कब्रों में से टाँकी से छील दिया गया था—फराऊन एसनडीन को तो अम्मन से इतनी ज्यादा चिढ़ थी कि उसने अपने पिता की कब्र खुदा-कर उसमें से भी उसका नाम (अम्मन का) उड़वा दिया था।

‘आई’ चाहता था कि फराऊन इसी प्रकार के कामों में लगा रहे और उसके बीच न बोले। राज्य में कर उसी भाँति वसूल किये जाने और यदि गरीब उन्हें न दे सकने के कारण पीटे जाते अथवा दास बनाकर बेच दिये जाते या सिर पर राख ढालकर रोने लगने तो यह सब विशेष नहीं माना जाता क्योंकि हमेशा से ऐसा ही होता आया था।

जब फराऊन की स्त्री नैफरतीतो ने चौथी बच्ची को जन्म दिया तो वह बात स्मर्ना की हार से भी अधिक दुर्भाग्यपूर्ण समझी गई—नैफरतीतो भागकर धीबीज पहुँचा कि अपनी माँ की साथ की हठिगन जादूगरनियों से इस मामले में सलाह करे कि कहीं वह किसी के जादू के कारण तो ऐसा नहीं था। परन्तु उसे तो फराऊन को दो और पुत्रियाँ देनी थीं और वह उसने जन्मी।

जैसे-जैसे समय ध्यनीत होता गया सीरिया में उपद्रव बढ़ने लगे। अब-अब जहाज भाँटे तो नई-नई मिट्टी की तल्लियाँ लाने और अब मैं उन्हें पढ़ता तो मुझे लगता मेरे सिर के ऊपर से तीर छूट रहे थे—नगर जल रहे थे—जिनका धुआँ मेरी नाक में घुसता हुआ-सा लगता—बच्चे और स्त्रियों के बुचबे हुए शरीर मेरे नेत्रों के सामने से घूम जाते। अम्मन के लोग हिय पनुओ की भाँति अत्याचार कर रहे थे। बेबीलोन और ईर-सलम के शासकों ने निश्चाय कि वह फराऊन के सदा के दाग में और

उससे उस अत्याचारसे पीड़ित होकर सहायता माँग रहे थे। फराऊन अन्त में उन्हें मुनने-मुनने ऊब गया था। अब उसने उन्हें मुनना भी बन्द कर दिया था—अब वह वैसे ही राजसी बितावरणानों में जमा कर दी जाती थी।

लेकिन जब जैरुसलम भी हाथ से चला गया और जोण्या ने भी राजा अजीरु से मित्रता कर ली तो होरेमहेब मैम्फिस से एलर्टेटोन आया। वह उससे सेना बढ़ाकर सीरिया में युद्ध करने की आज्ञा देने आया था।

उसने आकर फराऊन से कहा—

“मुझे दस हजार भाले वाले सैनिक और धनुर्धारी दे दो। सीरिया के दो—और मैं सीरिया को फिर तुम्हारे नीचे ला दूँगा—अब जबकि योद्धाओं ने हथियार डाल दिये हैं और अजीरु मनु से मिल गया है तो सीरिया में मिल की दक्षिण समाप्त हो समझनी चाहिए।”

फराऊन एलर्टेटोन को बड़ा दुःख हुआ जब उसने सुना कि जैरुसलम का ध्वंस कर दिया गया था क्योंकि सीरिया को शांति करने के लिये वहाँ एल्टोन का नगर बनाने का निश्चय कर लिया था बल्कि उन मघध में कुछ काम शुरू भी हो गया था। उसने कहा—

“जैरुसलम में वह बूड़—उसका नाम तो मुझे याद नहीं रहा—मेरे पिता का मित्र था। जब मैं छोटा था तो मैंने उसे भीबीर के स्वर्ण-मुह में देना भी था—उसकी लकी छेन दाढ़ी थी। मैं उसे मिर्गी बीज के जीवन-यापन के हेतु छन दूँगा हालाँकि मिल की आसदनी सीरिया के आधार रख जाने के कारण अब काफी घट गई है।”

“वह अब तुम्हारे धन को चोरने की हासल में नहीं रहा है। होरेमहेब के मुँह उत्तर दिया “उसकी सोचनी—
एक अलग मुँह और निष्कर्षी—
अजीरु की—
“तुम्हारे नाम से नाम भेंट

—वह हीने से बोला :

१. गमलना था ।—

२. अमरक बाई बंते बरा

मनते हो ? सोच बीसे ही क्यों से दबे जा रहे हैं—इधर कसलें भी अच्छी नहीं हुई हैं।”

“एटोन के नाम पर मुझे अधिकार दे दो कि मैं कम-से-कम दस रप और सौ भाले वाले ही एकत्रित कर सकूँ—मैं उन्हें लेकर सीरिया में जाऊँगा और जो कुछ बचपावेगा उसी को बचाऊँगा—” हीरेमट्रेब ने ध्वंग में उत्तर दिया।

परन्तु फ़राऊन ने कहा : “नहीं, मैं सीरिया से कुछ नहीं कर सकूँगा—एटोन को कुछ और रक्षागण से घुना है—सीरिया को स्वतंत्र हो जाने दो हीरेमट्रेब ! और तब मिस्र उससे पहले की भाँति व्यापार करके ही गनोब कर लेगा—मिस्र के छात्र बिना उमराव नाम बीसे कम सभना है ?”

“तुम्हारा विचार है कि वह वहीं तक रुक जावेगे फ़राऊन एमनी-टोन ?” बीबकर हीरेमट्रेबने कहा : “अपेक्ष मिरी की हृष्या से, अपेक्ष दीवान के दूटने से और अपेक्ष नगर की विजय से लघु का हीगना बढ़ना था जायेगा सीरिया के बाद मिनार्दी की खातों पर हमला होगा और तब हमें मामों और तीरों के लिये ताँबा कहीं से मिलेगा ?”

“मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि रसकों के लिये लकड़ी के भाले ही काफी हैं,” फ़राऊन ने बिड़क़र उत्तर दिया फिर क्यों बार-बार मेरे सामने भाषों और तीरों की बातें करने हो—जानने हो जब मैं एटोन की स्तुति में कविता बनाता हूँ तो यह सब बातें मुझे प्रेरणा करने लगती हैं और कविता नहीं बनाने देती ?”

परन्तु हीरेमट्रेब नहीं रुका—बहु बड़ना ही था : “और बीना हि तुम कहेंगे कि सीरिया का काम मिस्र के छात्र के बिना बीसे कम सो मुन भी कि वह उसे बेबीलोन में मँगा रहे हैं यदि तुम सीरिया से नहीं करने सो कम-से-कम द्वितीयों से तो बड़ी दिवरी शक्ति बढ़ाने की विपदा का कोई धन ही नहीं है।”

फ़राऊन मुनकर हुआ फिर बोला :

“जब मर की मुझे सन्द है हिमी शत्रु ने मिस्र की अर्थ पर हमला करने का प्रणय नहीं दिया है—मिस्र सभ्य का मरने का और घरी देना है फिर मैं कष्ट मुक्ति मुक्ति के लाल की तो जीवित मरक देना

बीमार पड़ गई। वह दिनों दिन दुबली होती गई और मुझे उसकी चिंता बढ़ने लगी। मैं उसे सुवर्ण मिथुन और्यधिया पिलाता और हर घड़ी उसकी सुधूपा में लगा रहता। स्वयं फराऊन उसकी बीमारी से परेशान हो गया था क्योंकि वह अपनी पुत्रियों से बहुत प्रेम करता था। मैं उसके इलाज में इतना लगे गया कि मुझे बीबीज में अपने व्यापार और बप्ताह की भी याद नहीं रही। मैं काफी थका हुआ और परेशान रहने लगा था यहाँ तक कि मेरा स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया था। मेरे मरीज अस्मर कहने लग गए थे, “राजघराने का बँध बनकर इसका हिमायत फिर गया है—।”

रातों को मुझे कभी बेबीनों के तो कभी स्मर्ता के स्वप्न आने और मैं घबरा जाता। वैसे मैं पहले से अब कुछ मोटा और भारी अवश्य हो गया था। मेरी साम भी जल्दी फल आती थी।

और जब जाड़े फिर आए तो फराऊन की पुत्री ठीक होने लगी—वह मुत्कराने लगी और उसकी छाती की पीड़ा अब नहीं रही—और तब फराऊन की आज्ञा लेकर मैं बीबीज के लिए चल दिया। जब मैं जहाज में चला तो फराऊन ने बहला भेजा कि मैं उसके बदले नदी तट के लोगों से मिलूँ जिनके बीच उसने नकली देवता अम्मन की घूमि बाँटी थी और उनकी कुशल-क्षेम पूछूँ।

मैं कई गाँवों के बड़े-बूढ़ों से मिला। यह यात्रा मेरी यात्रा से भी अधिक सुखकर निकली क्योंकि इस जहाज के मस्तूल पर फराऊन का झंडा उड़ रहा था—मेरी जिया नर्म थी और नदी में मक्खियाँ भी नहीं थी। लोग मेरे रसोद्वे को नित्य नई भेंटें लाकर देते और मेरे सामने ताजा भोजन हर समय तैयार रहता था। परन्तु जब किसान मेरे सामने आए तो मैंने देखा कि हड्डी के ढाँचे बने हुए थे। उनकी स्त्रियाँ दुबली और भयभीत लगती थीं—उनके बच्चे रोगग्रस्त थे। उन्होंने मुझे अपना अनाज लाकर दिखाया था—मैंने देखा वह साल धूरा-सा हो गया था—ऐसा जैसे रक्त में डूबो दिया गया हो। उन्होंने मुझसे कहा :

“पहले हम लोगों ने समझा कि हमारी असफलता हमारे अज्ञान के कारण थी क्योंकि हमने कभी खेती का काम नहीं किया था—परन्तु अब

हमें ज्ञान हो गया है कि जो भूमि हमें फराऊन ने दी थी वह शापग्र है और जो उसे जोतता है वह भी वैसा ही हो जाता है, रातों को अद्भुत पैर हमारी फसलों को कुचल जाते हैं और अद्भुत ही हाथ हमारे फलों पेड़ों को तोड़ जाते हैं। हमारे मवेशी अकारण ही मर जाते हैं। हमारा सिचाई की नहरें बंद हो जाती हैं और कुओं का जल जहरीला हो जाता है। बहुत से तो भूमि छोड़कर नगरों को लौट गए हैं—उनकी हाल अब पहले से भी नाजुक हो गई है—यह फराऊन और उनके नये देवता को गाली देते हैं। परन्तु हमने अभी साहस नहीं छोड़ा है क्योंकि हमारा पास फराऊन ने जीवन-पदक और पत्र भेजे हैं। हमने उन्हें 'बिजका' बतलाकर भेतों में टांग दिया है कि टीडी हमें नुकसान न पहुँचावे। लेकिन ऐसा लगता है कि अम्मन की शक्ति फराऊन की शक्ति से अधिक है—अतः तो हम लोग भी इस भूमि को छोड़कर बचने जाना चाहते हैं अन्यथा हमारी स्त्रियों और बच्चों के जीवन खतरे में पड़ जायेंगे—जैसे कि अब तब हुआ है और हो रहा है।”

मैं पाठशालाओं में भी गया। अध्यापकों ने मेरे बच्चों के ऊपर जहाँ एटीन का जीवन-पदक देखा तो उन्होंने अपने बेल छिपा दिये और अम्मन का चिह्न हवा में उगली फेर कर बनाया। बच्चे मुझे आलसी-पालसी बतलाते और मेरे देसने लगे कि अपनी माक पोछना भी भूल गए।

अध्यापकों ने कहा : “इससे ज्यादा मूर्खता और क्या हो सकती है कि सभी के बच्चे पड़ाए-मिलाए जाएँ ?—पर हम क्या करें ? फराऊन हमारा पिता है—वही माता है—फिर भला हम उसे मान्यता कैसे कर सकते हैं ? लेकिन हम पढ़े-लिखे लोग हैं और यहाँ गंदी भूमि पर बच्चों की माक पोछने हुए उन्हें पढ़ाना हमारी मर्यादा के विरुद्ध है—न यहाँ मिट्टी की तक्षिणियाँ हैं न बीस की कलम। इसके अतिरिक्त यह जो नयी लिपि है—इसे पढ़ाने के लिए तो हमने इतनी मेहनत करके लिखना-पढ़ना नहीं सीखा था ? हमारी तनख्वाहें हमें कागदों से हर मास नहीं मिलतीं और बच्चों के माँ-बाप भी हमें कुछ भेंट इत्यादि नहीं देते—और देते हैं भी तो थोड़ा-बहुत—फिर भी हम फराऊन को यह ज्ञान देने के लिए कि हर कोई नहीं पढ़ाया जा सकता—मने हुए है—करें भी क्या ?”

मैंने बच्चों की पढ़ाई की जाँच की—और उन्हें बहुत ही कमजोर पाया—अध्यापक लोग स्वयं विगड़े हुए और पहले के असफल लेखक लोग थे—और उन्होंने एटोन का 'जीवन-पदक' लेकर नौकरी प्राप्त की थी—यह स्वयं भी कुछ नहीं जानते थे।

गाँव के बड़े-बूढ़ों ने एटोन का नाम लेकर बड़ी कटुता से शपथ भी और कहा :

“मालिक सियूहे ! हमारी ओर से फराऊन ॥ प्रार्थना करना कि कम-से-कम इन पाठशालाओं का बोझ तो हमारे ऊपर से उठाते अथवा हमारा जीना दूधर हो जाएगा। हमारे बच्चे इतने पीटे जाते हैं कि जब घर आते हैं तो नीले पड़ जाते हैं—उनके आस मौच लिए जाते हैं—यह अध्यापक लोग मगर के समान सर्वभक्षी होते हैं—यह हमारे घरों को शाये जाते हैं—हमारी मवेशियों की मूसी खाओं तक को उठा ले जाते हैं और उन्हें बेचकर मदिरा मोल लेते हैं। हमारा आसिरी ताँबे का टुकड़ा भी यह हमसे छीन ले जाते हैं और जब हम लोग सेना पर होते हैं तो यह पीछे से हमारे घरों में घुसकर हमारी स्त्रियों से बलात्कार करने हैं—उनका कहना है कि यह सब एटोन की ही दृष्टि से होना है क्योंकि आदमी-आदमी और स्त्री-स्त्री में कोई अन्तर नहीं होगा—हम तो बाल्य में धरने जीवन में कोई तबदीली नहीं चाहते थे—मदर में हम गरीब अवश्य थे पर दुर्गा तो नहीं थे। उस समय भी लोगों ने हमसे कहा था—परिवर्तन से मावधान रहे ! क्योंकि हमसे गरीब और भी गरीब हो जाएंगे—सम्राट में अब भी परिवर्तन हुए हैं उससे मजबूत अधिक सदा में गरीब ही पिलने रहे हैं और निम्न हैं।”

मैंने देखा कि वह कितना बड़ा मायबूढ़ रहे थे—और मुझे लगा कि फराऊन के चारों ओर रहने वाले लोग जिनमें मैं भी एक था—दुर्ग के बासी में घुसने हुए कमीनों की भाँति थे—जो प्रजा के दुःख ॥ गर्वना अनभिज्ञ थे।

मेरा अड़ाह बढ़ता रहा—आखिरकार कीबीह की नींव पराईना दिगार्ई देने लगी। मैंने कीबीह की ऊँची-ऊँची इमारतें देखी और रीति के अनुसार और के अन्ध में मदिरा उँईष की।

ये देवता मर गये

जब मैं तैयार चलाने वाले के भकान पर पहुँचा, जो कि मेरा था मुझे बहुत ही छोटा लगा—और उसके सामने का महत्वा बड़ा लग रहा जिसमें मक्खियाँ भरी पड़ी थी और बढ़ूँ आ रही थी। जो साईकल का पेड़ मैंने स्वयं लगाया था, वह अब काफी बड़ा हो गया था पर मुझे देखकर भी कोई सतोष नहीं हुआ। फराऊन एसनंटौन के बँसब मेरे मैं इतना विचल गया था कि मैं अपने घर लौटकर भी सुख का भोग नहीं कर सका।

कप्ताह घर पर नहीं था, केवल मुर्ती बहाँ थी। उसने अपनी के अनुसार स्वागत तो मेरा किया परन्तु बड़बड़ाते हुए क्योंकि मैंने आने की सूचना पहले नहीं भेजी थी जिससे वह पहले से ही भका साक़ कर रहती और नये कपड़ों से उसे सजाकर रखती। वहाँ से मैं 'मगर की पूँछ' पहुँचा। द्वार पर मुझे मैरिट मिली जिसने मेरे राजसी और उस राजसी कुर्सी के कारण मुझे नहीं पहचाना। वह बोली :

"क्या तुमने आज घाम के लिए यहाँ पहले से ही कुर्मी भाई ली है ? अम्मा मैं तुम्हें अदर नहीं जाने दे सकती।" वह पहले से मोटी हो गई थी—और अब उसके गालों की हड्डियाँ उतनी उभर नहीं लगती थी।

मेरा दिल उसे देखकर लुग हो गया और मैंने उसकी ओर पलटकर कहा : "मैं समझता हूँ कि तुमने मुझे बिल्कुल ही भुना क्योंकि एकाकी भी तो इस बीच अनेकों मर्दा आये होंगे तिनकी अपनी चटाई पर अपने अंग से गर्म किया होगा ! फिर भी मैंने तो शायद तुम्हारे घर में स्थान मिल जाय और मैं एक प्याला ठही पी लूँ—तुम्हारी चटाई के बारे में तो मैं अब सोच ही कैसे सकता हूँ।"

वह आश्चर्य और लुपी से चिल्ला उठी :

"सिन्धूहे ! तुम हो ? शुभ है वह दिन जो मेरे मानिक प आये है।"

उसने अपने प्यारे-प्यारे हाथ मेरे बंधों पर रख दिये और "सिन्धूहे ! तुम्हें ही क्या गया है—अनेने रह-रहकर इतने भारी पए हो ?" उसने मेरे तिर से बत्त (बिज) उठाया और मेरे

पर हल्के से चपत लगाई फिर बोली : “बैठो न सिन्धूहे ! मैं तुम्हारे लिए ठंडी मदिरा लाती हूँ—तुम तो यात्रा से थक गए हो और हांक रहे हो !”

मैंने कहा : “पर किसी भी हालत में ‘मगर की पूंछ’ मत ले आना—क्योंकि अब मेरे पेट में वह शक्ति नहीं रही है कि उसे पचा सकूँ और मेरे सिर की तो पूछो ही मत ।”

मेरे घुटनों को छूकर वह बोली : “क्या मैं इतनी मोटी बूढ़ी और कुरूप हो गई हूँ कि बरसों के बाद मुझसे मिलने पर भी आज तुम अपने पेट के बारे में बातें करते हो ?”

मैं उसकी बातें सुनकर भ्रम गया क्योंकि उसने सब बात कही थी और सब बात हमेशा ठीक असर करती है । मैंने उत्तर दिया :

“ओह मैरिट ! मेरी मित्र !—मैं स्वयं बूढ़ हो गया हूँ और अब क्या बाकी रहा है मुझमें ?”

लेकिन उसने शोली से कहा : “तुम्हारा खयाल ऐसा है ? पर जब तुम्हारी आँखें मुझे देखती हैं तब तो बूढ़ कहीं से भी नजर नहीं आती—और मुझे तो यही खाती है ।”

“मैरिट—मेरी मित्रता के नाने कम-से-कम ‘मगर की पूंछ’ जल्दी ला दो—इससे पहले कि मैं... राजसी घराने का सिर खोलने वाला बूढ़—गुस्सा होकर चिल्लाने न लग जाऊँ, और खास कर इस बंदरगाह की सराय में ।”

वह मेरे लिए मदिरा एक बड़े सीप में साईं जिते मैंने अपनी हथेली पर रख लिया । पीने ही मेरा कंठ जलने लगा क्योंकि अब मुझे तो अंगूरी थी उत्तम मदिरा की आदत पड़ गई थी... फिर भी वह जलन मुझे अच्छी लगी क्योंकि मेरा दूसरा हाथ उसकी जाँघों पर रखा था ।

और मैंने कहा : ‘मैरिट ! तुमने मुझसे एक बार कहा था कि जिन लोगो के जीवन की पहली बहारें गुजर चुकी हों, और जो एरासी हों उनके लिए सब से झूठ ही कभी-कभी हितकर साबित होता है । हम लोग बहुत सालों तक एक-दूसरे से बिछुड़े रहे हैं लेकिन वह कौन-सा दिन बीता है जब मैंने तुम्हारा नाम हवाओं में नहीं फुसफुसाया है ? मैंने उल्टी धाराओं में आने वाली चिड़ियाओ द्वारा तुम्हारे पास प्यार के संदेश भेजे

है और हर मुवह जब मैं उठा हूँ तो तुम्हारा नाम स्वतः मेरे हीठो से निकल गया है ।”

उसने मुझे घूरकर देखा और मैंने क़दो कि वह अब भी काफी लुभा-कनी और सुन्दर थी, उसकी आँखों की गहराइयों में मुस्कराहट और वही पुरानी उदासी थी जैसी कि गहरे कुएँ के पानी में होती है । उसने मेरे गाल छूकर कहा “सिन्धूहे । अब बात बहुत अच्छी तरह करना सील गए हो । मैं भी क्यों नहीं साफ कह दूँ कि तुम्हारी याद मुझे बहुत आती रही है । जब मैं अकेली अपनी चटाई पर सोती थी तो तुम्हारे बिना मुझे सब कुछ सूना-सूना लगता था। ‘मगर की बूँछ’ के असर से यदि कभी किसी ग्राहक ने मेरे मेरे ऊपर हाथ बढाना चाहा है तो तुम्हारी याद हो आई है, पर, फराऊन के सुवर्ण-गृह में तो बहुत-सी स्त्रियाँ होगी, सुन्दरी भी अगणित ही होगी ही और निश्चय ही बँच होने के नाते तुमने उनके साथ रगैरनिया की होगी ।”

“यह सब है कि मैंने वहाँ की स्त्रियों से सपर्क रखा था । वह सुन्दरियों भी थीं और जबान भी और उनकी स्वभाएँ भी ताज़ा फूल जैसी थी, पर वह सब कुछ नहीं, मेरी मित्र तो केवल तुम हो ।”

उस तेज़ मदिरा ने अब तक मुझ पर पूरा असर कर दिया था । मेरा शरीर जबान हो गया था और मेरी रंगों में मद छा गया । मैंने कहा: “इस बीच तुम्हारी चटाई पर कई आदमी सोये होंगे लेकिन जब तक मैं यहाँ धोबीज़ में हूँ तब तक उनमें से कोई तुम्हारे पास न आने पावे । क्योंकि यदि मैं उत्तेजित हो गया तो समझलो कि उनकी छैर नहीं होगी जब मैंने लदीरियों से युद्ध किया था तो मेरा प्रथम रूप देखकर हीरेव-हैव के सैनिकों ने मेरा नाम ‘जयली गये का बेटा’ रख दिया था समझो ।”

उसने बनावटी भय दिखाते हुए हाथ उठा दिये और कहने लगी : “वम उसी से तो मुझे डर लगा करता है क्योंकि कप्ताहूँ से मैं घुन चुकी हूँ कि तुम अपने गुस्से के कारण किस भाँति लोगों से लड़ पड़ते थे और फिर उसे तुम्हें उसे छुड़ाना पड़ता था ।”

कप्ताहूँ का नाम मुनकर मेरे नेत्र उमड़ आये, मैंने कहा: “यह है क्या ? मैं उस अपने पुराने दास से मिलना चाहता हूँ ।”

मैरिट ने मेरी तरफ घुप रहने का संकेत किया फिर बोली: "अब तुम्हें 'मगर की पूँछ' की आदत तो नहीं रही है। वह देखो मेरा पिता तुम्हारे दोर से परेमान होकर घूर रहा है। कप्ताह शाम से पहिले नहीं लौटेगा क्योंकि वह आवश्यक भनाज के व्यापार के सम्बन्ध में बाहर गया है। उसे देखकर तुम आश्चर्यचकित रह जाओगे क्योंकि अब तो उसे पाद भी नहीं रहा है कि वह कभी तुम्हारा दास था। चलो इस बीच मैं तुम्हें बाहर घूमा लाऊँ, बाहर की ठण्डी हवा से तुम्हारी हालत भी सुधर जायेगी, देखो तो सही कि तुम्हारे जाने के बाद चौबीस किताब बदल गया है।"

जब वह नये वस्त्र और आभूषणों से सजकर आई तो अत्यन्त कम-नीय लग रही थी, उसे सिर्फ उसके हाथों और पैरों से ही पहचाना जा सकता था कि वह उच्च वंश की स्त्री नहीं थी। हम दोनों कुर्सी में बैठकर बैठ गए और मुझे उसके शरीर की गन्ध बड़ी अच्छी लगी। मैट्रों की सड़क पर जब दास हमारी कुर्सी उठाकर चले तो मैंने उसका हाथ अपने हाथ में से लिया और जब मुझे अनुभव होने लगा कि मैं घर लौट आया था।

अम्मन के मन्दिर में कौवे और काली चीलें चक्कर लगा रही थीं, प्रांगण सब खाली पड़े थे, बागों में घास उग आई थी, जीवन-गृह और मृतक-गृह के बाहर थोड़े से लोग खड़े थे। मैरिट ने मुझे बतलाया कि जीवन-गृह में अब लोग अधिक संख्या में नहीं जाते थे। बूढ़ों ने नगर में अपनी-अपनी दुकानें खोल ली थीं।

मैरिट ने कहा: "तुम मुझे कहाँ इस गायघस्त स्थान में ले आये? तुम्हारे वस्त्रों पर बना हुआ यह जो एटीन का जीवन-पदक है वह हमें शायद आपत्तियों से बचाने पर यह भी साथ-साथ मत भूलना कि इसके कारण हम पर पत्थर भी फेंके जा सकते हैं। लोगों में अब भी उसके प्रति घृणा कूट-कूटकर भरी हुई है।"

उसने सच कहा था क्योंकि जब हम मंदिर के बाहर आए तो लोगों ने मेरे 'जीवन-पदक' को देखकर घृणा से झुक दिया। और तभी मैंने देखा कि अम्मन का एक पुजारी छहर से आया—उसका सिर घुटा हुआ था और उसके मुख और सिर पर तेस चमक रहा था। वह शुद्ध श्वेत वस्त्र पहिने हुए था, लगता था जैसे उसने किसी आपत्ति का सामना नहीं किया था।

लोगों ने उसे आदर से नत-मस्तक होकर मार्ग छोड़ दिया। मैंने अकल-मन्दी की और अपने जीवन-पदक पर हथेली रख ली। मैं नहीं चाहता था कि उपद्रव का शिकार बनूँ।

मैंने देखा कि मंदिर की दीवार के सहारे एक आदमी कहानियाँ सुना रहा था। लोगों की भीड़ उसके चारों ओर लग रही थी। वह नाम बदल कर फराऊन एसमैटोन और उसके एटोंग की ही कथा सुना रहा था और लोग एकाग्रचित्त होकर उसे सुन रहे थे। आगे वह बोला : "और 'र' कूड़ हो गया, उसके माप से अकाल पड़ने लगा। सीलो का पानी सूख गया। उनमें खून मिला गया और फिर वह नकली फराऊन जो हजारों साल पहले था और उसकी माँ जो एक जादूगरमी हम्बिन थी बिना पंदे के गड्ढे में फेंक दिये गए।" और लोग खुशी से चीख उठे और उस कहानी सुनाने वाले के पात्र में ठाँबे के बहुत से सिक्के इकट्ठे हो गए।

मैटिन ने मुझसे कहा कि इस प्रकार की कथाएँ संपूर्ण उत्तरी और दक्षिणी साम्राज्यों में प्रचलित थी जिन्हें भला कौन रोक सकता था ? फिर उसने कहा : "आजकल भविष्यवाणियों का भी यहाँ बहुत जोर है। आज के भाव डीवाडील हो रहे हैं। गरीब भूखी मर रहे हैं और करो के बोस से सभी ऊब उठे हैं। भयातक भविष्यवाणियाँ हो रही हैं। सब मुझे तो अत्यन्त भय लगता है।"

जब हम सँदूरखाने में से सीट आये तो मुझे फराऊन एसमैटोन के शब्द याद आने लगे—“एटोंग माता से बच्चे को अलग कर देगा, पुष्प को उसके हृदय में बसी हुई 'बहिन' से अलग कर देगा, जब तक कि सत्तार में उसका साम्राज्य स्थापित न हो जायेगा।” लेकिन मुझे वह बात अच्छी नहीं लगी क्योंकि मैं अपनी मैरिट से बलब नहीं होना चाहता था।

जब कप्ताह अन्दर आया तो मैं भौचक्क होकर उसे देखता रह गया। वह गजब का मोटा हो गया था और विशाल-काय हो गया था, इतना अधिक कि द्वार में अन्दर घुसने के लिए उसे आड़ा मुड़ना पड़ता था। उसका चेहरा गोल हो गया था जिस पर तेज चमकमा रहा था।

सिर पर उसके नीला वस्त्र (विग) था और उसकी कानी आँख पर एक सोने की गोल पत्ती लटक रही थी। अब वह सीरियन पोशाक नहीं पहनता था बल्कि धीवीज के बेहतरीन दज़ियों से मिली राबसी वस्त्र सिलवाकर पहना करता था। उसकी कलाश्यों और टखनों में सोने के कड़े मिल-मिलाते थे। उसके गले में कई लड़ी सोने की खंजीरें पड़ी थी और मोटी-मोटी भद्दी उँगलियों में सोने की जडाऊ अँगूठियाँ बमक रही थी। वह हाँक रहा था और उसके पसीना बह रहा था।

जब उसने मुझे देखा तो आश्चर्य से हाथ उठाकर वह चिल्लाने लगा : “शुभ है यह दिन जो मेरे मासिक घर आये हैं।” फिर उसने मुँहकर बड़ी मुश्किल से अपने घुटनों की सीध में अपने दोनों हाथ फँसा दिये। उसका भारी पेट उसे मुकने नहीं दे रहा था।

भाववेश में वह रोने लगा और उसने मेरे घुटने पकड़ लिये। उसने वह शोर मचाया कि मुझे यह अनुभव होने लगा कि मुझे मेरा पुराना कप्ताह मिल गया था। मैंने उसे उठाकर छाती से लगा लिया, मुझे लगा जैसे मैं किसी मोटे बैल का आलिंगन कर रहा था जिसमें से नई रोटी की खुशबू आ रही थी।

उसने मेरा कंधा सूँघा, आँसू पोंछे और फिर वह हँसा, फिर उसने कहा : “आज का दिन मेरे लिए बहुत ही शुभ है। इस समय जितने भी लोग मेरे घर में बैठे हैं, सबको मैं मुफ्त में एक-एक सीप भरकर ‘मगर की पूँछ’ पिलाऊँगा। परन्तु यदि वह दूसरी बार माँगेंगे तो उन्हें दाम देने होंगे।” आखिरी शब्द उसने धीरे से कहा।

घर के अन्दर के हिस्से में ले जाकर उसने मुझे नर्म चटाई पर बिठाया और मैरिट को मेरे पास बँटने की आज्ञा दे दी। उसके अनुचर ओर दासों ने जो कुछ उस घर में था उनमें से छाँटकर सर्वोत्तम खाद्य और पेय मेरे सामने परोसे। उसकी मदिराएँ बीमती और फ़राऊन की मदिराओं के समान ही थीं और उसकी परोसी हुई धुनी हुई बसल तो धीवीज की विशेष वस्तु थी ही, क्योंकि वह सड़ी हुई मछलियों पर पासी जाती थी जिनसे उनके मांस में एक विचित्र स्वाद आ जाता था।

जब हम सा-थी चुके तो उसने कहा : “सिन्धूहे, मेरे मासिक, मैंने जो

तुम्हारे पास व्यापार के साथ के हिसाब अब तक भेजे हैं, मुझे आशा है वह सब तुमने देख लिए होंगे और उनसे तुम्हें यह भी पता चल गया होगा कि तुम्हारा धन कितना अधिक बढ़ गया है, पर हाँ आज का यह जो भोजन हमने किया है और जो-जोत मेमैंने सारे ग्राहकों को 'मगर की पूछ' मुपन पिलादी है उसे मेरे विचार से परसर्ज में डलवा दिया जाय, क्योंकि हममें फायदा भी है, मुझे फराऊन के कर बमूल करने वालों की बगड़ से बड़ी परेशानी रहा करती है ।"

मैंने उत्तर दिया, "मेरे लिए तुम्हारे हिसाब सब कोई अर्थ नहीं रखते । मैं मेरा इतना दिमाग ही हूँ कि डेर सारे जोशों को देखूँ या समझूँ, जो मुनासिब जैजे वही करो क्योंकि तुम पर मुझे पूरा विश्वास है ।"

सुनकर कप्ताहूँ हँसने लगा और उसके मोटे पेट में से हँसी ऐसे निकलने लगी जैसे गर्म गहों में से आ रही हो । मैरिट भी हँसती रही क्योंकि आज उसने मेरे साथ मदिरा पी भी और अब वह फिर पीछे दोनों हाथ लगाये बिना मेटी हुई थी कि मैं उसके बस्त्रों के नीचे उसके बदन के उभार को देख सकूँ ।

इसके बाद कप्ताहूँ बतलाता रहा कि उसने दो सीरियन मुनीम रख निदे से जिनके हिसाबों से कर बमूल करने वाले भी पक़रा जाने से क्योंकि वह उन्हें समझा ही नहीं जाने से । सीरियन का हिसाब समझना हँसी खेल नहीं होता था । बट तरकीबों से करों की थोड़ी किया करता था । कई माम मर्दों को वह भी-बरोँ पर तथा अन्य लोगों पर सब्जे में दिखाना था । फराऊन के करों का भार असह्य था । गरीबों से जब उनको जामदनी का पाचवा बट लिया जाता था तो अमीरों से तीसरा था । बभी-बभी आधा तो दिया जाता था । "फराऊन का यह अन्वाय है ?" वह बोला : "कि सभी पर ए-सा कर नहीं लगाया गया है । जब गरीबों से पाचवाँ बट लेने है तो अमीरों में भी वही सेना चाहिए । एक तो यह और दूसरे सीरिया हाथ में रहा नहीं और इन्ही दो ने बाग्य मिस गरीब हो गया है और हाँ, सबसे विचित्र बात तो यह है कि जब मुल्क गरीब हो गया है तो गरीब और भी गरीब हो गये हैं और अमीर फिर और भी ज्यादा अमीर हो गए हैं । ऐसे फराऊन भी नहीं बदल सक्ता ।"

मैं चुपचाप गुनाह रहा। कप्ताह ने और मदिरा दी फिर वह अपनी सोफी हाँपने लगा कि वह अनाज का कुगल ब्यापारी था।

“हमारा देखा मचमुच ही बड़ा गस्तिगायी निकना, क्योंकि जब देनाटन करके पहुँचे ही दिन में इस मराय में आया तो उसी दिन वहाँ अनाज के ब्यापारियों से जान-बूझान हो गई। मैंने एकदम अनाज खरीदना शुरू कर दिया और उसी सात मैंने उससे से गहरा लाभ उठाया, क्योंकि तुम्हें तो पता ही है कि अम्मन—मेरा मतलब है कि बहुत-सी भूमि बजर पड़ी रह गई थी। हमें बड़ा मुनाफ़ा हुआ। फिर मैंने इसी तरह हर सात किया और अब मेरे पास अनाज के अगणिता गोदाम भरे पड़े हैं पर मैं उन्हें अब बेच नहीं रहा हूँ बल्कि और भी खरीदने की सोच रहा हूँ जब तक कि उसे सोने के भाव न बेच सकूँगा। अनाज भी कमाल का मुनाफ़ा देता है, जैसे कोई जादू हो।

“लेकिन यह सोचना फिर भी ग़लत है कि मैंने तुम्हारा सारा धन केवल अनाज में ही लगा दिया है—अनेक ब्यापारों में उन्नति प्राप्त की है मैंने मेरे प्यारे मालिक !” और उसने मेरा पात्र फिर मदिरा से भर दिया।

देर तक वह ब्यापार की बातें करता रहा और मैं उसे समझने की कोशिश करता रहा—मैरिट सेटे-सेटे हँसती रही। फिर वह बोला :

“मुनाफ़े से मेरा मतलब है उस ख़म से है जो कर देने के उपरांत हाथ में बच जाय—इसमें से मुझे वह उपहार भी भेटा देने पड़ते हैं जो करे घटवाने के लिए मुझे हाकिमों को देने पड़ते हैं—समय-समय पर मैं ग़रीबों को अनाज बाँटा भी करता हूँ और यह काम बड़ा फायदेमंद साबित होता है—जब मैं किसी को एक नाप भर कर अनाज दान करता हूँ तो उससे पाँच नापों पर अंगूठा करा लेता हूँ और वह लिसा-पड़ा तो होता नहीं है और फिर यदि हो भी तो उसे दाम तो देने पड़ते नहीं हैं। वह निशानी भी कर देता है और दुआएँ देता हुआ हमारे यश का मान करता फिरता है और उन निशानियों से मैं कर सेने वालों से बच जाता हूँ...।”

मैंने पूछा : “तो हमारे पास बहुत अनाज है ?” उसने गवें ॥ सिर हिलाया। मैंने कहा :

“तब तो तुम जल्दी करो और किसानों को जाकर बीज दो— उनके

पास जो बीज हैं वह साल है गोया खून की वर्षा हो गई है उस पर—पानी पड़ ही चुका है और अब फसल बोने का समय है।”

कप्ताह ने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं मूर्ख था, फिर सिर हिलाकर कहा : “भालिक ! जिस काम को तुम नहीं समझते उसमें दखल न दो—उसे मुझे ही करने दो—मुम्हारी राय में तो बड़ा नुकसान है—मामला कुछ ऐसा है कि हम अनाज के व्यापारियों ने पहले बीज बाँटा—किसान प्रीव तो थे ही—उन्हें उसकी आवश्यकता थी—हमने दुगना अनाज ठहरा लिया। पर जब फसल तैयार हुई तो वह न चुका सके। हमने उनकी मर्चेक्षियाँ कटवा दी और उनकी खालें से आये और कर्ब का गदुर भरा, पर जब अनाज की कीमत बढ़ी तो वह सौदा नुकसान का रहा—अब तो यह है कि जिस कद जमीन कम बोई जाय वही अच्छा है—अनाज कम पैदा होगा और हमारे गोरामो के माल भी कीमत दुगनी-तिगुनी-चौगुनी हो जाएगी—तुम व्यर्थ व्यापार के पचड़े में मत पड़ी।”

और तब मैंने जमकर बहना शुरू किया : “जैसे मैं आज्ञा देता हूँ कप्ताह वैसे ही करो—क्योंकि अनाज मेरा है—मुझे इस समय मुनाफ़ा लेना नहीं मूल रहा है बल्कि मुझे उन किसानों की रक्षानियाँ दिखाने दे रही हैं जो जिसकुल ही खानों में परिश्रम करने वाले दासों जैसे दुर्बल हो गए हैं—उनकी स्त्रियाँ याद आ रही हैं जिनके स्नान ऐसे सटकने हैं जैसे दो पाली धैलियाँ हो—उनके बच्चे जो नदी-तट पर टेढ़े पैरों से चलते हैं और चलने-बलने कमबोरी से गिर जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम जाकर उन्हें बीज बाँट आओ—एटीन के नाम पर कराऊन एटनंटीन के नाम पर जिससे मैं प्रेम करता हूँ। मैं यह भी नहीं चाहता कि तुम उन्हें बीज मुफ्त दो क्योंकि यह आदत भी अच्छी साबित नहीं होती। कराऊन ने उन्हें भूमि मुफ्त ही तो दी थी ? पर मैं यह चाहता हूँ कि उन्हें आप के नाथ पर बीज दिया जाय—जितना दिया जाय उतना ही लिया जाय—यदि वह उसे भी न दें तो तुम अपना डंडा लभानना, पर मुझे उनसे मुनाफ़ा नहीं चाहिये।”

कप्ताह ने जब यह मुना तो उमने अपने बदन फाट डाले और वह चिल्लाने लगा :

“नाथ वा नाथ ? पावसपत्र है यह ! फिर मैं मुनाफ़ा कहाँ से

कमाऊंगा ? यह क्या देवताओं के लिए भी अप्रिय बात कह रहे हो ? इससे तो व्यापारी लोगों के अतिरिक्त अम्मन—हाँ अब मैं उसका नाम स्वन-व्रता से यहाँ ले सकता हूँ क्योंकि यहाँ सुनने वाला कोई नहीं है—हाँ अम्मन के पुजारी लोग भी क्रुद्ध हो उठेंगे ।”

पर मैं अपनी बात पर अड़ा रहा । तब वह बोला :

“क्या तुम्हें पागल कुत्ते में काट लिया है या बिच्छू ने डंक मार दिया है तुम्हारे ? मेरा तो विचार था कि तुम उपहास कर रहे थे । पर धीरे—जब तुम चाहते हो तो ऐसा ही सही—हमारे ताबीज का देवता हमारी रक्षा करेगा—तो हम गरीब जलूर हो जाएँगे—वैसे मैं स्वयं भी दुबने आदिमियों को देखकर खुश नहीं होता — अक्सर अपनी भाँखें फेर लिया करता हूँ ।”

मैंने कहा : “तुम बेहद झूठे हो—गरीब तुम कभी नहीं हो सक्ते—हर बात में तुमने लाभ उठाना सीख लिया है—मैं वैध हूँ और इस नाम से तुम इतने मोटे हो, तुम्हारा भागना-दौटना अब ख़रवी है—जाओ और किसानों की सहायता करो—याद है कप्ताह बेबीलीन की धूल में हम कैसे चला करते थे—और सबैनीन के पहाड़ों में जब तुम गधे पर चढ़कर बने थे तो कितना मूढ़ हुए थे—हाँ, वहाँ के बड़े-बड़े फिर बा-देश में भाकर ही उतरे थे—ओह ! क्या वे वह दिन ‘कामा मैं फिर जवान हो साना ।’”

देर तक हम मदिरा पीने हुए वार्ते करने रहे । मैरिट जब मेरे साथ रात को मेरी चटाई पर सोई तो उसने बम्ब हटाकर मेरे होंटों के गम्गुन अपनी भूरी खचा बर दी थी—मैं उसके साथ आनन्द भोगता हुआ मो गया । मैंने उसे फिर भी बहन कहना नहीं चाहा पर वैसे मैं उसके साथ घड़ा फोड़ने को तैयार हो गया क्योंकि वह मेरी मित्र तो थी ही—पर प्यारी भी थी ।

दूसरी सुबह मुझे गुवर्णमूह में गवामाता की सेवा में उपस्थित होना पड़ा तब मेरा भीबीज आदुमरनी कहने लग गया था । मेरे दिवांग में उसकी यह उपाधि नहीं थी क्योंकि उसने अपनी आगार शक्ति में मारी अम्माइयों को कुर्गई में बंदन दिया था ।

जब मैं अपने जहाज की ओर सीटा और मैंने अपने राजसी वस्त्र पहने और अपने रत्न के पदक पहने तब मेरी रसोई बनाने वाली स्त्री मुत्ती वहाँ आ पहुँची और वृद्ध होकर कहने लगी :

“शुभ है यह दिन जो मेरे मालिक घर आये, पर यह वहाँ आ कायदा है कि आते ही रातभर रंगशालाओं में डोलने रहे और घर की मुश्त भी नहीं ली, जिसे मैंने साफ करके तुम्हारे लिए सजाया है और खाना तक नहीं खाया जबकि मैंने तुम्हारी पसंद के उत्तमोत्तम धीवीड के छाछ बनाये हैं—अब घर चलो और उन्हें खाओ—और यदि अपनी उस रसूल को अलग नहीं छोड़ सकते तो उसे भी साथ में आओ—पुरुषों का ही रहन-सहन विचित्र है—मुझे अब इस वृद्धावस्था में तो उन पर कतई विश्वास नहीं रहा है।”

ऐसी भी मुत्ती हानार्क मैरिट को, जिसे उसने रसूल कहा था, बहुत ही आदर की दृष्टि से देखा करती थी। परन्तु यह उसके बोलने-बालने की विचित्र आदत थी जिसका मैं आदी था। उसका बड़बड़ाना मुझे मधुकर प्रतीत हुआ क्योंकि अब मुझे लगने लगा कि मैं घर आ गया था। मैं मैरिट को लेने चला गया। मुत्ती की बड़बड़ाहट तब तक जारी रही जब तक मैंने उसे बाँट न दिया। और तब वह एकदम चुप हो गई और साथ ही खुश भी हो गई क्योंकि उसे अनुभव होने लग गया कि घर का मालिक लौट आया था।

मैरिट के साथ मैंने घर आकर धीवीड का उत्तम भोजन किया जो मुत्ती ने बड़े परिश्रम से बनाया था। उसने मकान एकदम नया कर दिया था, ऐसा सजाया था उसे। जगह-जगह घर में फूल लगाये थे और जिस विस्ती की सूखी हुई लाज पहले मेरे घर के द्वार के पास पड़ी थी अब पा पड़ोसी के द्वार के पास पड़ी थी।

साथी चुकने के बाद पड़ोसी मुझसे मिलने और मुझे प्रेमोपहार भेंट करने आये। उन्होंने कहा : “मालिक सिन्धूदे ! “जब तुम चले जाते हो तो हमें तुम्हारा यहाँ न होना बहुत ही मर्हमा पड़ता है—तब हमें तुम्हारे कितनी जरूरत पड़ती है हम यह कैसे बतलाएँ।” उनमें मेरे सभी पुराने

उनके प्रेम को देखकर मेरा हृदय भर आया—उम समय मैंने अनुनद किया कि मैं कितना गुणी था—मेरे पान सुन्दरी मँरिट थी—मेरे पान मेरे रोगी थे जो मुझे प्रेम करते थे, मृनी थी जो सर्वोत्तम खाना बनाती थी।

फिर रोगी घाने लगे और मैं उनकी परिचर्या में लग गया। मँरिट मेरी सहायता करने लगी। उसने अपनी बढ़िया पोनाक की बाँहि ऊपर सरका ली थी। कितनी अच्छी लग रही थी, वह मैं कैसे लिखूँ ? और तब मैंने कहा : “ओ जल पड़ी ! जल बहाना रोक दे—क्योंकि ऐसा समय फिर तो नहीं आयेगा।”

घाम हो गई और मैं राजमाता के यहाँ जाना बिल्कुल भूल गया। मँरिट ने मुझे वहाँ जाने की याद दिलाने हुए कहा कि रात को वह मेरी प्रतीक्षा अपने पास करेगी।

जब मैं नदी पार करके सुवर्णगृह पहुँचा तो पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे सूर्य डूब गया था और पहला नक्षत्र आकाश में दिखाई देने लगा था—

राजमाता मुझसे एक एकान्त कम में मिली जहाँ बहुत-सी छोटी-छोटी रंगविरंगी चिड़ियाएँ जिनके पर काट दिये थे—पिंजरे में फुदक रही थी। वह सायद अपनी जवानी के दिन अभी तक नहीं भूली थी जब वह चिड़ियाँ पकड़ कर बेचा करती। उस समय वह बैठी हुई रंगीन वरी बुन रही थी। मुझे देखकर उसने तीखे स्वर में डाँटा क्योंकि मैंने पहुँचने में इतनी देर कर दी थी। फिर उसने पूछा : “क्या मेरे पुत्र का पागलपन कुछ कम हुआ है या उसका सिर खोलना ही पड़ेगा ? उसने अपने एटील का बड़ा शोर मचा रखा है जिससे लोग भड़क उठते हैं—मेरी समझ में नहीं आता कि जहाँ उसकी आवश्यकता ही क्या रहो है जब नकली देवता अम्मन भी उठाकर फेंका जा चुका है और फराऊन की सर्वोच्च ज्विन का प्रतिद्वंद्वी बाकी रहा ही नहीं है !”

मैंने उसे फराऊन एखनटोन के बारे में और उसकी पुत्रियों के बारे में सब कुछ बतलाया। राजकुमारियों के हिरन के बच्चों और कुत्ते के पिल्लों के साथ खेल और एखनटोन की पवित्र झील पर सैर करने की सारी वार्ता कह सुनाई। सुनकर वह भावावेश में आ गई और फिर उसने मुझे अपने पैरों के पास बिठाकर मदिरा पिलाई और स्वयं भी पीने लगी। और शीघ्र

ही मदिग उनके गिर में बह गई और उनही बीच पर मे उगवा निदबन उठ गया । वह कहने लगी -

“मेरे पुत्र मे मुग्धाग माय जाने दिन दुर्गन्ध भी उषण मे एकाकी गग दिया था—रत्न मे तो देवती हैं मित्रदे ।” कि मुम मायागि मदिग हो और माय मे स्वर्गाय कृष्ण और मेव और बुद्धिमान भी हो । हास्यकि मेरी मया मे नहीं आता कि मेरी किम मानिद्विगकर हो लक्ष्मी है, क्योंकि मेव लोग आसनीर पर दुर्ग ही होने है । जो पुत्र भी हो, मुग्धागे पहा राते मे लगभी होनी है । इस एटीन को मेरे आनने मूर्खता मे दमना कविगतामी मन जाने दिया है—और हमने अब मे कोमान हो गई हैं— यह मेरा विचार अभी नहीं था कि मायमे इस लक्ष्मी मे पट्टेव आता । मेने तो इस एटीन को इगनिग बनाया था कि हमरी आद मे आमम की कविग उगद जाय और मेरे पुत्र की एवमाय मदिग म्यागिग रही आये और अमनी बाग भी था कि पुत्रागी ‘आई’ इमनिग ही हमे पानिग । माया था और उमी मे इस मरके के दिमागमे गुना दिया । ‘आई’ को मुम जानने ही हो कि वह मेरा पति बना हुआ है—हानीकि उनके और जाने बीच मेने कोई पता नहीं पोसा है । फिर भी इस कम्बल मे मे ऊब उठी हूँ क्योंकि उनका पीरम अब शुभ हो चुका है ।”

जाने बीबीड मे यह बात सभी जानने थे और इस भेद को छिपाने को भी आवश्यकता राजमाता अब नहीं करती थी । उसे बीते शर्म मानी ही नहीं थी । मे बीस था और बीमे कि बीछो मे मिचयी बहुत कुछ कह लेनी है बीते ही वह दके जा रही थी । मेने देखा कि वह इन बातों मे अम्य मिचयी मे मियल नहीं थी । फिर वह कहने लगी :

“मुझे तो ‘आई’ की इस पुत्री के कारण बड़ी चिन्ता बनी रहनी है— मैकरीनी बार-बार पुत्रिया ही धन्यनी है हास्यकि मरी हजिन दादयो ने भरमक उमकी सहायता करने का प्रयत्न किया है—लोग हमसे इतनी गुना करने है कि मुझे इन्हें छिपाकर रखना पड़ता है । वह नाक मे हाथीदांत की मुठ्ठी पहननी है और बच्चों के सिर सभ्ये और पपटे बनाने मे दक्ष हैं । पर मेरा उनके बिना काम नहीं चलता क्योंकि उनको जैसी दक्ष पर दयाने वाली और हमसे मोचने वाली और कीन हो सकती हैं ? फिर वह मुझे

बह-बह श्रीगणेश बनाकर निनाती रहती है कि मेरी कामोत्तेजना उठनी रहे और मैं आनन्द भोगनी रहूँ।”

यह स्वयं ही-ही करके हैंगने लगी। वह नंगे में खुर हो रही थी। मैं धुपचाप बँटा हुआ उसकी कान्ती उँगलियों को देख रहा था—वह नदी तट पर कपड़े धोने वाली घोंबियों की भाँति लगी रहती थी। फिर वह बोली : ‘आई’ से मुझे घृणा है—उसमें अब क्या बाकी है ? अब तो अपने प्यारे हृदयों से आनन्द लेती हूँ—यह सोच बड़े चतुर बँध होने है और लोग अपने अमान के कारण इन्हें जादूगर कहते हैं—मैं अब मभोग को कोई गई बीज मानकर उसे नहीं करती बल्कि इसलिये कि मेरे हृदयी बँधों ने इसे जवान बने रहने के लिए मेरे लिए आवश्यक बताया है। हालाँकि अन्य दरबारी स्त्रियाँ सब जगह घूमने-फिरने के बाद ‘उन्हें सड़े मांस में ही सबसे अधिक स्वाद है’ मानकर ही उनसे प्रेम करती है—मैं तो इसलिए उन्हें पसन्द करती हूँ कि उनके संपर्क से मैं जीवन की गर्मी महसूस करती हूँ—अधिकाधिक प्रकृति के पास अपने को अनुभव करने लगती हूँ क्योंकि उनमें और जानवरों में बहुत छोटा ही भेद होता है—वैसे मैं जवान हूँ—क्योंकि जीवन बनाये रखने के लिए मुझे दवाइयाँ या पोष्टिक जड़ी-बूटियाँ नहीं खानी पड़ती, “फिर वह थोड़ी देर चुप हो गई। मैं धुपचाप देख रहा।

“दुनिया में भलाई से कुछ प्राप्त नहीं होता—जो कुछ होता है सब शक्ति से होता है। जो जन्मजात शक्तिशाली होने हैं वह इसका महत्त्व अनुभव नहीं कर पाते—परन्तु मैं इसका महत्त्व जानती हूँ क्योंकि मैं तो गरीब थी। इसे बनाये रखने के लिए मैंने सब कुछ किया है—कभी कसर नहीं छोड़ी है—चाहे देवता लोग मेरे कर्मों से खुश न हो पर मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है क्योंकि मैंने सदा से फराऊन को ही सर्वोच्च माना है। दुनिया में न सच्चाई रह जाती है और न थुराई—जो सफल हो गया

... और जो असफल रह गया और पचड़ गया वह

मेरा दिल धबरा उठता है और मेरे पेट में पानी मैं अपने किये हुए पर सोचने लगती हूँ। आखिर मैं स्त्री और नर तो जानते ही हो कि सभी स्त्रियाँ अन्धविश्वास करती हैं—... तड़कियों को जन्म देती है—मेरा दिल टुकड़े-

टुकड़े हो जाता है—मुझे ऐसा लगता है कि जो पत्थर मैंने अपने पीछे फेंके हैं मुझे आगे पड़े पाने लगे हैं।”

उसके मोटे होठ कांपने लग गए। मैंने देखा वह दरी के गूत में गाँठ लगा रही थी और उसे देखकर मेरा हृदय स्तब्ध रह गया। सम्पूर्ण निश्चयता साक्षात्कार की बनी हुई दरियों में मैंने ऐसी गाँठ कही नहीं देखी थी। ऐसी गाँठ मैंने देखी थी अपनी माता जीपा के कमरे में—पुर्ण से काली हुई उस बाँस की टोकरी के अन्दर बिछी मोटी दरी में—तो क्या वह इसी के हाथ की बनी हुई थी—तो क्या मैं सुवर्ण-गृह से हो—? और मेरी रीढ़ की हड्डी में होकर टड पार हो गई—मेरे माथे पर पसीना झलक आया। मेरा गरीब जैसे लूँठ गया।

पर उसने मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह कहने लगी :

“सिन्धूहे। मेरी स्पष्ट वार्ता से शायद तुम मुझे बुरी और घृणा के योग्य औरत समझने लगे हो—लेकिन मेरे कामों के लिए मुझे कठोर नियमों से भर आँचो—वर्तक वास्तविकता समझने की कोशिश करो। बिड़ीमार की जवान लहकी के लिए जिसके पैर चौड़े और बुरे से मे आँचो जो काली थी—फराऊन के हराम में घुसकर वहाँ शासन करना कोई आसान बात नहीं थी—छामकर जब वहाँ सभी उससे घृणा करते थे। वह तो केवल फराऊन की एक उमंग थी कि मैं उसकी जिगाहो में बंद गई थी। फिर मैंने उमी उर्चन की बनावे रखने के लिए अपनी जवानी को नाम ले लिया और उसे जीवन के वह-वह आनन्द दिये कि जिनसे वह सदा अनभिज्ञ था। हृदय जाति के पास अनेकानेक ऐसी विधियाँ हैं जिनसे सम्पन्न गमाज अनभिज्ञ है। और क्याल यह था कि मैं न स्वयं गर्भवती होनी पड़े न फराऊन की अन्य किसी स्त्री को गर्भधारण करने देनी थी। मुझे मालूम जानकर आश्चर्य होगा कि मेरे शासन में सुवर्ण-गृह में किसी स्त्री ने पुत्र नहीं जन्मा—जो पुत्रियाँ हुई उनके विवाह मैंने पैदा होने ही अपने प्रभाव में उच्च मायों के साथ करा दिये। मैं स्वयं गर्भधारण करने भयभीत मोन्दर्य और जीवन को जिगाहना नहीं चाहती थी और जब फराऊन मर हो गया तब मैंने उपयुक्त समय समझकर पहला गर्भधारण किया। परन्तु जब मेरे उस गर्भ से पुत्री जन्मी तो मैं भयभीत हो गई—बही है यह बँके

श्रीम विष्णुका विवाह अभी तक नहीं किया है - यह ये सरकार में दूसरा भी है - वैसे दुष्टिमान लोग अपने सरकारों में कई लोग रगते हैं और एक से उन्हें गरीब नहीं होगा : उनके बाद मैं बाकी परेमान रही और फिर सरकार एक चुन हुआ - परन्तु उनके मुझे कोई सामान्यता नहीं दी क्योंकि यह सामान्य निश्चय और सब मैंने अपनी जाना, उनके कृत्य उनके होने-माने चुन कर लगाई - और यही मुझे अपनी हार दिखाई दे रही है क्योंकि मैंने गिनाये ! तुम बैठ हो । लोगों के न यह कमान कि मैंने अपने जादू में पुरातन की अग्य रथों के गर्भ में चुन उलटन नहीं होने दिया ?”

बाँधने हुए मैंने उनके नेत्रों में शर्मा और कहा - 'राजमाता तुम्हारा जादू विष्णुस ही आमान है क्योंकि उसे तुम्हारी उँगलियों ने रंगीन दरिया बनाकर सबसे सम्पूर्ण शोभ दिया है।’

उसके हाथ रुक गए और उसके नेत्रों की मंकेरी दिखाई देने लगी फिर वह कुछ परेमान भी होकर बोली

“क्या तुम जादूगर भी हो मित्रों ? या इन बानों को सभी जानने ?”

मैंने कहा 'गभीरों सभी कुछ जाना है—मैंने ही किसी ने तुम्हारे बाँधों को न देखा हो, लेकिन फिर भी रात के तुम्हें पहचाना है और रात की हवा में तुम्हारी हरकतों के बारे में कई कानों में पुनःपुनः कहानियाँ सुनाई हैं । तुम्हारे भय में लोगों की जुबान तो बन्द हो गई पर रात की हवा की पुनःपुनः तुमसे भी न रही ।—जो भी हो पर जो जादू की दरी तुम्हारी उँगलियों के नीचे इस समय बन रही है, अत्यन्त सुन्दर है और यदि यह भोज उपहार में मिल जाय तो मैं बहुत ही आभारी रहूँगा।’

वह थप हो गई । फिर बाँधती हुई उँगलियों से काम करने लगी—और अधिकांश मदिरा उसने पी । फिर मेरी ओर हठात् मक्कारी से देखनी हुई बोली :

“यह दरी सुन्दर है—इसका बड़ा मूल्य है क्योंकि यह मेरे हाथों से बनी है—यह शाही दरी है—और यदि यह कभी बनकर समाप्त हो गई तो शायद मैं इसे तुम्हें दे दूँ—पर बदले में तुम मुझे क्या दोगे ?”

मैं हँसा और मैंने उत्तर दिया : “राजमाता ! तुम्हें बदले में क्या,

बलिक यों कहूँ कि चोट में मैं अपनी जीभ टूँगा— तो मैं यह उद्गार चाहूँगा कि वह जहाँ है वहीं रही आवे। यह जीभ तुम्हारे विरुद्ध कभी न बोल सकेगी यह तुम्हारी है।”

गुनकर वह कुछ बड़बड़ाई फिर मुझे कनखियों से देखकर कहने लगी :

“ओ जीभ वैसे ही मेरी है उसे मैं उपहार में क्यों स्वीकार करूँ ? यदि मैं तुम्हारी जीभ कटवा लेना चाहूँ तो भला ऐसा करने से कौन रोक सकता है। इसके अतिरिक्त मैं तुम्हारे हाथों को भी कटवा डाल सकती हूँ कि तुम्हारी जीभ कट जाने के बाद तुम लिखकर भी किसी को कुछ बता न सको—इससे भी आगे का मार्ग भी मेरे पास ही है। मैं तुम्हें अभी पकड़वाकर भूमि के अन्दर संज्ञानों में अपने प्यारे हृदयों के पास पहुँचाये देती हूँ जहाँ से तुम कभी लौट ही नहीं सकोगे क्योंकि वह लोग नर-बलियों के बिलने शीकीन होते हैं, यह तो तुम जानते ही होगे सिग्यूहे !”

मैंने कहा : “राजमाता, निश्चय ही तुमने अधिक मदिरा पी भी है। अब आज रात और न पीना अन्यथा स्वप्न में तुम्हें दरियाई घोड़े दिखाई देने लगेंगे।”

जब मैं चलने के लिए उठा तो वह नसे में चूर बुद्धियाओं की भाँति बहकने लगी, बोली :

“तुम मुझे खूब चकमा देते हो सिग्यूहे ! खूब चकमा देते हो।”

मैं सही-सलामत नगर को लौट आया और मैरिट को भुजाओं में बाँधकर सो गया। अब मेरा हृदय उदास था। मुझे रह-रहकर दिखाई दे रहा था कि भुवर्ण-गृह से एक दूरी में लिपटा हुआ अन्धा सरकंदो की नाव में रखा गया और नील के जल में बीबीज की ओर दो काले हाथों ने उसे बहा दिया जहाँ मेरी माता कीपा ने उसे उठाकर पाल लिया।

जब मनुष्य का ज्ञान अधिक बढ़ जाता है तो परेशानी भी बढ़ जाती है—

जब एंस्टेटोन से मैं बीबिज आया था तो उसका सरकारी रूप यह

या कि मैं वहाँ जीवन-गृह का मुआयना करने जा रहा था। बरसों बाद जब मैं वहाँ पहुँचा तो मैंने देखा कि अब वहाँ पहली-सी धूम नहीं थी। एक्स्टेंशन में भी अभी तक मैंने एक भी सिर नहीं छोला था और मुझे भय लगने लगा था कि वही मेरे हाथों की दक्षता कम तो नहीं हो गई है।

जीवनगृह में विद्या प्राप्त करने के लिए वह पहली-सी पक्ष नहीं रही थी कि विद्यार्थी को पहले नीचे दर्जे का पुजारी बनना पड़े—अतएव मैंने सोचा कि शायद उन्हें 'क्यों' पूछने का अधिकार भी मिल गया हो। परन्तु जाकर जब मैंने उन्हें देखा तो मेरा दिल बैठ गया क्योंकि अब के विद्यार्थी लोग 'क्यों' पूछना ही नहीं चाहते थे—बल्कि उन्हें तो पकी-पकाई सीर से मतलब था कि झट उसे घोंट-पीटकर उत्तीर्ण हो जाएँ और फिर एकदम धन कमाने लग जाएँ। वहाँ ज्ञान प्राप्ति का जैसे उद्देश्य ही नहीं रह गया था।

वहाँ अब इतने कम मरीज आते थे कि मुझे तीन सिर खोलने में हफ्तों लग गए। मैंने अनुभव किया कि अब मेरी आँखें कुछ धुंधला देखती थी और मुझे रोग पहचानने के लिए अब रोगी से बहुत सारे प्रश्न करने पड़ते थे। पहले जैसी सफाई और दक्षता अब मुझमें नहीं रही थी। उसी दिन से मैंने घर आकर लोगों का ज्यादा-से-ज्यादा इलाज शुरू कर दिया और वह भी मुफ्त क्योंकि मैं फिर अपने हुनर में दक्ष बनकर रहना चाहता था। मेरे तीनों सिर खोलने के काम सफल रहे। दो तो तीसरे ही दिन मर गए पर उनसे मेरे हुनर में फर्क न पड़ा। तीसरा जीवित रहा आया जो एक लड़का था। जीवन-गृह में मेरी धाक जम गई।

मेरे ओहदे के कारण जीवन-गृह में मुझसे सब डरते थे और मेरा आदर करते थे—परन्तु पुराने बँध लोग मुझसे सिंचे-सिंचे रहते थे क्योंकि मैं एक्स्टेंशन से आया था जहाँ एटोन का साम्राज्य था। परन्तु मैंने वहाँ देवताओं के बारे में एक दिन भी बातें नहीं कीं और पैसे की बातें ही करता रहा। वह लोग भी कुत्तों की भाँति मेरे चारों ओर रूँघने का प्रयत्न करने हुए चक्कर लगाते रहे।

तीसरा सिर खोलने के बाद शायद उन्हें विश्वास हो जाता था कि मैं केवल पैसे से ही सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति था जिसे देवताओं के ज्ञानों

दो गजनीतिर विपदा मे कोई रचि नहीं थी । और तब एक चन्दन दोन ओर दल बंद दुसरे ओर रहने लगा ।

“साही सिन्धुदे ! यह तो तुम देना ही रहे हो कि बीरन-गृह में अब रहने जैसा ज्ञान नहीं रहा है—हालांकि बीबीर मे बीमारियों की कमी नहीं हुई है । तुम अनेकानेक देनों मे घुमे हो और नाया प्रकार के साधनेय तुमने देने है लेकिन फिर भी मुझे लज है कि जैसा इलाज आजकल बीबीर मे चरमस्थ लगीरों मे और वह भी छिपकर दिया जाता है—जैसा तुमने नहीं देना होता । हम इलाज मे न चारू की खरब पढ़ी है न भाग की न औषधियों की न पट्टियों की । मुझसे बिग्री मे यह मान करी है कि मैं मुझे ऐसा इलाज देने के लिए आर्मात्रिज बर्ष परन्तु मुझे पहले बचन देना होगा कि जो तुम देना उसे ग्रन्थ ही बना रहने दो और अन्दर जो समय, दिन स्थान पर ऐसा इलाज होगा है, अरनो जौने बँधवा जो जिनमे मार्ग मे तुम अनभिज्ञ रहे आधो—यदि मुझे यह सब स्वीकार है तो मेरा निमन्त्रण स्वीकार करो ।”

उसकी जौने मुनवर मे पहरा गया क्योंकि मुझे जराऊन के प्रति लवण दिखाई देने लगा फिर भी मेरी इच्छा हुई कि हम ग्रन्थ को जान लें । मैंने कहा : “मैंने भी गुना है कि आजकल बीबीर मे विभिन्न जौने हो रही है—पुनर बहानियां गुनाने है और स्थियों को इलाज होने लगे है— परन्तु इलाजो के बारे मे मैंने कुछ नहीं गुना है । लेकिन बीच होने के जाने मैं हम विचार के किन्तुन विरुद्ध हूँ कि बिना चारू, भाग, औषधियों और पट्टियों के भी इलाज हो सकता है—और इसीलिए मैं एमी प्रोग्रसी की मार्गो मे चलना ही नहीं चाहता कि आकर उन्हें देना और स्वयं भुँडा बहाऊँ ।”

“हमारा तो विचार था साही सिन्धुदे, कि तुम निष्पक्ष स्वभाव वाले हो ।” यह बोला : “क्योंकि तुमने देन-देन घुमे हैं और ऐसे-ऐसे इलाज निरन्तर रूप से देते होमे जिन्हें मिश्र मे कोई जानता भी नहीं है । जब चलता हुआ रक्त बिना बिमटी और गर्म सप्तानो के रोका जा सकता है तो भला बिना चारू या भाग के इलाज क्यों नहीं हो सकते ? और फिर हमने तुम्हारा नाम किन्तुल नहीं आवेगा । मुझे मे बचने के तो और भी

कारण हैं और तुम इतना विश्वास रखो कि तुम्हारे साथ किसी तरह का धोखा नहो हीगा।”

मेरी उत्कंठा बढ़ने लगी और मैंने स्वीकृति दे दी, अंदेरा होने के बावजूद मुझे मेरे घर कुर्सी पर बिठाकर ले चला। उसने मेरी आँखों पर एक कपड़े से बांध दी कि मैं भाग न पहचान सकूँ। फिर वह मुझे पैदल किसी इमारत के अन्दर ले चला। लम्बे-लम्बे दासानों और पेचीड़े भागों से सीड़ियाँ चढ़ते-उतरते वह मुझे ले जाने लगा। जब इस तरह का फीका लिये तो मैंने ऊब कर कहा कि उस मूर्खता से मैं परेशान आ गया था। उसने मुझे सांश्चना दी और मेरी आँखों की पट्टी वहीं खोल दी और फिर वह मुझे एक पर्यार के बने हुए बड़े कमरे में ले गया जहाँ अनेक दीपक जल रहे थे।

पृथ्वी पर तीन रोगी पालकियों में पड़े थे। एक पुजारी जिसका तिर घुटा हुआ था और जो तैल से चमक रहा था आया और उसने मेरा नाम लेकर मुझसे कहा कि मैं उन रोगियों की जाँच स्वयं कर लूँ कि बाद में उनका इलाज आसानी से न बहलाए। उसकी वाणी स्थिर और शांत थी और वह देखने से ही विद्वान् मालूम होता था।

मैंने रोगियों की जाँच की। तीनों रोगी पालकियों से नीचे उतरने के योग्य नहीं थे। उनमें से एक गृवती स्त्री थी जिसके हाथ-पैर सूख गए थे और जीव रहित थी। उसका मुँह भी सूखा हुआ था। दूसरा एक लड़का था जिसके सारे शरीर पर सतरनाक फोड़े-फुँसी हो रहे थे और कई स्थानों पर रक्त चमचमा रहा था। तीसरा एक बूढ़ा था जिसके पैरों की लकवा मार गया था, वह उन्हें हिला भी नहीं सकता था। उसकी ठग-धीप वास्तविक थी क्योंकि जब मैंने उसके मुँह चुभाई तो उमे पता ही नहीं चला।

मैंने अन्त में कहा :

“मैंने इन्हें पूरी जानकारी से देख लिया है। बूढ़ा और स्त्री का तो मैं कह सकता हूँ कि इनमें से एक भी जीवित नहीं रहेगा। लड़के का शायद बार-बार गन्धक के छल में स्नान कराने से कुछ बच जाय।”

चाहे वह गरीब है, चाहे दास; यहाँ तक कि परदेसी भी उसकी दृष्टि में एक से है। मेरा विचार है कि पहला चक्र अब समाप्त हो चुका है और अब ससार का दूसरा चक्र घूमने वाला है। शायद दुनिया को बदलकर मनुष्यों को बराबरी देने का यह अवसर सर्वोत्तम है।”

द्विहौर ने विरोध में हाथ ऊपर उठा दिए और मुस्कराकर कहा : ‘तुम तो दिन में भी स्वप्न देखने लगते हो सिन्धूहे ! हात्ती कि मैंने समझा था कि तुम समझदार आदमी होगे। मैं धायद तुमसे कम महत्वाकांक्षी हूँ। मैं तो केवल इतना चाहता हूँ कि जैसा या फिर वैसा ही हो जाय। इसी में मिश्र की शान है। मालिक, नौकर, दास जो अहाँ जन्मा है वहीं रहा भावे और गरीब को भर पेट अन्न मिल जाय। श्वाय में दण्ड का प्रयोग हो, अन्यथा व्यवस्था शोचनीय हो उठती है।”

फिर उसने मेरी बांह छूकर कहा :

“सिन्धूहे, तुम समझदार व्यक्ति हो। कम से कम यह तो खूब जानने हो कि इस नकली करारून का राज अधिक नहीं चलेगा। हम ऐसे समय से गुजर रहे हैं जब हर व्यक्ति को अपना ध्येय बनाना आवश्यक हो गया है। जो हमारे साथ नहीं है वह हमारा शत्रु है। फिर तुम्हारा अम्न में विश्वास रखने न रखने से भी हमारी और अम्न की कोई हानि नहीं है क्योंकि यदि तुम उसे न मानो तो भी वह सर्वशक्तिमान बना रह सकता है। परन्तु मिश्र पर यह अभिशाप जो आजकल छा रहा है, तुम उतार सकते हो। तुम्हारी इतनी शक्ति है सिन्धूहे ! कि तुम मिश्र को उसी पुरानी शान में वापिस ला सकते हो, हम यह जानते हैं।”

उसके शब्दों से मैं कुछ परेशान हो गया। मैंने और मदिरा पी और मैंने जबरदस्ती हँसने हुए कहा : “शायद तुम्हें किसी पागल कुत्ते या बिन्दू ने बाट खाया है जो तुम मुझे शक्तिशाली समझ बैठे हो। जबकि मैं ऐसा नहीं हूँ जो तुम्हारे सम्मान इलाज भी नहीं कर सकता।”

वह उठा फिर बोला :

“चलो मैं तुम्हें कुछ दिखसा दूँ।”

और वह दीप लेकर वह मुझे एक रास्ते की तरफ ले चला। आगे

... उसने कई ताने गीये और फिर हम एक बड़े बरत में घुम गए।

मैंने देखा वहाँ सोना, चाँदी और जवाहरात बिने रखे थे जिन पर प्रकाश जब पड़ा तो वह चमचमा उठे, उसने कहा:

“यबराओ मत—मैं तुम्हें सोने से बलवाने नहीं आया हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ तुम्हारी दृष्टि में यह धूल है—फिर भी यह देश लेने में तो तुम्हारा कोई हर्ज है ही नहीं कि अम्मन अब भी फराऊन से अधिक धनवान है—मैं तुम्हें अब कुछ और ही दिखाऊँगा—”

उसने सामने का एक और भारी तबि का द्वार खोल दिया, अन्दर जाकर मैंने देखा—

एक पत्थर की चौकी पर एक मोम की मूर्ति सिर पर दुहरा ताज पहने सेटी हुई थी जिसको छाती और बनपटियों में हड्डी की कौलें ठूक रही थी। स्वतः मेरे दोनों हाथ ऊपर उठ गए और मेरे मुँह से वह मन्त्र निकलने लगे जो मैंने प्रथम श्रेणी के पुजारी बनते समय जादू-टोने से बचने के लिये सीखे थे। हिहीर ने मुझे मुस्कराकर देखा और उसके स्थिर हाथों में दीप तनिक भी नहीं हिला।

वह बोला : “क्या अब भी तुम्हें विश्वास है कि नकली फराऊन अधिक जी सकेगा ? हमने इस मूर्ति पर जादू कर दिया है और इसके हृदय और मस्तिष्क में पवित्र मुईयाँ घुसा दी हैं—फिर भी हमारे जादू का असर धीरे-धीरे हो रहा है और अभी बहुत गड़बड़ियाँ होनी बाकी हैं। इसके अतिरिक्त उसका देवता भी उसकी चौड़ी-बहुत रक्षा कर रहा है—”

द्वार बन्द करके वह मुझे फिर अपने कमरे में ले आया और उसने मेरा प्याला फिर मदिरा से भर दिया—मेरा प्याला मेरे हाथ में हिलने लगा—मदिरा मेरी ठोड़ी पर छसक आई और प्याले का किनारा मेरे दाँतों से बजने लगा—मैंने ऐसा मयानक जादू यात्र तक कही नहीं देखा था।

उसने कहा : “हमने फराऊन के केश और नाखून कैसे मँगा कर इस मूर्ति में लगाये हैं यह हमसे न पूछो—इतना मैं बताये देता हूँ कि यह सुवर्ण के बदले में नहीं लाये गए हैं—बल्कि अम्मन के नाम पर पाये हैं—जो भी हो अब तो तुम समझ ही गए होंगे कि अम्मन की शक्ति फराऊन एज़नेटोन की शक्ति से अधिक है।”

फिर वह आँखें अघमूंदी करके मुझे गौर से देखने हुए बोला : “उन

बीमारों को तुमने अम्मन के नाम पर अच्छा होने देखा है और इसी तरह उसकी शक्ति दिनों-दिन बढ़ रही है क़राऊन जितना ज्यादा बिपेगा उसनी ही कठिनाइयाँ लोगों को अधिकाधिक रूप से भेजनी पड़ेंगी—क्योंकि जादू का अगर घीमा है। ...सिम्यूहे ! यदि मैं तुम्हें एक ऐसी औषधि दूँ कि जिसे तुम क़राऊन को उसकी सिर की पीड़ा होने समय पिला दो, जिससे फिर कभी पीड़ा रहे ही नहीं तो ?”

“आदमी और पीड़ा का तो माप है,” मैंने सब कुछ समझकर भी नासमझ बनने हुए उत्तर दिया, “और मरे हुए को ही पीड़ा नहीं होती।”

उसकी जलती आँखें मुझपर गड़ गई और मैंने अनुभव किया कि उसकी प्रबल आत्मशक्ति ने मुझ पर अपना असर कर दिया था—क्योंकि भय में जहाँ बैठा था वही अकड़ गया—हाथ-पैर भी न हिला सबा—उसने धीरे से कहा : ‘यह सच है—पर इस दवाई से बाद में कुछ पता नहीं चलता—किसी को तुम पर शक नहीं हो सकेगा, यहाँ तक कि शरीर में मसाले भरने वाले भी इसका पता न लगा सकेंगे—बस उसे तुम किसी तरह इसे पिला दो और वह फिर सोकर कभी न उठेगा—उसे न कोई कष्ट होगा न पीडा सब कुछ शांतिपूर्वक हो जायेगा।’

और इससे पहले कि मैं बोलूँ उसने हाथ उठा दिये और फिर कहने लगा :

“मैं तुम्हें सुवर्ण का लोभ नहीं देता—पर इतना अवश्य कहता हूँ कि यदि तुमने यह काम कर दिया तो तुम्हारा नाम शाश्वत काल तक प्रश्रय माना जायेगा—तुम्हारा शरीर भी कभी नष्ट नहीं होगा—अदृश्य हाथ तुम्हारी रक्षा करेंगे और कोई भी ऐसी मानवीय इच्छा नहीं रहेगी जो तुम चाहो और पूरी न हो—यह मैं तुम्हें देता हूँ क्योंकि यह सब मेरे अधिकार में है।”

उसने अपने हाथ उठा दिये । उसकी जलती हुई आँखें मुझे घूर रही थीं और मैं चाहकर भी उनसे अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा था । मैं अपने हाथ हिला भी नहीं सकता था—वह बोला :

‘यदि मैं कहूँ ‘उठो’ तो तुम उठ बैठोगे, यदि मैं कहूँ ‘हाथ उठाओ’ तो तुम्हें उन्हें उठाना पड़ जायेगा । परन्तु मैं तुम्हें तुम्हारी इच्छा के बिना

अम्भन के सम्मुख झुका नहीं सकता और न तुम्हें ऐसे कामों को करने के लिए मजबूर कर सकता हूँ जिन्हें तुम्हारा दिल न माने—यस यही मेरी शक्ति समाप्त हो जाती है। सिन्धूदे, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मिश्र के लिए हम ओषधि को उसे पिला दो और उसके सिर को पीड़ा को सदा के लिए शांत कर दो।”

उसने अपने हाथ नीचे गिरा दिये और अब मैंने देखा कि मैं अपने हाथ-पैर हिला-डुला सकता था। अब मैं काँप भी नहीं रहा था। उसकी मदिरा की घुण्ण एक बार फिर मुझे अनुभव होने लग गई थी। और मैंने कहा : “द्विहौर, मैं तुमसे किसी प्रकार का वचन नहीं लेता लेकिन इस दर्द मिटाने वाली ओषधि को मुझे दे दो क्योंकि शायद वह पोपी के रस से अधिक उत्तम हो—और शायद कोई ऐसा समय आ जाय जब फराऊन स्वयं इसे पीकर सदा के लिए सो जाना चाहे।”

उसने मुझे वह ओषधि एक रंगीन बोली में दे दी और कहा : “मिस्र का भविष्य तुम्हारे हाथ में है सिन्धूदे! वह ठीक नहीं मालूम होगा कि फराऊन के ऊपर किसी का हाथ उठ जाय—परन्तु बोली में कुछ इतना अधिक बढ़ गया है कि शायद वह सोचने लग जड़ें कि फराऊन भी मृत्यु से घरे नहीं है और किसी का चाकू उसके वक्ष में घुस कर उसका रक्त बाहर निकाल लाय। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे फिर भविष्य में फराऊन की शक्ति कम हो जायेगी—मिस्र का भविष्य तुम्हारे हाथ में है सिन्धूदे।”

मैंने शीघ्री अपनी पेट्टी के नीचे छिपाते हुए व्यंग्य से कहा : “जिस दिन मेरा जन्म हुआ था उस दिन मिस्र का भविष्य जिन्हीं उंगलियों में खेल रहा था जब वह सरकंदों के बीच सूत्र की गाँठें लगा रही थी। द्विहौर—ऐसी-ऐसी बातें हैं जिन्हें तुम जान भी नहीं सकते—हालांकि तुम अपने मन में अपने आपको सर्वशक्तिमान समझते हो। मैंने ओषधि ले ली है—वर याद रखो—मैं कोई वचन नहीं देता।”

वह भुस्कराया, उसने विपदाई में अपने हाथ उठा दिये और रीति के अनुसार कहा : “बहुत होया तुम्हारा पारितोषक !”

फिर मेरी बाँझें बांधकर मुझे बाहर छोड़ दिया गया। इतना मैं कह

सकता हूँ कि वह तैलाने अम्मन के मन्दिर के नीचे थे—परन्तु इससे अधिक उनमें घुसने की विधि और मार्ग मैं नहीं बतला सकता—क्योंकि वह मेरा अपना भेद नहीं है।

6789

कुछ दिन बाद राजमाता लाया की सौप के काटने से मृत्यु हो गई। जब मैंने जाकर देखा तो वह मर चुकी थी। काटने समय उसके अपने बँधों में से वहाँ एक भी मौजूद नहीं था।

रीति के अनुसार मुझे उसके शव के पास तब तक बैठना था जब तक कि 'भूतक-गृह' से सोम आकर उसे न ले जाने और सभी मेरी मुठमेड वहाँ पुजारी 'आई' से हो गई। उसने राजमाता के सूने हुए शानों को छुआ वहाँ :

“यह ठीक समय पर मर गई—क्योंकि यह एक शुभिन बुद्धिवा थी जो मेरे विरुद्ध पदच्युत करने लगी थी। इसकी अपनी करनी ही रही। बँटी—मेरा विश्वास है कि अब जबकि यह मर चुकी है, सोपों में अशानि फैली हुई है वह दब जायेगी।”

पुजारी 'आई' ने ही उसकी हत्या की थी। ऐसा मेरा विश्वास नहीं है क्योंकि दकदूटे किये हुए दुर्म और एक-दुमरे के जाने हुए भेद सिंगी बर्र श्रम से ज्यादा खोरदार होने हैं।

जब मारे धीवित्र में यह समाचार फैला तो जैसे लुभी की एक तरह फैल गई। सोपों ने अपने उत्तम वस्त्र पहनकर सड़को और बीराहों पर भीड़ लगा भी और ध्यान मनाते लगे। उनको लुग करने और भगनी ओर करने के लिए पुजारी 'आई' ने रानीजाया की हम्मिन जादूगर्नियों को बोड़े लपकाकर मुखर्न-गुर् के तैलानों से बाहर निकलवा दिया। वह चार की ओर एक ओर बहुत ही मोटी और कुछ जादूगर्नी भी उनके साथ थी जो दरिगाई बोड़े जैसी लगती थी। पहरेदारों ने उन्हें दरिगाईन द्वार में जब मारकर बाहर निकाला तो भीड़ उन पर दूट पड़ी और उनके उन्होंने दूकड़े-दूकड़े कर दिये। उनकी लमाम जादूगर्नी भी उन्हें बोड़े बसा गयी। 'आई' ने उनकी लमाम और धिपी, जड़ी-बूटिजी सब जददा की

जिनका मुँह पर बड़ा खेद बना रहा क्योंकि मैं उनकी परस व रना चाहता था ।

महल में रानी की मृत्यु और उन जादूगरनियों के भाग्य पर रोने वाला कोई नहीं था । केवल राजकुमारी ब्रैकेटेटोन ने अपनी माता के शरीर के पास आकर अपने सुन्दर हाथ उसके काले हाथों पर रखे और कहा : "मैं तुम्हारे पति ने सुरा किया कि तुम्हारी जादूगरनियों को लोगों के हाथों पूरी मौत मरवा दिया ।" उसने मुझसे कहा :

"यह जादूगरनियाँ तनिक भी कुरी नहीं थी—यह यहाँ अपनी इच्छा से रहना भी नहीं चाहती थी बल्कि जगल में अपनी कुँव की सौंपड़ियों को लौट जाना चाहती थी । मेरी माता के घुरे कर्मों के लिए इन्हें इस भाँति बड़ नहीं मिलना चाहिए था ।"

मैंने देखा वह मुन्दरी थी । जिसके व्यक्तित्व में ही वीर्य प्रतीत होना था । उसने हौरेमहेब के घारे में मुँह सिरोङ्ककर कहा :

"यह नीच जन्म का मनुष्य है—उसकी बोली रुसी है परन्तु यदि वह विवाह कर ले तो निश्चय ही एक कबीला खड़ा कर दे । बता सकते हो सिन्ग्रुहे, उसने विवाह क्यों नहीं किया ?"

मैंने उत्तर दिया : "शाही ब्रैकेटेटोन, इस प्रश्न को पूछने वाली केवल तुम ही नहीं हो, परन्तु तुम्हारी सुन्दरता को ध्यान में रखकर मैं केवल यह बात तुम्हें ही बत रहा हूँ क्योंकि हमें अन्य किसी को बताने का साहस मैंने अब तक नहीं किया है । जब सड़वा हौरेमहेब पहले-पहले सुवर्ण-गृह में आया था तो उसने चाँद को देखा लिया था और वग तभी से वह उस पर मर भिटा और फिर वह किसी भी स्त्री के साथ घटा पोटने में अग्र-मर्ध हो गया । तुम्हें क्या लगता है राजकुमारी ? कोई पेड़ मदा फूलना नहीं रहता—उसे कभी न कभी तो फलना ही पड़ना है - वैसे ही मैंने के माने मैं जो तुम्हारे उदर में गर्भ फलना देगकर सन्तोष पाना चाहता हूँ ।"

उसने गर्व से अपना सिर उठाकर कहा :

"तुम तो जानते हो सिन्ग्रुहे, कि मेरा रक्त अजन्म पवित्र और मृदु है—उसमें तो यह होगा कि मेरा चाई मुझसे विवाह कर लेगा जैसे कि होगा आया है । यदि मेरी आज्ञा बल लागू तो हम हौरेमहेब की तो मैं

आँखें निकलवा लूँ—मुझसे जो उसने प्रेम करने की हिम्मत की है तो उसकी यही गति होनी चाहिए। अब तो सब बात यह है कि मुझे पुरुषों से घृणा-सी हो गई है। उनका स्पर्श ही कितना कटोर होता है और फिर उनसे प्राप्त आनन्द का बहुत बड़ा-चड़ा कर ही वर्णन किया गया है।”

परन्तु मैंने देखा उसकी आँखों में एक विचित्र उत्तेजना आ गई थी और उसकी साँसें भी भारी हो गई थी। यह देखकर कि ऐसी बातों से उसको मजा आता है मैंने और खेड़ा : “मेरे मित्र हौरेमहेव को मैंने बाँह पर तबिये के कड़े को तोड़ते देखा है। उसकी भुजाएँ लची हैं और जब वह श्रोत्र में अपने सीने पर भुट्टी मारता है तो मीना मृदंग की भाँति बजता है। बरबारी स्त्रियाँ उसके पीछे बिल्बियों की भाँति लगी रहती हैं और वह स्वेच्छा से उन्हें ग्रहण कर सकता है।”

राजकुमारी बँकेटैटोन ने मुझे घूर कर देखा। उसका रँपा हुआ मुँह कुछ काँपा और उसकी आँखों में चमक आ गई और वह गुस्से में कहने लगी : “सिग्यूहे, तुम्हारी बात मुझे कड़वी लगती है—मेरी समझ में नहीं आता कि तुम इस घृणित हौरेमहेव का वर्णन मेरे सामने क्यों करने हो ? और फिर मुझे के सामने ऐसी बातें करने से क्या लाभ ?”

मैंने उससे यह नहीं कहा कि हौरेमहेव का जिक्र तो उसने स्वयं ही किया था बल्कि समा भाँग ली फिर कहा :

‘हे राजकुमारी ! मैं तो यही चाहूँगा कि तुम सदा फलने-फूलने वाली सुन्दरी बनी रहो—और क्या तुम्हारी माँ के पास एक भी ऐसी विदवस्त स्त्री नहीं थी जो इस समय यहीं बैठकर रो सके ?। कम-से-कम उस समय तक तो यहाँ किसी को रोना ही चाहिए जब तक कि मृतक-गृह से लोग शरीर लेने न आ जाएँ ? रोने को तो मैं भी रो सकता हूँ पर मैं तो बैस हूँ जिसके आँसू मृत्यु के निरन्तर साव रहने से सूख गए हैं—जीवन एक गर्म दिन है जबकि मृत्यु ठंडी रात है—और बँकेटैटोन, जीवन उबल पानी की झील है जबकि मृत्यु गहरा झुंड जल है।”

उसने कहा : “मुझसे मृत्यु के बारे में बात न करो सिग्यूहे, क्योंकि अभी जीवन मुझे अच्छा लगता है—यह सब ही अमनाक है कि मेरी माता के पाम कोई रोने वाला नहीं है। मैं स्वयं तो भला किम प्रकार रो सकती

हूँ क्योंकि यह मेरी भाव के विषय है। परन्तु मैं अभी निजी दरबार की स्त्री को भेज देती हूँ कि वह आकर यहाँ रोने बैठ जाय।”

और मुझे उपहास मूझने लगा। मैंने कहा :

“देवी बँकेट्टोन, तुम्हारे सौन्दर्य ने मुझे बेहाल कर दिया है और तुम्हारी मधुर वाणी ने मेरे मन की आग में तेल डाल दिया है। किसी बुद्धिवादी को यहाँ भेजना जिससे मैं उसे धुमिलाने का प्रयत्न न करूँ—और इस शोक-गूह को बदनाम न करूँ।”

उसने मुझे देखकर मुझे से स्तिर हिलाया फिर कहा :

“सिम्पूहे, सिम्पूहे—क्या तुम्हें पता भी धर्म नहीं आती? यदि तुम देवताओं से भी नहीं डरते, अतःकि लोग तुम्हारे बारे में कहने हैं—तो कम से कम मृत्यु से लो डरो।”

यह स्त्री थी और उसे मेरी इस प्रहार की जाने कुरी नहीं लगी—और वह दरबारी स्त्री माने जानी गई।

और जब शोक में रोने वाली आई तो उसे देखकर मैं चौंक गया। क्योंकि वह मेरी भावनाओं से भी अधिक दुःख और दुर्द्वी थी। अब भी हरम में लाया के पति पराजित महान् की स्थिति रहती थी। वहाँ पराजित एम्पेटोन की भी अनेक स्थिति और घायलों की कमी नहीं थी। इस स्त्री का नाम जो रोने आई थी मेज़नकर था। उसे देखकर ही पता चलता था कि उसे पुरखों और मंदिरों से अत्यन्त प्रेम था। जाने ही उसने बायदे के अनुसार आज सोलकर रोना शुरू कर दिया। परन्तु बोड़ी देर बाद ही उसने मेरी ही हुई मंदिरों को पीना स्वीकार कर लिया। फिर मैंने उसे बानो-बातों में ही देखा शुरू कर दिया और उसके स्पर्श की योजना और सौंदर्य का मैं मुग्धमान करने लगा। फिर मैंने उससे पराजित एम्पेटोन की अधिपति का वर्णन किया और अन्त में भोजन बनकर पूछा

“क्या यह सत्य है कि मुझे हुए पराजित की विधियों की स्त्री के माध्यामी लाया के अतिरिक्त, कुछ उत्पन्न नहीं हुआ?”

उसने मृदुल भाव की ओर तिरछी तरफ से देखा फिर मेरी तरफ गिरते-हिलाते जैसे चुप रहने का मकसद कर रही हो। परन्तु मैंने फिर उसकी स्तुति प्रारम्भ कर दी और अधिक मंदिरों उसे दिखाई। वह अब रोना शुरू

कर मेरी बातों में आनन्द लेने लगी। स्त्रियों को ऐसी बातें प्रायः अच्छी लगा करती हैं और विशेषकर यदि वह बूढ़ा और कुर्बू है तो और भी अधिक यह बातें सुनाती हैं। और हम मित्र बन गए।

जब मृतक-गृह से लोग आकर मृतक ताया के शरीर को उठा ले गए तो वह मुझे अपने कक्ष में लिवा ले गई।

वहाँ मैंने बातों-ही-बातों में सब कुछ उसके मुख में उगलवा लिया कि साम्राज्यी ताया किस प्रकार नवजात शिशुओं को सरकड़ों की नावों में रख कर नील में बहा दिया करती थी। उसी के द्वारा मुझे मेरे जन्म के बारे में भी पता चला और उसके द्वारा बताये हुए समय के अनुसार मैं भी कराऊन का ही पुत्र था जो कराऊन एचनैटोन से कुछ ही महीने पहले पैदा होकर ताया द्वारा बहा दिया गया था क्योंकि मैं किसी अन्य रानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। मेरा हृदय यह सुनकर मानो जम गया और मैं किंकर्तव्य-विमूढ़ सा रह गया। इस बीच मेहनेफर उत्तेजित हो उठी थी और उसने बहक कर कई बार मेरा आलिंगन कर लेना चाहा था परन्तु मैंने उसे किसी-न-किसी बहाने से अपने से दूर रखा। पर जब हृद हो गई और मुझसे लिपटने पर तुल गई, मेरे गालों पर हाथ फेरने लगी और जंघाओं में सिर घुसाने लगी तो मैंने उसे चुपचाप मदिरा में पौपी-रस पिना कर बेहोश कर दिया। फिर मैं वहाँ से उठकर चल दिया। जब मैं बाहर निकला तो रात हो चुकी थी और पहरेदारों व गीहरों ने जब मुझे देखा तो आपस में कुहनी चला कर कनसियों में हँसने लगे। मेरी समझ में उस समय कुछ नहीं आया कि वह ऐसा क्यों कर रहे थे।

घर पर मरिच और मुती मेरी प्रतीक्षा कर रही थी, जब मैं पहुँचा उन दोनों ने मुझे देखते ही अपने हाथ उठाकर अपने मुँह पर लगा दिए और एक दूसरी की ओर देखा—

फिर मुती ने मरिच से कहा :

“क्या मैंने तुमसे हजारों बार नहीं कहा है कि पुरुष सब एक ही हैं और कि इनका धरोसा नहीं करना चाहिये ?”

लेकिन मैं यका हुआ था और अकेला रहना चाहता था क्योंकि अपने जन्म के बारे में जो रहस्य मुझे पता चला था वह मेरे हृदय को साये ॥

रहा था। मैंने गुस्से से कहा, “अकबक मुझे बिल्कुल सहन नहीं होती—मैं थक गया हूँ।”

और तब मैरिट की आँखें कठोर हो गईं और उसने कोय-बुलत होकर मेरे सामने चाँदी का दर्पण लाकर रखकर कहा, “अपने आपको देखो तो सिंगूहे कि कैसे लग रहे हो—वैसे मैंने तुम्हें किसी भी स्त्री से गपक रखने के लिए कभी मना तो किया नहीं है परन्तु तुम्हें कम-से-कम ऐसी बातें छिपाकर तो रखनी ही चाहिए जिससे मेरा दिल तो न दुखे। आज तो तुम झूठ बोल भी नहीं सकते कि तुम अकेले रहे रज में डूबे रहे और उदास रहे।”

मैंने जो दर्पण देखा तो चौंक गया क्योंकि मेरे चेहरे पर वस्त्रों पर मेहनेफर के मुल का रंग लगा हुआ था। मेरे गालों पर उसके होठों का लाल रंग लग रहा था—कनपटियाँ, गर्दन सभी चिकनी और रंगीन हो रही थी। मैं ताऊन का सताया हुआ सा लग रहा था—मैं धुरी तरह भेंप गया और तुरन्त मैं अपना चेहरा साफ करने चल दिया और मैरिट तब भी दयाहीन होकर मुझे दर्पण दिखा रही थी।

जब मैंने मुँह धो लिया और तैल लगा लिया तो कहा, “तुमको सारी बातों में गलतफहमी हो गई है प्यारी मैरिट मुझे सफाई तो दे लेने दो।”

उसने कठोर दृष्टि से मेरी ओर देखकर जतर दिया, “सफाई की कोई जरूरत नहीं है सिंगूहे और फिर अब मैं तुम्हारे होठों को झूठ से भरना नहीं चाहती।”

मैंने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया पर सब व्यर्थ। मुसी मुँह डेंककर रोती रही और बारबार घुणा से घूँकती रही। मैंने मेहनेफर से बच निकलने में जिन आपत्तियों का सामना किया था उनसे कहीं अधिक मुझे अब करना पड़ रहा था।

मैंने अब मैरिट की ओर हाथ बढ़ाकर उसे समझाना चाहा तो उसने बड़े स्वर से मुझे झिड़क दिया और कहा :

“अपने हाथ अलग रखो—सिंगूहे ! मुझे नहीं मालूम था कि तुम्हारे हृदय में इतनी खदकें हैं जहाँ गुम अपने रहस्यों को छिपाकर रखते हो। महलों में तो तुम्हें मेरी चटाई से भी नभं चटाईयाँ और मुझे ये भी जवान

ओरने मिली होगी—फिर तुम्हें मेरी क्या परवाह ?”

मैं 'मगर की पूँछ' चला आया। मैरिट ने मेरे साथ जाने से इन्कार कर दिया। रात को जब मैं घर लौटकर सोया तो मुझे नींद नहीं आई—जल घड़ी से जल बहता रहा—निरंतर अटूट धारा में और मुझे लगा कि मैं स्वयं से भी जाने कितनी दूर पहुँच गया था। और मैंने अपने हृदय से कहा :

‘मैं सिन्यूटे हूँ—जैसा मैंने किया है वैसा भोगा है—मैंने अपने माता-पिता को बुरी मौत मर जाने दिया है—यह भी एक निर्दयी स्त्री के साथ रमण करने के लिये !—मैंने यह धुनिन कार्य क्यों किया। मेरे पास मीनिया का चाँदी का पीता अब भी है—मीनिया मेरी प्यारी थी और मैंने उसे उस भीमजाम जलु के पास जल में तड़क देता है जहाँ उसके कोमल मुँह को समुद्री बेंबड़े बुरेदजर खा लेंगे। क्यों हूँ मैं फिर भी जीवित ? शामद यह सब मेरे जन्म से पूर्व ही निश्चित हो चुका था—कि मैं समाज में जीवन भर अपरिचित के रूप में ही रहा जाऊँ।”

भोर में झुपें अपने सुवर्ण रथ में बैठकर पूर्वी पहाड़ियों के पीछे से निकला और तब मैं हँस उठा। कैसा विचित्र होना है मनुष्य का हृदय कि झुपें के प्रकाश के अभाव में भील और निराश हो जाता है और अब वह उसे पा लेता है तो उसे स्वयं अपने भाग्य पर तथा अपने विचारों पर हँसी आती है।

महा धोकर मैंने नये वस्त्र पहिने और नव मुनी ने मुझे, महिला और ममकीन मछलियाँ लाने को दी। गण-अन गोद में उनकी भीमों मृत गई थी।

फिर मैंने एक कुर्मी किगने घर की और जीवनमृत की ओर बना दिया। मेरे मृत्यु के सामने होकर एक बिस्मया उपहार लावने एटीन के मदिरा को और उर गई और मैंने उनका अनुसरण किया। यही अनेक व्यक्तित्व उन्मयन के और पुष्पांगी सोम एटीन का लालच और क्राउन के लहर का वर्चन कर गये थे।

हर लक्ष में यही यही हुई मृत्तिका का अवलोकन करना रहा। यह प्रियन्धी की लक्ष्मणी की भी मृत्ति की ईश्वर के लक्ष्य के अन्त में दिख रहा

किननी सुंदर थी वह—तो क्या मैं इसी का पुत्र हूँ ? मैंने स्वयं से पूछा पर दिलने यह बात नहीं मानी । परन्तु यह सत्य था और मैं इसे जानना था । किननी रोई होगी बेचारी होज मे आने के बाद जब उसने मुझे अपनी बरस में ढही पाया होना— ओफ ! किननी हत्थारी थी तापा ओ उसने माँ में बच्चा छुदा कर नील में बहा दिया था । और मैं देर तक उस मूर्ति सम्मुख सदा रहा—और मुझे मितन्नी की बातें—वहाँ के लोगो, के वहाँ के सजान-धूल भरी राइके सब याद आनी रही ।

नाम को मैं 'मगर की पूछ' पहुँचा तो मैरिट ने मेरा स्वागत ठीक उस प्रकार किया जैसे किसी अपरिचित से करती हो—जब मैंने ला-वी लिया तो उसने पूछा, "अपनी प्यारी से मिल लिये ?"

मैंने बिड़कर उत्तर दिया "मैं औरतों के पीछे नहीं गया था बल्कि जीवन-गृह में काम करने गया था और एटीन के मंदिर में भी गया था"—और अपनी सफाई में मैंने उस दिन गुजरी हुई छोटी-से-छोटी बात भी उसे कह सुनाई । पर वह पूरे समय मुझे देखकर स्वयं में मुग्धरागी रही । फिर बोली—

"मैंने एक क्षण के लिए भी यह नहीं सोचा था कि तुम किनी स्त्री के पीछे गए होगे क्योंकि रात ही तुम इनने बच गए थे कि आज तुम किनी योग्य नहीं रहे—गर्भ और पुंसपुंस ओ हो तुम, मैंने तो बेवत यह कहना चाहा था कि तुम्हारी प्यारी—कन रात वाली मुझे यहाँ दूँडनी हुई आई थी—मैंने उसे जीवन-गृह में गभी भेज दिया था ।"

मुत्ने ही मैं इनकी ओर से चौंकर उठा कि मेरी कुर्मी ओछी हो गई और मैं बिलसाया, "कहा बकती है मुर्न स्त्री ?"

"यह वहाँ मुझे गुलामी हुई आई थी—बिरिया तो सजी हुई—बमर हार रम्भो में मुग्धगिर और अन्दर जैसी रही पुनी—उमके-अग-सेग और उमके मैत की तो जैस नहीं तक छार बट रही थी—यह मुद्दारे लिए एक पत्र छोड़ गई है और सबाद छोड़ गई है कि तुम उसने हा हाजि में मिलो ओ कुछ भी हो वहाँ तो उसे मर जाना क्योंकि यह एक म भान प्येकिनों के आने का स्थान है और वह सगनी है रोटी बेचने वाली—"

और फिर उसने मेरे हाव में एक बिना कुरार सदा गुना पत्र पत्रा

दिया। मैंने उसे काँपते हाथों से धोला और जब उम्र बढ़ा तो मेरी वन-पटियों में रक्त भन्नाने लगा और मेरा सिर चकरा गया।

उसने एक प्रेमपत्र लिखा था—बिसमें इतनी वैशमी से मेरी चाहूता की थी कि मैं स्वयं उसे पढ़कर तन्त्रित हो उठा। लिखा था कि वह घर-घर मुझे दूबती फिरी थी और मुझे बुलाया था—कि मैं चिटिया की भाँति उसके पास उड़ा चला जाऊँ। घमकी भी थी कि यदि मैं उसके पास न गया तो वह और भी तेजी से मेरे पास उड़ी चली आवेगी।

मैंने धबकाकर उसे कई बार पढ़ा और मेरा माहस एक बार भी मैरिट से आँख मिलाने का न हुआ। जन्त में उसने वह मेरे हाथ से छीन लिया। उसका डंडा तोड़ दिया जिस पर वह लिपटा हुआ था और उसे टुकड़े-टुकड़े करके पैंरो से रूँध दिया फिर गुप्से से कहा :

“यदि वह सुंदरी और जवान होती तब भी सिंगपूहे, मैं तुम्हें क्षमा कर सकती थी परन्तु वह बुढ़ी है—उसके शरीर और चेहरे पर झुरियाँ पड़ रही हैं—मुझे तुम पर शर्म आती है।”

मैंने अपना सिर पीट लिया, कपड़े फाड़ डाले धीर बाल नोंच डाले और मैं चिल्लाया, “मैरिट मैंने भारी भूल की है—जल्दी मेरे नाविकों को बुलाओ कि मैं धीवीज से भाग जाऊँ इससे पहले कि वह चुईस मुझे घेरने का प्रयत्न करे—ओफो वह कबस्त लिखती है कि वह चिटिया की भाँति उड़ी चली आवेगी—मैंने उससे बात की यही क्या कम घुलती हुई है।”

मैरिट ने मेरा भय देखा तो हँस पड़ी फिर चोट करती हुई बोनी :

“इससे तुम्हें सबक तो मिल जायेगा मेरे प्यारे सिंगपूहे !” फिर वह हँसती हुई और कहने लगी, “अच्छा ही तो है—वह मुझ से दुगनी उम्र की है तो तुम्हें उसके साथ दुगना ही आनन्द आना होगा—आखिर वह प्रेम के सभी क्षणों में दस तो होगी ही—फिर भला मैं तुम्हें क्यों पगन्द आने लगी ?”

और तब मुझे इतना अधिक दुःख हुआ कि मैं उठकर घर चल दिया और मैरिट को भी बलपूर्वक पकड़ लाया। घर आकर मैंने उसे मारा चित्सा वह सुनाया कि किस प्रकार मैंने अपने जन्म के बारे में जानने के लिए ही “००” से खाने की थी—कि मैं मितन्नी की राजकुमारी—साम्राज्ञी

तादूखोपा का पुत्र था जिसे ताया ने नील में बहा दिया था—

मुनकर उसका व्यंग्य समाप्त हो गया और वह गम्भीर हो गई और फिर उसने मेरे कंधों पर हाथ रख दिये ।

फिर उसने प्यार से कहा :

“अब मेरी समझ में आई है सारी पहली—और कि क्या तुम्हारा एकाकीपन तुम्हारा दुःख मुझे पिघलाया करता था जब मैं तुम्हारी आँखों में साँकड़ देखनी थी—परन्तु मैं आज बहुत ही खुश हूँ कि तुमने मुझे अपना रहस्य बतला दिया है—मैं भी तुम्हें किसी दिन अपना रहस्य बतलाऊँगी—”

मुझे उसके रहस्य को जानने की सालसा हुई परन्तु उसने फिर मुँह ही नहीं खोला । वह मेरे गालों को अपने नर्म होठों से दबाती हुई और मुझे अपनी गोमल भुजाओं में लेकर वह रोने लगी ।

दूसरी सुबह मेरी आजा से मुनी मेरा सामान बाँधने लगी—मैं मैहूनेकर के भय से धीबीब छोड़कर एलनट्रीन जा रहा था—मैंने एक पत्र मैहूनेकर को भी लिख दिया और उसे एक दास की देकर मैंने कहा : “जब मैं नाव में बैठकर चला जाऊँ तत्पश्चात् इसे जाकर मुवर्ष—मूह में मैहूनेकर नाम की स्त्री को दे देना ।”

मैरिट ने मुझसे पूछा : “क्या तुम्हें बच्चे से प्रेम है ?” मुनकर मैं कुछ बकरा गया तो वह मुस्कराकर दुसद स्वर से बोली : “करने क्यों हो ? तुम्हारा गर्भ धारण करने का मेरा कोई विचार नहीं है—परन्तु मेरी एक मित्र है जिसका एक बार वर्ष का बच्चा है और वह पाहनी ॥ कि उसका बच्चा जहाज पर यात्रा करे—वह दोनों ओर हरे पैदान, जुने सेन, जलचरी और गुप्त बानाबरण का अनुभव कर सके—वही धीबीब में तो वह कुत्ता और घूत से परेशान भी हो गया है ।”

मुनकर मैं परेशान हो गया : फिर बोला :

“लेकिन उसके रहने में तो मेरी सारी पानि ही सोप हो जायेगी । मेरा तो बनेजा मुँह को आ जाता है जब मैं सोचता हूँ कि वही वह मगर के मुँह में हाथ न दे दे या वही नदी में हो न जा पड़े—आखिर मैं उसे कर सक सम्भालूँगा ?”

वह मुस्कराई पर उसकी उदासी बढ़ गई फिर बोली :

“यदि ऐसा है तो रहने दो—मैंने तो इसलिए कहा था कि बच्चे के लिए यह यात्रा सुखकर होगी। मुझ से वह काफ़ी हिला हुआ है यहाँ तक कि मैं ही उसका खतना कराने से गई थी—मैंने सोचा था कि मैं उसे लेकर तुम्हारे साथ चली चसनी कि इस बात की भी देखरेख कर लेती कि मगर के मुँह में हाथ न डाल दे या पानी में न खुदक जाय और फिर तुम्हारे साथ जाने का मुझे एक बहाना भी मिल जाता—पर धीरे अब रहने दो—तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध मैं कुछ भी नहीं करूँगी।”

मुनते ही मैंने हँसे से ताली बजाई और कहा :

“आज का दिन सचमुच ही शुभ है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम एलनटोन की मेरी इस उदास यात्रा में इस प्रकार आनन्द ला सकोगी। सचमुच इस तरह बच्चे को साथ लाकर तुम्हारे नाम पर कोई उँगली भी नहीं उठा सकेगा।”

“बिल्कुल यही,” वह भुँसलाकर परन्तु मुस्कराती हुई बोली। प्रत्यक्ष था कि वह इन मामलों में पुरखों की मूर्खता पर हँस रही थी। फिर बोली : “बच्चे को साथ लाकर मेरी बदनामी नहीं होगी? ओह! पुरख जितने मूर्ख होते हैं! फिर भी चलो तुम्हें माफ़ किया।”

दूसरी भोर सूर्योदय से पहले ही हम जहाज में सवार होकर चल दिये क्योंकि डर था कि कहीं मेहनेफर आकर देर ले। मैरिट बच्चे को कम्बलों में लपेट कर ले आई जो सो रहा था। उसकी माँ साथ नहीं आई थी। मुझे बच्चे का नाम सुनकर आश्चर्य हुआ क्योंकि कोई भी देवता का नाम अपने बच्चों का नहीं रखता था। उसका नाम था ‘थीस’ और वह आराम से औरत की भुजाओं में सोता रहा। जब थीवीज के शास्त्र बाल से सड़े पहरदार वह तीन पहाड़ अतिरिक्त में डूब गए और सूर्य उग आया तब वह जागा। वह भूरा-भूरा कितना सुन्दर और प्यारा बच्चा था और वह बिना डरे हुए मेरी गोद में चढ़ आया। अपनी भोली आँखों से वह कंसे सभी चीजों को और मुझे टुकुर-टुकुर देखता था और रोता सनिक भी न था। और वह खेलने लगा तो मैंने उसे खेलने के लिए सरकंडों की नावें बना कर दीं और वह रेतभी वाले बालों वाला बच्चा उनसे खेलता रहा।

हमारी यात्रा सुखद थी। अच्छे नेमुझे तनिक भी परेशान नहीं किया— न वह जल में डूबा न मगर के मुँह में हाथ ही डाला। और हर रात मैरिट मेरे पास होती और बच्चा पास में सोता रहता—सब-कुछ कितना शांत और सुखद था मैं कैसे लिखूँ ? और तब मेरा हृदय प्रकुल हो उठता था।

एक दिन मैंने मैरिट से कहा :

“मेरी प्यारी सहेली ! क्यों न हम भटका तोड़ लें ? हम हमेशा के लिए साथ रह सकेंगे और साथ-सब इसी चौथ की भाँति हमारे भी एक बच्चा हो जाय !

उसने मेरे मुँह पर हाथ रखा दिया और फिर धीरे से कहने लगी :

“सिन्धूदे ! मूर्खता की बातें न करो। मैं तो शायद अब गर्भ भी धारण न कर सकूँगी—तुम जो अपने भाग्य को अकेले ही समालने में असमर्थ हो भला तुम्हारे रास्ते में मैं क्यों आने लगी ? नहीं-नहीं मुझसे ऐसी बातें न करो, मैं सचमुच इन्हे मुनकर कमखोर हो उठती हूँ। तुम एकाकी हो और तुम्हारा भाग्य निश्चय ही बड़ा है—भला मैं तुम्हारे साथ कैसे निभा सकूँगी ? ...नहीं...नहीं...।”

तभी चौथ ने मुझसे तोतली ओली में कहा : “पिता” और मैं उस समय उस मुझ को सहन नहीं कर सका और अज्ञात शका से मेरा हृदय काँप उठा। मनुष्य को निश्चय ही इतना मुसी कभी नहीं होना चाहिए क्योंकि मुझ भला बच स्थायी रह सकता है ?

और मैं एखनटीन लौट आया। परन्तु अब की बार मुझे वह स्वर्गों का नगर अच्छा नहीं लगा—मैंने देखा कि सत्य वहाँ नहीं बल्कि वहाँ से बाहर रहता था—सत्य था भ्रष्ट, दास्य-यज्ञा और व्यत्याचार।

मैरिट और चौथ पीपीज लौट गए थे और साथ मेरा दिल भी ले गए और मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था।

कई दिन गुजर गए और एक दिन फराऊन को सुवर्णमुह की विशाल छत्र पर वास्तविक सत्य से साक्षात्कार करना पड़ा। मैग्जिस से होरेमहेब ने सीरिया के कुछ पीडित लोग भेजे थे कि उनकी यज्ञा को स्वयं फराऊन

देख सके। उनको उसने मार्ग का स्वर्चा भी दिया था, इस स्वर्ग-नगर में वह विचित्र लग रहे थे। राज्य के उच्चपदाधिकारियों ने उन्हें देखकर घृणा से मुंह फेर लिए और सुवर्ण-गृह के दीर्घद्वार बंद कर दिये गए। पीड़ितों ने महल पर पत्थर फेंके और वह बुरी तरह चिल्लाये और तब फराऊन को उन्हे अपने सम्मुख बुलाना ही पड़ा। उन्होंने अपने कटे हाथ उठाकर कहा :

“कौम के देश में अब कोई व्यवस्था नहीं रही है—हमारी हालत देखो— देखो कि शत्रुओं ने हमारा क्या हाल किया है ..।”

फराऊन ने देखा उनमें से कई की आँखें निवाल ली गई थी तो कई के हाथ-पैर काट डाले गए थे। उनके शरीर घावों से भरे हुए थे। दारुण भी उनकी व्यथा। वह चिल्लाये :

“फराऊन एलनैटोन ! हमारी स्त्रियों और बच्चों का क्या हाल है यह न पूछो—क्योंकि अजीरू के लोगो ने उनको हम से भी अधिक सताया है— उन्होंने हमारे हाथ काट डाले हैं क्योंकि हमने तुम पर विश्वास किया था....।”

फराऊन ने दोनों हाथों में अपना मुँह छिपा लिया और फिर वह उन्हें एटोन के बारे में समझाने लगा। सुनकर वह लोग हँस पड़े और फिर बोले :

“इस एटोन के चक्र को तुमने हमारे शत्रुओं को भी भेजा था और उन्होंने उन्हे अपने घोड़ों की घीवाओं में लटका दिया—जैहसलम में एटोन के पुजारी के पैर काट डाले गए कि वह जीवन-चक्र अपने पैरों के ठूठों पर लटका सके....।”

सुनकर शरीरों में ही एम्बनैटोन मूर्छित हो गया—उस पर उसकी वही पुरानी धार्मिक भ्रष्टा चढ़ आई थी। पहरेदारों ने तब उन लोगों को भगाना चाहा पर वह न हटे और उल्टे सामना करने के लिए अड़ गए। और तब उन गरीबों, पीड़ितों के रक्त से भीतरी प्रांगण भीग गया। उनके शरीर उठाकर नदी में फेंक दिये गए।

फराऊन की चिकित्सा मीने सुरंत प्रारम्भ कर दी। वह देर तक बेहोश रहा। पर जब होश में आया तो उसने कराह कर कहा :

“जाओ सिन्धूहे ! जाओ मेरे मित्र ! अजीरू के पाग जाओ और उगे

धन देकर उससे ज्ञाति का सौदा कर लो—चाहे मुझे अपना तमाम सोना दे देना पड़े—चाहे देश निर्धन हो जाय पर इस ज्ञाति को तो भोल लेना ही होगा ।”

मैंने जोरों से विरोध किया तो वह सिर अपने हाथों से पकड़कर बोला : “मेरा सिर दुःख से फटा जाता है—क्या तुम नहीं जानते कि घृणा से घृणा और शत्रुता से शत्रुता ही उत्पन्न होती है और रक्त से रक्त ही बढ़ता है? जाओ सिन्धूहें । फराऊन तुम्हें आज्ञादेता है, तुम्हें जाना होगा ।”

मैं हैरत में रह गया । पर वह अदा रहा । जब मैं वहाँ से बाहर आया तो मेरा अनुचर बाहर मेरी प्रतीक्षा में खड़ा मुझे मिला वह मुझे देखते ही बोला : “अच्छा हुआ मेरे स्वामी आप मुझे यहीं मिल गए क्योंकि अभी-अभी यीथीज से एक उहाड़ आया है जिसमें मैहूर्नकरनामक एक स्त्री उतरी है । वह अपने को श्रीमान् की मित्र बताती है और आपके घर पर ही ठहरी हुई है । वह दुःसहन की भाँति शू गार किये हुए है और उसके अंग-सेवो से सारा घर महक रहा है ।”

सुनते ही मैं उस्ता भागा और फराऊन के सम्मुख जाकर बोला, “मुझे फराऊन की आज्ञा का उत्सङ्गन बसा कैसे जीवित रख सकता है—यदि मैं अवज्ञा कर्त्ता तो हत्याओं का अपराधी मैं ही कहाऊँगा—परन्तु यदि मुझे जाना ही है तो मुझे अभी भेज दिया जाय—अभी एकदम, मेरा दर्जा और अधिकार अभी प्रमाण-पत्र के रूप में तख्ती पर लिख दिया जाय—क्योंकि अभीक तन्त्रियों की गद्दी कड़ करता है ।”

और जब लेटक लोग प्रमाणपत्र इत्यादि तैयार करने लगे तो मैं अपने पुराने मित्र यीथीमीज की मूर्तिशाला में चला गया जो एलर्टेटोन में ही बस गया था और जिसकी नयी बत्ता अब वहाँ काफ़ी फेल चुकी थी । उसने मुझे हौरेमहेव की एक मूर्ति दिखाई जो उसने मैम्फिस में लगाने के लिए बनाई थी । मूर्ति अत्यंत सुन्दर थी—अन्तर था तो केवल इतना कि इसमें हौरेमहेव की भुजाएँ वास्तविकता से कहीं अधिक अलिप्त दिखाई गई थी—यहाँ तक कि वह फराऊन का सेनापति दिखने के बजाय कोई मत्त मातूम होता था । यीथीमीज ने कहा :

“तुम्हारे साथ मैम्फिस में भी चर्नुया ।”

मैं वही से सीधा नदी पर जा पहुँचा। अनुचर से मैंने कह दिया कि वह मैंहूँकर से कह दे कि मैं सीरिया के युद्ध में चला गया था और कि वह उसे मेरे घर से भगा दे। और भी कि यदि वह न जाय तो वह उसे मारकर निकाल दे। अन्त में मैंने यह भी कह दिया कि यदि सौटकर मुझे घर पर मैंहूँकर मिली तो मैं निश्चय ही उसकी नाक कटवा दूँगा।

१२

मैम्फिस में हीरेमहेब ने मेरे पद के अनुसार मेरा भारी सत्कार किया। परन्तु जब हम अकेले रह गए तो उसने अपनी जाँघ पर हुयेली पीटकर पूछा : “अब फराऊन के दिमाग से कौन-सी नई उपज हुई है जो सीरिया दूत भेजा जा रहा है ?” उसका आशय मुझसे था।

परन्तु जब मैंने उससे सारी बातें कही तो वह क्रोध से होंठ काटने लगा और बोला :

“क्या मैं जानता न था कि वह (फराऊन) मेरी तमाम योजनाओं को अपनी भूलतता से बिखेर देगा ? भला हो अभी तक जो याज्ञा हमारे अधि-कार में है—और मैंने तरकीबों से फीट की समुद्री शक्ति को सीरिया के विरुद्ध कर दिया है। और फिर अजीरू के सामने भी कम मुश्किलें नहीं हैं—अब जब कि वहाँ से तमाम मिश्री भगा दिये गए हैं तो वह लोग आपन में ही लड़ रहे हैं। सबसे मुख्य बात तो यह है कि हितैतियों ने मितन्नी पर भीषण आक्रमण कर दिया है—और अवमितन्नियों का कोई साम्राज्य है ही नहीं। उधर बेबीलोन आत्मरक्षा की तैयारी कर रहा है और हितै-तियों के हृदयों में अजीरू के प्रति कोई मित्रता बाकी नहीं रह गई है। अब अजीरू स्वयं पवरा रहा है—इस समय फराऊन की शान्ति को सुरक्षित मान लेगा और धन लेकर आगे के लिए योजना बनायेगा—मुझे आने वाला समय दो—इससे भी कम सही और देखो कि मैं किस तरह अजीरू को

समाप्त कर देता हूँ।”

“परन्तु हीरेमहेव ! तुम युद्ध कर ही कैसे सकते हो क्योंकि फराऊन तो युद्ध की आज्ञा नहीं देता ?”

और सब वह झुड़ हो उठा और झुझसे बोला :

“सिम्पूहे ! यदि तुमने अजीरू के सम्मुख जाकर शान्ति की भीख माँगी और शान्ति मोल लेनी चाही तो समझ लो मैं तुम्हारी खास सिचवा-कर सुखवा दूँगा—चाहे तुम मेरे मित्र ही हो पर मैं इस तरह मित्र को नीचा नहीं देखने दूँगा—तुम लो उससे जाकर केवल एटोनकी बातें करना और कहना कि फराऊन उस पर मेहरबान है। वह कभी विश्वास नहीं करेगा क्योंकि वह अत्यन्त चतुर है। और फिर तुम झूठ बोलना और उसे दवाना...परन्तु याद रखना—गाजा किसी भी हालत में न छोड़ देना।”

मैम्फिस में मैं कई दिनों तक रुका रहा और हीरेमहेव से संधि के बारे में बहस करता रहा। वहाँ मैं क्रीट और बेबीलोन से आये हुए बूतों से भी मिला और मितलनी से आये हुए प्रमुख नागरिकों की जुबानी मैंने वहाँ के सारे हाल जाने और तब पहली बार मैंने अनुभव किया कि उस सभ्य मेरा कितना बड़ा हाथ था और मैं कितनी बड़ी जिम्मेदारियों से लदा हुआ था रहा था।

मैंने स्थल यात्रा से ही अम्बूरू जाना पसन्द किया। अब तक मुझे अजीरू द्वारा किये गए भीषण अत्याचारों का पूरा हाल मालूम हो चुका था। हीरेमहेव ने मेरे साथ थोड़े सैनिक स्वार्थ भेज दिये। उसने कहा कि यह टैनिस् और गाजा के बीच अजीरू से युद्ध करने की सोच रहा था। विदा होने समय हीरेमहेव ने कहा :

‘मैंने अन्य घनाहमों की भाँति बप्ताह से भी घन कृष्ण में लिया है—
तुम्हारा धन—तुम महान् हो—जाओ मेरा वाज्र तुम्हारी रक्षा करेगा मित्र ! तुम निश्चय ही बड़ा काम करने के लिए ही पैदा हुए हो—यदि तुम वहाँ बन्दी बना लिये गए तो मैं तुम्हारी स्वतन्त्रता का मोल करूँगा और यदि तुम मारे गए तो मैं तुम्हारा बदला लूँगा—यदि कोई भाता तुम्हारा पेट फाड़ने लगे तो कम-से-कम यह बात याद रखना कि तुम्हारी चिन्ता भी करनेवाला कोई जीवित है।”

“व्यर्थ बदला लेकर समय नष्ट न करना हीरेमहेब !” मैंने कहा : “क्योंकि यदि मैं मर गया तो उससे मेरा क्या भला हो सकेगा ? इससे बेहतर यह होगा कि तुम जाकर राजकुमारी बँकेटैटोन की देखभाल करना—क्योंकि वह अब भी अश्लिषीय सुन्दरी है—राजमाता ताया की मृत्यु पर जब मैं मुवर्ण-गूह गया था तो वह गुम्हारे बारे में गूछ भी रही थी।”

हीरेमहेब ने मुझे धूरकर देता और तब मैं वहाँ से चल दिया। मैंने तेलबों को बुलाकर अपना वसीयतनामा लिखवा दिया। मेरे माद अपने धन को मैंने हीरेमहेब, कप्ताह और मँरिट के बीच बाँट देने को निगा दिया।

मुझे वहाँ से रथ में लड़े होकर यात्रा करनी पड़ी क्योंकि मार्ग निगा-पद नहीं था—मेरे साथ हम रथ रक्षार्थ भेजे गए थे। उक्त ! रथ की वह भयानक यात्रा मैं कैसे बयान करूँ ? मैं वहाँ से कराह उठा—बारम्बार पटक मुझे लगी, मैं लूब बिलगाया पर मेरी चील-नुक़ार तब रथ की गहगड़ाहट में डूब गई।

पूरे दिन रथ भागता रहा और जब रात हुई तो बट दरा और मैं निहाल होकर बोग्गिदो पर गिर पड़ा। मैं उस समय अपने खम की चड़ी को कोम रहा था। दूसरे दिन रथ एक पत्थर से टकराकर उलट गया और मैं काँटों में गिरकर बुरी तरह घायल हो गया। स्वयंभू ने मेरी बाड़ी मेवा की और मेरे मुँह पर त्रल छिड़का हामीदि उनके पास जल की इनकी बनी थी कि वह अपने आदमियों को व्याम बुझाने को भी पूरी मात्रा में देने नहीं देता था।

गुबड़ रिज छोड़े जग बने और मैं अश्लिषीय मृतावस्था में धोरो पर मुररना हुआ ले जाया जाने लगा। रथ के भारी चारों की टक्कर से पत्थरों से आद की बिनमार्गिदी निकलनी थी और मृम के बादलों के दो जैसे आकाश छा गया था।

मुझे जब झोंक जाया तो मैंने देखा कि जमे बोग्गिदम रथों ने रंज निगा है। उस समय हम मंज मृद कपारी के नीचे लड़े थे। मैंने उसकी ओर देखकर लूब का लूद पला उड़कर टिकवा या अश्लिषीय बिल का

पत्र कर देता हूँ।"

"परन्तु हीरेमहेब ! तुम खुद का ही चिन्ता क्यों हो, क्योंकि अगर
खुद की आत्मा नहीं देता ?"

और सब वह खुद हो उठा और मुझसे बोला :

"मित्रगुरु ! यदि तुमने अतीत के सम्मुख जाकर प्रार्थना की, तो
तुम और सन्नि मोन लेनी चाहें तो मन्द मोन में तुम्हारी सारा प्रार्थना
सुनवा दूंगा—बाहेर तुम बेचे बिना ही हो, पर मैं इसे मन्द मोन में
नहीं देखने दूंगा—तुम तो अपने जाकर केवल तुम्हारे ही बने जाओ
कहना कि कलकल उस पर देखना है। वह कभी निजम में
जा क्योकि वह अत्यन्त बनुर है। और फिर तुम खुद की सारा प्रार्थना
ना... परन्तु बाद रखना—साया किसी की सारा प्रार्थना में
मैत्रिय में मैं कई दिनों तक रहा रहा और हीरेमहेब के सारा प्रार्थना
रख करता रहा। यही मैं और केवल हीरेमहेब के सारा प्रार्थना में ही
और मित्रगुरु ॥ माये हुए अत्यन्त सारा प्रार्थना की तुम्हारी सारा प्रार्थना
हाथ जाने और सब पहली सारा प्रार्थना अत्यन्त सारा प्रार्थना में तुम्हारे सारा
ना बरा हाथ या और मैं किसी बरी विचारों में मैं तुम्हारे सारा प्रार्थना
या।

मैंने स्वयं साया से ही अत्यन्त सारा प्रार्थना किया। और फिर मुझे
आ द्वारा किये गए सारा प्रार्थना के सारा प्रार्थना में हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना
हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना में हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना
निय और साया के बीच अतीत के खुद सारा प्रार्थना हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना
होने समय हीरेमहेब ने कहा :

मैंने अत्यन्त सारा प्रार्थना की सारा प्रार्थना में हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना
सा घन—तुम महान् हो—बाओ मेरा सारा प्रार्थना में हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना
तुम निरवय ही बड़ा काम करने के लिए हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना
हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना में हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना
हि तुम सारे सारा प्रार्थना में हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना
य वेद पाठने सारे ही सारा प्रार्थना में हीरेमहेब ने मेरे साथ सारा प्रार्थना
भी करनेवाला कोई व्यक्ति है।"

दंड दो जिससे वह फराऊन के दूतों का सम्मान करना सीखे !”

सुनते ही वह व्यंग्यात्मक रूप से हँसा और बोला :

“तुम्हें तो सिग्यूहे ! अवश्य ही कोई दुस्वप्न हुआ है—भला मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ यदि तुम पत्थरों से टकराकर अपने हाथ-पैर तोड़ लो ? और फिर भला मैं अपने सर्वोत्तम सैनिकों को क्या मरवाऊँ ? रह गई फराऊन के दूत की धौंस की बात...” वह फिर हँसा और बोला : “वह तो मेरे कानों में मक्खियों की भिनभिनाहट जैसी सुनाई देती है।”

“अजीरु ! राजाओं के राजा !” मैं चिल्लाया : “कम-से-कम उस दुष्ट सैनिक को तुम्हें बंड देना ही होगा जिसने पीछे से मेरे शरीर में भासे छेदे थे—उसके कोई लगवाओ जिससे मैं तसल्ली के साथ सीरिया और तुम्हारे लिए शान्ति की व्यवस्था कर सकूँ।

अजीरु हँसा और उसने अपनी छाती ठोकी और फिर कहा :

“यदि तुम्हारा फराऊन घूल में गिरकर सधि-मधि चिल्लाने लगे तो भला मुझे उसकी क्या चिन्ता ? पर तुम सिग्यूहे ! मेरे मित्र हो—तुमने मुझे संसार की सर्वश्रेष्ठ स्त्री दी है—तुम्हारी खातिर उस दुष्ट को दंड दिया जायेगा—तुम्हें प्रसन्न रखने के लिए—बस।”

और फिर वह सैनिक सबके बीच मगर की खास से बने कोड़ों से पीटा गया—उसकी चीख-पुकार में सभी का हास्य मानो बूब गया। रक्त बहने लगा। वह उसे निश्चय ही मार डालते पर उसका रक्त देखकर मेरा हृदय पसीज उठा। और मैंने हाथ उठा दिये और उसके प्राण एक बार फिर उसे दिला दिये। बाद में मैं कह नहीं सकती जिस बात से प्रेरित होकर मैंने स्वयं उसके पाखों पर मरहम लगाया और उसकी सेवा-सुधूषा करने लगा—सैनिकों ने समझा कि इसमें भी मेरी कोई चाल थी जो मैं उसे बारम्बार अच्छा करके पिटवाना चाहता था। उन सैनिक ने स्वयं भी मृत्यु पर विश्वास नहीं किया।

रात को अजीरु ने बकरे का मांस और चर्बी में पके हुए चावल मुझे

और उत्तम मदिरा पिलाई। वहाँ सब कुछ भयानक था, डाल-
से शिविर सज रहा था। अजीरु का मुख्य शिविर लालों का बना

हुआ था और उसमें अनेक उत्काएँ जल रही थीं। चाँदी के पात्रों में भोजन परोसा गया। वहाँ बहुत से लोग मौजूद थे जिनमें कई हिन्दू भी थे। वह सभी ओर-ओर से सीरिया की स्वतंत्रता के विषय में बातें कर रहे थे कि किस प्रकार उन्होंने अत्याचारी शासकों अर्थात् मिस्री लोगों को वहाँ से उखाड़ दिया था। बाद में जब सभी मदिरा अधिक मात्रा में पी गए तो वह आपस में झगड़ने लगे और सब ओप्पा के एक अधिकारी ने गुस्से में भर कर अम्पूरु के एक व्यक्ति की गर्दन पर चाकू से प्रहार किया। परन्तु वह भीष्म मंजाल लिया गया। मैंने देखा कि उसके गले की खून की नली नहीं कटी थी—और शीघ्र उसका चर्चित उपचार कर दिया। इस कारण से भी सब लोग मुझे कच्चे दिल का समझने लग गए थे।

लाने के बाद अजीक ने सबको रुकसठ किया फिर उसने मुझे अपना पुत्र दिखलाया जो उसके साथ मुठो में जाया करता था हालाँकि वह उस समय केवल सात ही साल का था। वह अत्यंत सुंदर और स्वस्थ था जिसके बाल घुघराए और आँखें काली थीं। वह अपनी माँ की भाँति गोरा था। अजीक ने उसके सिर पर प्रेम से हाथ फेरने हुए कहा

“सिन्धूहे, क्या तुमने ऐसा सुंदर बालक नहीं और देखा है? मैंने इसके लिये अभी से कई राजमुद्रा भी कर लिये हैं—निश्चय ही यह जबरदस्त शाहशाह बनेगा—इसने इस छोटी उम्र में ही एक बार चाकू से एक दाम का पैट पाक खाता था क्योंकि उसने इसका अपमान करने का दुस्ताहस किया था।”

इसके बाद अजीक देर तक अपने परिवार और स्त्री कीपू के बारे में बातें करता रहा। उसने कहा कि वह उसे अम्पूरु में ही छोड़ आया था। वह आह भरकर कहने लगा :

“आह सिन्धूहे ! कीपू के बिना मेरा जी नहीं भरता—मैंने अपनी वासना की बंदिनी शिव्यो और मंदिर की बग़ीची पुजारिनो के साथ समय-समय बिताकर बुझाने का निष्फल प्रयत्न किया है—कीपू के बिना सभी कुछ बुरा लग रहा है—उस स्त्री से एक बार के सहवास से फिर उसी की

याद आती रहती है” उसने यह भी बतलाया कि दिनों के साथ-साथ वह और अधिक सुन्दरी हो गई थी।

और तभी पास कहीं से स्त्रियों की चीस-मुकार का स्वर सुनाई दिया। अजीरु उसे सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और बोला।

“हितैती अधिकारी फिर अपनी स्त्रियों को यत्रणा दे रहे हैं……उन्हें रोक नहीं सकता क्योंकि मुझे युद्ध-भूमि में उनके पौरुष का पूरा भरोसा है, लेकिन फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि वह इन बुरी बातों को मेरे आश्रमियों को सिखाएँ।”

मैंने मौका देखकर कहा :

“राजाओं के राजा अजीरु ? हितैती मित्रता के योग्य नहीं हैं। इनसे सम्बन्ध इससे पहले ही तोड़ दो कि वह तुम्हें ही मार डालें या तुम्हारे राज्य को हड़प कर तुम्हें भगा दें—यह किसी के नहीं हुए हैं। क्रराऊन से मित्रता कर लो और वह भी अभी जबकि हितैती लोग मितलनी के युद्ध में सग रहे हैं। तुम तो जानते ही हो कि बेबीलोन उनके विरुद्ध है और यदि हम इनके मित्र बने रहे तो वह तुम्हें भी अन्न नहीं भेजेगा—और तब जब जाड़ा आयेगा तो भुखमरी फैलेगी—अकाल ! भीषण अकाल जिसमें सब मर जायेंगे—अब भी समय है कि क्रराऊन से मित्रता करके तुम इस संकट को टाल सक्ते हो……”

वह बोला :

“तुम मूर्खता की बातें करते हो। हितैती लोग अपने शत्रुओं के लिए भयानक हैं—न कि मित्रों के लिये फिर भी मैं उनसे बंधा हुआ नहीं हूँ। जब तक वह मुझे मूल्यवान् उपहार भेजते रहेंगे मैं भला उनसे क्यों बिगाड़ूंगा ? फिर मैं तो युद्धों के संधि से अधिक प्यार करने वाला व्यक्ति हूँ। वैसे यदि क्रराऊन मुझे गाछा सोटा दे जो उसने मुझसे घोसे से लिया था तो मैं संधि के लिये तैयार हूँ और इसके अतिरिक्त उसे सीरिया की सीमा के शत्रुओं को भी रोकना होगा और हमारे लिये वषेष्ट मात्रा में अनाज तेल और मुक्कं भी देना होगा—सीरिया में अब तक दुध बा. वारण क्रऊन ही तो है।”

और वह मुँह पर हाथ सफा कर मुस्कुराने लगा।

और मैं गुस्ते से चिल्लाया : “अजीरू तू डाकू है, मवेशी-घोर है और निरपराधों का हत्यारा है। क्या मुझे इतना भी नहीं मायूम कि संपूर्ण निचले साम्राज्य में इस समय हर सुहसारी पर अव्यक्त भाले बनाये जा रहे हैं ? होरेमहेव का नाम तो तुने अवश्य सुना होगा—उसके पास इतने रथ हैं जिसने पिस्तू और जूँ तेरे गधों में भी न होंगे—ओफ ! होरेमहेव निश्चय ही तुझे जीवित नहीं छोड़ेगा। क्योंकि अपार हैमिस की शक्ति। सधि तो फराऊन ने केवल अपने उस देवता के कारण चाही थी क्योंकि उसे रक्तपान नहीं भाता—मैं तुझे एक मौका और देता हूँ—सोच ले।”

और फिर मैंने ‘तू’ से ‘तुम’ की भाषा पकड़ ली और कहा। “गाऊा नहीं दिया जा सकता—रह गए रेगिस्तान के लुटेरे। उन्हें तुम स्वयं खदेड़ो क्योंकि उनसे और भिन्न से कोई वास्ता नहीं है। बल्कि यह तुम्हारे अत्याचारों का ही नतीजा है कि सीरिया के यह लोग रेगिस्तान में भाग गए हैं और अब तुम्हारे ही विरुद्ध शस्त्र उठा रहे हैं—इसके अतिरिक्त तुम्हें तमाम मिस्री बंदियों को मुक्त करना होगा और सीरिया में रहनेवाले तमाम मिस्रियों को हर्जा-जर्बा भी देना होगा।”

सुनकर उसने अपने कपड़े फाड़ डाले, दाढ़ी तोख डाली, और वह चिल्लाया।

“नहीं, गाऊा मुझे चाहिए, मिस्रियों का धरोसा भला, मैं क्यों कहूँ ? और बंदियों को निश्चय ही दास बनाकर बेचा जायेगा—उन्हें छुड़ाने के लिए फराऊन को सोना देना होगा—सोना—”

और हम इसी भाँति कई दिनों तक हल्ला मचाने लगे। अजीरू अपने कपड़े फाड़ डालता, बाँसों पर राख डाल लेता, रोता-चिल्लाता और मुझे डाकू कहता, एक बार तो मैं घन्नाकर बाहर चल भी दिया और मैंने अपनी कुर्सी मँगवाई पर तभी वह फिर मुझे अंदर लिवा ले गया।

और मैंने एक बार भी यह खगहिर नहीं होने दिया कि मुझे फराऊन ने किसी भी कीमत पर सधि करने के लिये भेजा था। अजीरू के पहाव में नित्य झगड़े बढ़ते जाते थे। नित्य जितने लोग बाहर आते जाते उतने, सीटने नहीं थे क्योंकि अभी उसका स्वामित्व जम नहीं पाया था। समय मेरी ओर था, यह प्रत्यक्ष था।

एक रात दो आदमियों ने अजीह पर हमला किया और उस पर धाक चलाये। वह जकड़ी हो गया पर उसने एक को फिर भी मार डाला। दूसरे को उसके लडके, उस बच्चे ने मार डाला। दूसरी सुबह उसने मुझे अपने मेम में बुलाया और वह मुझ पर भयानक अभियोग लगाने लगा जिसमें मैं डर गया पर बाद में वह मणि करने पर उतर आया और फराऊन के नाम पर उसने हमारी ही घने मान मीं, गाजा भिन्न का ही रहा, रेगिस्तानी लुटेरों से भिन्न का कोई सम्बन्ध नहीं माना गया और बर्दियों की स्वयंजना का मुख्य फराऊन को चुभाना पड़ा -- मिट्टी की लट्टियों पर मणि भिन्नी गई और उस पर दोनों देशों के हजार-हजार देवताओं की शपथें भिन्नी गईं कि वह मणि शासन बान के लिये की जा रही थी। अजीह ने मुझे अनेकानेक उपहार दिये और मैंने भी उसे अमूल्य रत्न उपहार में भेंटने का वचन दिया।

जब मैं चला तो मैंने उसके लडके के गुनाही नामों को चुन लिया। अजीह मुझसे गये भिन्ना और उसने मुझसे भिन्न, पड़ा। फिर भी हम दोनों जानते थे कि वह मणि जितनी शूटी थी। उसने गाजा तब मेरे साथ मैनिश भेजे।

परन्तु गाजा जो हमारा था, वही मुझे एक नई सुगीबन का सामना करना पड़ा। मेरे शान्ति सुबह घने दिखाये गए पर मगर डार नहीं गया। उन्हें एक नीर आया जिसमें हमारे साथ का एक मैनिश गिर गया। मैरी आंखों के सामने मृत्यु साधने लगी -- जब मैं मेरा रक्त तब गया और नीर पर नीर आने लगे। मैं जब मैं दावों के पीछे छिपकर बिस्माने भगा। परन्तु मिट्टी मैनिश जब मुझे आंखों में ब सींगों में ब साफ मरे तो उन्होंने ऊपर से लगे मैनिश चोखा -- मैं पत्थरों में छिपकर रोने बिस्माने भगा दिने मुनकर अजीह के आदमी उस भयानक विषादि में भी हमें नैमने देन में सोट-सोट हो गए।

जब मैं जब मुझे मगर के अन्दर लिया तो मैरी जान में जान आई। मेरी का मैनिश अजीह में भी उपद्रव लक्ष्मी का। मेरे निम्न उपद्रव उपद्रव में एक टाङ्गी लडका ही को, डार मैरी लोपा था।

अन्दर पहुँचकर मैंने वहाँ के मैनिश को लुट करी, पत्थरों

परन्तु वह भी शुष्क व्यक्ति था, बोला :

"सीरिया के लोगो ने मुझे इतना अधिक धोखा दिया है कि मुझे किसी का विदवाता नहीं हो पाना। यहाँ तक कि अब मैंने तय कर लिया है कि जब तक कि होरेमहेब के हाथ का आज्ञापन नहीं मिल जाता, मैं किसी के निष्कार नहीं खुलवाऊँगा।"

गाजा से मैं मिस्र के लिए अहाह में बैठकर चल दिया। मैंने नाविकों से कहा कि यदि मार्ग में शत्रु मिलें तो सफेद पास तान दें और मस्तूल पर भी मधु-मूषक प्रंडा उड़ावें। मुनकर उन्होंने पृथा में मुँह फेर लिये। दीछे से कोई एक बोला :

"इतना बड़ा रगा-गुना और जबरदस्त अहाह मुझपों न होकर बेग्या ही बना रहा, विश्कार है इसे।"

पर जब हम नदी में आ गये तो नदी-तटों के लोग लखूर के पत्ते हिला हिलाकर मेरा स्वागत करने लगे। मैं ऊराऊन का दून जो था और तब वह नाविकगण मेरी इज्जत करने लगे और झूल गए कि मैं ही था वह व्यक्ति जो इतनी बेगम्री के माथ पाखा में डलिया में रखकर ऊपर लीचा गया था।

मैन्फिस में बेबीलोन के सम्राट बने कुरियात का दून मुझे मिला जो मेरे लिए अनेकानेक उपहार लाया था। मैं उससे ऊराऊन के अहाह पर ही मिला। वह मेरे दाढ़ी वाला बिडान व्यक्ति था और उसका साथ मुझे बहुत गृहाया। वह मेरे माथ ही माथ रहा। हमने लक्ष्यों, भेड़ के त्रिगर को देखकर मरिष्य जानने और अनेकानेक विषयों पर बातें कीं। वह मेरे ज्ञान से प्रभावित हुआ और उसने सर्वनीय-प्रदेश की सर्वोत्तम मदिरा पीने की दी।

जब हम एक्वेटोन लीडे लो मुझे लगा कि मैं बारी ममतादार हो गया था।

मेरी अनुपस्थिति में ऊराऊन के गिर जा रुई बड़ दया था। वह आदम्य चिनिन रहता था, बरोबि का धान दया था कि त्रिग पीड में भी

वह हाथ लगाता था वही उल्टी पड़ जाती थी। 'आई' ने उसे धुत करने के लिए तीस-वर्षीय पर्व मनाने का प्रबन्ध कराया था। हालाँकि उसे राज्य करते हुए तीस तो क्या, बहुत ही कम वर्ष बीते थे, पर मिस्र में यह प्रथा प्रचलित हो गई थी कि इस पर्व को सासक चाहे जब मना लेते थे।

एलर्टेटोन में उत्सव की दावतें खाने के लिए बाहर से भीड़ें उमड़ पड़ी थी।

और सभी एक सुबह जब फ़राऊन एलर्टेटोन पवित्र झील के किनारे घूम रहा था तो दो व्यक्तियों ने उस पर चाकू से प्रहार किया। टोथिमोत्र का एक मित्र वहीं झील के किनारे बैठा हुआ बरानों के चित्र बना रहा था। उसने अपनी कूँची से उन दुष्टों के चाकूओं के प्रहार रोकें और तब तक वह उनसे लड़ता रहा जब तक कि पहरेदार न आ गए और वह दोनों पकड़ न लिए गए। फ़राऊन के कंधे में एक हल्का सा घाव हो गया पर वह लड़का मर गया। उसके रक्त में फ़राऊन के हाथ भीग गए।

उस शिशिर ऋतु की बहार में फ़राऊन एलर्टेटोन ने इस प्रकार मृत्यु की दारुण-यज्ञशा इतने पास से देखी। उसके नेत्रों के सामने ही उस मरके के जबड़े झिले पड़ गए और वह मर गया, उमी के लिए।

मैं मीम्रतापूर्वक मरहम-पट्टी के लिए बुलाया गया। घाव माथारण था। मैंने देखा कि हत्यारे घुटे मिर्चों वाले बेजिनके मिर्चों पर तेल चमचमा रहा था। जब पहरेदारों ने उनको पकड़कर बन्ध लिया तब भी वह अग्नय का नाम मे-लेकर सबको शाप देने लगे और गानियाँ देने लगे। आगिर तब वह चुप हुए जब उनके मुँह पर बाँले मोरे गए और रक्त बहने लगा। निरक्षर ही अग्नय के पुत्रारियों ने उन पर चोई जादू कर दिया था।

परन्तु यह घटना भी भयानक थी। फ़राऊन पर आज तक कभी किसी ने हाथ उठाने का दुष्माहम नहीं किया था। फ़राऊनों की शरणागत मृत्यु तो हुई थी कि उन्हें बिध से दिया गया हो, गलत होरे में चोट दिया गया हो, या उनकी मर्जी के विनाश उनके मिर खोज दिये गए हों, पर इस प्रकार गुना प्रहार आज तक कभी नहीं हुआ था। यह एक ऐसी घटना थी जो छिपाई नहीं जा सकती थी।

फ़राऊन के सामने ही जब अवर्याइयाँ में पूछा गया तो उन्होंने बोले

से हुंकार कर दिया। तब पहरेदारों ने भाषों से उनके मुंह पर वार किये और तब वह अम्मन का नाम ले-लेकर शाप देने लगे। अम्मन का नाम सुनकर स्वयं करारुन इतना क्रुद्ध हो उठा कि उसने मारने वालों को नहीं रोका—वह मारते गए, मारते गए—अपराधियों के मुख क्षत-विक्षत हो गए, दांत झड़ गए, रक्त बहने लगा और मांस के तौथड़े लटकने लगे और तब करारुन का हाथ उठ गया। अपराधी भव और अधिक चिल्लाये :

“और झूठे करारुन—उन्हें मत रोक हम मरना चाहते हैं—हमें पीड़ा नहीं होती—हमारे हाथ पैरों को भी सुझादे—”

उनके मुख भीमत्स हो गए थे और रक्त बुरी तरह बह रहा था। और तब करारुन ने अपना मुंह भाषों से छिपा लिया और उसे घृणा और पश्चात्ताप होने लगा कि क्यों उसने भी उन्हें इस तरह पिटने दिया फिर उसने हाथ उठाकर कहा : “इन्हें छोड़ दो—वह नहीं जानते कि यह क्या कर रहे हैं।”

परन्तु जब अपराधी खल गए और उन्होंने देखा कि वह उन्हें छोड़ देना चाहता था तो वह बुरी तरह चिल्लाने लगे और उनके मुंह से भाग बहने लगा : “ओ नफसी करारुन ! हमें मरवा डाल—अम्मन के नाम पर हमें मरवा डाल जिससे हम अमरत्व के जीवन को प्राप्त कर सकें।”

करारुन ने मुना और वह दारुण दुःख से छटपटाने लगा। और तभी वह अपराधी भागे और उन्होंने दीवाल से अपने सिर दे मारे—उनके सिर फट गए, हड्डी चुर-चुर हो गई भेजा बाहर निकल आया और वह गिरकर मर गए। रक्त से सारा स्थान भीग गया।

और तब सुवर्णपद्म में सभी जान गए कि करारुन की ज़िदगी सतरे में भा गई थी। पहरेदार दुग्ने हो गए और अब करारुन वही मनेला नहीं छोड़ा जाता, एटोन के भक्तों को अपने धन और जायदाद का हार सताने लगा और वह और भी अधिक करारुन की धूम कामना करने लगे। और इस प्रकार दोनों साम्राज्यों में आपसी विरोध बढ़ने गए, बढ़ते गए—भव अम्मन और एटोन के दल बन गए थे।

तीस वर्षों के उत्सव बीबीउ में भी मनाया गया। सोने का चूरा,

मनुमृगों के पर चीने, खिराऊ, छोटे-छोटे बंदर, तंजे और रंग-विरंगी चिट्ठियाँ वहाँ भी भेंजी गईं कि लोग उन्हें देखकर कर्राऊन की महान् शक्ति और वैभव को पचवान सकें और फिर उसका गुणगान करें। परन्तु उस जन्म के देवदर धीवीज में कोई हलचल नहीं मची। सभी ने वह सब दृष्टी-गवराई दृष्टि में देखा। फिर गडकों पर लड़ाई मुरु हो गई और एटोन के चम लोगो के दम्बों पर में फाट लिये गए। दो एटोन के पुजारी लोगो को जिन्होंने बिना रसकों को माथ लिये भीड़ में जाने का दुस्साहस किया था, लोगो ने मुगदगों से कूट-कूटकर मार डाला।

सब से भयानक और बुरा बान जो यह हुई कि इन सब चीजों को बाहरी देशों के दूतों ने भी देखा—क्योंकि उस समय वह वहीं थे। अजीर के राजदूत ने भी वह सब अपनी आँखों देखा। मैंने उसी के हाथों अजीर और उसके पुत्र के लिए अमृत्य उपहार भेजे।

और कर्राऊन एगनंटोन की व्यथा बढ़ती गई। वह जितना सोचता उतनी ही समस्या और उलझ जाती थी। पर अबकी वह भी बड़ा पड़ गया। अम्मन का नाम लेने वालों को पकड़वाकर उसने सानो में काम करने के लिये दास बनाकर भेजने की आज्ञा दे दी—उधर अम्मन के पुजारियों की शक्ति दुर्दम्य थी जिनसे स्वयं कर्राऊन के अंगरक्षक डरते थे, और इस सब में गरीब पिस गए—उनकी यंत्रणा का बारापार न रहा, और घृणा बढ़ती गई और सपूर्ण साम्राज्य में अशांति फैल गई।

मैंने कप्ताह को लिखकर एक पत्र भंगवाया लिया जिसमें उसने मेरा धीवीज में व्यापार के संबंध में रहना अत्यंत आवश्यक लिख दिया था। उसे दिखाकर मैंने कर्राऊन से जाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। जब मैं जहाज में बैठकर चला तो मुझे लगा मैं उस अभिशप्त स्थान से मुक्त हो गया था।

मनुष्य अपने विचारों के सम्मुख कितना निरीह होता है कि वह वास्तविकता से इसलिये मुँह चुराता है क्योंकि वह उसे नहीं भाती और

केवल उन्हीं बातों का विश्वास करने लगता है जिनकी आज्ञा में वह जिया करता है ! पिजड़े से निकली हुई बिड़िया के समान उन्मुक्त होकर मैं धीबीज की ओर उड़ चला । मेरा मन कितना हल्का था उस समय ! मुझे लगा कि मैं, जो फराऊन का बंस था, उसका गुलाम था—कितना नीच था, जिनने अकाट्य बघनो में बघा हुआ था । मेरे लिये तो फराऊन केवल एक मनुष्य ही था, भले ही उसके भक्त उसे देवता मानते हों । मैं जितना उससे दूर होता गया उतना ही प्रफुल्लित रहने लगा—और मैं धीबीज—अपने प्यारे धीबीज में फिर आ रहा था ।

और जैसे-जैसे जहाज नदी में बहने लगा मैंने देखा कि एटीन का साम्राज्य कितना उजड़ चुका था । अब हालाँकि फसल बोने का समय था पर भेत बजर पड़े थे । झाड़-फुसड़ा सभी तरफ खड़े थे । मैं स्पष्ट देख रहा था कि अकाल पड़ने वाला था—और फिर दारुण दुःख मृत्यु और बरी रक्तपात—अम्मन की शक्ति बड़ रही थी—सोगो के दिलों में एक बार फिर अम्मन का भय बैठ गया था—

और मैंने देखा अम्मन द्वारा अभिशप्त एटीन की भूमि ऊसर पड़ी थी—धूम्रमरी का ताड़क नृत्य प्रारम्भ होने वाला था । मैंने मार्ग में जहाज रुकवाकर कई लोगो से पूछा :

“पागलो ! जब फराऊन ने तुम्हें भूमि मुफ्त दी है तो क्यों नहीं उसे जोतते ? क्यों भूखे मरते हो ?”

तो उन्होंने मुझे ईर्षानुदृष्टि से देखा क्योंकि मेरे बल्ब उत्तम मूल के और महीन थे और फिर कहा :

“हम क्यों जोतें जब कि यह भूमि ही अभिशप्त है ? जब इसमें से उत्पन्न अन्न को खाकर हमारे परिवार के लोग मर जाने हैं तो फिर हम इसे क्यों जोतें ?”

और मैंने देखा कि वास्तविक जीवन से एवर्नूटोन कितनी दूर था ।

फराऊन के स्वयं के कोई पुत्र न होने के कारण उसने उत्तराधिकारी प्राप्त करने के विचार से अपनी दो पुत्रियों, मैरीट्टोन और एलमैनटोन के विवाह की खान सोधी । अपने ही दरबारियों के लड़कों में से उमने जमात्रा

छाँटे। मैरिट्टेटोन का विवाह फ़राऊन के प्यालेवरदार जिसका नाम सेकेकरे था, के साथ हुई यह पंद्रह साल का सड़का था जो बात-बात में उत्तेजित होकर धबरा जाता था। फ़राऊन को वह बेहद पसंद आया और उसने उसे ही अपना वारिस बना दिया।

एल्लसैनटोन का विवाह एक दस वर्षीय लड़के के साथ हुआ जिसका नाम टट था। इसे अश्वशास्त्रा के भालिक और शाही इमारतों के भफ़तर के लिताय दिये गए, यह बीमार सा, उदास और आज्ञाकारी बालक था जिसे मिठाइयाँ और लितायने बहुत प्यारे थे।

एल्लसैनटोन उन दोनों से खुश रहा करता था क्योंकि वह स्वयं तो कुछ सोच ही नहीं सकते थे—उनके लिये जो कुछ भी सोचना वह स्वयं फ़राऊन सोचता था—

बाहर से ऐसा लगता था जैसे राज्य में सभी कुछ ठीक-ठाक चल रहा था परन्तु फ़राऊन पर जो नुता हमला हुआ था सभी ॥ ग़रुण साक्षात्कारों में अपराधम की सनसनी फैल गई थी।

सबसे भयंकर बात अब यह हो गई थी कि फ़राऊन में जनमंपकं विलुप्त छोड़ दिया था—अब वह किसी की आवाज़ नहीं सुनता था—केवल अपनी आत्मा की आवाज़ सुनता और उसीके अनुसार कार्य करता। एल्लसैनटोन की तरह उदास रहने लगीं—भोगों के दिनों में भय गमा गया था। सब कुछ शांत लगता पर जैसे भीतर ही भीतर आग गुप्त रहती थी। मैं अक्सर जन-पट्टी के पास बैठा हुआ सोचा करता कि विस्फोट क्या होगा। और तब एल्लसैनटोन का यह स्वर्गंतुल्य नगर दिन प्रभार दिग्ग कर गिर आयेगा—भयानक था वह विचार परन्तु वह दारुण सत्य जो था !

महाज ना रहा था और मत्स्याह भारी पड़कारे चलता रहे थे। अब वह जल को काटने लगे उनके कंधे लुप्त आने और पीठ भीपी होकर पीन पानी। मैंने एक दिन सुना, एक मत्स्याह दुमने से बरबड़ला हुआ वह

रहा था :

"इस छोटे सूअर के लिए हम क्यों पतवार चलाएँ ? एटीम के साम्राज्य में जब सभी समान हैं तो फिर यह खुद ही क्यों नहीं चलाता पतवार ?"

और मेरा हाथ स्वतः उठे पर नपा कि उनकी पीठों पर बरसे, परन्तु हृदय उमड़ आया। मैंने सोचा, फिर कहा :

"नाविक ! मुझे भी एक पतवार दो।"

और मैं खड़े होकर खेने लगा। मैंने खूब खोर लगाया, तब तक जब तक मुझसे लगाया गया : जब तक कि लकड़ी ने मेरी छात में छींच ली और छाले में घना दिए।

और तब वह बोले :

"मालिक हमें क्षमा करो, हमें ही खेने दो।"

पर दूसरे दिन मैंने फिर पतवार चलाया। छाले खुल गए और रक्त बहने लगा। फिर पीठ अकड़ गई फिर कंधे कटते गए पर मैं न रुका और नाविक रोकर बहने लगे :

"आप हमारे मालिक हैं और हम आपके दास हैं। अब और मेहनत न करे, क्योंकि हर एक का काम बँटा हुआ है। देवताओं का ऐसा ही न्याय है। भला आप नाव चलाते अच्छे लगते हैं ?"

पर मैं न माना और पीबीड तक निरव नाव चलाता रहा। मैंने उन्हीं का सा भोजन किया और उन्हीं की खुट्टी और कच्ची मदिरा पी। परन्तु इनमें सब पर भी एक बात मैंने सीखी, मैं पहले से अधिक सुख का अनुभव करने लगा था। अब मैं अधिक खे सकता, हर दिन और ज्यादा और ज्यादा।

मेरे अनुभार मेरे कारण व्यथित थे, वह व्यथित थे कहते: "निश्चय हमारे मालिक को किसी बिच्छू ने काट खाया है अन्यथा यह एलटेटोन रहकर पागल हो गया है, परन्तु खैर कोई भय की बात नहीं है, क्योंकि हमारे पास भी बहनों के नीचे अम्पन का संस छिपा है।"

और जब पीबीड आया तो मैंने अपने शरीर पर नाना सुसज्जित ते

से मालिग कराई और स्नान किया और आम वस्त्र धारण करके मैं उतरा। मैं मल्लाहों को चांदी चाँटी और उन्हें सुवर्ण भी दिया और मैंने उनसे कहा :

“जाओ और आनन्द मनाओ एटीन तुम्हें सुख प्रदान करेगा, क्योंकि वह दमिरो से अधिक गरीबों को चाहता है। जाओ मीठी मदिरा पीओ और भर पेट भोजन खाओ।”

सुनकर उनके मूँह लटक गए, जो सुनो उन्हें इनाम पाकर हुई थी वह एकदम लोप हो गई और उन्होंने डरते-डरते पूछा :

“श्रीमान् बुरा न मानें पर यह वता दें कि क्या जो सोना और चाँदी आपने हमें दी है, अभिशप्त है, क्योंकि आप एटीन का नाम ले रहे हैं ? अगर ऐसा है तो हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते, क्योंकि यह तो हमारी उंगलियों को जता देगा और यह तो सभी को विदित है कि एटीन का धन मिट्टी के समान है।”

मैंने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा : “व्यर्थ मैं एटीन से मत डरो क्योंकि वह तो तुम्हारे मले के लिए ही है और फिर यह तो पुरानी छाप के असली सोने के सिक्के हैं जिनमें नए एखट्टीटीन में दूके सिक्कों की भाँति मिलावट भी नहीं है। जाओ और इन्हें मदिरा में परिणित कर लो।”

उन्होंने उत्तर दिया : “हम एटीन से बिल्कुल नहीं डरते, क्योंकि वह निर्बीय देवता है। पर जिससे हम डरते हैं उसे श्रीमान् भी खूब जानने हैं हालाँकि फराऊन के भय से हम उसका नाम लेने का साहस नहीं कर सकते।”

सुनकर मेरा मन जैसे बूटने लगा। पर वह शीघ्र चले गए और तब मैं सीधा ‘मगर की पूँछ’ की ओर चल दिया। बीबीज की गन्ध मेरे रोम-रोम में समा गई थी। मुझे वहाँ मॅरिट मिली जो अब पहिले से भी सुन्दर लग रही थी हालाँकि अब वह युवती नहीं रही थी और पूर्ण तरुणी बन चुकी थी। पर वह मेरी सबसे प्यारी मित्र थी।

मुझे देखकर वह झुक गई और उसने अपने दोनों हाथ फैला दिए। फिर मुझे चञ्चित नेत्रों से देखती हुई झुककर बोली :

“गिन्सूहे, गिन्सूहे ! तुम्हारे नेत्रों में इनकी चमक कहाँ से आ गई और तुम्हारी नोंद का क्या हुआ ?”

मैंने उसे प्रेमपूर्ण दृष्टि भर कर देखा और कहा : “मेरी प्राणप्यारी ! मेरी आँखें तुम्हारे वियोग के उबर में गिरकर चमकने लग गई हैं और मेरी नोंद ! मेरी नोंद मुझसे मिलने की आशा-दीप्ति में दुःख के समान साव्य हो गई।”

और तब उसने अपने नेत्रों में अश्रु पोंछकर कहा :

“ओह गिन्सूहे ! जब कोई अकेली रहती हो और उसके जीवन का समस्त निष्पन्न ही बीत गया हो तो उसे सत्य से झूठ बितना प्यारा लगता है ! जब मृत बापन आ जाने हो तो समस्त लौट आता है और तब मैं दिन पुरानी बानों पर विराम करने लग जाती हूँ।”

मैंने उसे हृदय से लगा लिया। उसका स्पर्श बिना भुग्न या और बिना भुग्न उस समय मैंने अनुभव किया था, यह मैं कैसे लिखूँ ?

रात्रि को जब कप्ताह आया तो उसे देतकर मेरे मेज पटे के पटे रह गए। कराइयों और पोंकों में, बह बड़ा ही मोटा मादमी, भारी सोने के बड़े पहने हुए था—उसके गले में मोने की उकीरें लललता रही थी और अश्रुधियों में उंगलियाँ जगमगा रही थी। उसकी बायीं ओर अब एक मोने की मोल पत्नी से हँसी हुई थी। उसके गरीर के मुटापे का वर्णन करना मजबूरी है और वह मुझे देखकर हँसे से बिस्माया और उसने बड़ी बड़ियाई में अक्षर मुँह हाथ लीला कर अभिवादन किया। मुझे उसे देखकर हँसी आ गई।

उसकी बुझानी मुझे मान्य हुआ कि मैं अत्यन्त छनी हो गया था। व्यापार में उसने मेरी बगई हुई बीरता के अनुकर दुगता धन कमा लिया था। उसने मुझे यह भी बताया कि अब जबकि अति बरत परी की तो अतिरिक्त में अतिरिक्त निरवयव था और हमीनिने वह अधिक से अधिक अतिरिक्त अती में अतिरिक्त रस मेरे का विचार पर रहा था कि बाद में गहरे मुताजे उठा लेंगे। उसी के मुझे बताया कि अतिरिक्त लोग दुगने मिट्टी के पार बागी गारा में अतिरिक्त रहे थे और वह मुझ में उन्हें मोदों के पहाँ में

एकत्रित करके उन सोंगों के हाथों नये बड़ों के मोल बेच रहा था। और इसका भेद मुझे बहुत दिनों बाद पता चला जब हौरमहंम मुन्ने हिरतियों के साथ हुए युद्ध में से गया। वहाँ मैंने देखा कि रेगिस्तान के मध्य इन्ही मिट्टी के अगणित पानी में उन्होंने सेना के लिए जल भर रखा था।

थीबीड में मेरा समय सुख से कटने लगा क्योंकि मेरे पास मेरी मरिद थी, धन था, और कप्ताह के समान मित्र था। भला मुझे कभी किस बात थी थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि धीप—वह प्यारा-प्यारा बच्चा मेरी गोद में बैठकर मुझसे पिता कहा करता था।

उपसंहार

नीच की नीची नहरे फोड़े से रही हैं। कितना छोटा है इनका पाट—चूना हो रहा है। विविध के उस पार जाने-जाने सूर्य की पीली धूप से भी छाती पर स्वर्णित उजाला फैला रही हैं—और मैं-मैं सिंगूरे-सैन्ट का बंदा—अम्बन के मन्दिर का थोछ पुजारी राजवंश, यहाँ अकेला बैठा हूँ। मेरे ऊपर सहरा खने वाले हो मेरी सेवा करते हैं—सब कुछ है वही मान्यता मुझमें छोन भी गई है। मुली रसोई पर से आक भी बाहरा गयी है और छद्मत्व भी आवाजें उधर से आ रही हैं—मैं सोच रहा हूँ कि मैं क्या था और क्या हो गया हूँ—मैं बंदी हूँ फिर भी मेरे आत्म में बन्दी नहीं है—मैं अब भी मुश्किल के प्याले में सुवासित मदिरा पी रहा हूँ—अब भी थोड़ा मेरा बड़ा दासों की पीठ पर बरखाना है—एक दास का। मैं यहाँ से नहीं जा नहीं सकता—क्योंकि मेरा बिस्तर हीरेमंडल है और मैं विपत्ति का बाग़ा ही रहा जाऊँ।

मैं पाट हूँ जब उस दिनों में बीबीबू गया था तो जैसे अम्बन के पुजारी के बीच पराक्रम से बीबीबू में अमानक बिड़ोह फूट पड़ा था और उसी काम में बीबीबू में अम्बर मूटमार, हत्या और बलात्कार का काम शुरू हुआ था। एटीन और अम्बन की लड़ाई में सहस्रों निरीह लोगों का खून फिर जलियों में बहने लगा था—धीरे-धीरे मेरे पास इतना काम पड़ रहा था कि मुझे राज-दिन मरीजों से, पावनियों से, कुर्वत ही नहीं दिखनी थी। मेरी दृष्टि मेरे साथ-साथ ऐसी सघी रहती जैसे मेरी छाया।

और एक दिन दीनियों ने 'मदर बी वूछ' में आग लगा दी थी और लोच का काम से दोस्तार ऊपर उठ दिया था। दृष्टि उसे अब बचाने पानी का काम पड़ रहा था कि पीठ के सह कर काम निकल गया था—और इससे भी कि मैं बीबीबू का बकाश का इन्तज बर्क, मेरी छाँवों के सामने ही मेरी

दुनिया एक बार फिर उजड़ गई थी। और तभी कप्ताह ने मैरिट का वह रहस्य मुझे बताया था—उसने कहा था :

“मूर्ख ! वह तेरा ही बच्चा था—तेरा और मैरिट का पुत्र !”

काश वह मुझे उस भयंकर रहस्य को कभी न बतलाता। मेरा पुत्र—मेरी आँखों का सारा मेरा वंशज, फूर मैरिटो ने मार डाला—जिनने धूँलित होने हैं यह कल्पित देवता, जिनके नाम पर लाखों की हत्या कर दी जाती है। कितना उदास हो गया था मैं उन दिनों। वहाँ ‘घा’ और ‘हू’ में इतना भयंकर और अभिसाज्य कि मेरे गंपर्क में आने वाले सभी मारे जाने थे।

अरीरू ने आक्रमण कर दिया था और होरेमदेव उसे दबाने गया था। अरीरू का बस अत्यधिक हो गया था। उसने कराऊन के मंथि-नन को कुचलकर नर-हत्या शुरू कर दी थी। होरेमदेव सिंह की भानि गर्जन करता हुआ उमने टक्कर लेने आये बड़ा था। कौन वह सकता है कि होरेमदेव कम धीर है ? निश्चय ही एक दिन उसका बाबू उसे मार्ग दिखाता हुआ इमीनिये उसे धीबीरू लाया था कि वह मरान् पोछा बन जाय—कि वह एक दिन दोनों माघाग्यों पर शासन करे और शत्रु उगरी हुका, में घरी जायें।

मैंने देखा था रेनिगान का वह नरसहार गीरियनों के अगणित पानी के घाँों पर होरेमदेव ने बाबू की भानि शरदकर करवा कर निरा था। और फिर रथ भागे, भागे कैंके, बाण टकाने मने और लवडे ऊपर बरने बाबा की दारुण बीम्बारे आकाश में उठकर मूँखने मगी और गारा आकाश धून में छा गया था। तिनवीं ग कणागार सिवा था रहा था—बचने भागों पर उठा विवे मण्डे और नरसहार की जीव कोई गीया ही मरी नहीं थी। रैन में रक्त बहा नहीं था—जहाँ गिरा वहीं सोन रिदा गया था। रक्त की बिजनी प्यासी थी वह भूमि !

और मुझे याद है जब अरीरू बकड़ निवा गया था तो मैरिटो ने प्रकार उसका मर कुछ मूट कर डमके मूट के ओने के दैन भी की मयवाने थे, मूट निवे थे। उसका बकड़ा लोड़ दिना गया था—
जो मैरिटन में डमने बिजनाकर कहा था :

"मिमी कुत्तो ! सिहो का खिर कभी नीचा नहीं होता—मुझे तुम नोचो मे से बटखू आ रही है—तुम्हारी गंदी खूरत देखकर मैं घृणा से मर गया हूँ—शीघ्र करो मेरा बंट जो मुझे तुम्हारे सहवास का दुःख अधिक न झेलना पड़े ।"

मैं वहीं खड़ा था और मैंने होरेमहेव की ओर देखा था जो सुनने ही मेरी वरुणा के विल्कुल विपरीत चित्ता उठा था :

"जगदाम अजीरु ! तुम निश्चय ही खीर हो ।"

खिर वैनी धार बाला खड्ग लेकर अन्ताद आगे बढ़ा । अजीरु के अपनी प्राण प्यारी स्त्री बीप्सू से कहा :

"मेरी कोमलांगी ! मेरी प्राण प्यारी ! तुम मेरे कारण मारी जा रही हो इसी का मुझे दुःख है—अभी तुम खवान हो, निश्चय ही जीवन में अभी तुम्हारे लिए बहुत कुछ भोगना बाकी है—।"

"नही-नही," बीप्सू चित्ता उठी थी, मेरे राजा ! मेरे सिंह ! तुम्हारा सहवास प्राप्त करने के बाद अब संसार में मुझे किसी भी वस्तु की चाह नहीं रह गई—तुम वृषभ के समान बनी हो, भला अब मुझे तुम जैसा पुरुष-सिंह कहाँ मिलेगा ? मैं तुम्हारे साथ ही मरना चाहती हूँ । यदि यह पुणित मिमी मुझे छोड़ भी दें तो भी मैं ज़ाँसी लगाकर मर जाऊँगी, मैं तो केवल एक तुच्छ दामी थी जिसे तुमने खानी बना दिया ।"

और अब अजीरु अन्ताद के समाने खिर झुकाकर बैठ गया तो उसने अन्तिम इच्छा बीप्सू से कही :

"दिता हो मुझे अपने यौवन के उधार अन्तिम बार प्यारी ! जिससे मैं अपनी मूलद वरुणा में ही अमर यात्रा कर जा सकूँ ।"

बीप्सू ने अपने स्तन खोल दिये—जिनसे गुन्दर और यौवन में परिपूर्ण मांसम उम्मन थे वह ! और सभी खड्ग नीचे गिर और राजा अजीरु व खिर बटखर उठना जिसे बीप्सू ने जपखर हृदय में लगाकर दबा लिया था—रक्त के चम्बारे छूट निकले थे जिनमें बीप्सू नहा गई थी—उस रक्त को देखकर अजीरु के दोनों बच्चे सहम गए थे । और अब बीप्सू ने कहा—
"आगे बढ़ो राजकुमार ! जलो पिता के पास चलें ।"

दो बार 'खच्' 'खच्' की आवाज आई और अब बच्चों की बोम

गर्दन अलग होकर गिर पड़ी। नया यही था अजीरू का स्वप्न ? वह तो कहा करता था कि उसका पुत्र एक बहुत ही विस्तृत साम्राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा—कहाँ था वह राज्य तब ? और फिर जस्ताद का भारी खड्ग कीफतू की गोरी मांसल और मोटी गर्दन पर गिरा और वह दुहरे बदन की कमालुरा सुन्दरी अपने पति की छात्र पर गिर गई। मेरी ही आँखों के सामने वह पूरा परिवार धूल में मिला दिया गया। हौरेमहेब की आज्ञा से उनके शरीर खाई में फेंक दिये गए जहाँ मुअरों, कुत्तों और कछुओं ने उन्हें मोच-मोच कर खा लिया।

मुझे याद आ रहा है कि बीबीज में फिर अम्मन के पुत्रारियों ने बग़ावत करा दी थी और शार्शनाओं और हम्शी सैनिकों ने एक बार फिर बीबीज की भूमि को बीबीज के रहने वालों के खून से रंग दिया था। और तब प्रत्येक शार्शना और हम्शी उच्च नागरिकों की स्त्रियों के साथ उन्हीं की रीया पर सोया था। हौरेमहेब स्वयं भी उसे न रोक सका था।

उधर सीरिया में फिर उपद्रव नुरू हो गए थे और क़राऊन था कि युद्ध की आज्ञा नहीं देता था। तब मैं फिर से हौरेमहेब के साथ एलर्टेडोन आया था और साथ में लाया था उस कुटिल 'आई' को जो शक्ति संचित करने के हेतु नीचे से नीचा कार्य करते हुए भी नहीं हिचकता था।

मैं, सित्यूहे, कितना घृणित हूँ ! मेरे सहवास में आया हुआ भला अब तक कोई बचा है ? मैंने अपने पिता सैम्बट और माता बीपा को बेमौत मारा और उस दुष्टा नैफ़र-नैफ़र-नैफ़र के मोह में पड़कर उनकी कब्रों तक बेच डाली। मीनिया मेरी प्यारी थी जिसे मैं बहिन कहने लगा था और वह भी मेरी न हो सकी—उसे उसके देवता की धंढा में बैठी और जब मैंने उसे पाया तब उसके मांस को कैंकड़े नुददकर खा रहे थे। मैरिट मुझे बितना चाहती थी मैं कैसे सित्यू ? आज दुःख से मेरा हृदय फटा जा रहा है। उसने मेरा गर्भधारण किया और इसलिये कि वह मेरे मार्ग में बाधा न बन जाय, उसने कभी मुझे नहीं पकड़ा और अपने भेद को रहस्य बना दिया—और वह भी मर गई और मेरा बच्चा—मेरी आँखों की पुनली, वह भी मारा गया—और तब जब क़राऊन एलर्टेडोन नर-हत्या के लिए किसी भी प्रकार आज्ञा नहीं देता था—मैंने, हौरेमहेब और 'आई' ने उसे बिल देकर गमाया

वे देवता मर गये

कर दिया। उसी फराऊन ने तो मुझे राजवंश बनाया था, मुझे एटोन के नये साम्राज्य का सिद्धांत सिखाया था कि मनुष्य से मनुष्य बड़ा नहीं होता। हत्या और घृणासे हत्या तथा घृणा ही पैदा होती हैं अतएव उनका अनुसरण नहीं करना चाहिए—उसे—उसके पागलपन को मैं जितना ज्यादा चाहता था और जब उसके सामने होता, उसकी बातें सुनता तो उसे जितना अधिक चाहने लगता था।

अम्मन के पुजारियों की दो हुई जहर की पुड़िया मैंने उसे मदिरा में घोलकर पिला दी जिसे पीकर वह सदा के लिये सो गया। अब सोचता हूँ, क्यों मारा मैंने उसे? हीरेमहेव के चाकू के भय से? नहीं। तो फिर? मिस्र की भलाई के लिए। कितनी बड़ी झूठ है यह! क्या भेद है मिस्रनी, हिर्तली और मिस्री में? भेद है केवल एक, और वह है धनवान और गरीबों का, जो सभी जगह है। क्यों है लोगों में देवताओं का इतना भय कि आपस में ही इतनी बड़ी दोषालें छड़ी कर लेते हैं? फिर क्यों मारा मैंने फराऊन को? निश्चय ही अपनी शक्ति और अपने पद का अनुचित लाभ मैंने उठाया था।

फराऊन एखनैटोन की मृत्यु के तीसरे दिन ही उसका बड़ा जमाता पवित्र तालाब में डूबा पाया गया। क्या मैं जानता नहीं कि उस बालक को बूढ़ 'आई' ने ही मरवा दिया था। क्यों? क्योंकि वह घृणित था—यदि परिषदी देवा कही है तो मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ कि 'आई' वहाँ कभी सफल यात्रा नहीं कर सकेगा—और तब टट—फराऊन एखनैटोन का दूसरा जमाता—राजकुमारी एखनैटोन का पति फराऊन बना—जब उसकी पतनी गर्दन दोनों साम्राज्य के दुहरे मुकुट के बोझ के नीचे झुक गई तो बूढ़ 'आई' ने कुटिल दृष्टि से हीरेमहेव की ओर देखकर दीर्घ श्वास छोड़ा था। उस फराऊन का नाम तुतनखामन था जो निरर्थ अपनी कब्र के नये-नये नबजे बनवाया करता था।

और एक दिन नेफरतीती, जो छह पुत्रियों को जन्म देने के बाद भी अद्वितीय सुन्दरी थी, हीरेमहेव के पास गई और उसने बातों ही बातों में उसके सामने अपनी जवा सीत दी और वह खोलकर अपने रूप से उसे लुभाना चाहा। परन्तु वह कठोर सैनिक पहले से ही चाँद की ओर लपका हुआ

था—उसने उगपर आँस नहीं मड़ाई। नैकरनीनी शक्ति बटोरना चाह रही थी परन्तु उसके कानों में शिकार जय नहीं फैला तो वह कुछ सन्तुष्टि की भाँति फुफ्फुस उठी। उसने दूसरा तीर अत्यन्त धपकर छोड़ा जो यदि लागत हो गया होता तो सायद मिय का भाग्य कुछ धीर ही होता और मैं इस निमेष में बैठ जाता—अपनी प्यवा न भिगवा। उसने राजकुमारी ब्रैकेटेडोन को गिराकर हिर्नियों के राजकुमार शबलू को एक पत्र लिखा—बारा कि वह भाँसे और शायद को हथिया में और भी कि राजकुमारी उसके प्रणय के लिये मानाजित थी।

उस दिन मुनी ने मेरे लिए मोटी बत्तन धूनकर बनाई थी और मैं उसे खाकर सेटा ही रहा था कि मुमारी 'आई' और लोनागिन हीरेमहेव धड़धड़ाने हुए अन्दर आए। आई सरा की भाँति धपधीप कुटिल वृष्टि से देख रहा था। हीरेमहेव ने अपनी जट्टि में से एक रौप्यार्दरग पर लिखा हुआ पत्र मेरे सामने कर दिया उसमें लिखा था

"हिर्नी राजकुमार शबलू को राजकुमारी ब्रैकेटेडोन की ओर से—मिय का गिरामन स्थित है। आओ मेरे प्राणपदारे और इसे ममान लो। मुमारी हीरेमहेव अनाकार बना हुआ है। वह जो नील है, गन्दा है, जिसमें मैं चुसा करती हूँ। आओ नैकरनीनी मेरे साथ है।"

मैंने देवी नानी की प्रतिदिमा हिमनी बसावक थी। उन्होंने मुझे बताया—

"दियुक्त" वह राजकुमार यहाँ से जाने वाले, मुमारी और उसे मारने से ही ममान कर दो।"

परन्तु मैंने टुटका कर दिया। वह हीरेमहेव ने मेरे साथ वह मारा बरा बाहू उस लिखा और मैं टटटटट हीन गया। वह अतिशय रागवान बन गये।

"हीरेमहेव बाहू से मैं प्रेम करने लगा हूँ कारकि वह कुछ और था वह का ममान कर देता है।"

परन्तु टुट भाँ बाहू से, मैं टुटटटट के लक्षण ने वह बाहू से हीरेमहेव का बरा बाहू मैंने लाने से वह हीरेमहेव और अतिशय राजकुमार को मारने से हीरेमहेव टुटटटटट टुटटटटट। उन्होंने लाने के साथ अतिशय से

विष मिलाया था। हितैतियों के बीच मुझ अकेले ने कि किसी को तनिक भी धोखा नहीं हुआ और राजकुमार मर गया। मैं बीबीज लौट आया।

और तब एक दिन सूतनसामन मर गया। ठीक होगा यदि कहूँ कि मार खाता गया। 'आई' ने होरेमहेब से कहा

"तुम राज्य संभाल लो।"

"मैं नहीं तुम!" उसने उत्तर दिया।

'आई' की आरवा तृप्त हो गई और उसने होरेमहेब से कहा: 'बैकेटे-टोन तुम्हारी होगी।'

'आई' कराकून बन गया। होरेमहेब मैम्फिस में बसा गया। उसे अब हितैतियों से युद्ध करना था। परन्तु इसके पहले अब वह बैकेटेटोन के पास जाकर बोला:

"राजकुमारी! मैं तुम्हारा प्रेमी हूँ—मिस्र का सेनापति, आओ मुझसे मिलकर मेरे जीवन की साध पूरी कर दो।"

तो वह छिटककर अलग खड़ी हो गई। उसने उस पर धूक दिया। होरेमहेब ने क्रुद्ध होकर लड़ग लीचा तो वह बक्ष खोलकर खड़ी हो गई और उसने कहा: "मारो" परन्तु तब भला वह उसे कैसे मार सकता था।

उसी शाम गरीबों की बस्ती में बने मेरे घर आकर होरेमहेब ने कहा: "सिन्धूहे! मेरे मित्र! कोई ऐसी औषधि मुझे दे दो कि जिसके प्रयोग से बैकेटेटोन मूर्छित की जा सके—मैं अब और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता।"

परन्तु मैंने साफ मना कर दिया। परन्तु होरेमहेब बलिष्ठ पुरुष था। राज्य में उसका बोलबाला था। आखिर उसने जबरदस्ती बैकेटेटोन के साथ बड़ा पीढ़ ही लिया। दो वर्ष व्यतीत हो गए और उसके गर्भ से उसके दो पुत्र भी हो गए परन्तु बैकेटेटोन की घृणा दिनों-दिन बढ़ती ही गई। उसने मरु में ही जिस दिन वह असहाय होकर गिर गई थी उसे बहू दिया था, "मैं तुम्हारी ही लीचा को यदि दूबित न कर दूँ तो मेरा नाम बैकेटेटोन नहीं।"

होरेमहेब हितैतियों के युद्ध में बसा गया था। वापस आते वह मुझसे बोला:

“मित्र के महान् करारों ने कंम देश में अपने राज्य की सीमा के पथर गाड़े थे, और जब तक एक बार फिर मैं अपने रथ न दौड़ा सुना तब तक मेरा दिल न भर सकेगा सिन्धूदे।”

एक दिन मुती ने मुझे कहा :

“कप्ताह को हथ्थी मैनिकों ने पीट-पीटकर मार डाला।”

कप्ताह मेरा मित्र था, परन्तु जाने क्यों मैं उस भयानक महाद की सुनकर भी विचलित नहीं हुआ। मुझे लगा कि वह सब झूठ था। कप्ताह भला कभी इस तरह मर सकता था ?

बहुत बाद में जब मैं गाजा गया तो मुझे वहाँ कप्ताह मिला। वह हीरेमहेब का मित्र बन गया था। उसी ने सीरिया की सेनाओं में रिपनी प्यास और विषैला अनाज फैलाया था—वही था जिसके कारण शत्रु की सेनाएँ तड़प-तड़पकर मर गई थीं। मैंने जब उसे देखा तो वह हँस में चिन्मा उठा। उस समय उसे गाजा के उसी मक्की सेनापति ने कारागार में बन्द करा रखा था जहाँ वह पहरदार को रिकव देकर जीवित रह रहा था। जब मैंने उसे छुड़ाया तो पता चला कि तब तक वह सानो सुवर्ण मुद्राओं का कूपी हो गया था। मैंने उससे कहा था : “क्या इस कूण को तुम मच-मुच ही उस पहरदार को बुकाओगे ?”

“निश्चय,” उसने उत्तर दिया, “अग्यवा व्यापार में मेरी जान जानी रहेगी।”

परन्तु जब बाद करना हूँ तो मुझे हँसी आती है कि वह मेरा जाला दास चितना चालाक था। उसने उस पहरदार से जूआ मेला और उंग बड़े-बड़े दाँव लगाकर तीन-चार दिनों में ही बुका दिया। भला पहरदार उगने मृए में जीवता—वह जो सम्पूर्ण मित्र के व्यापार को जीते हुए था ? अन्त में वह मित्र का सबसे बड़ा घनी बन गया था और वह विमान मरुत में रहता था जहाँ जाना बाटों पर मदीन छिदा करना और देव-देवताओं के मीदी गई मृदरी दानियों के कोमल पदचारों में चँपक ब्रज करने और पुर कट अनाज में मने रहने। तब वह अपनी दानी अन्न पर हीरे का मरन मटकाता और उलम मौन और मदिना का मेहन करता। उसके हन की भीनों पर मर विरनेविज बने थे। एक ओर उमकावय का विज

भी अंकित था। परन्तु तब अम्मन का साम्राज्य लौट आया था और टोयिमीज की वास्तविक कला का प्रचार वज्रित कर दिया गया था जहाँ चालीस सम्मों पर एस्मेटोन अपने असली रूप में खड़ा था, तो फिर भला टोयिमीज की कला का अस्तित्व ही क्या रह गया था? दीवाल पर कप्ताह की मूर्ति, उसके चित्र, सब कायदे के बने थे, उनमें उसकी दोनों ही भालें दिख सकती थीं और वह बड़ा-मोटा भी नहीं दिखाया गया था। सबसे बड़ी बात यह थी कि कप्ताह ने अपना उत्तराधिकारी हौरेमहेब को ही बनाया था। फ़राऊन 'आई' का एक बाद में इतना बड़ गया था कि वह महल में हर किसी से भय करने लगा था। कोई बिग न दे दे, कोई हत्या न कर दे! और वह नीच बुढ़ झुंझा रह-रहकर, रात-रात जागरण तड़प-तड़पकर मर गया। उसके मरने के बाद ही हौरेमहेब फ़राऊन बना था जिसे अपना उत्तराधिकारी बनाकर कप्ताह ने राज्य कर बसूल करने-वालों का और अपना भार अलग-अलग कर लिया था। निश्चय ही कप्ताह बड़ा बालाक था।

और मैंने एक दिन सोचा कि मैं क्यों इतना बिरीह था कि मेरे पाम अपनी भ्वा कहने के लिए भी कोई नहीं था? क्यों है समाज में वह भेद कि जो गरीब है वह और गरीब होते चले जाने हैं? क्यों नहीं हो पाया फ़राऊन एस्मेटोन अपनी योजनाओं में सफल? तो क्या सबकुछ ही मनुज का बर्म देवताओं द्वारा ही निर्धारित है? दिस इस बात की गवाही नहीं देता था। मुझे याद है कि जब हौरेमहेब हितैजियों के युद्ध में जाने लगा था तो 'सैकमट' के मंदिर में उसका स्वागत किया गया था। वह रक्त से लहवाई हुई देवी की मूर्ति किनकी अमानक भगनी थी। पुजारियों ने हौरेमहेब का भव्य स्वागत किया था। जब बाहुली तोरण के भारी लोहे के फाटक खरो-बर मोले गए थे तो पीछे उसमें बाड़ की भाँति झँम गई थी और हौरेमहेब की बीरगाथाओं से मंदिर गुन उठा था। तो क्या हौरेमहेब सैकमट की हवा अपना दया से ही बिजदी होगा था? नहीं-नहीं, मैं इसे बची नहीं मान सकती—मेरी आत्मा इसे स्वीकार नहीं कर सकती।

जब मैं यह सोचता हूँ तो मेरी आँखों के सामने वह चेहरा की दुर्गन्ध में बने बर्बर सैनिक आ जाते हैं जो धन के लिए लड़ने थे—ओ मृत पंत

को भरने के लिए सड़ते थे—और जिनकी सासों के ढेर पर महान् साम्राज्यों की दीवालें खड़ी की जाती थी। ऐसा ही तो था हीरेमहेव ! और ऐसे ही तो थेमिस्र के प्रचंड क़राऊन !

एक दिन मैंने दासों के वस्त्र पहने घीर मैं घीबीड़ में निकल गया। मुझे नहीं मालूम था कि मैं इतना प्रमुख व्यक्ति था क्योंकि मैंने देखा सभी मुझे पहचानने थे—उस बेज में भी पहचान गए थे। परन्तु मैंने बोर्ड पर-वाह न की और महानगर में जाकर मजदूरों का काम करने लगा और फिर दासों के पास जाकर बैठ गया और उन्हीं का-सा क़सा मूसा भोजन मैंने किया। मैंने उनसे कहा : “मनुष्य मनुष्य में कोई अन्तर नहीं है क्योंकि सभी समार में नगे आने हैं। मनुष्य की रक्षा के रथ से अथवा उसकी योली में उसका दर्जा ऊँचा या नीचा नहीं हो सकता—न ही वस्त्रों और आभूषणों से उसकी परछ की जा सकती है—मैं तो केवल इतना जानता हूँ, बुरे आदमी से अच्छा नक़ आदमी होता है और ग़्याय, अग़्यायसे अच्छा होना है।”

जब ग़रीब स्त्रियाँ अपनी बच्ची आँपड़ियों के सम्मुख बैठकर सड़क के किनारे आग जला रही थी और उनके मर्दे उदास बच्चे-माँदे बैठे थे तब मैंने उनसे कहा, और उसे मुनकर वह उस उदासी में भी हँस पड़े। फिर एक ने उत्तर दिया :

“सिम्पूह ! तुम निश्चय ही पागल हो गए हो कि दासों का काम कर रहे हो जब कि तुम सिम्पूह सकते हो और बड़े आदमी हो। कौन है जो तुम्हें घीबीड़ में नहीं जानता ? परन्तु हम जानते हैं कि तुम भले आदमी हो और दयालु भी हो। परन्तु फिर भी हम अब उस निरीय देवता एडोन के मिडान्त नहीं सुनना चाहते। तुम मायद हमारा भेद मैंने जाने हो। सब मनुष्यों की सराबर बढ़कर कम-से-कम हमें उनमन्दे गीरियन और हगियन के समान तो न टहराओ ! जो हम कुसी हैं, दाम है फिर भी हैं तो हम मियी हो।”

मैंने कहा : “यह सब बेकार बातें हैं, मनुष्य हम सब जाना में बरा नहीं होता—होता है तो केवल गुड़ हृदय के कारण होता है।”

मुनकर वह फिर हँस और अपने घुटने पीटने लगे पर मैंने अब अपनी

वात फिर दुहराई तो वह बोले :

“अच्छा क्या है और बुरा क्या है सिन्धूदे ? यदि हम किसी बुरे मालिक की, जो हमें धोखा देता हो और हमारी स्त्री व बच्चों को मार डालता हो, हत्या कर दे, तो क्या हमारा काम कोई बुरा होगा ? परन्तु जब हमें फराऊन के सैनिक पकड़ कर न्यायाधीश के सम्मुख ले जाएंगे, और हमारा जो कुछ होगा वह तुम नहीं जानते ?”

“जानता हूँ” मैंने कहा, ‘तब तुम्हारे नाक-कान काट दिये जाएंगे और तुम्हें मगरकोट से उल्टा सटका दिया जायेगा—परन्तु हत्या सबसे नीचा अभियोग है—इससे गिरा हुआ और कोई काम नहीं हो सकता—अतएव चाहे बुरा हो चाहे भला हत्या कभी नहीं करनी चाहिए—मेरी तो राय है कि मनुष्य की बुराइयों के कारण उसकी हत्या कभी नहीं करनी चाहिए बल्कि उसे मुधारने का प्रयत्न करना चाहिए।”

उन्होंने उदासी से उत्तर दिया :

“न हम किसी की हत्या करना चाहते हैं न करते हैं। यदि तुम बुराई का फल भलाई से देना चाहते हो तो अमीरो के पास जाओ, फराऊन के सरदारों और न्यायाधीशों के पास जाओ क्योंकि हत्या, और तमाम बुराइयाँ तुम्हें हमसे कहीं अधिक अमीरो में ही मिलेंगी,”

कितना भयानक सत्य कहा था उन्होंने। परन्तु जब मैं अमीरो के पास गया और उनसे मैंने वही सब कहा तो वह सतर्क हो गए, घनी व्यापारी-गण और उच्चाधिकारी लोगों ने आँखों ही आँखों से इतारे किए और पुसफुसाकर कहा :

“यह सिन्धूदे, राज्य का उच्चाधिकारी है—यह सर्वशक्तिमान है—यह निश्चय ही हमारी जान बर रहा है—कहीं भूतसे भी इसके सामने एक-श्राद्ध शब्द हमारा। जुवान से ऐसा-वैसा निवृत्त गया तो समझ लो मृत्यु अवश्यमावी है।”

जब मैं परलोटा तो थका हारा हुआ था। परन्तु मेरा मन उत्साहित था क्योंकि मैंने सत्य का प्रचार किया था—चाहे उसे कोई मानना चाहे नहीं मानता।

इधर मैं इन्हीं विचारों में लीन रहता था राजपुत्री बेंकेटेटोन की

प्रतिहिंसा जागृत हो रही थी, मुझे तो वह सब बहुत बाद में मालूम हुआ था। मजदूरों ने तो ठीक ही कहा था कि प्रतिहिंसा और पाप अमीरों में ही पाया जाता था—

एक दिन वह शृंगार करके नाव में बैठी और नील पार करके पीबीड के एक गधे वाले को इशारा कर के काँस की झाड़ियों में बुलाया। पहले तो गधे वाला धबराया परन्तु फिर जब उसने उसके रूप को देखा तो वह उसके पीछे चला गया। काँस को झाड़ियों में राजकुमारी कैकेटीन ने अपने वस्त्र उतार दिए और गधे वाले से लिपट गई। उसके उस विचित्र अभिसार से गधे वाला चकित रह गया। जब वह चलने लगा तो कैकेटीन ने अपने जीवन का मूल्य माँगा, वह बोली : “मुझे अपनी याद में एक पत्थर ला दे”

गधे वाले ने उसे मूर्ख समझा। झट से जाकर पराक्रम की पुरानी दुमारा में से एक पत्थर उठा लाया और उसे दे दिया। कैकेटीन उसे ले आई।

दूसरे दिन वह कोयले वालों के बाजार में गई। आज वह बड़ी नाव से गई और लौटने समय कई पत्थर लाई क्योंकि उसने आज कई लोगों से अभिसार किया था।

सारे नगर में सतमनी फैल गई कि एक देवी आती है जो गरीबों को गरीर देकर प्रसन्न किया करती है परन्तु किसी को पना न बना कि वह राजकुमारी थी।

इसी भक्ति वह नित्य निकमनी और कभी मछली बाणों में बाजार में तो कभी मजदूरों में संयोग करती और पत्थर इकट्ठे कर लाती। एक माह में उसने बहुत से पत्थर इकट्ठे कर लिए। फिर उसने राज्य के मिल्पी को बुलाया और उसमें बोली :

“तुम इन पत्थरों से मेरे लिए एक बड़ा कक्ष बना दो और मुझ को जानने दी हो कि मेरा बनि बेरी ठोसता करना है—मेरे पास कुछ देने के लिए छत भी नहीं है परन्तु....”

मिल्पी ने जवाब उठाकर देना। वह बुझा। और गरीब कैकेटीन ने अपना बस गोप दिया और कहा :

“यदि तुमने मेरे लिये उत्तम वस्त्र बना दिया तो मैं इसी वस्त्र में तुम्हें मुक्त दूँगी—यह शरीर तुम्हारा होगा।”

जब ‘आई’ के मरने पर हीरेमहेब कुर्छ में विजयी होकर सौटा तब तक वह वस्त्र बन चुका था—और सारा महानगर जान गया था कि वह बाजारों में घूमने वाली देवी कौन थी।

बकेटेटीन उसे उसी वस्त्र में बड़े प्रेम से लिबा से गई और वह भी उस परिवर्तन को देखकर चकित हो गया। वहाँ पहुँचकर उसने कहा : “देखो प्रियतम ! इन परधरों को देखो, मैंने एक-एक परधर अलग-अलग व्यक्ति से कमाया है—इन वस्त्रों में जिसके परधर सगे हैं उतने ही पुरुषों से मैंने संपर्क किया है—गता नहीं वह कौन ये परन्तु उनकी मादगार अवश्य मेरे पास है, बाग़ तुम भी मुझे एक परधर दे सकते, तो मैं उसे इन सबके ऊपर लगा देती,।”

ऐसा था उसका प्रतिशोध, हीरेमहेब ने उस पर तलवार तानी तो वह बोली :

“मारो,” और उसने अपना वस्त्र फिर खोल दिया : परन्तु इस बार हीरेमहेब उसे देखकर न रुका, तब वह बोली :

“मारो हीरेमहेब मारो—नयोंकि मैं भी यही चाहती हूँ कि फराऊन की और उसकी पुत्री की हत्या करने के उपरांत ग्याय की दृष्टि से तुम फराऊन न बन सको।”

मनुष्य की तृष्णा का कोई अंत नहीं है। फराऊन का सिंहासन ! भला हीरेमहेब उसे कैसे छोड़ सकता था—वह बाग़ का पुत्र, मित्र का सेनापति, वह जिसके भय से दूर-दूर तक के संपूर्ण राज्य काँपते थे, चुप रह गया—उसका हाथ उठा हुआ ही रह गया। फिर वह बड़े वेद की तरह झूल गया। नहीं था उसका वह क्रोध व प्रतिहिंसा जो उसने भूखे खीरियों पर निराली थी। जब उसने लाखों खीरियों मार डाले थे, जब लाखों ही सीरियन, मितन्नी और हिर्तती उसके धागों से गिर गए थे तब वहाँ भी उसकी यह दया ? दया ? तो क्या वह दया थी जो उसने राजकुमारी को नहीं मारा था ? नहीं, वह थी राज्य की लिप्सा—बकेटेटीन की हत्या करके वह फराऊन नहीं बन सकता था, यह वह जानता

था। उसकी स्त्री ने उसकी नाक सारे पीबीड के बीच काटली थी परन्तु फराऊन का पद ? जहाँ वात-वात पर हौरेमहेव का चातुक माँस उभड़ सेता था, मैं सोचता हूँ, इस अपमान को कैसे पी गया ? क्या वह कायर नहीं था ?

परन्तु उसका न्याय प्रसिद्ध था। उसके राज्य में एक बार फिर व्यवस्था स्थापित कर दी गई थी। वही जो पहले से, शाश्वतकाल से स्थापित थी। अब उसके राज्य में अम्न पुजता, परन्तु शक्ति उनके हाथ में थी।

और अन्त में वह बुरा दिन भी आया था जब उसने मुझे बुलाकर कहा था :

सिन्धूहे ! तुम निश्चय ही पापल हो और जो कुछ तुमने हाल ही में किया है उसका दृढ़ मृत्यु होना चाहिए। तुम नहीं जानते कि राज्य में तुम्हारा व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली है, सोच तुम्हें कितना मानने हैं और इसीलिये मैं सोचता हूँ कि जो दुष्ट प्रयास तुमने किया है वह ठीक नहीं है। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुमने दासों का सा श्रेष्ठ बनाकर पीबीड में समानता का प्रचार क्यों किया था ? क्या तुम नहीं जानते थे कि उससे प्रभा भटक सकती थी अन्यथा राज्य की व्यवस्था में खलबली मच सकती थी ? योलो सिन्धूहे ! तुमने ऐसा क्यों किया ?”

वह फराऊन था और मैं केवल एक बंदी। वह देश-देशांतरों में प्रसिद्ध घोड़ा था और मैं भला उसके सामने क्या था ? मैं चुप रहा परन्तु फिर मुझे न जाने क्या सूझा कि मैं हँस दिया जबकि मुझे रीति के अनुसार घुटनों के बल झुककर हाथ फैलाकर उसके सामने क्षमा की याचना करनी चाहिए थी। और तब उसने मुझ से कहा :

‘तुम मेरे मित्र रहे हो इसी कारण मैं तुम्हें प्राणदण्ड नहीं देता—तुम्हें मैं देना निकाला देता हूँ। तुम ऊपरी साम्राज्य में रहने योग्य नहीं हो। मैं तुम्हें अन्य स्थानों में भी नहीं भेज सकता। क्योंकि वहाँ तुम वही अपनी मूर्खतापूर्ण बातें करके लोगों को पथभ्रष्ट करोगे—तुम बालों को गोरों के विरुद्ध भड़काओगे—अतएव जाओ तुम निचले साम्राज्य के जंगल में रहो—नदी के किनारे तुम्हारे लिये घर बना दिया जायेगा जहाँ

तुम केवल हवा को मनुष्य की समानता का भाषण सुना सकोगे—नील के जन को एटोन के साम्राज्य की गाथाएँ सुना सकोगे—आओ—वही रहो—तुम पर पहरा रहेगा इतना कि तुम वहाँ से कहीं जा न सको—वैसे तुम्हें मैं कोई बरफ देना नहीं चाहता—तुम्हारे पास-दास रहेंगे, पहरेदार होंगे। उत्तम भोजन होगा, भीठी मदिरा होगी और तुम्हारा असह्य घन। तुम सुवर्ण के प्याले में मदिरा पी सकोगे।”

और जब मैं चलने लगा तो वह बोला :

“एकाकी।”

कराऊल एक्स्प्रीटोन ने मेरा माम एकाकी रखा था—और अब मैं सब-कुछ ही एकाकी बन गया हूँ। मुसी खीबीड छोड़कर मेरे पास आ गई क्योंकि वह सौटकर कहीं जाना नहीं चाहती। मैं हूँ मुसी और मैं वह दास जो मेरी सेवा करते हैं।

मैं हमेशा अकेला रहा हूँ। कभी भी तो मुझे किसी का साथ नहीं मिला। दूर नील पर मैम्फिस जाने हुए जहाज दिख रहे हैं परन्तु मैं उन पर नहीं जा नहीं सकता। मेरे इतारा करने पर कोई जहाज लगर नहीं चालता—

मैं अपनी गाथा लिख रहा हूँ। मेरे हृदय में बितनी व्यथा है इसे कौन जान सकेगा—मुझे पता नहीं कि यह दीपदीप के पत्ते। वहाँ उड़ जायेंगे यानी नील के प्रवाह में बह जायेंगे, परन्तु मैं लिख रहा हूँ अपनी व्यथा कम करने के लिये क्योंकि कहते हैं कि किसी से कहने से व्यथा कम हो जाती है। अब अब मुझने वाला कोई नहीं है तो लिख ही लूँ। सहानुभूति से ही तो मनुष्य को सात्वना मिलती है। पता नहीं किस दिन मुझे पश्चिमी देश की यात्रा पर जाना पड़ जाय—तब मैं ठडी-ठंडी रेत में पड़ा रहूँगा—ठडी क्या? यदि दिन हुआ तो घबरे रेत पर मेरा शरीर पड़ा रहेगा—क्या यही है मेरे जीवन का अन्त?

मैंने अपना दुःख सामने की जाल पहाड़ियों को सुनाया है। मैंने विष्णुओ, छपों तक से अपनी व्यथा कही है। परन्तु सब व्यर्थ। नील का जल गर्जन कर रहा था, परन्तु उसमें भी भयानक सूखान मेरे हृदय में बस रहा है। दूर रेगिस्तान में जैशों का कारवाँ जा रहा है, परन्तु उसमें मैं

क्या ? मैं तो कही नहीं जा सकता ।

मैं, सिन्यूहे ! मनुष्य हूँ ! मुझे एक ही सन्तोष है और वह यह कि कुछ तो ऐसे हैं ही जिनके आंसुओं, जिनकी आहों में मैं रहा हूँ और रहूँगा... मुझे इच्छा नहीं है कि मेरी मृत्यु के बाद मेरी कब्र बनाई जाय और मेरा शरीर शाश्वत काल तक के लिए मसाले बना कर रखा जाय क्योंकि मुझे देवताओं पर अब बिल्कुल विश्वास नहीं रहा है, क्योंकि अब मैं उनसे ऊँच चुका हूँ ।

